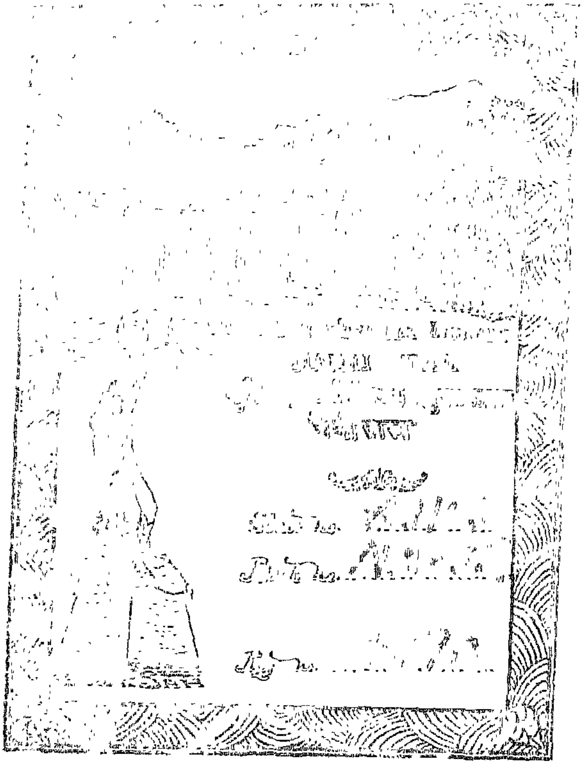

रज़िया की बेटी

(प्रसिद्ध रूसी उपन्यास 'निस्सो' का हिन्दी रूपान्तर)

रूपान्तरकार

नरोत्तम नागर

सम्पादक

यज्ञदत्त शर्मा

साहित्य प्रकाशन, दिल्ली

प्रकाशक:
साहित्य-प्रकाशन,
मालीवाड़ा, दिल्ली।

मूल्य : सात रुपया

रसिक
५ सन्तनगर, करो
दिल

रज़िया की बेटी

पहिला परिच्छेद

: १ :

निश्चय ही रज़िया-मो को मीरअली की बात कभी नहीं माननी चाहिए थी। लेकिन पहाड़ों से घिरे उसके छोटे-से गाँव दोआब में आकर उसने कुछ इतनी मुलामियत से बातें कीं; और उसकी दिलजमई करने में उसने कुछ इतनी लगन और उत्साह का परिचय दिया कि अन्त में वह राज़ी हो गई। और सच तो यह है कि इसके सिवा वह कर भी क्या सकती थी? पति के मरने के बाद ख़ुद अपने और अपनी नन्ही निस्सो के लिए दो जून कुछ जुटाने का जतन करते-करते उसकी सारी शक्ति चुक गई थी, लेकिन भूख ने फिर भी उसका पीछा नहीं छोड़ा। मीरअली ने उससे कहा, "सारी गर्मियों-भर तुम यखबार में काम करना। ख़ुद अज़ीज़ख़ान के यहाँ तुम्हें काम मिल जायेगा। और पतझड़ में वह तुम्हें एक भेड़ और साग आटा दे देगा कि दोआब लौटकर तुम बेफ़िक्री के साथ जाड़े बिताना, इस तरह मानो तुम्हें किसी धनी और स्वस्थ पति का संरक्षण प्राप्त हो।"

रज़िया-मो ने अपनी बहन तुरा-मो से सलाह ली। तुरा-मो नन्ही निस्सो को गर्मियों भर अपने पास रखने के लिए तैयार हो गई। लेकिन इस शर्त पर कि पतझड़ में जब वह लौटेगी और वहाँ से जो कुछ कमा कर वह अपने साथ लायेगी, उसमें आधा साझा उसका भी रहेगा।

सो रज़िया-मो ने एक बड़े से पत्थर की ओट लगा कर अपनी झोंपड़ी का मुँह बन्द कर दिया, एक सफेद रूमाल से अपने चेहरे का आँखों से नीचे का हिस्सा ढक लिया, और गाँव से बाहर निकल आई। मीरअली, जो एक गधे पर सवार था, उसके पीछे-पीछे चल रहा था।

रज़िया-मो को बिदा करने कोई भी उसके साथ नहीं आया। दोआब के निवासियों के लिए उसका गाँव में रहना या न रहना बराबर था।

नुरा-मो सूरज निकलने से पहिले ही पहाड़ी चारागाह में चली गई थी। रज़िया-मो पहाड़ी ढलुवान पर तंग पगडंडी के सहारे चल रही थी। पीछे-पीछे मीरअली अपने गधे पर सवार चुपचाप चला आरहा था और रह-रह कर खूब नीचे पहाड़ों की गहराई में, चट्टानों से टकरा कर झाग उगलती हुई और उफनती हुई नदी की ओर देख लेता था। एक तंग दर्रे के मुहाने के पास पहुँच कर रज़िया-मो ने अपने गाँव को आखिरी बार एक नज़र देखने के लिए मुँह मोड़ा, लेकिन तभी मीरअली की कड़ी नज़र से उसका सामना हुआ। उसकी आँखें झुक गईं और गरदन नीची कर वह फिर अपने रास्ते पर चलने लगी।

वह सोचने लगी कि सीमान्ती महानदी के किनारे बसे यखबार में उसका जीवन कैसे बीतेगा। रज़िया-मो को यखबार के बारे में कुछ भी मालूम नहीं था, लेकिन आस-पास के लोगों से वहाँ के शासक अजीज़-खान के बारे में उसने बहुत कुछ सुना था। उसकी धन-दौलत, ताकत और दबदबे का सभी जिक्र करते थे। न जाने उसके साथ वहाँ कैसी बीते। यही सब सोच कर रज़िया-मो का हृदय धुँधली आशंकाओं से भर गया।

तंग रास्ता अब खुल चला था। रज़िया-मो ने देखा कि घास के एक छोटे से खण्ड में दो घोड़े घास चर रहे हैं, और बराबर में पत्थर की टेक लगाये एक लड़का बैठा है। मीरअली ने अपना गधा लड़के को थमा दिया। एक घोड़े पर उसने रज़िया-मो को फिर सवार होने का आदेश दिया, दूसरे पर खुद सवार हुआ और वे तेज़ी से आगे बढ़ चले।

साँझ के करीब, उस समय जब कि वे नदी तक फैले पहाड़ी समतल में उतर रहे थे, घुड़-सवारों के एक दल से उनकी मुठभेड़ हुई। उनमें वह घृणित अलीम-शो भी था जिसे रज़िया-मो ने तुरत पहिचान लिया। उसका हृदय तुरत खटक गया कि मीरअली ने उसे धोखा दिया है, और यह कि अगर वह अलीम-शो के हाथों में पड़ गई तो वह फिर कभी अपने गांव वापिस नहीं पहुँच सकेगी, न ही वह अपनी निस्सो का मुँह देख सकेगी।

यह अलीम-शो वही था जो किसी ज़माने में उसे अपनी पत्नी बनाने के लिए दोआब आया था, और उसके इन्कार करने पर आग-बबूला होकर वापिस लौट गया था, और इसके एक साल बाद यही था जिसने पहाड़ी चारागाह के रास्ते में उसके पति को घेर लिया था और उसे पत्थरों से इतना अधिक मारा था कि वह फिर कभी पूरी तरह से नहीं सँभल सका। यह अलीम-शो ही था, जिसने उसके पति के मर जाने पर, एक बार फिर दोआब आकर उसे अपनी पत्नी बनाने की कोशिश की थी और जब रज़िया-मो ने खुले-आम उसके मुँह पर थूका तो वह और भी ज्यादा आग-बबूला होकर लौट गया था। और अब, अपने यखबाग़िन घोड़े पर सवार, वह उसकी ओर ही बढ़ा आ रहा था, और इस प्रकार मुस्करा रहा था मानो कुछ हुआ ही न हो।

भय से अत्यन्त त्रस्त रज़िया-मो ने पलक झपकते-न-झपकते अपने चहुँ ओर देखा : वृद्ध मीरअली पीछे घोड़े पर सवार था और पलट कर भागने का रास्ता उसने छेक रखा था। दाहिनी ओर गगन-चुम्बी पहाड़ थे जिन्हें पार करना असम्भव था। बाईं ओर नदी थी जो गरजती-उफनती बह रही थी। नदी के दूसरे किनारे, ठीक वैसा ही एक रास्ता चला गया था जिस पर कि वे इस समय चल रहे थे। रास्ता एकदम सूना था। अगर रज़िया-मो गम्भीरता पूर्वक सोचती तो यह समझने में देर न लगती कि चाहे जो भी रास्ता वह पकड़े, अलीम-शो के घुड़सवारों से नहीं बच सकती। अगर वह गाँव पहुँच जाये तो भी

उसे कोई अपने यहाँ शरण नहीं देगा। लेकिन यह सब सोचने का समय कहाँ था। अंधी निराशा में उसने घोड़े का मुँह नदी की ओर मोड़ दिया। तेज़-तर्रार और समझदार घोड़ा नदी के तेज बहाव की पर्वाह न कर पानी में घुस गया। किनारे पर अलीम-शो और उसके साथियों की गुस्सा-भरी चीख-पुकार पानी की गरज में सुनाई नहीं दी। अन्त में उन्होंने भी अपने घोड़े पानी में दौड़ा दिये, लेकिन रज़िया-मो उनसे पहले ही दूसरे किनारे पर पहुँच गई।

रास्ता ऐसा था कि कोई भी सुध-बुध वाला व्यक्ति उसे पैदल पार करने से पहले सौ बार सोचता, लेकिन रज़िया-मो ने इसी तंग पथ पर अपने घोड़े को सरपट दौड़ा दिया। पीछा करने वाले लोगों की चीख-पुकार की ओर से वह बिल्कुल बे खबर थी। एक बार भी उसने घूम कर नहीं देखा। डर के मारे उसे और कुछ नहीं सूझ रहा था, सिवा इसके कि जितनी भी तेज़ गति से सम्भव हो, वह आगे ही बढ़ती जाये। आखिर होनहार होकर रही। तंग रास्ते में एक तेज़ मोड़ आया। चट्टान का एक पत्थर आगे को निकला हुआ था। उसका आघात लगा। रज़िया-मो नीचे लटक गई और उसकी टांग रकाब में उलझ कर रह गई। न जाने कितनी देर तक वह पत्थरों से टकराती घिसटती रही, जब तक कि आतंकित घोड़ा चौंक कर अपने-आप न रुक गया। सावधानी के साथ मोड़ को पार कर जब अलीम-शो उसके पास पहुँचा तो उसने देखा कि खून से लथपथ शरीर के सिवा रज़िया-मो का अब और कुछ बाकी नहीं रहा है। वह मर चुकी है।

होंठ काटते हुए अलीम-शो उसके ऊपर झुक गया, आस्तीन से पसीना पोंछते हुए उसने उसका क्षत-विक्षत शरीर छुआ और दुआ पढ़ी। नजदीक आने पर उसके साथी भी अपने घोड़ों से नीचे उतर गये और चुपचाप एक-दूसरे की ओर देखे बिना रज़िया-मो के चारों ओर खड़े होगये।

कट्टर शिया पंथियों की प्रथा के मुताबिक अन्तिम संस्कार करने के

बाद उन्होंने रज़िया-मो के शरीर को पानी में फेंक दिया, उसके घोड़े को अपने साथ लिया और अज़ीज़खान की अमलदारी की ओर चल दिये। मीरअली अज़ीजखान का ज़र-खरीद गुलाम था। उसने निश्चय किया कि आज की इस घटना के बारे में वह कभी अपना मुँह नहीं खोलेगा।

कुछ दिन बाद एक बूढ़े गड़रिये ने जो गाँव लौट रहा था, रज़िया-मो का क्षत-विक्षत शरीर देखा, उसी रज़िया-मो का जो अभी कुछ दिन पहले तक एक मज़बूत और सुन्दर स्त्री थी। तुरा-मो और गाँव की कुछ स्त्रियों ने नदी के किनारे उस चट्टान के पास मातम मनाया जहाँ कि रज़िया-मो का शरीर पड़ा मिला था। लेकिन रज़िया-मो की मृत्यु का असली रहस्य सदा अंधकार में ही छिपा रहा।

गाँव के पंचों ने अपनी सभा में फैसला किया कि नन्ही निस्सो तुरा-मो के पास रहेगी। तुरा-मो ने विरोध किया, बहुत कुछ हाथ-पाँव पटके, पर पंचों ने उसकी एक भी बात नहीं मानी और उनके फैसले के आगे तुरा-मो को सिर झुकाना पड़ा।

"हम सभी ग़रीब हैं," पंचों ने कहा, "जाड़ों में हम सभी सूखी जड़ी-बूटियाँ खाकर किसी प्रकार जीवित रहते हैं। लेकिन रज़िया-मो तुम्हारी बहन थी, और उसकी बेटी को तुम्हें ही पालना होगा।"

सो निस्सो अपनी मौसी के गले पड़ गई।

: २ :

अगर ज़ीनत-शो घर पर होता तो वह यह कहकर तुरा-मो को दम-दिलासा देता कि सिर पड़ जाने पर एक कुत्ता भी पराये पिल्ले को भूखा नहीं मरने देता। जो हम खाएंगे, उसी से लड़की भी अपना पेट भरेगी। और एक दिन बोझ न रहकर यह हमारा हाथ भी बँटाने लगेगी। काम करने के लिए हमारे घर में दो हाथ और बढ़ जायेंगे।"

ज़ीनत-शो में यही तो ऐब था। वह जैसे मोम का बना था और हमेशा दूसरों की चिन्ता में घुलता रहता था। जो भी हो, क्या निस्सो इसी प्रकार

सारी उम्र नंगी घूमती फिरेगी। उसके लिए सलूके की ज़रूरत होगी, बड़ी होने पर और भी न जाने कितनी चीज़ें उसके लिए जुटानी पड़ेंगी, लेकिन ज़ीनल-शो घर पर है नहीं, और कोई नहीं जानता कि वह कब तक लौटेगा। दो साल हुए जब धन कमाने की आशा में वह पहाड़ों के उस पार चला गया था। उसके बाद उसकी कोई खबर नहीं मिली। न जाने, वह जीवित भी है या मर गया।

तुरा-मो ने थैले में से मुट्ठी-भर सूखे शहतूत निकाले और एक चपटी सिल पर डाल कर उन्हें पत्थर के एक गोल बट्टे से पीसने लगी। पिस जाने पर लकड़ी के एक कठवे में शहतूत का आटा उसने डाल दिया, और थैले में से मुट्ठी-भर शहतूत और निकाल कर पहिले की भाँति उन्हें पीसने लगी।

तुरा-मो घर में ही कते-बुने कपड़े पहने थी। कपड़े गन्दे होगये थे, और उनमें छेदों की भरमार थी, जिनके बीच से धूप में तपा हुआ उसका बदन दिखाई देरहा था। तुरा-मो छरहरे बदन की स्त्री थी, लेकिन उसके हाथ मज़बूत और खूब हृष्ट-पुष्ट थे। पिछली गर्मियों में सुखाए गए शहतूतों को वह नपे-तुले संगति पूर्ण ढंग से, पीस रही थी। उसके बालों में गुंथी काली चोटियां बेकाबू होकर बार-बार उसके काम में बाधा देती थीं, और अपनी नंगी कोहनी से झटका देकर वह बार-बार उन्हें पीछे धकेल देती थी। पहाड़ी देश की सभी स्त्रियाँ बकरियों के बालों की इन चोटियों से अपना सिंगार करती थीं। तुरा-मो की चोटिया, काले रंग की थीं। काले रंग की ये चोटियाँ गूंथते उसे एक ज़माना बीत गया था। अन-ब्याही लड़कियों की भाँति लाल रंग की चोटियाँ गूँथने के लिए उसका जी ललक उठता और इस अधिकार को फिर से पाने के लिए वह सब कुछ न्योछावर करने के लिए तैयार थी। लेकिन इसका समय तो एक मुद्दत हुई तभी बीत गया था। तुरा-मो अब दो बच्चों की माँ थी, और यह ज़रूरी था कि एकमात्र उनका ही वह अब ध्यान रखे। एक तीसरा बच्चा और हुआ था जो चेचक की भेंट चढ़

गया। और यह भी अच्छा ही हुआ। पशु और पंछी, यहाँ तक कि साँप भी, जी-भर कर अपना पेट भरते और बिना किसी चिन्ता के मन चाहा जीवन बिताते हैं। लेकिन तुरा-मो क्या करे ऐसे यौवन का जिसमें हर इच्छा को दबाना पड़ता है।

इस तरह भला कब तक चल सकता था। अकेली औरत, वह क्या करे, क्या न करे। अपने ही बच्चों का पेट जब नहीं भरता तो दूसरों का जिम्मा कौन ले। अगर जीनत-शो मर गया है तो उसके पीछे वह हाथ-पर-हाथ धर कर थोड़े ही बैठी रहेगी। क्यों न वह भी किसी और से ब्याह करने की बात सोचे? अगर वह जीवित है तो भी कसूर उसका ही है कि इतने दिनों तक उसने उसकी सुध नहीं ली। माना कि उसका पड़ोसी बुन्दे-शो कुछ कम-अक्ल है और गठिया ने उसे जकड़ रखा है। लेकिन इससे क्या? तुरा-मो जैसी गरीब स्त्री के लिए कोई अच्छा-विच्छा अनब्याहा आदमी तो मिलने से रहा। बुन्दे-शो ही है जो जब देखो तब दूर से पूछता हुआ उसके मकान में चला आता है, "मेरा मुन्ना कहीं इधर तो भटक कर नहीं आगया?" सभी जानते हैं कि बुन्दे-शो के कोई नन्हा-मुन्ना नहीं है। एकदम मरियल, हड्डियों का ढांचा-भर रह गए गधे के सिवा उसके पास और कुछ नहीं है। लेकिन तुरा-मो सब कुछ जान कर भी दिखाती यह है मानो वह कुछ नहीं जानती, और भोलेपन के साथ जवाब देती है, "नहीं, मैंने नहीं देखा। मेरा खयाल है, वह इधर नहीं आया।" तुरा-मो के यौवन ने अभी उससे विदा नहीं ली है, और उसका शरीर है कि पके अनार की भांति फूटा पड़ता है। उमड़-घुमड़ कर उसका मन जोर मारता है कि जवाब में वह कहे, "भीतर आकर देख न लो, बुन्दे-शो। पानी के लिए जब मैं खाई तक गई थी तो मुझे ऐसा लगा मानो कोई चीज इधर से गुजरी हो। कौन जाने, तुम्हारा मुन्ना मेरे ही घर में घुस गया हो।"

बुन्दे-शो की छाती सख्त और बाहें मजबूत थीं। महीन आवाज में बहुत ही अनोखे गीत वह गाता था। वह अक्सर दूसरे गाँवों के चक्कर

लगाता था और हमेशा चरबी, सूखा माँस और खूबानियों या शहतूतों से भरा थैला लेकर लौटता था। और गठिया ? गठिया पर भला कहाँ कौन ध्यान देता है ? हासिफ भी तो गठिया का शिकार था, फिर भी एक सुन्दर युवती के साथ ब्याह करने में गठिया ने कोई बाधा नहीं दी। खशवख्त-जोरा, महमूद और खुदा नजर, सभी तो गठिया के शिकार थे, लेकिन उन सब का भी घर बसा हुआ है। उनके पास पत्नि हैं, शहतूत के पेड़ हैं, और सब लोग उन्हें उसी प्रकार देखते हैं जैसे कि दूसरों को। वह भी अन्य सब की भाँति खेत जोत सकता है, डंगरों को चराने ले जा सकता है, सिंचाई की खाइयों में पानी छोड़ सकता है। शायद यह बात सच हो कि बुन्दे-शो के सिर पर कभी-कभी भूत सवार हो जाता है। जब कभी ऐसा होता है तो वह धरती पर लोट जाता है, चीखता-चिल्लाता है, और हर चीज़ पर थूकने लगता है। लेकिन ऐसा कभी-कभी ही होता है। ज्यादातर वह प्रसन्न और बेफिक्र रहता है। सच तो यह है कि अन्य सब के मुकाबिले में वह कहीं ज्यादा हँसमुख है। लेकिन वह इतना कंजूस है कि बराद-बेक को उसने कुछ भेंट नहीं किया। बराद-बेक ने भी उसे तावीज़ नहीं दिया जिसकी बदौलत इन दौरों से उसका पीछा छूट जाता। अगर कभी बुन्दे-शो अपने मुन्ने की खोज मेरे घर आया तो मैं उसे एक तावीज़ खरीदवाए बिना नहीं छोड़ूँगी।

शहतूत के आटे से जब लकड़ी का कठुवा भर गया तो तुरा-मो उसे उठा कर घर के भीतर ले गई। उसकी मज़बूत उघाड़ी टांगें आटे से सफेद हो गई थीं। घर के भीतर पहुँच कर उसने अपना एक पाँव कठुवे के किनारे पर रखा और पाँव में लगा आटा सावधानी से कठुवे में झाड़ने लगी। आटे का एक-एक कण उसके लिए मूल्यवान था, खासतौर से उस हालत में जब कि घर में खाने वाले मुँह की एक और वृद्धि हो गई थी। एक कपड़े पर आटे को उंड़ेल कर तुरा-मो ने कठुवे को खाली किया और बाहर आकर फिर आटा पीसने में जुट गई। सिल-बट्टा धूप में गर्म हो गया था, लेकिन तुरा-मो के हाथ इतने कड़े पड़ चुके थे कि

सर्दी-गर्मी का उन पर कोई असर नहीं होता था । आटा पीसते-पीसते वह निस्सो के बारे में सोचने लगी । कौन जाने, वह अभागी निकले और उसका अभाग्य कहीं तुरा-मो के खुद अपने बच्चों को ही न डस ले । यों निस्सो अब आठ साल की होगई थी और देखने-सुनने में भली और स्वस्थ्य मालूम होती थी । उसमें ऐसी कोई बात नहीं थी जिससे मालूम होता कि उसका परछावाँ बुरा है ।

: २ :

अगर रजिया-मो जीवित होती तो जाड़े के इन बर्फीले दिनों में वह खुद ही पानी भरने जाती । लेकिन तुरा-मो का दिमाग तो जैसे दूसरी ही दुनियाँ में रहता था । निस्सो तो खैर गैर थी, वह अपनी कोख से जन्मे बच्चों तक का ध्यान नहीं रखती थी । मिसाल के लिए तुरा-मो आज कहाँ गई थी ? बच्चों को चुपचाप बैठे रहने का दो-टूक आदेश दे वह दिन-भर के लिए गायब हो गई । अगर सच बात कही जाए तो निस्सो खूब अच्छी तरह जानती थी कि उसकी मौसी कहाँ गायब रहती है । निस्सन्देह, वह बुन्दे-शो के पास गई थी जो सारे दिन बकरी की खाल बिछा कर पड़ा रहता था और अपना दोतारा बजाने के सिवा और कुछ नहीं करता था । तुरा-मो हर रोज़ उसके घर जाती थी । भीतर से वे दरवाजा बन्द कर लेते थे, और इस प्रकार सारा-का-सारा दिन गोल कर देते थे ।

गाँव में पत्थरों के खोह नुमा काले घरों में लोग रहते थे । प्रत्येक घर में, पत्थर की दीवार की ओट में. एक सूना आंगन था । दोआब में सड़कें नहीं थीं, पत्थर की दीवारों के बीच केवल चक्करदार पगडंडियाँ थीं । ये पगडंडियाँ इतनी सकरी थीं कि दो गधे एक-दूसरे के पास से नहीं गुज़र सकते थे । पहाड़ों की बर्फीली वायु इतनी तेज़ थी कि उसने गाँव को झाड़ बुहार कर साफ कर दिया था । केवल बड़ी चट्टानों के अत्यन्त सुरक्षित कोनों में बर्फ के ढेर दिखाई देते थे । गाँव का एक भी निवासी बाहर नजर नहीं आता था । इस तेज़ हवा में भला कौन घर

से बाहर निकलना चाहेगा, और जाड़े के इन दिनों में कोई बाहर निकल कर करेगा भी क्या ?

निस्सो नदी से पानी भर कर ला रही थी। घड़े की पेंदी में छेद था और वह ठंडे-बर्फ पानी में भीग गई थी। उसके दाँत किटकिटा रहे थे। जब वह घर पहुँची तो घड़े में आधा पानी रह गया था। भीतर पाँव रखते ही उसने जैबो और मजीद की ओर देखा जो भेड़ की हड्डी को आटे पर घुमा-घुमा कर खेल रहे थे। अकड़े हुए हाथों से निस्सो ने सिर पर से घड़ा उतारा, और चूल्हे में जड़े लोहे के बरतन में पानी उडेल दिया। फिर अपने को गरमाने के लिए वह कमरे में इधर-उधर कूदने सुन्न हुए अपने बदन को रगड़ने और बाँह पर जमी बर्फ की पपड़ी को दाँतों से कुतर-कुतर कर दूर करने लगी।

"मुझे भूख लगी है निस्सो, कुछ खाने को दो!" मजीद ने आँसू-भरी आँखों से रोती हुई आवाज में कहा। वह छै वर्ष का था।

"चुप रहो। मुझे भी तो भूख लगी है। फिर सूखी हरी पत्तियाँ भी तो अभी लानी हैं।" मजीद को झिड़कते हुए निस्सो ने कहा, "चुप बैठो। मैं इतने आग ले आऊँ।"

दो-आब में माचिस अकेले नराद-बेक के पास थी। न ही गाँव में इतना ईंधन था कि आग हर घर में बराबर चेतन रहती। सो लोग बारी-बारी से एक दूसरे को आग देते थे। मिट्टी की अंगीठी उठा कर निस्सो घर से बाहर निकली। कुछ ही मिनट बाद अंगीठी को बदन से सटाए वह वापिस लौट आई।

निस्सो ने सावधानी के साथ अँगारे उठाए और सूखे उपलों के नीचे उन्हें रखा, जो चूल्हे में पहिले से चुने हुए थे। फिर अँगारों के इधर-उधर अपने दोनों हाथों की ओट करके उसने उन्हें फूँकना शुरू कर दिया। उपलों से तीखा नीला धुवाँ निकला और उसके सिर के चारों ओर फैल गया।

मजीद और जैबो अब फिर अपनी हड्डी के साथ खेलने में रमे

हुए थे।

"देखो, आग बुझने न देना," निस्सो ने तड़क कर मजीद से कहा, और वह फिर दरवाजे से बाहर निकल गई।

बाहर निकलते ही उसके तमतमाए चेहरे पर तेज हवा और हिम-कणों का थपेड़ा लगा। एक पत्थर से दूसरे पत्थर पर कूदती, तेजी से गाँव पार कर वह पहाड़ों पर चढ़ने लगी। इस समय एक ही बात उसके हृदय को कुरेद रही थी, वह यह कि इन ऊँचे पहाड़ों के बीच किस जगह वह 'शोर्स्क' नामक घास पा सकेगी।

गाँव शीघ्र ही बहुत नीचे छूट गया। हिम की चादर ओढ़ पहाड़ी नदी की गूँज सुनाई दे रही थी। उसके किनारे पर बड़े-बड़े पत्थर बिखरे थे। और यहाँ-वहाँ, पत्थरों के चारों ओर, सूखी हुई झाड़ियों के ठूँठ बर्फ के भीतर से झाँक रहे थे।

कल जिस जगह उसने घास बटोरी थी, आज वहाँ कुछ नहीं था। उस जगह की बर्फ रौंदी हुई थी और साफ मालूम होता था कि वहाँ कोई पहिले ही पहुंच चुका है। हो-न-हो, वह बरादबेक का गधा होगा। बर्फ पर पड़े निशान उसके सिवा भला और किसके हो सकते थे। दोआब में जितने भी पशु थे, वे इने-गिने तो थे ही, उन सब के पांवों के निशानों को पहिचानने में निस्सो कभी नहीं चूकती थी, कि बराद-बेक का गधा था कि सारी घास चर गया, मानो सात जनम का भूखा हो। इस घास का रसा तैयार कर वह घर-भर का पेट भर सकती थी। अब वह क्या करे ? हो सकता है कि उन पत्थरों के पीछे जहाँ अभी तक बर्फ जमी थी, कुछ घास मिल जाए।

निस्सो ने घास की खोज में इस चट्टान से उस चट्टान का चक्कर लगाया, और नंगे पाँव से बर्फ को कुरेद-कुरेद कर टटोलना शुरू कर दिया। एक जगह, किसी कटीली झाड़ी के काटों में, उसका पाँव उलझ गया। वह बर्फ पर गिर पड़ी और झुँझला कर काँटे निकालने लगी। पाँव में खून निकल आया। हाथ से खून साफ कर वह फिर घास

खोजने लगी। घास अब दिन-दिन कम होती जा रही थी। आखिर एक जगह उसे घास दिखाई दी। तेज़ी से,—इस बार हाथों से,—उसने बर्फ खोद कर दूर की, और पीली पड़ी घास उखाड़ने लगी। चाहती तो वह यह थी कि उस दिन अधिक घास बटोर कर ले जाए, लेकिन उसके हाथ इतने सुन्न पड़ गये थे कि वह उनसे अधिक काम नहीं ले सकी।

घर लौट कर उसने घास को उबलते हुए पानी में छोड़ दिया।

तुरा-मो का घर गाँव के अन्य घरों जैसा ही था। पत्थरों से बनी ऐंड़ी-बेंड़ी दीवार, मिट्टी-गारे के चौड़े चबूतरे जिनमें सामान रखने के लिए खाने बने थे। जब तुरा-मो के अच्छे दिन थे तब इन खानों में आटा-दाल, घास-भूसा भरा रहता था और रात होने पर सोने के लिए गर्म जगहों का ये काम देते थे। तब इन खानों में छाछ, बकरी के दूध का पनीर और बाजरे की रोटियों से भरे लकड़ी के कठुवे रखे रहते थे। लेकिन अब ये खाली थे। रात की ठंड में अपनी हड्डियों को गरमाने के लिए तुरा-मो के पास एक कम्बल तक नहीं था।

दरवाजे के पास बांई ओर एक गाय-घर था। तुरा-मो की गाय अभी भी जीवित थी, हालाँकि वह हड्डियों का एक ढाँचा-मात्र रह गई थी। बरादबेक से उधार लिए शहतूत के पत्तों के सिवा गाय को वह अब और कुछ नहीं दे पाती थी। अगर बरादबेक यह भी न देता तो उसे गाय कसाई के हवाले कर देनी पड़ती। परन्तु तुरा-मो अपने हाथ से खुद अपनी गरदन तो काट सकती थी, लेकिन गाय की गरदन नहीं मार सकती थी। निस्सो का गाय से गहरा मेल था। तुरा-मो मजीद और जैबो को तो अपने पास सुलाती थी, और निस्सो को बाहर खदेड़ देती थी। निस्सो गाय के पास उसकी गरमाई में रात बिताती थी। गाय का नाम नील सिंघा था, लेकिन उसके सींगों का रंग नीला ज़रा भी नहीं था। उसके सींग बहुत ही छोटे थे। उस का रंग काला और उसका माथा सफेद था। गाय को निस्सो बहुत ही प्यार करती थी। सच तो यह है कि इस गाय के सिवा दुनियाँ में और कोई नहीं था जिसे वह

सचमुच प्यार करती हो। रसा तैयार हो जाने के बाद वह बड़े चाव से गाय को उबली हुई घास खिलाती थी।

एक गोल पत्थर से थपथपा कर निस्सो ने आग बुझा दी। रसा पीकर मजीद और जैबो बिल्ली के बच्चों की भाँति गहरी नींद में सो गए। निस्सो ने उन्हें खींचकर एक ओर कर दिया, जिससे नींद में लुढ़क कर वे चूल्हे में न आ गिरें। फिर उसने अपना सलूका उठाया, जो अभी तक गीला था, और सलूके के नीचे छिपी घास को बटोर कर नील सिंघा गाय के पास जाने लगीं।

तभी तुरा-मो ने घर में प्रवेश किया। आज वह असाधारण रूप से प्रसन्न थी। उसके कपड़ों पर हिमकण जमे थे। बाल बिखरे हुए थे। उसकी एक चोटी में भण्डार-घर की कुन्जी, जो बहुत दिनों से खाली पड़ा था, झूम रही थी। उसके तपे हुए चेहरे और बड़ी-बड़ी काली आँखों में आज एक अजीब भाव खेल रहा था। होठों पर मुस्कराहट थी, जो उसके लिए एक अनहोनी बात थी। निस्सो ने इस रूप में उसे पहिले कभी नहीं देखा था। कितनी अजीब हो उठी थीं उसकी मौसी की आँखें, खूब पैनी, चमकदार, मुसकराती हुई। निस्सो चुपचाप बैठी रही। उसने अपनी गरदन झुकाली और घास सलूके के भीतर छिपा ली। लेकिन तुरा-मो ने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। अपने दोनों हाथों को चोटियों के नीचे गरदन पर रखे, आँखों को आधा बन्द किए, वह कमरे में इधर-से-उधर टहलने लगी। निस्सो ने कनखियों से अपनी मौसी की ओर देखा। आमतौर से जब कभी तुरा-मो घर आती थी तो चूल्हे के पास जम कर बैठ जाती थी, जैबो को दुलराती या मजीद अथवा निस्सो को पास खींच कर थप्पड़ मारती थी, फिर खोई हुई सी खाना खाती थी और इसके बाद, होठों को मजबूती से भींच कर घंटों निश्चल बैठी रहती थी, चिर-उदास और पहुँच से बाहर!

लेकिन आज उसका रूप एकदम भिन्न था। हल्के डगों से वह चल रही थी, उसकी आँखें छत की ओर उठी हुई थीं, और होठ मुसकरा रहे

थे। निस्सो की समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे,—यहीं बैठी रहे, या उठकर गाय के पास चली जाये। लेकिन वह डरती थी कि अगर उसने ज़रा भी हरकत की तो तुरा-मो का ध्यान उसकी ओर खिच जायेगा, और ऐसा करने का इस समय उसमें साहस नहीं था।

सहसा तुरा-मो किसी गीत की एक कड़ी गुनगुनाने लगी। लगता था जैसे वह अपने आपे में न हो। उसके कदमों की गति तेज़ होती गई और नाच का रूप उसने धारण कर लिया। उसकी चोटियाँ झूमने लगीं, और उसका घाघरा लहराता हुआ उसके छरहरे चपल बदन के चारों ओर चिपक गया। निस्सो के लिए यह सर्वथा नया अनुभव था। उसका हृदय आशंकित हो उठा। न जाने आज क्या होने वाला है।

सहसा तुरा-मो स्थिर हो गई, और निस्सो के पास चौंतरे पर आकर बैठ गई। तुरा-मो का चेहरा प्रसन्न था। उसने अपने सलूके के भीतर से गुलाबी रंग की कोई चीज निकाली और निस्सो को देते हुए कहा, "ले, यह तेरे लिए है, पगली!"

यह सेंधे नमक की डली थी, एक ऐसी नियामत जिसके निस्सो ने बहुत दिनों से दर्शन नहीं किये थे। वह चौकन्नी आँखों से उसकी ओर देखती रही, और डली को अपने हाथ में लेने का साहस नहीं कर सकी।

"यह तेरे लिए ही है" तुरा-मो ने हँसते हुए दोहराया, और नमक की डली निस्सो के मुँह में ठूँस दी।

निस्सो को उसका स्वाद अच्छा लगा, लेकिन वह अभी तक सहमी हुई थी। तुरा-मो की यह सहृदयता इतनी असाधारण थी कि निस्सो और भी ज्यादा आशंकित हो उठी।

तुरा-मो ने निस्सो को अपने गले से चिपका लिया, और उसे झूम-झूम कर दुलराने लगी। उसने फिर अपनी आँखें बन्द करलीं, और उसके मुँह से एक गहरी उसाँस निकली। निस्सो काँप उठी। तुरा-मो का झूमना जारी रहा, लेकिन अधिकाधिक धीमी गति से। आखिर वह निश्चल होगई। उसकी बाहें ढीली पड़ चलीं। यह सोच कर कि शायद

वह सोगई है, सावधानी के साथ उसकी बाहों से निस्सो अपने-आपको छुड़ाने लगी।

लेकिन तभी तुरा-मो ने तुरत अपनी आँखें खोलीं और निस्सो को सर्वथा बदली हुई नज़र से उसने देखा,—उसी चिर परिचित, निर्मम और क्रूर नज़र से। निस्सो को धकेल कर उसने अलग कर दिया। निस्सो उछल कर दूर खड़ी होगई।

"कहाँ जारही है ?" तुरा-मो ने चिल्ला कर कहा। निस्सो के पाँव वहीं-के-वहीं जम गये।

तुरा-मो ने सदा की भाँति कर्कश स्वर में झुंझलाना शुरू किया, "रसा तैयार किया ? चूल्हा ठन्डा क्यों है ? कड़ाही में निरा पानी क्यों भरा है ?

क्या दिन-भर आवारा की भाँति घूमती रही, काम चोर कहीं की ?"

निस्सो बुत की भाँति खड़ी थी। उसका सिर नीचे की ओर झुका हुआ था। हाथों से वह अपना सलूका थामे थी जिसमें घास की दो गुच्छियाँ छिपी थीं।

"जबाव क्यों नहीं देती? और यह सलूके में क्या छुपा रक्खा है ?"

"घास है,—गाय के लिए।" निस्सो ने सहमे स्वर में कहा।

"गाय के लिए !" तुरा-मो ने गुस्से में चिल्ला कर कहा, "गाय की तुझे बड़ी चिन्ता है, मौसी चाहे भूखी मरती रहे ! क्या इसीलिए तुझे खिला-पिला कर मैंने इतना बड़ा किया है ? तुझे घर से बाहर न निकाला तो मेरा भी नाम नहीं। देख क्या रही है, जाकर आग ला। और यह घास मुझे दे।"

तुरा-मो ने निस्सो के हाथ से घास छीन ली, और झुँझला कर उसे कड़ाही में डाल दिया। निस्सो होंठ काटती चुपचाप दरवाज़े की ओर चल दी। बाहर हवा इतनी तेज थी कि बदन बिंधा जाता था। निस्सो ने सलूका पहिन लिया, और पड़ोसी के यहाँ आग माँगने चल दी।

रात को, उस समय जबकि निस्सो गाय के पास सो रही थी, सुबकियों की आवाज़ सुन कर उसकी आँखें खुल गईं। वह ध्यान से सुनने लगी। उसकी मौसी अँधेरे में रो रही थी। बीच-बीच में वह चुप भी हो जाती थी, और फिर फूट-फूट कर रोने लगती थी। अन्त में तुरा-मो की सुबकियों के साथ भयभीत जैंबो के रोने की तीखी आवाज़ भी शामिल हो गई। मौसी ने अब रोना बन्द कर दिया, और दबे स्वर में अपनी बेटी को चुप करने लगी। गाय ने अपना मुँह घुमाया, निस्सो का घुटना सूँघा और इतना लम्बा साँस छोड़ा कि उसकी गर्म भाप में निस्सो नहा गई। निस्सो गाय के और भी अधिक निकट खिसक आई, और अँधेरे में आँखें गड़ा कर देखने लगी। उसकी समझ में नहीं आया कि मौसी को क्या हो गया है। दिन में उसकी प्रसन्नता भी उतनी ही अजीब थी जितनी कि रात के समय उसकी ये सुबकियाँ, और फूट-फूट कर उसका यह रोना। दीवारों की दरारों के बीच से हवा इतनी तेज़ी से सनसनाती बह रही थी कि मालूम होता था, मानो पहाड़ों के सभी देव एक साथ मिल कर सीटियाँ बजा रहे हों।

: ४ :

"मैं आज बाहर जा रहा हूँ" बुन्दे-शो ने कहा, "चाहो तो तुम भी मेरे साथ चलो। बोलो, चलती हो?"

"नहीं" तुरा-मो ने कहा, "मैं चलूँगी तो खेतों से पत्थर कौन साफ करेगा। काम करने के लिए भी तो कोई रहना चाहिए न?"

तुरा-मो के चेहरे पर तीखी झुर्रियाँ उभर आई थीं। एक साल पहिले उसका चेहरा साफ था।

"क्या करोगी तुम 'पाटुक' बोकर। उसके खाने से टांगे टेढ़ी होजाती हैं। चलो, मेरे साथ चलो!"

"नहीं, भूखे मरने से पाटुक खाना अच्छा है। टांगें तिर्छी हो जाती हैं, तो क्या हुआ?"

"मैं तो यह चाहता हूँ कि तुम कुछ दिन हँस-खेल लो। लेकिन तुम हो कि

मेरे साथ चलना नहीं चाहतीं तुम्हारी मर्जी। मैं तो जा रहा हूँ।"

"जाओ। लेकिन अपने साथ कुछ मेरे लिए लेकर लौटोगे न?"

"जरूर! खाली हाथ मैं कभी नहीं आता।"

बुन्दे-शो पूरे एक सप्ताह तक बाहर रहा। और तुरा-मो पूरे सप्ताह-भर किसी से नहीं बोली। केवल जब-तब निस्सो पर तान तोड़ती रहती, "जा, पानी भर कर ला!" लेकिन इसे क्या बोलना कहा जा सकता है। निस्सो तुरा-मो के हर आदेश को पूरा करती थी। पलट कर वह कभी अपनी मौसी को जवाब नहीं देती थी। वह इस हद तक चुप रहती थी मानो जन्म से ही गूंगी हो। लेकिन वह भी इस बात से खुश थी कि बुन्दे-शो गाँव में नहीं है। इससे कम-से-कम इतना तो था ही कि उसकी मौसी की सदा-उदास तथा क्रूर मुद्रा में कोई अन्तर नहीं पड़ता था। उसे सब से अधिक डर लगता उस समय जब उसकी मौसी हँसती, नाचती और इस प्रकार की हरकतें करती मानो उसके सिर पर भूत सवार हो। पिछले जाड़ों तक उसकी मौसी को ऐसे दौरे नहीं आते थे, लेकिन अब तो उनकी मात्रा बहुत बढ़ गई थी। दिन-भर गायब रहने के बाद जब कभी वह बुन्दे-शो के पास से लौटती तो उसकी आँखें जलती रहतीं, मुँह से अटपटे और बेमानी शब्द निकलते, अत्यधिक प्रसन्नता के बाद एकाएक गुस्से का भूत उसके सिर पर सवार हो जाता। इसके बाद जब तुरा-मो अकेली होती तो वह अपना मुँह नोचती, और रात-भर सुबक-सुबक कर रोती। यह सब इतना भयानक था कि निस्सो को उसके बदले में मार और झिड़कियाँ खाना ज्यादा सहज मालूम होता था। इस प्रकार के प्रत्येक दौरे के बाद तुरा-मो कई-कई दिन तक न तो कुछ खाती थी, न काम करती थी, और लगता था जैसे वह इन्सान न रही हो। कितना अच्छा हो, अगर बुन्दे-शो कभी न लौटे!

लेकिन वह आठवें दिन ही लौट आया। निस्सो ने उसे उसी समय देख लिया था जब कि वह काफी दूर था। उसकी पीठ पर एक भारी

थैला था और नदी की ओर से आने वाले तंग रास्ते से चढ़ कर वह आरहा था। निस्सो की मौसी पाटुक बोने के लिए पहाड़ी जमीन का अब चौथा खण्ड साफ कर रही थी। बुन्दे-शो को देखते ही उसने अपना काम छोड़ दिया, और अगुवानी के लिए जल्दी से दौड़ पड़ी। उसके घर के सामने ही दोनों एक-दूसरे से मिले। तुरा-मो ने उससे कुछ पूछा, और जवाब में उसने अपना भरा हुआ थैला हिला कर दिखाया, जिसे वह अपने हाथ में लिए था। फिर वे दोनों घर में घुस गए। निस्सो ने सोचा कि निश्चय ही वह अपने साथ खाने की कुछ चीज़ें लाया होगा, बकरी का उबला हुआ मांस या बाजरे की रोटियाँ। वह हमेशा खाने की चीज़ें लेकर लौटता था। और उसने यह भी सोचा कि सारी चीज़ें वे खुद ही खा जाएँगे। निस्सो चुपचाप एक के बाद दूसरा पत्थर फाँदती पिछवाड़े की ओर से बुन्दे-शो के घर के निकट पहुँच गई।

दो-आब के अन्य सब घरों की भाँति बुन्दे-शो के घर पर भी एक सपाट छत छाई थी, और उसकी दीवारों में खिड़कियाँ नहीं थीं। ज़मीन पर खड़े होकर घर के भीतर झाँक कर देखने का कोई रास्ता नहीं था। सो वह दीवार के पास लगे शहतूत के एक पेड़ पर चढ़ कर घर के ऊपर छाई मिट्टी की छत पर पहुँच गई। छत पर धुंवाँ निकलने का छेद था। वहीं से वह देखने लगी। वह जानती थी कि अगर उसकी मौसी या बुन्दे-शो को उसके वहाँ होने का पता चल गया, तो वे बहुत नाराज़ होंगे। लेकिन वह यह भी जानती थी कि चाहे जो हो, वह उनके हाथ नहीं आ सकती, यहाँ से खिसकने में उसे देर नहीं लगेगी। जो भी हो, यहाँ से वह उन्हें देख भी सकती थी, और उनकी बातें भी सुन सकती थी। बुन्दे-शो कह रहा था :

"सब लोग घेरा बना कर बैठे थे और चाय का दौर चल रहा था। और चाय भी ऐसी कि कुछ न पूछो। खूब सलोनी, दूध और मलाई से भरपूर। उसकी सुगन्ध अभी तक मेरे दिमाग़ में बसी है। ऐसी चाय मैंने पहिले कभी नहीं पी थी। अज़ीज़ खान ने सब के सामने वायदा किया

था कि अगर हम सब उसे ख़ुश रखने में सफल होगये तो वह जी खोल कर हमारी खातिर करेगा..."

"वहाँ और कौन कौन थे ?" मौसी ने पूछा।

"बहुत से लोग थे...हमारे इधर के भी कितने ही लोग थे, सियातांग और जारखोक के, और अन्य कितने ही हिस्सों के लोग थे। मैं सब गाँवों के नाम थोड़े ही जानता हूँ। बस, यह समझ लो कि बहुत से लोग थे। मेरे जैसे भी कितने ही थे, कम-से-कम चालीस तो होंगे ही। बड़े-बड़े देगों में माँस पक रहा था। मैंने सोचा कि कुछ ऐसा करना चाहिए जिससे सब ख़ुश हों। नहीं तो अज़ीज़खान मुझे सूखा ही टरका देगा। जो बड़े-बूढ़े वहाँ मौजूद थे, उन्होंने मुझसे पूछा कि बराद-बेक क्यों नहीं आया। मैंने कहा कि बराद-बेक की आँखें दुखनी आगई है। कौन जाने, उसकी आँखें सचमुच ही दुखती हों।"

"उसने मुझे आठ टोपी-भर पाटुक के बीज दिये हैं।"

"बदले में उसने कुछ नहीं माँगा ?"

"उसने कहा कि इनके बदले में मुझे दूध दे देना।"

"क्या उसने तुम्हें कुछ मटर भी दी ?"

"नहीं, मटर वह क्यों देता ? मैं पाटुक ही बोती हूँ न ?"

"अज़ीज़खान ने मुझे मटर दी है। यह देखो, एकदम आधा थैला भरा है। हम इन्हें बोएँगे। मटर का आटा बढ़िया होता है।"

"उसने तुम्हें मटर किस लिए दी ?"

"इसकी भी एक बड़ी मजेदार कहानी है। अज़ीज़खान को एक नया खेल सूझा। उन्होंने भेड़ की एक खाल को उलटा कर मुझे पहिना दिया। मेरी पीठ पर, खाल के नीचे, उन्होंने एक पत्थर रख दिया जिससे कूब-सा बन गया। मेरे हाथों में उन्होंने एक लकड़ी थमा दी। इस प्रकार मैं एक बहुत ही बूढ़ा उजबक आदमी बन गया। फिर उन्होंने मुँह लगे लड़के जिगर को स्त्रियों के कपड़े पहिना दिये। सफेद रूमाल से उसका मुँह ढक दिया, और उसके सिर में ऊनी चोटियाँ गूँथ दीं। सो मैंने उस

से 'प्रेम' करने का नाटक खेला। और उसने झाड़ू मार कर मुझे खदेड़ दिया। मैंने बहुत ही अच्छा अभिनय किया। हँसते-हँसते सब दोहरे हो गये।"

"और तुम्हें यह माँस कैसे मिला ?"

"माँस ? रिसालदार के घुड़-सवार वहाँ आये थे। वे एक बकरी को लेकर अपना करतब दिखाना चाहते थे।"

"क्या रिसालदार भी वहाँ मौजूद थे ?"

"नहीं, रिसालदार वहाँ मौजूद नहीं थे। खान आज कल उनसे नाराज़ हैं। हाँ, तो वे बकरी का खेल कर रहे थे। उनमें से प्रत्येक इस बात में अपने को मीर सिद्ध करना चाहता था कि अजीज़खान के क़दमों में बकरी को फेंकने में कौन सब से पहिले सफल होता है। इसी आपा-धापी में बकरी लुंज-पुंज और चिथड़ा होकर रह गई। उन्होंने उसे दूर फेंक दिया। लेकिन मैंने और कुछ अन्य साथियों ने उसे उठाकर उबाल लिया। तब उस मनहूस और खान के मुँह-लगे लड़के जिगर ने अजीज-खान से जाकर शिकायत कर दी और उसने मुझे खदेड दिया। लेकिन मांस को मैंने अपने हाथ से एक क्षण के लिए भी नहीं छूटने दिया।

"असल चीज़ तो माँस है। और सब तो चलता ही रहता है। काफी माँस लाये हो न अपने साथ ?"

"ख़ुद अपनी आँखों से न देख लो कि कितना है ?"

निस्सो साँस रोक कर यह सब सुन रही थी। उसके कौतुक और उत्सुकता का अन्त नहीं था। उसने धुँए के छेद में से झाँक कर देखा। तुराम्मो बुन्दे-शो के गले में हाथ डाले आग के निकट बैठी थी। वह अपने एक हाथ में माँस का उबला हुआ टुकडा लिए थी। माँस देख कर निस्सो की भूख एकाएक जाग्रत हो गई, और उसे कुछ सुध-बुध नहीं रही। धुँएं के छेद के और भी अधिक निकट खिसकने के प्रयत्न में मिट्टी का एक डेला उखड़ कर नीचे लोहे की कड़ाही पर जा गिरा।

निस्सो उछल कर पीछे खिसक गई। रेंग कर दीवार तक पहुँची, पेड़ की एक शाख पकड़ कर नीचे ज़मीन पर उतर आई और पूरी तेज़ी से भाग खड़ी हुई।

तुरा-मो और बुन्दे-शो घर में ही बन्द रहे। दीन-दुनियाँ की उन्हें कोई खबर नहीं थी। निस्सो से नहीं रहा गया। साँझ को वह फिर वहाँ पहुँची। तुरा-मो उस समय कुछ गुनगुना रही थी।

अगले दिन गाँव के लोग अपने ढोर-डंगरों और भेड़ों के साथ गर्मियों भर के लिए पहाड़ी चरागाह में जाने वाले थे। तुरा-मो की गाय को भी रेवड़ के साथ जाना था, और चूँकि गाय की देख-भाल का काम निस्सो के जिम्मे था, इस लिए वह भी सबके साथ जाती। पिछली गर्मियों में जब वह चरागाह गई थी तो दिन बहुत अच्छे बीते थे। न वहाँ कोई मौसी थी, न किसी की झिड़कियाँ थीं, और न ही उसे किसी की मार खानी पड़ती थी। दिन-भर गायों को हाँक कर रसीली घासों के स्थलों में ले जाना, और साँझ के समय अन्य लड़कियों तथा स्त्रियों के साथ दूध बिलोना।

निस्सो को विश्वास नहीं होता था कि तुरा-मो सुबह तक घर लौट आयेगी। वह यह भी निश्चय नहीं कर पा रही थी कि तुरा-मो उसे चरागाह में जाने भी देगी या नहीं। मौसी की अनुमति के बिना वह भला कैसे अन्य सब के साथ चरागाह जा सकती थी?

निस्सो को रात-भर नींद नहीं आई। तरह-तरह की बातें उसके दिमाग़ में घूमती रहीं। सब से अधिक चिन्ता उसे इस बात की थी कि क्या वे ख़ुद अकेले ही सारा मांस खा जायेंगे। भूख ने पेट में इतनी खलबली मचा रखी थी कि वह रह-रह अपने होंठ काटती। लेकिन होंठ काटने से क्या पेट भरता है? मजीद और ज़ैबो पाटुक के बीजों से पेट भर कर गहरी नींद सोए थे। निस्सो ने पाटुक के बीज नहीं खाये थे। गाँव की लड़कियाँ कहती हैं कि पाटुक खाने से टाँगें भारी हो जाती हैं। अगर वह बेकार होगई तो कौन उसका देख-भाल करेगा?

लेकिन रात को भूख ने इतना ज़ोर मारा कि वह बरदाश्त नहीं कर सकी। निश्चय ही तुरा-मो और बुन्दे-शो रात-भर जागते नहीं रहेंगे, और अगर वे सो गये हों तो......

निस्सो बाहर निकल आई। उसका कोई खास इरादा नहीं था। केवल भूख से बाध्य होकर वह चल पड़ी थी। रात अंधेरी थी। लेकिन निस्सो एक-एक पत्थर से परिचित थी। वह बुन्दे-शो के घर की ओर चल दी। दरवाज़े के पास पहुँच, उसने कान लगा कर सुना। वे सो रहे थे। बुन्दे-शो के खर्राटों की हल्की आवाज़ आरही थी। लेकिन मौसी की कोई आवाज़ नहीं सुनाई दे रही थी। कुशल इसी में थी कि अँधेरे में कहीं वह उससे टकरा न जाये। घुटनों के बल बैठकर उसने भीतर प्रवेश किया, और माँस की गन्ध लेने की कोशिश करने लगी। लेकिन सारे कमरे में एक दूसरी ही गन्ध फैली थी। यह गन्ध इतनी तेज़ थी कि निस्सो के लिए छींक रोकना मुश्किल होगया। अगर छींक आगई तो सब कुछ गड़बड़ हो जायेगा। लेकिन भूख ने छींक और उसके डर पर काबू पा लिया। सब कुछ भूल कर सिसकती हुई वह चूल्हे के पास पहुँची और अपना हाथ बढ़ा कर टटोलने लगी। उसका हाथ लकड़ी के एक कठुवे से जा लगा जिसमें एक बड़ी हड्डी रखी हुई थी। निस्सो का हृदय ज़ोरों से धड़का। लेकिन हड्डी अब उसके हाथ में थी। वह चुपचाप बाहर निकल आई। अंधेरे में दीवारों और पत्थरों को लाँघते समय वह एक जगह ठोकर खाकर गिर पड़ी। गिरने से उसके चोट तो ज़रूर लगी, लेकिन उसने दर्द की चिन्ता नहीं की। वहीं पड़े-पड़े, दाँतों से नोंच-नोंच कर, बिना चबाये ही, वह माँस के कई निवाले निगल गई। फिर उसने धीरे-धीरे खाना शुरू किया। जब मन भर गया तो बाकी बची हड्डी को लिए घर लौट आई, और नीले सींगों वाली अपनी गाय के पास सट कर बैठ गई। फिर हड्डी को घुटनों के बीच छिपाये, न जाने कब गहरी नींद में वह डूब गई।

रात बीत गई। सुबह की धुंध घाटी में से उठकर चारों ओर

फैलने लगी। सारा दोआब सवेरे ही जाग उठा था; कारण कि स्त्रियों को रेवड़ के साथ चरागाह जाना था। लेकिन तुरा-मो बुन्दे-शो के साथ अफीम के नशे में धुत्त थी। एक दूसरी ही दुनियाँ में वह पहुँच गई थी, एक अजीब और ऐसी दुनियाँ में जिसमें छायाएँ तैरती हैं। निस्सो को छोड़, गाँव में उसका और कोई खयाल नहीं करता था। लेकिन निस्सो और उसकी तीखी निराशा का ध्यान करने वाला तो कोई भी नहीं था। वह अपने घर के दरवाज़े पर निश्चल बैठी ढोर-डंगरों को गाँव से बाहर जाते देखती रही। गायों और भेड़ों के रेवड़ लोहे की घंटियों की आवाज़ करते धुंध में से प्रकट होते, और कुछ दूर जाकर फिर धुन्ध में ही विलीन हो जाते। तुरा-मो की गाय भी मानो अपने दुर्भाग्य से परिचित थी। बाड़े में से गरदन निकाल कर उदासी भरे स्वर में उसने क्रन्दन किया, और डबडबाई आँखों से अन्य डंगरों को जाता हुआ देखने लगी।

: ५ :

अनेक वर्ष बीत गये। पाँच, बल्कि इससे भी ज्यादा। पहिले के अन्य सभी वर्षों की भाँति इन सालों में भी दोआब के जीवन में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। कुछ लोग मर गये, और उन्हें चुपचाप दफना दिया गया। उनकी मृत्यु ने किसी गहरे अभाव की, या शोक की, रचना नहीं की। अनेक बच्चों ने जन्म लिया, और उनके जन्म पर कोई खास खुशियाँ नहीं मनाई गईं। हर कोई जानता था कि लोग उन पत्थरों के समान हैं जो ऊपर से लुढ़क कर नीचे खेतों में आ गिरते हैं,—खेतों से उन्हें चाहे जितना साफ करो, लुढ़क कर आने वाले दूसरे पत्थर उनकी जगह ले लेते हैं। दो चीज़ें थीं जिनकी गाँव में कभी कमी नहीं होती थी, एक तो लोगों की, दूसरे भूख की। तुरा-मो का घर भी इसका अपवाद नहीं था। लेकिन जब तक घर में बच्चे हैं, वे बढ़ेंगे भी और बड़े भी होंगे। फिर उनका जीवन चाहे जितना भी कठिन क्यों न हो।

निस्सो का जीवन भी पूर्ववत् चलता रहा। नदी से वह अब भी

पानी भर कर लाती, घास उबाल कर रसा तैयार करती, और घर का सारा बोझ संभालती। अगर कोई अन्तर दिखाई देता था तो यह कि उसके सलूके में अब पहिले से और भी ज्यादा पेवन्द लगे थ, और जैसे-जैसे वह बड़ी होती जाती थी, उसका सलूका छोटा होता जाता था, जिसे बड़ा करने के लिए वह उसमें टाट की नित्य नयी पट्टियाँ जोड़ती जाती थी।

निस्सो का हाथ कोई नहीं बटाता था। मजीद अब ग्यारह साल का हो गया था। चाहता तो घर का बहुत कुछ काम कर सकता था। लेकिन उसे अपनी गुलेल से और उससे निशाना साधने से फ़रसत नहीं मिलती थी। शहतूत के पेड़ों में फड़फड़ाते पक्षियों को वह अपना निशाना बनाता था, और उन्हें कच्चा ही हज़म कर जाता था। चट्टानों के पीछे छिप कर वह लड़कियों पर निशाना साधता था। एक बार जैबो के मुँह पर उसने इतने बड़े पत्थर से चोट की कि खून बह निकला, और उसके आगे के दो दाँत टूट गये। जैबो उस समय पड़ोसी की दीवार पर चढ़ कर अख़रोट तोड़ने में व्यस्त थी। वह नीचे गिर पड़ी, और अचेत होगई। यह तो कहो कि पड़ोसी पहलवान नज़र ने उसे पड़ा हुआ देख-कर उठा लिया। पहलवान नज़र भी शिकार का शौक़ीन था, और बकरी के चमड़े के जूते बनाना उसका धंधा था।

तुरा-मो उस दिन गाँव में नहीं थी। तुन्दे-शो के साथ अब उसने भी महा नदी की घाटी में जाना शुरू कर दिया था, और दोआब में अब वह विरले ही दिखाई देती थी। उसका अभाव भी गाँव में किसी को नहीं अखरता था। पहलवान नज़र लम्बे क़द और छरहरे बदन का अकेला आदमी था, मानो वह किसी पहाड़ी की चोटी पर खड़ी बुर्जी के समान हो। देखने में वह रूखा और कठोर मालूम होता था, लेकिन असल में उसका हृदय बहुत ही मुलायम था। जैबो को उसने अपनी बाहों में उठाया, और उसे बराद वैद्य के पास लेगया जो झाड़-फूँक के द्वारा सभी रोगों को दूर करने में प्रसिद्ध था।

बरादबेक ने जैबो के मुँह का घाव उंगली से कुरेदा, उसके मुँह में कोई तरल पदार्थ डालया और गले में एक तिकोना तावीज़ बाँध दिया। लेकिन इससे जैबो अच्छी नहीं हुई। उसका मुँह सूज गया, शरीर बुखार से जलने लगा और खाना खाने से उसने इंकार कर दिया,—छाछ तक वह नहीं लेती थी।

पहलवान नज़र अब उसे गाँव की सब से वृद्ध स्त्री ज़बरदार के पास ले गया। ज़बरदार ने चर्बी में पक्षियों की बीटों की राख और बूटियों का चूरा मिला कर जैबो के मुँह पर उसका लेप कर दिया। इससे जैबो को सचमुच आराम मिला, और अपनी आयु के अन्य बच्चों की भांति मुँह पर काला लेप चढ़ाये वह भी गाँव में घूमने-फिरने लगी।

जैबो को घायल करने के बाद निस्सो ने मजीद को डांटा, झिड़का, उसके कान खींचे, पर वह अपनी शैतानी से कभी बाज़ नहीं आया। जब भी झगड़ा होता, वह अपनी बहन की जमकर मरम्मत करने से नहीं चूकता।

मजीद निस्सो से गहरी घृणा करता था। वह उसे 'नाली का मेंढक' कहता था, और मौके-बे-मौके यह जताना नहीं भूलता था कि वह ग़ैर है, और उसकी माँ के टुकड़ों पर पल रही है। इस घर पर उसका कोई हक़ नहीं है, और यह कि एक दिन हर बात का वह उससे बदला लेगा, और उसे घर से निकाल बाहर करेगा।

मजीद निस्सो को परेशान करने की ताक में रहता। एक बार जब तुरा-मो एक सप्ताह के लिए लौट कर गाँव में आई, वह एक पत्थर के पीछे छिप गया और इस बात की इन्तज़ार करने लगा कि निस्सो नदी से पानी भर कर कब लौटती है। उसके दिखाई देते ही उसने सावधानी से निशाना साधा, और उसके सिर पर रखे घड़े के ठीक बीचोंबीच गुलेल से ऐसा पत्थर मारा कि घड़ा चकनाचूर हो गया। निस्सो सिर से पाँव तक पानी में भीग गई।

लाख सोचने पर भी निस्सो की समझ में नहीं आया कि घड़ा एका-

एक कैसे फूट गया। निश्चय ही 'नदी के देव' ने उसे किसी बात की सज़ा दी है, सहमे हृदय से उसने सोचा। घर पहुँचने पर तुरा-मो ने उसे इतनी बुरी तरह मारा कि वह अपने पाँवों पर खड़ी तक न रह सकी। रेंग-रेंग कर वह गाय के पास पहुँची और वहाँ निश्चल पड़ रही। रात को तुरा-मो के हृदय ने उसे कचोटा और यह देखन के लिए कि कहीं निस्सो मर तो नहीं गई, वह गाय-घर में पहुँची। निस्सो नींद में भी कराह रही थी। कराहने की आवाज़ से आश्वस्त हो, तुरा-मो वहाँ से लौट आई।

अगले दिन तुरा-मो और बुन्दे-शो फिर महानदी की घाटी में चले गये। उन्हें अब अफीम का इतना चस्का पड़ गया था कि उसके बिना वे रह नहीं सकते थे। निस्सो जब सो कर उठी तो उसका सारा बदन अकड़ रहा था। लेकिन दर्द की चिन्ता न कर वह पहलवान नज़र के पास पहुँची। उसे उम्मीद थी कि पहलवान नज़र पानी लाने के लिए उसे कोई बरतन दे देगा।

पहलवान नज़र उस समय अपनी बन्दूक के लिए गोलियाँ बना रहा था। लकड़ी के एक कठुवे में जौ के दाने रखे थे। प्रत्येक गोली के लिए वह गिन कर ठीक अठारह दाने उठाता, ताकि सब का वज़न बराबर रहे। फिर वह उन्हें एक निश्चित शक्ल में रखता और बड़ी दक्षता के साथ उन पर सीसे की परत चढ़ाता। पूर्वी घाटी के ख़ानाबदोशों से उसने यह सीसा खरीदा था।

दबे पाँव, सकुचाते-सकुचाते, निस्सो ने प्रवेश किया। पहलवान नज़र ने सिर उठा कर देखा। निस्सो की आँख के आस-पास चोट के निशान थे। सहानुभूति के साथ जीभ चटकाते हुए पहलवान नज़र ने जौ का कठुवा निस्सो के आगे सरका दिया और कहा, "यह लो, जी भर कर खाओ। क्या तुम्हारी मौसी गाँव में नहीं है?"

निस्सो ने चुपचाप गरदन हिला दी, और मुट्ठी भर जौ उठा कर मुँह में डाल लिए।

पहलवान नज़र ने कनखियों से उसकी ओर देखा। फिर उठा और कौने में से सूखे माँस का एक टुकड़ा लाकर निस्सो के हाथ में थमा दिया।

निस्सो ने घड़े के फूटने की घटना का ज़िक्र किया और सहज विश्वास से पूछा कि नदी का देव उससे क्यों नाराज है। एक क्षण सोचने के बाद उसने कहा, "तुम पूछती हो कि नदी का देव तुमसे क्यों नाराज़ है? तुम भी कितनी भोली हो! नदी का देव तुम से नाराज़ नहीं है। वह तो तुम से केवल छेड़खानी कर रहा था। मेरे पास दो घड़े हैं। उनमें से एक तुम ले लो।"

घड़ा पाकर निस्सो इतनी खुश हुई कि पहलवान नज़र को धन्यवाद देने का भी उसे ध्यान नहीं रहा। घड़ा लेकर वह तुरत घर लौट आई।

निस्सो की दुनियाँ घाटी पर छाए पथरीले पहाड़ों की दो ऊँची शृङ्खलाओं से घिरी थी। घाटी के बीच गर्जन-तर्जन करती एक पहाड़ी नदी बहती थी, जो अधर में लटकी एक भीमाकार चोटी के पीछे जाकर विलीन हो जाती थी। यह चोटी इधर की दुनियाँ को उधर की अनदेखी दुनियाँ से अलग करती थी। चढ़ाव की ओर नदी बहुत दूर तक दिखाई देती थी, उन जल-प्रपातों तक जो नदी के मार्ग में पड़ने वाली ऊँची-नीची चट्टानों के कारण बन गये थे। ठीक इसी जगह, जल-प्रपातों के निकट, इक्के-दुक्के वृक्ष-समूहों की हरी-भरी पृष्ठभूमि में नीले पहाड़ों की एक शृङ्खला दिखाई देती थी। इस पर्वत-शृङ्खला से परे, और इतनी दूर कि जिसका अन्दाज नहीं लगाया जा सकता, एक अन्य अज्ञात पर्वत-माला की चोटियाँ दिखाई देती थीं। और इनसे भी अधिक ऊँचाई पर हिम का चिर साम्राज्य छाया था जो सूरज की किरणों में चमचमाता, अधिकाधिक पीछे हटती हुई लहरों के समान, नीले क्षितिज के साथ घुल-मिल गया था। इस हिमाच्छादित प्रदेश से गर्मियों में ठंडी हवाएं आती थीं और जाड़े के दिनों में वे इस दुनियाँ को हिम के बादलों और धुंध से ढक देती थीं।

दोआब का गाँव जिसमें निस्सो ने जन्म लिया था, एक ऊँची चली गई पहाड़ी के पदतल में ढलुवान पर स्थित था। नीचे के खेतों तथा बगीचों में तेज़ नुकीले पत्थर लुढ़क कर गिरते रहते थे। एक तंग दर्रा जिसके बीच से एक उप-नदी बहती थी, दोआब को दो हिस्सों में बाँटता था। जाड़ों में यह उप-नदी हल्के कलरव के साथ बहने वाली एक सँकरी धारा बन जाती थी। गर्मियों में यह धारा एक ऊँची झाग उगलने वाली तेज़ बाढ़ का रूप धारण कर लेती थी और अपने गहरे ढलुवान किनारों की ओर लपलपाती तथा मार्ग में आने वाली चट्टानों पर से जल-प्रपातों की भाँति गिरती-उछलती बहती थी। नदी के पानी से बने स्थिर जल-कूपों में आसमान और चट्टानों के बीच उगी झाड़ियों तथा सँकरे नदी-मार्ग से पहाड़ी चारागाह की ओर जाने वाले लोगों या दोआब वापिस लौटने वाले गाँव के निवासियों की छाया बहुत ही साफ़ दिखाई देती थी।

निस्सो को अपने जीवन में कभी गाँव से बाहर जाने का अवसर नहीं मिला था, एक पहाड़ी चरागाह को छोड़ कर। लेकिन आयु में बढ़ने के साथ-साथ उसकी उत्सुकता भी अधिकाधिक बढ़ रही थी। वह जानना चाहती थी कि गांव की जिस दुनियाँ को नित्य वह अपनी आँखों से देखती है, उसके परे क्या है, एक तो उस दिशा में जिस ओर पहलवान नजर तथा अन्य शिकारी जाते थे, और दूसरे उस दिशा में जिसकी ओर बुन्दे-शो और, तुरा-मो जाते थे, नदी के किनारे-किनारे, पहाड़ी के उस पार।

बुन्दे-शो और तुरा-मो पहले हवा-भरी बकरी की एक खाल के सहारे नदी के बहाव के साथ-साथ तैर कर नदी को पार करते थे। अब उनके पास इस तरह की पाँच खालें थीं। इनमें से चार खालों की उसने एक तैरने वाली गद्दी बना ली थी, जिस पर तुरा-मो और बुन्दे-शो का गधा सवार हो जाते थे। पाँचवी खाल के सहारे खुद बुन्दे-शो तैरता था। एक हाथ से वह चार खालों वाली गद्दी को पकड़ लेता था, और झाग

उगलते-उफनते पानी के बीच उसे खेता चलता था। वापिसी के समय निस्सो की मौसी और बुन्दे-शो हमेशा पैदल लौटते थे, उसी रास्ते से जिससे कि एक दिन निस्सो की माँ रज़िया-सो किसी अनजान आदमी के साथ गाँव से विदा हुई थी।

निस्सो को लगता था कि उसे अपनी माँ की बहुत ही धुंधली-धुंधली न-मालूम-सी याद है। लेकिन सच तो यह है कि उसे अपनी माँ की कुछ भी याद नहीं थी, सिर्फ उन कहानियों को छोड़कर जो कि उसने पहलवान नजर से अपनी माँ के बारे में सुनी थीं। पहलवान नज़र हमेशा यही बताता था कि उसकी माँ तुरा-सो से कहीं ज्यादा सुन्दर और मुलायम हृदय की थी। माँ के बारे में सोचते समय निस्सो अपनी माँ के कल्पित चित्र को पहलवान नज़र के चेहरे के साथ खलत-मलत कर देती थी। वह ज़रा भी सुन्दर नहीं था, और रज़िया-सो के साथ उसके चेहरे का ज़रा भी मेल नहीं खाता था, लेकिन उसकी आँखों में ममत्व का बाहुल्य था। पहलवान नज़र और नीले सींग वाली गाय को छोड़कर निस्सो अब तक अन्य किसी की आँखों में इतने सीधे रूप में और विश्वास के साथ देखने का साहस नहीं कर सकी थी। लोगों से बात करते समय उसकी आँखें हमेशा या तो नीचे धरती पर टिकी रहती थीं या किसी अन्य दिशा में देखती होती थीं, मानो वह सबकी नज़रों से अपने-आप को बचा कर रखना चाहती हो।

नीले सींगों वाली गाय भी अब काफी दिनों से नहीं थी। अपना कर्ज़ चुकाने तथा अफीम की दो मात्राएं लेने के लिए वह खुद अपने हाथ से उसे बराद बेक को दे आई थी। बराद बेक ने गाय को किसी अजनबी के हाथ बेच दिया। अजनबी सियाताँग की बोली में बातें करता था, जिससे कि सब उसे समझ सकें। लेकिन निस्सो यह नहीं जान सकी वह कौन था। जो हो, गाय फिर कभी नहीं लौटी, न ही वह अजनबी फिर कभी दोआब में दिखाई दिया।

गाय को जब वह गाँव से ले जाने लगा तो निस्सो फुफकार कर

रो उठी। उसके हृदय का बाँध अब से पहिले कभी इस तरह खण्डित नहीं हुआ था। वह गाय के पीछे-पीछे भागती और अजनबी से विनती करती कि वह गाय को न ले जाये। लेकिन अजनबी केवल मुसकरा दिया, निस्सो के कंधों को उसने थपथपाया और काग़ज़ में लिपटी खाने की कोई चीज़ उसने निस्सो के हाथ में थमा दी। निस्सो ने पलट कर उसे अजनबी के मुँह पर दे मारा। गुस्से में अजनबी ने निस्सो की छाती पर घूँसे से आघात किया। वह गिर पड़ी, लेकिन फिर तुरत ही उठ खड़ी हुई और गाय के निकट पहुँचने की कोशिश करने लगी। अजनबी ने पत्थर उठा कर निस्सो का सिर फोड़ने की धमकी दी और निस्सो वहीं उसी स्थल पर खड़े होकर एकटक गाय को अपनी आँखों से ओझल होते हुए देखती रही।

: ६ :

वृद्ध शिकारी पहलवान नज़र के घर की सपाट छत धूप से गर्म थी। निस्सो इसी छत पर टांगें मोड़ कर बैठी थी और उसका तपा हुआ शरीर उसके कपड़ों में बने छेदों के भीतर से दिखाई दे रहा था। पहलवान नज़र के पास वह बहुत देर से बैठी थी, और बड़े-बूढ़ों की भाँति बातें कर रही थी।

"और किस तरह के लोग वहाँ रहते हैं, नज़र ?" निस्सो ने पूछा।

"और किस तरह के लोग...ज़रा उधर से वह सुई तो उठा कर दो, हाँ वही, जिसमें धागा नहीं है।" कच्चे चमड़े की एक महीन गीली पट्टी को दांत में दबा कर सीधा करते और फिर उसे उँगली में लपेटते हुए पहलवान नज़र ने बुदबुदा कर कहा, "और किस तरह के लोग ? हाँ तो सुनो, वहाँ रहते हैं रूसी..."

"ये कौन होते हैं ?"

"हमारे जैसे ही लोग हैं। फर्क इतना है कि वे ज्यादा पढ़े-लिखे हैं, मज़बूत और सम्पन्न हैं। वे बहुत-सी चीज़ें बनाना जानते हैं।"

"तुम्हारी बन्दूक क्या उन्हीं की बनाई है ?"

"नहीं, इसे बुखारा के लोगों ने बनाया था। उनके बारे में तुम्हें बता ही चुका हूँ। रूसी बन्दूक और भी बढ़िया होती है। अगर मेरे पास होती तो एक दिन में दस पहाड़ी बकरियों का शिकार करता।"

"वे कहाँ रहते हैं ?"

"वे कहाँ रहते हैं," कच्चे को चमड़े एक चपटे पत्थर पर रख कर गोल पत्थर से उसे रगड़ते हुए पहलवान नज़र ने कहा, "वे वहाँ रहते हैं, उधर..."

"उधर कहाँ ? वहाँ तो बर्फ ही बर्फ है। क्या वे बर्फ में रहते हैं ?"

"अरी पगली !" पहलवान नज़र ने कहा, "बर्फ में नहीं, वे उधर रहते हैं, पहाड़ों के उस पार, दूसरी तरफ़ !"

"पहाड़ों के उस पार क्या है ?"

"पहाड़ों के उस पार पहाड़ हैं, पहाड़ ही पहाड़, और पहाड़ों के बाद बड़े-बड़े सपाट मैदान।"

"बड़े-बड़े सपाट मैदान, हमारी चरागाह की तरह ?"

"अगर तुम अपनी चरागाह में उतनी ही बड़ी एक दूसरी, फिर तीसरी और जोड़ दो और इस प्रकार गर्मियों भर एक के बाद एक चरागाह जोड़ती जाओ, तब कहीं जाकर पहाड़ों के उस पार के मैदान से आधा बड़ा मैदान बनेगा।"

कुछ देर तक निस्सो चुपचाप एक के बाद दूसरी चरागाह जोड़ने का व्यर्थ प्रयत्न करती रही। फिर एकाएक बोली, "तो उतने बड़े मैदान में कितनी भेड़ें चरती होंगी ?"

"उतनी, जितने कि आसमान में तारे !" पहलवान नज़र ने जवाब दिया।

निस्सो कुछ देर चुपचाप बैठी पहलवान नज़र को देखती रही। जो उसके लिए मुलायम चमड़े का जूता सी रहा था। फिर उसने पूछा,

"और किस तरह के लोग रहते हैं उधर ?"

"यखबार भी उधर ही बसते हैं ।"

"क्या यही वे लोग हैं जिनके पास घोड़े होते हैं ।"

"घोड़े तो सभी के पास होते हैं, भोली निस्सो ! केवल दोआब निवासी हम जैसे ग़रीबों के पास घोड़े नहीं हैं । फिर हमारे यहाँ के रास्ते इतने सकरे हैं कि घोड़े काम भी नहीं दे सकते । यख़बार...याद है न, नीले सींग वाली तुम्हारी गाय को जो ले गया था, वह यखबार का निवासी ही तो था !"

निस्सो के माथे में बल पड़ गये । गुस्से में सलूके की कोर को सीधा करते हुए बोली, "बड़े बुरे लोग हैं वे !"

"मेरी निस्सो, भले-बुरे सभी तरह के लोग है इस दुनियाँ में ।"

"यख़बार सचमुच में बुरे हैं, उनकी बात मत करो !" निस्सो ने ज़ोर देते हुए कहा, "और वहाँ, उस तरफ, कौन लोग रहते हैं ?"

पहलवान नज़र की दृष्टि सामने की पर्वत माला की ओर उठ गई जिसकी तरफ निस्सो ने इशारा किया था ।

"उन पहाड़ों के दूसरी तरफ़ सियातांग है, वहाँ हमारे जैसे लोग रहते हैं । वे हमारी ही जाति के हैं । नदी के किनारे उनके पास एक किला है ।'

"किले में वे क्या करते हैं ?"

"कुछ भी नहीं । पहिले उसमें खान रहता था । लेकिन अब वहाँ कोई खान नहीं है, सो वह अब खाली पड़ा है ।"

"वहाँ अब खान क्यों नहीं हैं ?"

"वहाँ के लोगों ने खान को भगा कर अब अपना सोवियत-राज्य कायम कर लिया है । लेकिन अब ज़रा खड़ी होकर अपना पाँव तो दिखाओ ।"

निस्सो खड़ी होगई । पहलवान नज़र ने चमड़े के एक टुकड़े पर उसका पाँव रखकर उसके चारों ओर निशान बनाया । पांव का नाप देने के बाद वह फिर बैठ गई और लकड़ी के कठुवे में से एक खट्टा सेब

उठाकर चूहे ऐसे छोटे-छोटे तेज़ दांतों से उसे कुतरने लगी। बातों का सिलसिला चलता रहा। कान उसकी बातें सुनने में लगे थे और आँखें ध्यान से उन पहाड़ों को देखने में व्यस्त थीं जो उसके चारों ओर के दृश्य-जगत् को घेरे हुए थे। अन-देखी दुनियां के कौतुकपूर्ण धुंधले चित्र उसकी निर्मल चेतना में तैर रहे थे। एक साथ बीसियों सवाल उसके हृदय में उठ रहे थे और पहलवान नज़र धीरज के साथ उनका जवाब दे रहा था।

"मेरी मौसी कहाँ जाती है?" यकायक उसने पूछा।

"वह उधर जाती है, अजीज़ख़ान की अमलदारी में।" जवाब देते समय पहलवान नज़र की भौंहें चढ़ गईं।

"क्या वह ख़ान है?"

"हाँ, महा नदी के उस पार अभी भी ख़ानों का राज्य है।"

"क्या वह बहुत अमीर है?"

"पहले कभी था और रंग-रेलियों में जीवन बिताता था। जब भी उसके जी में आता, बड़ी-बड़ी दावतें करता, लेकिन अब ज़माना पलट गया है..."

"लेकिन दावतें तो वह अब भी देता है।"

"कभी-कभी, लेकिन तुमने कैसे जाना?"

"मैंने सुना है," बड़ों की भांति बात को टालते हुए निस्सो ने कहा, "मेरी मौसी वहाँ जाकर क्या करती है?"

पहलवान नज़र ने गहरी साँस छोड़ी और कोई जवाब नहीं दिया। निस्सो ध्यान से उसके चेहरे को देखने लगी जो अब हाथ में लिए अपने काम पर झुका था। सहसा वह हँसा, और जूते के ऊपरी हिस्से को निस्सो की आँखों के आगे करते हुए बोला, "यह देखो, बकरी की टांगें भी तुमसे ज्यादा मोटी होती हैं।"

"बात को टालो नहीं," निस्सो ने कड़े स्वर में कहा, "मुझे मेरी मौसी के बारे में बताओ।"

"मैं नहीं बताऊँगा !" वृद्ध ने खीज कर जवाब दिया, "बड़ी होने पर अपने-आप तुम्हें सारी बातें मालूम हो जाएंगी।"

"मैं अभी भी जानती हूँ," आकस्मिक कुत्सा में भर कर निस्सो ने कहा, "मैं जानती हूँ कि लोग उसे अफीम और खाने की चीज़ें क्यों भेंट करते हैं ?"

"चुप रहो। तुम्हें इन सब बातों से क्या मतलब ?"

"ठीक कहते हो। वह मेरी माँ थोड़े ही है। वह मेरी कोई नहीं है...!"

निस्सो ने सेब खाना बन्द कर दिया, और उसकी गरदन नीचे की ओर झुक गई। कुछ देर दोनों इसी तरह चुपचाप बैठे रहे। एकाएक निस्सो को याद आया कि घर की छत पर शहतूत सूख रहे हैं। उन्हें पलटना होगा। वह उठी और अपने घर की छत पर चढ़ गई। सलेटी छत पर काले और सफेद शहतूतों का कालीन-सा बिछा था और ऊमस-भरा वायुमण्डल उनकी भीनी सुगन्ध से महक रहा था।

: ७ :

शहतूतों को पलटने-सहलाने के बाद निस्सो ने छत से उतर कर नदी में न्हाने-तैरने का निश्चय किया। गर्मियों में नदी के ठंडे पानी में वह जी खोल कर स्नान करती थी। उसे किसी ने तैरना नहीं सिखाया था, लेकिन अपने अन्य पहाड़ी देश-वासियों की भाँति उसने भी सहज भाव से इस कला को सीख लिया था। एक दिन पानी की बात है, पानी के तेज़ बहाव का धक्का खाकर उसके पाँव उखड़ गए थे और वह बहाव के साथ तेजी से बह चली। और बिना किसी सहायता के हाथ-पाँव मार कर वह किनारे से आ लगी। उस दिन से गहरे पानी का डर सदा के लिए उसके हृदय से विदा हो गया।

पहाड़ी ढलुवान से नीचे जाने वाले पथ के निकट तीन भीमाकार चट्टानों से घिरा एक गहरा ताल बन गया था। इसमें पानी के बहाव का वेग अपेक्षाकृत कम था। नहाने-तैरने के लिए यह ताल निस्सो की

एक प्रिय जगह था।

निस्सो ने अपने छरहरे चपल बदन पर से कपड़े उतार कर पत्थर पर रख दिये, फिर अपने बाल खोल डाले, और पानी में कूद गई। फिर किनारे-किनारे चक्कर काट कर बाहर को निकली एक चट्टान पर छिपकली की भाँति लेट गई। चट्टान के किनारे तक खिसक कर उसने अपना सिर इतना आगे कर लिया कि वह पानी की सतह छूने लगा। पानी की हरी गहराइयों में आँखें गड़ा कर वह थिरकती हुई परछाइयों का खेल देखने लगी। उसने अपना हाथ पानी में डुबा दिया और उँगली के स्पर्श से पानी की सतह में पड़ने वाली लहरियों को देख-देख कर मन-ही-मन प्रसन्न होने लगी।

इस प्रकार न जाने कितनी देर तक वह पानी से खेल करती रहती, और नदी का कलरव कुछ अप्रत्याशित आवाजों के कारण फीका न पड़ जाता। चौकन्नी निस्सो ने तेज़ी से अपना सिर उठा कर देखा। लोगों का एक दल कतार बाँधे उस पथ से चला आ रहा था जिस पर लोग विरले ही चलते दिखाई देते थे। सब से आगे एक व्यक्ति बड़े से गधे पर सवार था।

दो-आब में इन अनजान लोगों का आना इतनी बड़ी और इतनी अनहोनी घटना थी कि निस्सो को उसने अभिभूत कर लिया। वह तुरत पानी में खिसक गई और उस पत्थर की ओर बढ़ने लगी जिस पर कि उसने कपड़े उतार कर रखे थे। वहाँ पहुँच कर, कन्धों तक पानी में डूबी, वह चट्टान के पीछे छिप कर देखने लगी।

रास्ता एकदम पानी को छूता हुआ गुज़रता था। लेकिन निकट आते जा रहे लोगों की नज़र निस्सो पर नहीं पड़ी। दल का नेता एक भारी-भरकम, मूँछ-दाढ़ी वाला, आदमी था। वह ढीले-ढाले सफेद कपड़े पहिने था। उसकी आस्तीनें इतनी लम्बी थीं कि कोहनी से लेकर एक-दूसरे में गुँथीं उसके हाथ की उँगलियों तक जो आगे की ओर उसके पेट पर रखी थीं, छोटी-छोटी घेरदार चुन्नटें पड़ गई थीं, ऐसा मालूम

होता था मानो लघुलहरियाँ नदी का किनारा छूने के लिए आगे बढ़ती हुई एक-दूसरे का पीछा कर रही हों ।

दल में सब से आगे एक युवक चल रहा था। उसके सिर पर पगड़ी नहीं थी। वह एक काला चोगा पहिने था और राह में पड़े पत्थरों को पाँव से बराबर हटाता जाता था जिससे कि गधे के ठोकर खाकर गिरने की सम्भावना न रहे।

सफ़ेद कपड़े पहिने वृद्ध सीधा अकड़ कर बैठा था, और उसकी सफेद दाढ़ी इतनी लम्बी थी कि निस्सो ने पहिले कभी नहीं देखी थी।

"सफेद पगड़ी, सफेद गधा, हर चीज़ सफेद ही सफेद !" निस्सो ने सोचा, "हो न हो, यह खान ही है जो आज हमारे गाँव में आया है !"

उसके पीछे अन्य सब लोग पैदल चल रहे थे। उनमें सब से पहिले के हाथ में एक चमचमाती हुई बन्दूक थी जो पहलवान नज़र की बन्दूक से बिल्कुल भिन्न थी, शेष सब अपनी कमर पर थैले लादे थे। ये सब नंगे पाँव थे और दो-आब के निवासियों जैसे ही मालूम होते थे। एक गधे पर भरपूर सामान लदा था।

ठंडे पानी में निस्सो का बदन काँप रहा था और वह, उत्सुकता पूर्ण दृष्टि से, ठीक अपने सिर के पास से गुज़रते लोगों के इस दल को देख रही थी।

गाँव के दिखाई पड़ते ही सफेद दाढ़ी वाले आदमी ने उस युवक से कुछ कहा जो आगे-आगे रास्ता साफ़ करता चल रहा था। सम्मान के साथ उसने सुना और फिर वह तेजी के साथ आगे बढ़ गया, सम्भवतः गाँव वालों को यह सूचना देने के लिए कि कितने बड़े आदमी का आज उनके यहाँ आगमन हो रहा है।

निस्सो पानी से निकल कर चट्टान पर चढ़ ही रही थी कि उसकी नज़र तुरा-मो और वुन्दे-शो पर पड़ी जो अजनबियों के दल के और अपने बीच काफी फासला छोड़ कर पीछे-पीछे आ रहे थे। निस्सो फिर पानी में छिप गई। वह नहीं चाहती थी कि तुरा-मो की नज़र उस पर पड़े।

तुरा-मो पूरे एक महीने से दो-आब से ग़ायब थी और निस्सो ने यह महीना आराम तथा आत्मविश्वास के साथ बिताया था। उसकी मौसी और वुन्दे शो अब फिर गाँव आ गये थे, वे चुपचाप चल रहे थे, और थके हुए दिखते थे। वुन्दे-शो के कन्धे पर केवल बकरी की खाल पड़ी थी। सदा की भाँति इस बार उसके कन्धे पर वह थैला नहीं था जिसमें वह खाने की चीज़ें भर कर लाता था। यह भी बुरा हुआ। अपनी सारी झुँझलाहट मौसी अब निस्सो पर ही उतारेगी!

उनके गुज़र जाने पर निस्सो पानी से बाहर निकल आई। घर जाने का उसका साहस नहीं हुआ। गाँव का चक्कर काटते हुए वह पहाड़ी ढलुवान पर चढ़ गई और एक झाड़ी के पीछे छिप कर देखने लगी। यहाँ से समूचा गाँव, उसके चौबीसों घर जो इतनी ऊँचाई से कब्रों की भाँति चपटे ढूह मालूम होते थे, दिखाई पड़ रहा था।

गाँव में भारी हल-चल मची थी, सभी स्त्रियाँ जो रेवड़ों के साथ चरागाह में चली गई थीं, छतों पर खड़ी तम्बूरे बजा रही थीं और गीत गा रही थीं। लोग बराद-बेक के आँगन में अतिथियों को घेरे हुए खड़े थे। बराद-बेक की व्यस्तता का कोई ठिकाना न था। समूचे गाँव में एक उसी का घर शहतूत के बगीचे से घिरा था। निस्सो ने देखा कि लोग दरियाँ और कालीन बिछा रहे हैं, भट्टियां सुलगी हैं और उन पर बड़े-बड़े देग चढ़े हैं। साफ मालूम होता था कि किसी भारी भोज की तैयारियाँ हो रही हैं।

आखिर सांझ का अँधेरा घिर आया। तम्बूरों और गानों की आवाज़ अब कुछ देर से शान्त थी। गाँव की हर चीज़ खामोश थी। सावधानी के साथ, पहाड़ी बकरी की भाँति, निस्सो नीचे उतर आई।

काफी देर होगई थी, लेकिन गाँव में अभी भी हर कहीं विचलित आवाज़ें सुनाई देती थीं। पहिले ही घर में निस्सो ने किसी स्त्री के रोने की आवाज़ सुनी। निस्सो को यह बड़ा अजीब मालूम हुआ। स्त्री को कोई दम-दिलासा नहीं देरहा था। आगे बढ़ने पर एक अन्य घर में से भी

रोने की आवाज़ आई। गाँव की बड़ी-बूढ़ी जबरदार भी हाथ उठा-उठा कर कोस रही थीं। निस्सो का हृदय काँप उठा। आखिर बात क्या है? दोपहर के समय ये सब अपनी-अपनी छतों पर खड़ी गीत गा रही थीं और तम्बूरे बजा रही थीं। लेकिन अब तो ऐसा मालूम होता था मानो किसी साँप ने सब को डस लिया हो।

निस्सो लुकती-छिपती अपने घर की ओर बढ़ चली। जब उसने देखा कि तुरा-मो अभी घर में नहीं है और मजीद तथा जैबो गहरी नींद में डूबे हैं तो वह भी चुपचाप जाकर लेट गई। लेकिन कोशिश करने पर भी उसे नींद नहीं आई। दिन-भर की घटनाएँ एक-एक करके उसके हृदय को कुरेदने लगीं। फिर उसे यह भी डर था कि सुबह होने पर मौसी की मार सहनी पड़ेगी।

आखिर नींद ने उसकी सभी आशंकाओं और डर पर विजय पाली। निस्सो नींद में खो गई।

: ८ :

सवेरा होने पर निस्सो की मौसी ने घर में प्रवेश किया, शान्त और स्थिर चित्त। निस्सो उस समय लोहे के एक खाली बरतन के किनारों पर नाख़ून घुमा कर उसमें से करर-करर की आवाज़ निकाल रही थी। मौसी की आहट पा वह अनायास ही चौकन्नी हो उठी और चिरपरिचित गुस्से तथा झिड़कियों की प्रतीक्षा करने लगी। वह झुँझलाएगी, उसे भला-बुरा कहेगी और अन्त में अपने हाथ की खुजली मिटाने से भी नहीं चूकेगी। लेकिन निस्सो जवाब में कुछ नहीं कहेगी। बस, अपनी बाँहों से मुँह ढक कर चुपचाप बैठी रहेगी। मजीद और जैबो एक कोने में सिकुड़े बैठे थे। उनकी आँखें कुत्सा से चमक रही थी।

लेकिन तुरा-मो कुछ डग आगे बढ़ कर रुक गई। उसने कुछ नहीं कहा। निस्सो ने अचरज में कुछ देर प्रतीक्षा की। फिर साहस बटोर कर मौसी को एक उड़ती नज़र से देखा।

तुरा-मो खूब साफ-सुथरी और चौचक्क थी। उसके बाल कंघी से

सँवारे और चोटियों में गूँथे हुए थे। उसके सफेद कपड़े धुले हुए थे और गीले ही उसने बदन में डाल लिए थे। होंठों को दाँतों से दाबे वह एकटक निस्सो की ओर देख रही थी।

'मौसी को आज क्या हो गया है ? वह इतनी शान्त और चुप क्यों है ?' निस्सो ने मन-ही-मन सोचा और लोहे के बरतन के किनारों पर और भी तेज़ी से नाख़ून घुमाते हुए करर-करर की कर्कश आवाज़ निकालने लगी।

"उठ, खड़ी हो !" मौसी ने शान्त स्वर में कहा।

निस्सो खड़ी हो गई। उसे लगा कि मौसी की झिड़कियाँ अब शुरू होने वाली हैं। लेकिन तुरा-मो ने केवल अपनी आस्तीन में से लकड़ी की एक कंघी निकाली और निस्सो के बाल सँवारने लगी। सावधानी के साथ बाल सँवारने के बाद तुरा-मो ने निस्सो के बालों को दो चोटियों में गूँथ दिया। फिर अपने पीतल के कड़े निकाल कर निस्सो की पतली कलाइयों में डाल दिये। इसी प्रकार काँच के काले दानों की माला भी अपने गले से उतार कर उसने निस्सो के गले में पहिना दी।

यह सब इतना अनहोना था कि निस्सो का हृदय खुश होने के बजाय आशंकाओं से भर गया। उसे लगा जैसे कोई बहुत ही महत्व-पूर्ण और दुःखद घटना होने वाली है। लेकिन उसने कहा कुछ नहीं, और आँखें झुकाए जो कुछ होना है उसकी प्रतीक्षा करने लगी।

मौसी ने दो कदम पीछे हटकर निस्सो को एक नज़र देखा। फिर, निस्सो की रूप-रेखा से संतुष्ट होकर, उसने कहा, "चलो मेरे साथ !"

मौसी ने निस्सो का हाथ पकड़ा और उसे घर से बाहर ले गई। निस्सो चुपचाप अपनी मौसी के साथ-साथ चलने लगी,—बन्दी बना लिए गए भेड़िये के बच्चे की भाँति जो ज़रा भी छेड़े जाने पर काटने के लिए तैयार रहता है।

पेड़ों से झड़कर नीचे गिरने वाले शहतूतों के लिए साफ़ की गई ज़मीन पर दरियाँ बिछी थीं। और वहीं, कम्बलों की गद्दी का तकिया

लगाए, समूचे रौब और शान के साथ, बराद बेक के परिवार से घिरा शाही अतिथि बैठा था। उसके सामने रूमालों पर शहतूत, खूबानियाँ और बादाम की गिरी रखी थीं। बराद बेक खुद अपने हाथों से एक पतली गर्दन वाली सुराही से चाय उडेल रहा था।

निकट आने का साहस न कर, निस्सो का हाथ मजबूती से पकड़े, तुरा-मो सम्मानपूर्ण फ़ासले पर खड़ी थी।

सफेद दाढ़ी वाले खलीफ़ा ने, जिसका काम इस्माइली धर्म के जीवित वली के लिए नज़राना वसूल करना था, अधमुँदी आँखों से निस्सो की ओर देखा। भय और क्षोभ से भरी निस्सो ने अपने चारों ओर नजर डाली। लेकिन जान बचा कर भागने का कोई रास्ता नहीं था। खलीफ़ा का नौकर, भौंहें चढ़ाए, तुरा-मो की बगल में, निस्सो के पीछे खड़ा था।

खलीफा ने निस्सो को निकट आने का इशारा किया, और पीछे खड़े नौकर ने उसे आगे की ओर धकेल दिया। खलीफ़ा ने आधा उठ कर, अपनी खुरदरी उँगलियों से निस्सो, के कँधों और बदन के दूसरे अंगों को दबा-दबा कर देखा।

"अज़ीज़ खान के लिए यह सर्वथा उपयुक्त है", खलीफ़ा ने कहा, "मेरी थैली लाओ, और वायदे के मुताबिक इस औरत की ज़रूरत पूरी करो।"

नौकर थैली ले आया और बराद बेक तुरा-मो के आँचल में कटोरा भर-भर कर सूखी अफीम डालने लगा। एक के बाद एक तीन कटोरे उसने डाले। तुरा-मो और अधिक की आशा करती थी।

"आपने तो पाँच कहा था," नम्र स्वर में उसने कहा।

"पाँच! लेकिन ये कपड़े क्या तुम्हें मुफ्त में ही मिले हैं! फिर तुम से साल-भर तक नज़राना भी तो नहीं लिया जायगा। लेकिन अच्छी बात है, इस लड़की के सौन्दर्य की खातिर एक कटोरा और ले लो, बस!"

निस्सो की ओर देखे ही बिना तुरा-मो वहाँ से चल दी। बाग के बीचोंबीच पहुँच उसने पलट कर देखा, और जोरों से बोली, "रोओ नहीं, निस्सो! तुम्हारा नया जीवन इतना अच्छा होगा कि उसकी तुम कल्पना भी नहीं कर सकती थीं।"

निस्सो वृद्ध खलीफा के सामने खड़ी थी। उसकी आँखें मुँदी थीं और आँसू की बूँदें एक-एक करके पलकों के नीचे से ढुरक कर धरती पर गिर रही थीं।

× × ×

उसी दिन शाम को काफिला गाँव से रवाना हो गया। बराद-बेक के चारों गधों पर नजराने में मिली चीज़ें लदी थीं। दोआब के दो आदमी गधों को हाँक रहे थे। गधों के पीछे तीन गायें, चार भेड़ें और ग्यारह बकरियाँ थीं। निस्सो, ठीक अपनी माँ, रज़िया-मो की भाँति, पैदल चल रही थी। खलीफा सबसे आगे एक सफ़ेद गधे पर सवार था। वह अत्याधिक प्रसन्न था कि लड़की को देखकर अज़ीजखान नाराज़ नहीं होगा। बुन्दे-शो ने उसके सौन्दर्य की जो तारीफ़ की थी, वह झूठी नहीं थी। खलीफा को विश्वास था कि और भी कुछ नहीं तो निस्सो के लिए चालीस मुद्राएँ उसे अवश्य मिलेंगी। दस वह खान को भेंट कर देगा, और बाकी अपने पास रखेगा।

दूसरा परिच्छेद

: १ :

नदी के दाहिने सोवियत तट वाली बस्तियों में नया जीवन शुरू हो चुका था। अभी सीमा बन्द नहीं हुई थी, और ऊँचे पहाड़ों में स्थित समूचे सोवियत प्रदेश के और महानदी के किनारे स्थित खानशाहियों के बीच जो कि पड़ोसी राज्य का सीमान्ती प्रान्त था, अभी भी सीधा सम्पर्क कायम था।

पहाड़ों के ग़रीब निवासियों ने सत्ता पर अधिकार करने के बाद अपनी सरकार कायम कर ली थी। इस सरकार की जड़ें महानदी के ऊपरी हिस्से की एक बड़ी बस्ती में केन्द्रित थीं। समूचे पहाड़ी प्रदेश में यह बस्ती 'वोलोस्त' कहलाती थी। 'वोलस्त' एक रूसी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है प्रादेशिक केन्द्र। इस उपन्यास में वर्णित घटनाओं से कुछ ही पहिले ऊँचे पहाड़ों से घिरे इस समूचे प्रदेश को भारी मुसीबतों में से गुज़रना पड़ा था। इस प्रदेश का सबसे बड़ा कसूर तो यही था कि वहाँ सोवियतों का राज्य था। फलतः वे साम्राज्यवादी ताकतें जो खानशाहियों को अपने चंगुल में दबोचे थीं, उसे अपना सहज निवाला समझती थीं। ऊँचे पहाड़ों में रहने वालों के पास हथियार नहीं थे, जिनसे कि वे अपनी रक्षा करते। सो वोलोस्त से उनका एक प्रतिनिधि-मण्डल रवाना हुआ और कभी पैदल तथा कभी घोड़ों की मदद से रास्ता पार करता रूसियों के पास पहुँचा। प्रतिनिधि-मण्डल के सदस्यों ने कहा, "अपने प्रदेश की रक्षा करने में हमें मदद दें। हमने हाल ही में उसे खानों के चंगुल से मुक्त किया है।"

इस कठिन यात्रा को पूरा करने में प्रतिनिधि-मण्डल को कई महीने लग गये, और उनके वापिस लौटने के शीघ्र बाद ही वोलोस्त के निकट एक ऊँची पहाड़ी पर स्थित रूसी दुर्ग में एक नये किस्म के लोगों का उदय हो गया। ये लोग पहाड़ों में रहने वालों के गरीब घरों में ज़बर-दस्ती घुस कर उनके बरतन-भाँडों को नहीं हथियाते थे और न ही उनके साथ बेहरमी से पेश आते थे। ये उन लोगों से सर्वथा भिन्न थे जो क्राँति के दिनों में सीमा पार कर दूसरी ओर भाग गये थे। खान के समर्थकों में अब इतनी हिम्मत तो नहीं थी कि खुलकर काम करें, लेकिन उनका घातक असर अभी भी बाकी था।

"खान के लिए हाड़-तोड़ मेहनत करते हुए अब हम अपनी जान नहीं देंगे!" खुशी में भर कर पहाड़ के निवासियों ने कहा, "अब जमीन पर हमारा अपना अधिकार है। उसे हम अपने लिए, अपने बच्चों के लिए, काम में लायेंगे।"

खान का तख्ता पलट कर ग़रीबों का संगठित और संयुक्त राज्य कायम होने की खबर अत्यन्त सुदूर दर्रों तक में फैल गई।

स्थानीय बड़े लोग, मुखिया और खान के सगे-सम्बन्धी, मुल्ला और उनके छोटे-मोटे गुर्गे, नदी को पार कर दूसरी ओर भाग गये।

"काफ़िरों का पापोश बन कर हम यहाँ नहीं रह सकते," जो उनके साथी नहीं भागे उनसे उन्होंने कहा, "और तुम में से अगर कोई काफ़िरों का साथ देगा तो उसे दोज़ख में भी जगह नसीब नहीं होगी। काफ़िरों को खुदा कभी माफ़ नहीं करता।"

लेकिन खानों, मुखियाओं, मुल्ला और मौलवियों के जुए से मुक्त लोग प्रसन्न थे कि अपने भाग्य के अब वे खुद मालिक हैं। जिस सुख के पहिले उन्हें सपने में भी दर्शन नहीं होते थे, वह अब उन्हें अपनी आँखों के सामने दिखाई देता था। उनका जीवन बदल रहा था, धीरे-धीरे और सुनिश्चित रीति से।

महा नदी के बाएँ तट की बस्तियों के जीवन में कुछ भी नहीं

बदला था। फसलों को दुलराने या झुलसा देने वाली मनमानी हवाओं की भाँति छोटी-मोटी खानशाहियाँ सर्व शक्तिमान बनी हुई थीं। उनके खिलाफ आवाज़ उठाना मानों विधि के विधान के खिलाफ़ आवाज़ उठाना था।

पहाड़ों से घिरी इन छोटी खानशाहियों में से एक यखबार कहलाती थी। इसका शासन अज़ीज़खान के हाथों में था। पुराने ज़माने में महा-नदी के उस पार स्थित सियातांग खानशाही पर अक्सर यखबारियों के धावे होते थे। सियातांग के निवासियों से वे जबर्दस्ती नज़राने वसूल करते थे, और सियातांग से अपने बंदियों को ग़ुलाम बनाकर ले जाते थे। लेकिन आगे चलकर एक ऐसा ज़माना भी आया जब रूसियों ने यख-बारियों को ऊँचे पहाड़ों के प्रदेश से महा नदी तक खदेड़ दिया और सियातांग, औपचारिक रूप में, रूसी राज्य का हिस्सा बन गया। लेकिन एक भी रूसी इन पहाड़ों में आकर नहीं बसा। इस निर्जन और निर्धन प्रदेश में ज़ारशाही सरकार की कोई दिलचस्पी नहीं थी।

सियातांग का सम्पन्न वर्ग अपनी ज़रूरत की तमाम चीज़ें सर्व शक्ति-मान ख़ान द्वारा शासित इलाके से खरीदता था। भीतरी प्रान्तों के सौदा-गर यखबार होते हुए सियातांग आते थे और रेशम, कपड़े, विलायती रंग, आईने और अफीम आदि बेचने तथा अपनी राइफलों के बदले में पहाड़ी नदियों के पानी से निखरे सोने के डलों, चीतों और भालुओं की खालों, और कभी-कभी सस्ती और सुन्दर लड़कियों को बटोर कर वापिस लौट जाते थे। यखबारी खान उनके मुनाफे का बारहवाँ हिस्सा चुंगी-कर के रूप में वसूल करता था। इस कर से उसे भारी आय होती थी और अपने पूर्वजों की भाँति सियातांग पर धावे करने की अब कोई ज़रूरत नहीं थी।

लेकिन सियातांग के सोवियत में जाने और धनी-मानी लोगों के भाग कर यखबार में शरण लेने के बाद सियातांग में सौदागरों का आना बन्द होगया था। यखबार में भी अब वे बहुत कम आते थे। कारण कि अकेले यखबारियों से ही अब वे पहिले जितना मुनाफा नहीं बटोर

सकते थे। फिर अपने धन तथा सम्पत्ति के मूल आधार से उखड़ कर यखबार में शरण लेने वाले सम्पन्न वर्ग के लोगों ने भी अब उनसे चीजें खरीदना बन्द कर दिया था। चीजें खरीदना तो दूर, उल्टे अपनी हर उस चीज़ को जो कुछ भी मूल्य रखती थी, वे खुद औने-पौने मूल्य में बेचने के लिए तैयार थे। सौदागर आते और अपने भाग्य को कोसते हुए लौट जाते। अज़ीज़खान का हाल भी पतला था। सौदागरों का आना कम होने के कारण उसकी आय भी अब कम हो गई थी, और भावी ग़रीबी के भय ने उसे उदास, चिड़चिड़ा और एकान्तवासी बना दिया था।

भीतरी प्रान्तों में अफवाहें गर्म थीं कि रूसी लोग चढ़ाई करने वाले हैं और युद्ध की लपटें यखबार को भी अपनी लपेट में ले लेंगी। अज़ीज़खान जानता था कि सर्व-शक्तिमान खान रूसियों से झगड़ा करने के पक्ष में नहीं है। लेकिन जब यूरोपीय देशों के खुफिया जासूस यखबार में आये तो खान ने उन्हें अपना आतिथ्य प्रदान किया और उन्हें अपनी ओर मिलाने की कोशिस करने लगा। लेकिन बावजूद बहुमूल्य भेंटों के अपनी ओर से उसने कोई वचन नहीं दिया। कारण, वह जानता था कि अगर उसने विजेता को चुनने में भूल की तो खानशाही को बचाना तो दूर, वह अपने सिर को भी सही सलामत नहीं रख सकेगा।

अज़ीज़खान आगाखां सम्प्रदाय का शिया था। वह उन मुसलमानों में से था जो विश्वास करते हैं कि मसीहा अली की रूह सुदूर बम्बई में रहने वाले तथा भारत, अफ़गानिस्तान, पश्चिमी चीन, फारस, बादाख्शां, एशिया माइनर और मिस्र के सुविस्तृत प्रदेशों में फैले अनुयाइयों के हृदयों पर राज्य करने वाले अड़तालीस इमामों के रूप में जीवित है। इस सम्प्रदाय के मतानुसार विश्वासी जन खुद अपनी दुआओं के सहारे खुदा तक नहीं पहुँच सकते थे, बल्कि इसके लिए उन्हें पीरों का सहारा लेना पड़ता है। अपनी समूची आय का दसवाँ भाग उन्हें इन पीरों की भेंट करना पड़ता है ताकि पीर उनके लिए दुआएं

करें।

यखबार में कोई पीर नहीं था। पहले वह सियातांग में रहता था। लेकिन सियातांग से भागने के बाद यखबार के बजाय उसने किसी भीतरी प्रान्त में रहना ज़्यादा पसन्द किया। खलीफा, जो कर उगाहने का काम करता था, यखबार में उसका प्रतिनिधि बन गया।

खान के बाद यखबार में सबसे ज़्यादा सम्मान तथा प्रभापूर्ण स्थान खलीफा का था। अज़ीज़खान ने उससे मित्रता बढ़ानी शुरू की। सुबह के समय दोनों एक साथ बैठकर कविताओं की रचना करते। पूर्व के अन्य सभी शासकों की भाँति अज़ीज़खान भी अपने को कवि समझता था। नारी-सौन्दर्य की कल्पना में डूबते-उतरते दोनों घन्टों बिता देते, या फिर वे सैकड़ों साल पहिले पीर-शाह नसीर-खुसरो रचित धर्म-ग्रन्थ का पाठ करते, जिसके गूढ़ अर्थ को केवल ज्ञानी-मानी लोग ही समझ सकते हैं।

अज़ीज़खान ने जब सुना कि सोवियत प्रदेश के दोआब गाँव में एक बहुत ही सुन्दर लड़की है जिसे वह सहज ही पा सकता है तो खलीफा ने उसे और भी बढ़ावा दिया। कहा कि अभी आप की उम्र ही कितनी है जो आप उन्हीं स्त्रियों पर सन्तोष करके बैठ जाएं जो अब पूर्णतया रस विहीन हो चुकी हैं। खलीफा ने यखबार जाकर लड़की को खुद अपने साथ लाने का भी वायदा कर लिया।

निस्सो, जैसा सुना था, वैसी ही निकली। बिना किसी आनाकानी के अज़ीज़खान ने खलीफा को चालीस मुद्राएं भेंट कर दीं। इससे अज़ीज़खान और खलीफा के बीच मित्रता और भी मज़बूत होगई।

खान ने निस्सो को अपने घर में जगह दी और उसे अपनी पत्नी बनाने में उतावलापन नहीं दिखाया। वह जानता था कि उसके शिकार को बचकर भाग निकलने का कोई अवसर नहीं मिलेगा।

अज़ीज़खान का भारी-भरकम घर महानदी के ऊपरी हिस्से में एक पहाड़ी पर स्थित था। यह नदी दो पर्वत मालाओं के बीच एक चौड़ी

घाटी में बहती थी। अजीज़खान का घर किसी प्राचीन दुर्ग की भाँति मालूम होता था। उसकी चहार दीवारी के कंगूरों से महानदी की समूची घाटी दिखाई देती थी। ऊँची चोटियों और गहरे ढलुवानों से भरी इस घाटी में छोटे-छोटे खेत और शहतूत तथा खूबानियों के बगीचे फैले थे। अज़ीज़खान के घर तक पेड़ के तनों की सीढ़ियाँ बनी थीं। भीतर जाने के लिए कमरों की छतों में चौकोर द्वार थे। ये द्वार इतने छोटे थे कि एक वक्त में एक ही आदमी उनमें प्रवेश कर सकता था। साथ ही वे इतने नीचे थे कि उनमें से गुज़रने के लिए अज़ीज़खान को दोहरा होना पड़ता था। अज़ीज़खान के पड़दादा ने जान-बूझ कर इतने सकरे द्वारों और कमरों को बनवाया था, जिससे कि दुश्मन उनके भीतर न तो कमान से तीर छोड़ सके, और न ही खंजर से वार कर सके। यह उन दिनों की बात है जब पड़ोसी खानों के हमलों का डर बराबर बना रहता था, और यखबार के खान लगातार दो रात तक किसी एक कमरे में सोना खतरे से खाली नहीं समझते थे। कारण कि छत में बने द्वारों से दुश्मन सहज ही उन्हें अपना निशाना बना सकता था।

लेकिन डर और आकस्मिक हमलों का वह युग एक मुद्दत हुई तभी बीत चुका था। अब अज़ीज़खान निश्चिन्त होकर अपने कमरे में या छत पर सो सकता था। यहाँ तक कि रक्षकों को रखने की भी अब ज़रूरत नहीं थी। कई साल से यखबार में कोई नियमित सेनाएँ नहीं थीं। खान का रिसालदार भी जो यखबारी घुड़-सवारों का मुखिया था, खान-शाही की एक सुदूर बस्ती में शान्ति मय जीवन बिताता था और उसके घुड़-सवारों को तितर-बितर कर दिया गया था। अज़ीज़खान उससे नाखुश था, और दोनों में कभी भेंट नहीं होती थी।

उसी पहाड़ी पर जहाँ अज़ीज़खान का घर था, एक-बग़ीचा था, जिसके पेड़ों की टहनियाँ दीवार के कंगूरों को पार कर नदी पर झुक आई थीं। बग़ीचे में हमेशा छाया रहती थी। अज़ीज़खान की अनुमति के बिना कोई भी बगीचे में प्रवेश नहीं कर सकता था, और नीचे घाटी

में अज़ीजखान के खेतों में काम करने वाले यहाँ के निवासी बगीचे की ओर आंख उठा कर देखने तक का साहस नहीं करते थे। वे जानते थे कि उनके स्वामी की स्त्रियाँ बग़ीचे में अपना अवकाश-काल बिताती हैं। बगीचे की दीवार के पीछे से उसकी पत्नियाँ, बड़ी आयु वाली भी और कमसिन भी, खुद तो समूची दुनियाँ को देख सकती थीं, लेकिन उन्हें कोई नहीं देख सकता था।

एक ज़माना था जब अज़ीज़खान के दादा नदी के दोनों किनारों पर राज्य करते थे। खुद उनके लड़के ने, अज़ीज़खान के पिता ने, उनकी हत्या कर दी थी। उन दिनों उनकी सम्पन्नता का वारापार नहीं था। लेकिन अब सब कुछ ढह और गिर रहा था। और उसे सँभालने का कोई रास्ता नहीं दिखाई देता था।

खुद अपनी प्रजा पर भी अज़ीज़खान का अब पहिले जैसा रौब नहीं रहा था। यह सही था कि उसकी बात काटने या उसकी बात मानने से इन्कार करने का अभी भी कोई साहस नहीं करता था, लेकिन फिर भी बहुत कुछ फर्क पड़ गया था। यखबार का गरीब-से-गरीब निवासी भी अब उसकी ओर एक दास की विनीत नज़र से नहीं, बल्कि बन्दी बनाये हुए भेड़िये की नज़र से देखता था। और यह एक ऐसी बात थी जो तुरत हृदय में खुबती थी। झुँझला कर अज़ीज़-खान सोचता, "ये लोग चाबुक से ही ठीक रहते हैं। गरदन से जुवा उतरते ही इनके दिमाग़ आसमान पर चढ़ जाते हैं...!"

धन और सत्ता के क्षीण हो जाने पर अज़ीज़खान का जीवन अब धार्मिक पुस्तकों और हरम के भीतर रंगरेलियों में डूब कर रह गया था।

: २ :

अज़ीज़खान निस्सो को देख रहा था और वह बड़ी दक्षता से भूसा तथा खाद मिला कर आँगन में गोल उपले पाथ रही थी।

जाड़ों के लिए ईंधन तैयार करने का काम इतने नौकरों में से कोई भी कर सकता था। लेकिन यह स्त्रियों का काम था और स्त्रियों को

खाली, बिना किसी काम के, नहीं रहने देना चाहिए। फिर निस्सो से वे चालीस मुद्राएँ भी वसूल करनी थीं जो उस के बदले खलीफा को दी गई थीं। खाना बनाना वह जानती नहीं थी, और अगर वह उसे अपनी पुरानी पत्नियों के बीच रखता तो आपस में अच्छा-खासा महाभारत मच जाता। उसे घाटी में काम करने भेजना भी खतरे से खाली नहीं था। डर था कि वह किसी आवारा मज़दूर से नज़रें न मिलाने लगे। सब से अच्छा यही था कि वह यहाँ काम करे।

निस्सो का स्वभाव बहुत ही जंगली था। हमेशा मुँह दूसरी ओर करके खड़ी होती थी, और सामने लाने या ज़रा हाथ लगाने पर नोचने-काटने लगती थी, मानो आदमी न होकर वह बाघिन हो। लेकिन कब तक, आखिर एक दिन अज़ीज़खान के सामने उसे भीगी बिल्ली बनना ही पड़ेगा।

अज़ीज़खान इन दिनों अपनी सभी पत्नियों से विमुख था। वह उन्हें पीटता था, उन पर चीखता-चिल्लाता था, और किसी को अपने पास नहीं फटकने देता था। और सभी को इसका कारण मालूम था। अगर उनका वश चलता तो वे निस्सो की बोटी-बोटी नोच डालतीं।

"यहाँ आओ निस्सो!" अज़ीज़खान ने शान्त स्वर में कहा।

आवाज़ सुन कर निस्सो चौंकी और नज़रें झुकाए अज़ीज़खान के सामने जाकर खड़ी होगई।

"क्या थक गई हो?" आँखें सिकोड़ते हुए अज़ीज़खान ने पूछा, "इधर बैठो, यहाँ मेरे पास।"

निस्सो चुपचाप एक चट्टान पर बैठ गई। अज़ीज़खान ने बटन-खुले अखबारियन कोट की जेब में अपना हाथ डाला, और मनकों की एक माला निकाल कर अपनी हथेली पर रखी। माला में झड़बेरियों जैसे लाल चमकदार दाने, हरे काँच के तिकोने नग और अगात पत्थर के काले चौकोर टुकड़े गुँथे थे, जिन पर आयतें अंकित थीं।

"लो यह तुम्हारे लिए ही है।"

निस्सो ने माला पर एक नज़र डाली और फिर अपना मुँह फेर लिया।

"इसे लेती क्यों नहीं ? क्या सुनाई नहीं देता ?" अजीज़खान ने झुँझला कर कहा, "अपना सिर ऊँचा करो !"

अज़ीज़खान ने खुद अपने हाथों से माला निस्सो के गले में डाल दी।

निस्सो के मन में हुआ कि माला को उतार कर फेंक दे। लेकिन अज़ीज़खान की आंखों में गुस्से की झलक देख कर वह रुक गई। फिर उसी जगह पर पहुँच कर जहाँ वह काम कर रही थी, उसने और भी ज्यादा तेज़ी तथा उत्साह से उपले पाथना शुरू कर दिया। अजीज़खान झुँझलाहट में भर कर काबू में न आने वाली इस लड़की की झुकी हुई पीठ की ओर देखता रहा। उसकी पीठ कुछ इतनी चपल और इतनी कमनीय थी कि अजीज़खान का हृदय उसकी सराहना किए बिना नहीं रह सका।

निस्सो को ऐसा मालूम हुआ मानो माला फाँसी के फन्दे की भाँति उसकी गर्दन में गड़ी जा रही है।

: ३ :

शरीयत के मुताबिक अजीज़खान चार पत्नियाँ रख सकता था। लेकिन इन चार पत्नियों की क्या बिसात, जब कि वह उनके अलावा अनेक रखैलों का भी स्वामी था। और ये रखैलियाँ भी नगण्य थीं उस जान-वाली लड़के जिगर के सामने जो उनके जी का जंजाल बना हुआ था और जिसे उन सब पर मनमानी करने की पूरी छूट थी।

पत्थरों की दीवारों के पीछे, अज़ीज़खान के घर के अँधेरे कोनों में, उस बाग़ में जहाँ सूरज की धूप में पके मीठे शहतूत पेड़ों से झड़ते रहते थे, पहाड़ी झरने से बने सुहावने ताल के किनारे, रसोई घर में जहाँ विभिन्न प्रकार के बढ़िया पकवान तैयार होते थे,—अजीज़खान अपनी सब से पुरानी पत्नी के दक्ष हाथों से बना भोजन बहुत पसन्द करता

था, और गायों तथा भेड़ों के बड़े-बड़े बाड़ों में, सब कहीं कानाफूसी का सिलसिला जारी था। ऐसी काना-फूसी जो घर के स्वामी का कृपा कटाक्ष पाने के लिए ईर्ष्या, घृणा, डर, लालसा और चालों में डूबी थी।

स्त्रियाँ जिगर से घृणा करती थीं, लेकिन काले बालों, भोले मुँह और शैतानी आँखों वाला यह युवक ही एक ऐसा था जो सजा पाने के डर से मुक्त था। वह अभी केवल तेरह साल का था। खुद अज़ीज़खान का अपना लड़का होने पर भी वह इतना निडर और आश्वस्त न होता जितना कि वह अब था। उससे कोई कुछ कहने का साहस नहीं करता था। न ही वह कोई काम करता था। नाराज़ होने पर वह किसी को भी पीट सकता था। बिना किसी से अनुमति लिए बाहर जाने की भी उसे छूट थी, और स्त्रियों से कोई भेंट मिल जाने पर वह उनके घर से खबर भी ला सकता था,—यह कि अमुक की माँ अच्छी है, कि अमुक बहन को पास की खानशाही से आया कोई अजनबी खरीद कर ले गया है, कि अमुक की भतीजी की कमर में जो घाव होगये थे वे अब अच्छे हो चले हैं। यह एक ऐसा काम था जिसके लिए अज़ीज़खान की स्त्रियाँ जिगर की सभी ज्यादतियों को सहने के लिए तैयार थीं।

लेकिन एक चीज़ थी जिसे जिगर भी नहीं छू सकता था। वह चीज़ थी निस्सो। एक बार उसने निस्सो के नर्म जूतों में उस्तरे का एक पैना टुकड़ा रख दिया था जिससे निस्सो का पाँव कट गया। इसके लिए अज़ीज़खान ने जिगर की बड़ी बेरहमी से खबर ली।

जिगर निस्सो से घृणा करता था। वैसे वह दिखाता तो यह था कि निस्सो से उसे कोई वास्ता नहीं है, लेकिन असल में वह उसकी प्रत्येक हरकत का अनुसरण करता था, और बराबर इस ताक में रहता था कि खान की नज़रों से उसे गिरा दे।

गाँव में निस्सो के अपने कोई सगे-सम्बन्धी नहीं थे। अन्य किसी काम के लिए भी उसे जिगर के आगे हाथ नहीं फैलाना पड़ता था।

दूसरी पत्नियों से वह बोलती तक नहीं थी। सो इधर की उधर लगाने का रास्ता भी बन्द था। और रात को, उस समय जब अज़ीज़खान उसे अपने कक्ष में ले जाता था, मालिक के सामने किस प्रकार वह पेश आती थी, यह कोई कैसे जान सकता था ?

फिर भी जिगर ने कुछ-न-कुछ सुराग लगा ही लिया। अज़ीज़खान की माँ को उसने घाटी से दो मेंढक लाते हुए देखा। छत की दरार में से उसने ताका कि बुढ़िया ने पीठ से पीठ सटा कर मेंढकों को बाँध दिया, फिर उनके पीले पेटों पर काजर से पान के चिह्न बनाए और उन्हें कढ़ाई में डाल कर तलने के बाद पत्थर की सिल पर पीसकर उनका चूर्ण बना लिया। अब यह क्या किसी से छिपा है कि इस चूर्ण से क्या काम लिया जायेगा।

जिगर ने सभी स्त्रियों में कानों-कान यह बात फैला दी। घर में अब किसी से यह छिपा नहीं रहा कि निस्सो अज़ीज़खान के वश में नहीं है। अगर ऐसा नहीं था तो दो हृदयों को एक बनाने वाले इस चूर्ण की फिर भला क्या जरूरत थी ?

खुद निस्सो को भी डर था कि चूर्ण का जादू कहीं उसे अपने वश में न कर ले। ठीक आधी रात के समय अज़ीज़खान ने उसके बालों में जब यह चूर्ण छिड़का तो उसने वृद्ध के हाथ में अपने दाँत गड़ा दिए और बाग़ के एक कोने में जहाँ गुभने वाले नोक-नुकीले पत्थरों का ढेर पड़ा था, भाग कर छिप गई। इस डर से कि कहीं वह उसे पकड़ न ले, अगले दिन दोपहर तक वह वहीं पर छिपी रही। लेकिन अज़ीज़खान ने उसकी खोजबीन नहीं की। वह दिन-भर अपने कमरे में ही बैठा रहा।

निस्सो की समझ में नहीं आया कि चूर्ण के असर से किसने उसकी रक्षा की। जो भी हो, उसने अब और भी अधिक दृढ़ तथा उद्धत बनने का निश्चय कर लिया।

अज़ीज़खान के घर में और इसी प्रकार समूचे पहाड़ी प्रदेश के जीवन में, अंध-विश्वासों, झाड़-फूँक और जादू-टोनों का राज्य था।

यह विश्वास सभी में फैला था कि महा नदी में अश्तरेकलाँ नामक एक देव रहता है, जिसके हाथों में लोगों की जान है। इसीलिए, बिना मंत्र पढ़े, रात के समय नदी किनारे जाने का कोई साहस नहीं करता था। और न ही इस बात में किसी को सन्देह था कि आये साल नदी में जो इतने लोग डूबते हैं, इसका कारण मंत्र की उपेक्षा करना या उसे पढ़ने में कोई गलती कर जाना है।

इसी प्रकार यह भी सभी को मालूम था कि जो स्त्री अच्छे बच्चों की माँ बनना चाहती है तो उसे नदी तट से थोड़ी दूर एक पहाड़ी दर्रे राहेदवन जाकर ढलुवान पर उगी झाड़ियों में से किसी एक पर अपने आँचल का एक भाग बाँध देना चाहिए। इस दर्रे में मलमल और जिघम की जो इतनी धज्जियाँ हवा में फहराती हुई दिखाई देती हैं, इसका यही रहस्य है। और इसीलिए अज़ीज़खान ने भी, अपनी लुंज-पुंज बूढ़ी माँ की देखरेख में, प्रतिवर्ष अपनी पत्नियों को राहेदवन जाने की छूट दे रखी थी।

एक दिन तेज हवा का झोंका आया और निस्सो के सिर से उसका सफेद रूमाल उड़ा कर लेगया। यह रूमाल खुद अज़ीज़खान ने उसे भेंट किया था। हवा में उड़कर वह नदी में जा गिरा। अज़ीजखान की बूढ़ी माँ किसी ऐसे ही मौके की खोज में थी। निस्सो से बोली, "अपने पुरखों के रास्ते से जो भटकता है, उसे कांटों में रहना पड़ता है। अजीज़ख़ान को अपने सिर-आँखों पर रखो। तीन दिन तक मेरी बात खूब सोच-समझ लो। और अगर वह रूमाल तुम्हारे सिर पर फिर से वापिस आगया तो समझ लेना कि विधाता की भी यही मर्जी है। अगर फिर भी तुम अपनी जिद्द पर अड़ी रहीं तो रात के समय एक गिद्ध आएगा और तुम्हारी आँखें नोंचकर ले जायेगा।"

तीन दिन और तीन रात निस्सो को एक पल चैन नहीं पड़ी। और चौथे दिन सुबह उठने पर जब उसने देखा कि सफेद रूमाल उसके सिर पर फिर मौजूद है तो भय के मारे वह बेसुध होगई। वृद्धा ने

उसके मुख पर पानी छिड़का और झुँझला कर कहा, "अब खुद अपनी आँखों से देख लिया न कि विधाता तुमसे क्या चाहता है ?"

निस्सो का हृदय टूट गया। उसे लगा कि विधाता के आगे सिर झुकाने के सिवा अब और कोई चारा नहीं है। लेकिन वृद्ध के प्रति उसके हृदय में इतनी अधिक घृणा थी कि अन्त में उसकी ही विजय हुई। रात को वह फिर उसके पास से भाग खड़ी हुई, रोती और बिलखती; "इससे तो यह कहीं अच्छा है कि गिद्ध उसकी आंखें नोंच कर ले जायें।"

निस्सो ने सारा दिन बाग के कोने में पत्थरों के पीछे छिप कर रोते और आँसुओं के बीच आकाश की ओर ताकते हुए बिता दिया। उसे आशंका थी कि जो कुछ उसने किया है, उसकी सजा देने के लिए किसी भी क्षण काले पँखों वाला भीमाकार पक्षी उस पर झपट सकता है।

लेकिन नीला आसमान पूर्ववत स्वच्छ बना रहा, उसमें किसी की काली छाया प्रकट नहीं हुई, उन छोटे-छोटे पक्षियों के सिवा जो घाटी के ऊपर मँडरा रहे थे।

: ४ :

जिगर निस्सो की काट करने में लगा था। एक दिन वह चीखता हुआ अज़ीज़खान के पास आया और बोला, "ज़रा चल कर देखिए अपनी निस्सो की करतूत। जिस पत्तल में खाती है, उसी में छेद करती है। वह अब चोरी भी करने लगी है।

जिगर अज़ीज़खान को बाग में, पत्थरों के पीछे निस्सो के छिपने की प्रिय जगह पर, ले गया। निस्सो उस समय वहाँ नहीं थी। जिगर के इशारे पर अज़ीज़खान ने पत्थरों के बीच एक दराज़ में झाँक कर देखा, और एक छोटा-सा बण्डल खींचकर बाहर निकाल लिया। बण्डल में अखरोट की गिरी, गेहूँ के दाने, जौ की रोटी के सूखे टुकड़े, सूखे हुए सेब और शहतूत के आटे का एक गोला था जो पानी से भिगोकर

सुखा लिया गया था। एक दूसरे चीथड़े में काँच के मनके, टूटे आईने का एक टुकड़ा, डोरे में बँधा एक तिकोना तावीज़ था, जो निश्चय ही अजीज़खान के बछड़े के गले में से उतारा गया था। हर नई चीज़ की ओर जिगर बार-बार इशारा करता था और अज़ीज़खान को भड़काने में जुटा था, "ओह कितनी चीजें छिपाकर रखी हैं उसने!"

अज़ीज़खान की भौंहों में बल पड़े थे। खुला हुआ बण्डल उसके सामने पड़ा था और वह सोच रहा था कि अब क्या किया जाये। एका-एक उसने जिगर से कहा, "जाओ, उसे यहाँ बुलाकर लाओ।"

जिगर तेज़ी से चला गया। वह खुश था कि आज निस्सो नहीं बच सकेगी।

अज़ीज़खान एक पत्थर पर बैठ गया। बेचैनी के साथ उसने सोचा, "क्या वह यहाँ से भागने की चिन्ता में है?' लेकिन तुरन्त ही उसने इस असम्भव विचार को रद्द कर दिया। उसे एक भी ऐसी घटना याद नहीं थी जब किसी यखबार स्त्री ने अपने पति को छोड़कर भागने का दुस्साहस किया हो। यह सच है कि स्त्रियों ने असा-धारण रूप में क्रूर अपने पतियों को एकाध बार छोड़ा भी है। लेकिन अपने पिता की रज़ामन्दी से। कारण कि जब तक पिता अपनी लड़की के बदले में लिया गया धन वापिस नहीं लौटाता, तब तक पति का उस पर अधिकार रहता है। और यखबार में ढूँढने पर भी शायद ही कोई इतना मूर्ख पिता मिले। अज़ीज़खान के जीवन के इस लम्बे अर्से में एक-दो बार ही ऐसा हुआ होगा। लेकिन निस्सो के तो कोई भी नहीं है,—न मां, न बाप। वह भागकर जायगी भी तो कहाँ? फिर बीच में इतनी बड़ी नदी पड़ती है। उसे वह कैसे पार करेगी? नहीं, वह भागने की तैयारी नहीं कर रही थी....!

"यह लीजिए, वह आगई," जिगर ने कहा। वह अपने हाथ में चाबुक भी ले आया था।

"इसे क्यों लाये हो?" चाबुक की ओर इशारा करते हुए अज़ीज

खान ने पूछा।

जिगर के होठों पर मीठी-हँसी खेल गई, "मैंने सोचा कि आपको इसकी ज़रूरत होगी।"

अज़ीज़खान ने धीरे-धीरे अपनी आँखें ऊपर उठाईं, और जिगर की ओर ध्यान से देखा। फिर, सहसा गुस्से में भर कर, जिगर के हाथ से चाबुक छीन लिया।

"कुफ्र है उस पर जिसने तुझे जन्म दिया!" चाबुक से जिगर के कंधे पर प्रहार करते हुए उसने कहा, "निकल जा यहाँ से!"

दर्द से चीख कर जिगर ने अपना कंधा पकड़ लिया। उछल कर वह पीछे हटा; और घर की ओर चल दिया। तभी निकट आती निस्सो पर उसकी नज़र पड़ी। उसने घूमकर देखा कि अज़ीज़खान की नज़र इधर तो नहीं है, फिर लपक कर निस्सो की छाती पर इतने ज़ोर से आघात किया कि वह बिलबिला गई। इससे पहिले कि अज़ीज़खान उधर देखता, जिगर पेड़ों के पीछे गायब होगया।

अज़ीज़खान की ओर साहस के साथ बढ़ती निस्सो अभी भी अपनी चोट को सहला रही थी।

"क्या इन चीज़ों को तुमने छिपा कर रखा है?" अज़ीज़ खान के स्वर में गुस्से का पुट था।

"हाँ," निस्सो ने जैसे चुनौती के स्वर में कहा।

"किसलिए?"

"खुद अपने लिए।"

"स्पष्ट ही मेरे लिए नहीं। लेकिन मैं जो पूछता हूँ उसका जवाब दो। बोलो, किस लिए? अगर जवाब देने का इरादा नहीं है तो फिर......देखती हो इसे!" चाबुक को एक झटके के साथ फटकारते हुए अज़ीज़खान ने कहा।

"यह लो, मारो मुझे!" घृणा से कांपते हुए स्वर में निस्सो ने

कहा, "देख क्या रहे हो, मारो मुझे !"

अजीज़खान ने तुरत कोई जवाब नहीं दिया। फिर अप्रत्याशित मुलामियत से बोला, "यहाँ आकर बैठो, मेरे पास। मैं गुस्सा नहीं करूँगा।"

निस्सो चुपचाप खड़ी रही।

"तुम चुप क्यों हो, निस्सो ? क्या तुम सचमुच मुझे इतना बुरा आदमी समझती हो कि बात तक नहीं करना चाहतीं,—या मुझसे डरती हो ?"

"नहीं, मैं तुमसे नहीं डरती। मुझे जाने दो।"

"एक मिनट ठहरो, निस्सो ! पहिले मेरी बात का जवाब दो। क्या तुम्हें यहाँ कोई दुःख है ? क्या तुम्हें जी भर कर खाने को नहीं मिलता? क्या बढ़िया कपड़ों की तुम्हारे पास कोई कमी है ? क्या मैं तुम्हारे साथ अच्छा बरताव नहीं करता ? क्या तुम समझती हो कि दो-आब में ये सब चीज़ें तुम्हें नसीब हो सकती थीं ? तुम्हारा हृदय काला है निस्सो, और तुम्हारी आँखों में जंगली बिल्ली की तरह शैतानी भरी है। तुम हमेशा किसी दूसरी जगह के सपने देखा करती हो। आखिर क्यों ?"

"तुम मुझे अपने कक्ष में बुलाते हो," निस्सो ने कहा, "जब कि मैं बाग़ में सोना चाहती हूँ।"

"वाह निस्सो, क्या तुम्हारा खयाल है कि मैं तुम्हें भी अन्य स्त्रियों की भांति ही समझता हूँ। किसी बुद्धिमान ने कहा है: "अगर तुम किसी के द्वार पर साल भर तक खड़े रहो तो आखिर पत्थर-से-पत्थर हृदय भी पिघल जायेगा, वह तुम्हें भीतर बुलायेगा और तुम्हारी मुराद पूरी होगी।" मैं तुम्हारा स्वामी और मालिक हूँ। मैं तुम्हें मारता नहीं, तुम पर हुकम नहीं चलाता, तुम्हारे द्वार पर धीरज के साथ खड़ा प्रतीक्षा करता हूँ। अपनी मर्ज़ी से जो कुछ भी तुम करती हो, क्या मैं उस में दखल देता हूँ ? क्या मैं तुम से कभी अपना भेद प्रकट करने के लिए तुम्हें मजबूर कर देता हूँ ? मिसाल के लिए एक इसी बात को लो।" और

खुले बण्डल की ओर अज़ीज़खान ने इशारा करते हुए कहा :

"इसका क्या मतलब है ?"

"ये तावीज़ मेरे हैं।" निस्सो ने तुरत कहा।

"ठीक है। तावीज़ तुम्हारे हैं!" अज़ीज़खान ने धीमे स्वर में कहा, "लेकिन ये खाने की चीज़ें ? —अनाज, रोटी, और आटा ?"

निस्सो तेज़ी से अज़ीज़खान की ओर घूम गई, "मैं कोई भेद नहीं छिपाती। खाने की चीज़ें मेरे मित्र के लिए हैं।"

"तुम्हारे मित्र के लिए ? तो तुम्हारा कोई मित्र भी है ?"

"हाँ, केकलिक (पहाड़ी तीतर) मेरा मित्र है।" वृद्ध की आँखों में छाए भाव से बेखबर निस्सो ने जवाब दिया, "मेरी आवाज़ सुनते ही वह मेरे पास आ जाता है। क्या इसमें कोई बुराई है ? क्या यह भी तुम्हें नहीं सुहाता ? तुम अपने को अच्छा आदमी कहते हो, लेकिन तुम्हारा वह जिगर शिकारी कुत्ते की तरह मेरे पीछे पड़ा है।"

अज़ीज़खान ने सन्तोष का साँस लिया। सीधे उसकी आँखों में देखते हुए निस्सो कहती गई : "तुम्हारे कपड़े, तुम्हारा खाना, और तुम्हारी स्त्रियों के हृदय में शैतान बसता है, तुम्हारा जिगर एक गन्दा ऊद-बिलाऊ है, और तुम्हारा घर काल-कोठरी से कम नहीं है। तुम मुझे चरागाह में नहीं जाने देते, तुम मुझे नदी में स्नान नहीं करने देते, तुम चाहते हो कि मैं यहाँ इसी चबच्चे में मेंढक की भाँति स्नान करूँ। तुम्हारे घर में सभी मुझे चोट पहुँचा कर खुश होते हैं, चोट पहुँचाने की ताक में रहते हैं। तुम बुरे आदमी हो, और मैं तुम्हारे पास नहीं रहना चाहती। मैं तुम्हारी बातें नहीं सुनना चाहती, तुम से कोई वास्ता नहीं रखना चाहती। इससे तो कहीं अच्छा है कि तुम मुझे मार डालो। मैं मरना चाहती हूँ। मुझे जाने दो!"

निस्सो छिटक कर अज़ीज़खान के पास से हट गई, और पास में ही एक ओर पड़े बड़े से चपटे पत्थर के बराबर में गिर कर दोनों हाथों से उसने अपना चेहरा ढक लिया।

तभी, पत्थरों के पीछे से, एक छोटा-सा भूरा केकलिक निकला, अपना सिर घुमा कर उसने इधर-उधर देखा और फिर तेज़ी से पत्थरों के ढेर के पास जाकर वह रुक गया। उसने अपना शरीर तान लिया; नीली झलक लिए अपने परों को उसने फड़फड़ाया और नज़र उठा कर एक बार अपने चहुँ ओर देखा। फिर 'तेके-के तेके-के तेके-के' की आवाज़ करता, पत्थरों पर से फुदकता, उड़कर वह निस्सो के पास पहुंच गया, और उसके कन्धे पर बैठ गया। निस्सो ने तेज़ी से घूम कर देखा, उसे पकड़ कर अपने हृदय से सटा लिया और उठ कर बाग़ के भीतरी हिस्से में भाग गई।

अज़ीज़खान वहीं खड़ा रहा। उसके चेहरे पर हल्की मुस्कराहट खेल रही थी। झुक कर उसने बण्डल को फिर से बाँधा और उसे पत्तों से ढक कर धीरे-धीरे घर की ओर चल दिया।

आँगन में अज़ीज़खान ने देखा कि जिगर चटाई पर पड़ा ख़ूबानी की गुठलियाँ थूक रहा है। उसे देखते ही अज़ीज़खान का गुस्सा उबल पड़ा और चाबुक फटकारते हुए उसके पास तेज़ी से पहुँचा, "काहिल की औलाद, अगर तूने ज़रा भी निस्सो का पीछा किया तो तेरी खैर नहीं। समझा!"

चाबुक की सनसनाहट सुन जिगर सकपका कर उठा, और सहमे हुए पिल्ले की भाँति वहाँ से भाग खड़ा हुआ।

: ५ :

धीरे-धीरे दिन और सप्ताह बीतते गये। इस तथ्य के सिवा कि केकलिक को अब मान्यता मिल गई थी, अज़ीज़खान के घर में और कुछ नहीं बदला था। केकलिक अब दिन-रात निस्सो के साथ लगा रहता। ऐसा मालूम होता था कि निस्सो को अब कोई परेशान नहीं करना चाहता। अज़ीज़खान भी बराबर इसका ध्यान रखता है। उसे आशा थी कि निस्सो अपने-आप धीरे-धीरे शान्त होकर यहाँ के जीवन की अभ्यस्त हो जायेगी। जिगर भी उसकी नज़रों में बुरा न बनने के लिए अब

प्रयत्नशील था। कम-से-कम वह दिखाता ऐसा ही था।

एक दिन निस्सो का केकलिक गायब होगया। निस्सो ने घर और बाग़ का कोना-कोना छान डाला। उसके मन में सन्देह हुआ कि जिगर ने ही केकलिक को गायब कर दिया है। लेकिन जब उसने दीवार पर चढ़ कर सामने से जिगर को केकलिक लिए आता देखा तो उसका सन्देह जाता रहा। आँगन को पार कर निस्सो पत्थर के प्राचीन द्वार के पास पहुँची।

"यह लो!" केकलिक को निस्सो की ओर बढ़ाते हुए जिगर ने कहा, "मैंने इसे उधर, दूर जाते हुए देखा, और तुम्हारी खातिर भाग कर इसे पकड़ लाया।"

निस्सो ने पक्षी को हृदय से लगा लिया और पहिली बार सच्चे हृदय से जिगर से कहा "धन्यवाद, जिगर!"

इसके कुछ दिन बाद केकलिक फिर गायब हो गया।

"अपने लिए एक साथी की खोज में अब इसने भटकना शुरू कर दिया है," जिगर ने कहा।

साँझ हो आई थी। बिदा होते हुए सूरज की गुलाबी रोशनी से दूर स्थित हिमाच्छादित चोटियाँ रंग गई थीं।

"मैं जानता हूँ कि वह कहाँ जाता है। वहाँ, उस खेत में!"

दीवार से, जिस पर कि दोनों चढ़ गये थे, नीचे की ओर इशारा करते हुए जिगर ने कहा, "जीनत-शो के उस घर को देखती हो न, जिसके चारों ओर चिनार के पाँच पेड़ लगे हैं। जीनत-शो के पास भी केकलिक हैं। मैं समझता हूँ, तुम्हारा केकलिक वहीं गया है। पिछली बार भी मैंने उसे वहीं पकड़ा था।"

"मेरा केकलिक!" निस्सो ने दुःखी हृदय से कहा, "रात को उड़ कर अगर वह उधर पहाड़ों की तरफ़ चला गया तो मैं क्या करूँगी?"

"तब तो उसे पाना मुश्किल होगा.........लेकिन सुनो निस्सो, मैं तुम्हारी मदद करूँगा...अज़ीज़खान खलीफा से मिलने गया है। यह तो

तुम जानती हो न ?"

"हाँ !"

"वह गई रात तक उस रास्ते से लौटेगा। तुम मेरे कपड़े और तुबेतका (कामदार टोपी) पहिन लो, और अँधेरा होते ही, दीवार के किनारे-किनारे वहाँ चली जाओ। तब तक अज़ीज़ख़ान नहीं लौटेगा। अगर आ भी गया तो मैं उसे खुश करने के लिए अपनी बाँसुरी बजाना शुरू कर दूँगा। उसे बांसुरी बहुत पसन्द है। उसे पता भी नहीं चलेगा कि कब में तुम आईं।"

"मुझे डर लगता है, जिगर ! अगर पता चल गया तो...?"

"डर कैसा ? तुम समझती हो कि मछली बिल्ली को निगल जायेगी ? लेकिन क्या कभी ऐसा हुआ है ?"

निस्सो ने दुविधा की। लेकिन जिगर ने उसे कुछ इतना विश्वास दिलाया और केकलिक के खो जाने का डर कुछ इतना अधिक था कि निस्सो ने, कम-से-कम एक बार, उस खुली दुनियाँ में जाने का निश्चय कर लिया।

एक पेड़ की टहनी पकड़ कर निस्सो नीचे उतर गई। सावधानी के साथ लुकती-छिपती, बाड़ों और खाइयों को पार करती, जौ के बण्डलों को पाँव से कुचलती, निस्सो गरीब किसान ज़ीनत-शो के खेत में पहुँच गई।

पास ही घास में किसी की सरसराहट सुनाई दी। निस्सो दुबक कर बैठ गई।

"कौन है ? क्या कोई चोर है ?" ठीक निस्सो के कान के पास किसी पुरुष की गुस्से में भरी आवाज़ आई।

निस्सो ने भागना चाहा, लेकिन किसी के मज़बूत हाथ ने उसे पकड़ लिया।

"मुझे छोड़ दो !" निस्सो ने दबी आवाज़ में कहा, "मैं चोर नहीं हूँ। मैं अपने केकलिक को खोज रही थी।"

"केकलिक ? कैसा केकलिक ? अरे, यह तो औरत है ? कहाँ से आई हो तुम ? यहाँ क्या कर रही थीं ?"

"मुझे छोड़ दो। इतने जोर से न बोलो ?" भयभीत निस्सो ने अनुनय के स्वर में कहा, "मैं...मैं...केवल चुप रहो...शोर न करो!"

यखवारी युवक ने निस्सो के चेहरे पर एक नज़र डाली, पर उसे छोड़ा नहीं।

"अगर तुम चोर नहीं हो तो डरने की कोई बात नहीं। रोज़ कोई आता है और खेत से बाजरे की बालें चुरा ले जाता है। आज पहिली बार आदमी के भेष में एक औरत को मैं देख रहा हूँ। तुम कहाँ से आई हो ? इतना काँप क्यों रही हो ? बैठ जाओ। शायद तुम मुझे भेड़िया समझ कर डर रही हो ? लेकिन सच तो यह है कि खुद तुमने मुझे डरा दिया था।"

निस्सो अब आश्वस्त होगई। उसका डर जाता रहा। जीनत-शो के सबसे बड़े लड़के करीम को उसने अपनी सारी कहानी सुनादी। सहानुभूति पूर्वक उसकी बातें सुनने के बाद उसने कहा, "लेकिन अब तुम जल्दी लौट जाओ। नहीं तो अजीज़खान तुम्हें जीता नहीं छोड़ेगा। और तुम्हारा केकलिक ? मुझे सन्देह है कि वह इधर आया होगा। अगर वह मुझे मिल गया तो अपने छोटे भाई के हाथ उसे अजीज़खान के पास भेज दूँगा।"

करीम ने निस्सो का हाथ छोड़ दिया। लेकिन अँधेरा होने पर भी उसकी आँखों से साफ पता चल रहा था कि निस्सो से वह इतनी जल्दी विदा नहीं लेना चाहता था। लेकिन वह उस खतरे से भी अच्छी तरह वाकिफ़ था जो निस्सो के देर करने से उस पर नाजिल हो सकता था।

"जाओ निस्सो," उसने कहा, "मैं तुम्हारे भले के लिए ही कह रहा हूँ। जाओ, देर न करो।"

निस्सो उसी रास्ते से लौट आई। उसका हृदय आशंकाओं से भरा था। धड़कते हृदय से वह पहाड़ी पर चढ़ने लगी।

: ६ :

पुरानी दीवार पर चढ़ कर शहतूत के पेड़ के सहारे निस्सो बाग़ में उतरना ही चाहती थी कि घर के आस-पास उसे असाधारण हलचल का आभास मिला। पत्तों और टहनियों के बीच से उसने देखा कि खुले बराण्डे में दो बड़ी-बड़ी मशालें जल रही हैं और एक तीसरी मशाल की रोशनी में बाग़ का कोना-कोना छाना जारहा है। बुढ़िया के कोसने-चिल्लाने की आवाज़ से बाग़ गूँज रहा था। निस्सो के हृदय में तुरत खटक गया, हो न हो, यह उसी की खोज की जारही है।

निस्सो को लगा जैसे उसका हृदय बठा जारहा है। वह दीवार से नीचे कूद गई और अंधेरे में पेड़ों की ओट में लुकती-छिपती घर की ओर चल दी। एकाएक अजीज़खान पर उसकी नज़र पड़ी। वह बराण्डे में बैठा था, कपड़े अस्त-व्यस्त, टांगे फैलीं और गरदन झुकी हुई। उसकी उँगलिया काली दाढ़ी के छोर को बटने और खोल कर सीधा करने में व्यस्त थीं।

निस्सो की समझ में नहीं आया कि वह क्या करे। सकपका कर वह पीछे हटी, और आखिरी पेड़ की ओट मे होगई। तभी वृद्धा झपट कर उसके ऊपर गिर पड़ी, और चीख कर बोली, "यह रही!"

निस्सो ने उसके चंगुल से निकलने का प्रयत्न किया, लेकिन अजीज़-खान की आवाज़ सुन एकदम सहम गई।

"यहां आओ!" अजीज़खान ने उससे कहा।

डरती-सहमती निस्सो बराण्डे की ओर बढ़ी। ऐसा मालूम होता था मानो अजीज़खान की नजर बरबस उसे अपनी ओर खींच रही हो। इस क्रूर नज़र के सिवा निस्सो को जैसे और किसी चीज़ की सुध नहीं थी। मशालों की परछाइयाँ उसके चेहरे पर, उसके गालों की चमकती हुई हड्डियों पर और उन होठों पर थिरक रही थीं, जिन्हें वह गुस्से से काट रहा था। लापर्वाही के साथ उसने हाथ से इशारा किया और सब लोग, जिनमें वृद्धा स्त्री भी शामिल थी, वहाँ से हट गये।

तभी जिगर घर के भीतर से निकल कर बाहर आया और बिल्ली ऐसे निशब्द डगों से अज़ीज़खान के पीछे आकर खड़ा हो गया।

निस्सो की स्थिति पिंजरे में बन्द चूहे की भाँति थी। अज़ीज़खान ने उसके पाँव की ओर देखा और कहा कुछ नहीं। लेकिन आँखों के नीचे उसके पोपटे रह-रह कर फड़क रहे थे। सहसा वह उछल कर खड़ा होगया, निस्सो की चोटी को पकड़ कर उसने अपने हाथ में जकड़ लिया और इतने ज़ोरों से खींचा कि वह दर्द से कराहती घुटनों के बल उसके सामने आ गिरी।

"कहाँ गई थी तू, जवाब दे!" दबे हुए गुस्से से अज़ीज़खान ने पूछा।

निस्सो अज़ीज़खान की सिकुड़ी हुई आँखों से भयभीत हो उठी।

"अपने केकलिक को खोजने। वह चला गया था।"

जिगर के चेहरे पर कुत्सित हँसी खेल गई। अपने लबादे के भीतर उसने हाथ डाला और केकलिक को बाहर खींचते हुए बोला, "यह झूठ कहती है। यह रहा इसका केकलिक, जो यहाँ से एक क्षण के लिए भी कहीं नहीं गया।"

अज़ीज़खान ने घूमकर जिगर की ओर देखा, टाँग पकड़ कर केक-लिक को उससे छीन लिया और उसे जिगर के मुँह पर मारते हुए चिल्ला कर कहा, "निकल जा यहाँ से!"

जिगर तेजी से नौ-दो ग्यारह हो गया।

"अगर तुम फिर झूठ बोली तो तुम्हारी जान की खैर नहीं!" केकलिक को उसकी आँखों के सामने झुलाते हुए अज़ीज़खान ने कहा, और फिर, अपने पूरे ज़ोर से, केकलिक को एक पत्थर पर पटक दिया।

केकलिक की गरदन टूट गई और वह वहीं ठन्डा होगया।

"बोलो, कहाँ गई थी तुम?"

"वहाँ...उस गाँव में," काँपती हुई आवाज़ में निस्सो ने जवाब दिया।

"किस लिए ?"

निस्सो क्या जवाब देती, केकलिक उसके पाँव के पास ही मरा पड़ा था।

"मेरी ओर देखो," बढ़ते हुए गुस्से के अनुपात में अपनी आवाज़ को दबाते हुए उसने कहा, "क्या गाँव में तुम किसी से मिली थीं ?"

"हाँ !"

"ज़हरीली नागिन ! मैं धोखे में था जो तुझे फूल की भाँति निर्दोष समझता था। लेकिन तू थी कि..."

अजीज़खान ने फिर उसके बाल पकड़ लिए और उन्हें अपने हाथ में लपेट कर खींचना शुरू किया। निस्सो के मुँह से एक धीमी सी चीख निकली।

"देखो, झूठ न बोलना," गुस्से से थरथराती आवाज़ में अजीज़खान ने कहा, "क्या नाम है उसका जिससे तू मिली ?"

"करीम, ज़ीनत-शाँ का बेटा !"

अजीज़खान ने अपने गुस्से को छिपाने की कोई कोशिश नहीं की। तेज़ी से वह उठा, दोनों हाथों की सांडसी बनाकर निस्सो की गरदन में डाली, और उसे ज़मीन से ऊपर उठा लिया।

"अब आगे-आगे चलो !"

दर्द, लज्जा और अपमान से त्रस्त वह चुपचाप चलने लगी। वह उसे अपने कक्ष में ले गया। वराण्डे के एक कोने में बुढ़िया खड़ी थी। उन्हें देखकर अपने पोपले मुँह से उसने एक चटकारा लिया, और दीवार के कुन्दे में फँसी मशालें उतार कर बुझादीं। घर और बाग तुरत अँधेरे में डूब गए। नदी से आने वाली ठंडी हवा बाग़ के पत्तों को सरसरा रही थी। वृद्धा कुछ देर अँधेरे में भूत की भाँति खड़ी निस्सो की सुबकियाँ और कराहने की आवाज़ सुनती रही। अन्त में उसने सन्तोष की एक साँस ली, और ज़नानखाने की ओर चल दी।

: ७ :

सुबह का आगमन हुआ,—सदा की भाँति शान्त और अपनी चिर परिचित ताज़गी लिए हुए। घाटी से तम्बूरों की पहिली आवाजें आने लगीं जिन्हें स्त्रियां पकी फसलों से पक्षियों को दूर रखने के लिए बजा रही थीं।

अज़ीज़खान बाहर वराण्डे में आगया। उसने चाय मंगाई और एक के बाद एक प्याला गले के नीचे उतारने लगा।

निस्सो कम्बलों के एक ढेर पर निर्जीव-सी पड़ी थी। उसकी धंसी हुई आँखें एक टक छत पर जमी थीं। रात को वृद्ध ने निर्ममता के साथ उसे मारा था। लेकिन सुबह की धुन्ध ने उसके दर्द को भी जैसे अपने में लपेट लिया था। अनेक बातें थीं जो उसकी समझ में नहीं आरही थीं। फिर भी एक बात साफ थी। वह यह कि अब उसके बचाव का कोई रास्ता नहीं है। दिन बीत जाने पर रात को वह फिर आएगा और...?

उस दिन अज़ीज़खान का घर असाधारण रूप में शांत था। ज़नान-खाने में भी उस दिन शान्ति रही, और अज़ीज़खान की स्त्रियाँ एक-दूसरे से नहीं लड़ीं। एक-दूसरे से बातें भी उन्होंने इतने दबे स्वर में कीं कि कोने में छिपे जिगर के पल्ले कुछ नहीं पड़ा।

अज़ीज़खान दिन में एक बार भी उस जगह नहीं आया जहाँ निस्सो पड़ी थी। और सांझ के समय उसने वृद्धा को आदेश दिया कि उसका कम्बल घर की छत पर पहुँचा दिया जाए।

रात को जब सब कोई अपने-अपने कक्षों में चले गये तो अज़ीज़-खान बाहर वराण्डे में निकल आया, दोनों हाथों से उसने ताली बजाई और अपने नौकर को धीमे स्वर में आदेश दिया। यह नौकर एक मैला-कुचेला, क्षीण काय, वृद्ध था। वह अज़ीज़खान के गरीब सम्बन्धियों में से था, जो अब अज़ीज़खान की झूठन पर गुज़र करता था और रात को गाय-घर के नज़दीक पत्थरों की एक छोटी-सी खोल्की में सो

रहता था।

वृद्ध लड़खड़ाता-सा दरवाजे की ओर बढ़ चला और गांव की ओर जाने वाले तंग रास्ते से नीचे उतरता हुआ आँखों से ओझल होगया। कुछ देर बाद करीम ने खान के मकान में प्रवेश किया। घर के कते-बुने सीधे-साधे मटियाले रंग के वह कपड़े पहने था। सिर पर वह तुबे-तका धारण किए था, जिसका रंग उड़ चुका था। अजीज़ खान के सामने वह रुक गया, प्रार्थना की मुद्रा में उसने दोनों हाथ अपने सीने पर रख लिए और कमर से झुक कर कहा, "शुक्र है अल्लाह का जो आपको सलामत रखता है। किस काम के लिए आपने मुझे तलब किया है?"

यह कह कर सम्मान और श्रद्धा की मुद्रा में वह निश्चल खड़ा हो गया।

"क्या मैंने तुम्हें बोने के लिए छै पाली अनाज नहीं दिया था?" अज़ीज़खान ने रूखे स्वर में पूछा।

"मैं शुक्रगुजार हूँ आपकी इस असीम उदारता का!"

"और पिछली साल क्या मैंने दो बोरी शहतूत की देनदारी से तुम्हें मुक्त नहीं कर दिया था?"

"आपकी बात ठीक है, मेरे अन्नदाता!"

"और क्या तुम्हारा घर मेरी ही जमीन पर नहीं खड़ा है, और उसके लिए क्या मेरी ही अनुमति से तुमने यहाँ से पत्थर नहीं बटोरे थे? क्या यह सब सच नहीं है?"

"यह सब सच है, मेरे मालिक!"

करीम की निश्चल आँखों में अब भय का संचार हो चला।

"और तुम हो कि अपनी आठ भेड़ों के मेमने भी अभी तक मुझे भेंट नहीं किए हैं?"

"मेरे मालिक, जो मुझे देना था, वह सब आपके आदमी मुझसे वसूल कर चुके हैं। इसके अलावा वसन्त के उत्सव के लिए भी वे तीन

मेमने मुझसे ले गए थे।"

"लेकिन उसका इस हिसाब से क्या सम्बन्ध?" अज़ीज़खान ने भौंहें चढ़ा कर कहा—"मेरे लिए नहीं, वह तो समूची रैयत के लिए वसूल किया गया था।"

"हाँ-हाँ, मेरे मालिक, वह समूची रिआया के लिए ही था," करीम ने तुरन्त सहमति जताते हुए कहा।

"अच्छा तो सुनो करीम," अज़ीज़खान ने कहा—"पिछली रात मैंने एक सपना देखा। सपने में खुद अल्लाहताला ने मुझे बताया कि केवल वही उनकी बरकत का हकदार हो सकता है, जो जीते-जी अपने सारे ऋणों को अदा कर पाक-साफ हो जाता है। उन्होंने खास तौर से मुझे तुम्हारी याद दिलाई कि तुम मेरे कर्जों की दलदल में फँसे हो। इससे निकलने का एक ही रास्ता है। वह यह कि तुम सेंतालीस सोने की और तीन ताँबे की मुद्राएँ अदा करो। तुम अब घर जाओ,—देखो, सूरज छिपना शुरू हो गया है, और उसके पहाड़ियों के पीछे चले जाने तक तुम्हें यह मुद्राएँ अदा कर देनी होंगी। नहीं तो रात के तारे अंगारे बन-कर तुझ पर टूट पड़ेंगे!"

करीम घुटनों के बल गिर पड़ा और अज़ीज़खान के चोगे के छोर को उसने माथे से लगाना चाहा। अज़ीज़खान ने झटक कर उसे अलग कर दिया।

"क्या सुना नहीं तुमने?"

"अल्लाह जानता है कि मेरे घर में फूटी कौड़ी भी नहीं है," निराश स्वर में उसने विनती की।

"देखते हो, राहे दवन के उस पार नगर की ओर रास्ता जाता है," अज़ीज़खान ने घृणा से कहा—"और उस नगर में अल्लाह की मर्जी की भाँति मज़बूत छड़ों से युक्त एक जेलखाना है, और इन छड़ों के भीतर इस दुनिया के अपराधियों को रखा जाता है। और तुम जो दलदल में डूबे हुए हो, निश्चय जानो कि सात बस्तियों का कल दारोगा सुबह तुम्हें

भी उसी रास्ते से ले जाएगा, अगर तुमने......."

अजीज़खान जानता था कि करीम अब कुछ नहीं कहेगा, न ही वह रात को भागने की कोशिश करेगा। फिर भाग कर जाएगा भी कहाँ,—यहाँ की पहाड़ियाँ भी उसे पनाह नहीं देंगी !

"जाओ !" अज़ीज़खान ने निर्ममता से कहा—"तुम्हारा भाग्य मेरे आदेश को पूरा करने पर निर्भर करता है !"

करीम उठ कर खड़ा हो गया, प्रार्थना की मुद्रा में उसने दोनों हाथ अपने सीने पर रखे, औपचारिक ढंग से कुछ बुदबुदाया और एक बार भी मुड़ कर देखे बिना दरवाज़े से निकल कर आँखों से ओझल हो गया।

: ८ :

"अब सब कुछ ठीक ही है !" छत पर सोने के लिए जाते समय अज़ीज़खान ने सोचा और किसी मज़हबी ग्रन्थ में कहे गए ये शब्द उसके कानों में गूंजने लगे—"मेरी इच्छा के बिना किसी के एक काँटा तक नहीं चुभ सकता, मेरी इच्छा के बिना एक धागा तक नहीं टूट सकता।"

उसने अपना चोगा और कमीज उतार दी, एक गहरी जमुहाई ली और कम्बल पर बैठ कर रात की शीतल हवा का आनन्द लेते हुए सोचने लगा—"मुझे अली से सच्चा प्रेम है, और इस प्रेम का ही यह फल है जो चाँद से लेकर मछली तक मेरा कहा मानते हैं।"

देर तक वह तारों की ओर देखता और उनसे अपना सम्बन्ध जोड़ता रहा। फिर उसे निस्सो का ध्यान आया—"अन्य स्त्रियों की भाँति वह भी मुझे पाकर अब अपने को धन्य मानेगी। उसका सारा बल ठंडा पड़ जाएगा। दो दिन तक मैं उससे कुछ नहीं कहूँगा, किसी बात के लिए उस पर जोर नहीं दूँगा। सभी स्त्रियाँ इसी प्रकार करती हैं। शीघ्र ही वह भी एक अच्छी पत्नी बन जाएगी......और करीम ? निश्चय ही वह मुद्राएं अदा नहीं कर सकता। भला, साँप के भी कभी

पर उगते हुए देखे हैं ?

एक भारी सन्तोष का उसने अनुभव किया। फिर एक लम्बी जमुहाई उसने ली और करीम, नगर के जेलखाने, निस्सो, चाँद-तारे और अली के बारे में सोचते-सोचते न जाने कब खर्राटे भरने लगा।

निस्सो सुनसान अंधेरे कमरे में अकेली पड़ी थी। अज़ीज़खान के खर्राटों की आवाज़ उसने सुनी। समूची साँझ तड़फड़ाते और तिलमिलाते बीती थी। उसकी वेदना इतनी अधिक बढ़ गई थी कि रह-रह कर दो ही चीज़ों की अब उसे याद आती थी, एक तो अज़ीज़खान की, जिसकी कल्पना मात्र से वह सिहर उठती थी, उसका हृदय घृणा से भर जाता था, दूसरे नदी के पानी में बसने वाले देव अश्तरे कलां की, जिसका शरीर सांप ऐसा था और पूंछ सुई की भाँति महीन और तेज़। उसके चार छोटी-छोटी टांगें थीं और गरदन के बाल सैंकड़ों दाढ़ियों के बराबर थे। उसके जबड़े के ऊपर पहाड़ी बकरी की भाँति पेचदार सींग थे और उनमें से मछली की रीढ़ की हड्डी की भाँति शाखाएं फूटती हुई थीं। निस्सो जानती थी कि जिस किसी को भी यह देव निगल लेता है, वह जीवित संसार से सदा के लिए विदा हो जाता है और अपने भले-बुरे कामों के अनुसार उसकी आत्मा पक्षी, साँप, मछली, पेड़-पौधे या बिच्छू बन जाती है।

सांझ के समय अज़ीज़खान ने उससे कहा था, "मैं रात को तुम्हारे पास आऊँगा। सीधी तरह से पेश आना। अपने इन दुर्बल हाथों से तुम अपने को कब तक बचा सकोगी।"

पहिले तो निस्सो अज़ीज़खान को मनौतियाँ मनाती और कोसती रही, अब वह चाय पी रहा है। अल्लाह करे वह उसके गले में अटक जाए और उसकी आँखें बाहर निकल आएं! वह अब उठ रहा है, अल्लाह करे धरती फट जाए और वह उसमें समा जाए! वह जीने से छत पर जारहा है, अल्लाह करे जीना टूट जाये और उसका सिर पत्थर से टकरा कर चकना चूर हो जाये! अब वह छत के किनारे पर खड़ा

है, अल्लाह करे आँधी का झोका आए और उसे उड़ा कर लेजाए या नीचे धकेल दे......।

लेकिन बृद्ध के गले में न तो चाय अटकी, न ज़ीना टूटा, और न हवा के झोंके ने उसे धक्का देकर नीचे गिराया !

सहसा निस्सो ने सोचा कि जब वह उसके पास आएगा तो वह एक दम शान्त रहेगी, और जब वह सो जायेगा तो अपने नाखन उसकी गरदन में गड़ा देगी । लेकिन वह आया नहीं, छत पर ही सोगया । उसके खर्राटों की आवाज़ आरही थी । निस्सो का हृदय फिर निराशा से घिर गया । उसे लगा कि उसके लिए अब कोई रास्ता नहीं है । और वह नदी के पानी में बसने वाले देव अश्तरे कलां के बारे में सोचने लगी ।

अज़ीज़खान का खर्राटे लेना अब बन्द हो गया था । निस्सो को उसके छत पर टहलने की आहट मिली । उसके सलीपरों की आवाज़ आ रही थी ।

एकाएक निस्सो की सारी दुविधा दूर हो गई । उसने कम्बल उतार कर धीरे से दूर फेंक दिया, जल्दी से कपड़े पहिने और अंधेरे में हर आहट को सुनती दरवाज़े की ओर चल दी । बाग की सरसराहट को छोड़ अन्य सब कुछ पूर्णतया निस्तब्ध था ।

चुपचाप बाग को पार कर बाईं ओर के सींखचों वाले दरवाज़े पर वह चढ़ी और खिसक कर दूसरी ओर उतर गई । नंगे पाँव, तेज़ डगों से, घाटी में पहुँच कर उसने साँस ली, और कान लगा कर आहट सुनने लगी ।

अभी भी सब कुछ शान्त था । कोई उसका पीछा नहीं कर रहा था । किसी कुत्ते के भौंकने तक की आवाज़ नहीं आई । केवल कहीं दूर से किसी गधे के रेंकने की आवाज़ आरही थी ।

निस्सो फिर चुपचाप चल पड़ी । पत्थरों को फांदती वह नदी किनारे पहुँची । आगे को निकली चट्टानों से टकरा कर नदी का पानी उफन

और गरज रहा था। निस्सो को ऐसा लगा मानो झागों के बीच उसे अश्तरे कलां की काली पीठ दिखाई दी हो। भय का एक तेज़ नश्तर-सा उसके हृदय में चुभा और एक क्षण के लिए वह सकपका कर पीछे हट गई।

"आह, कहाँ गई कम्बख्त !"

रात की निस्तब्धता को बेध कर अज़ीज़खान की तेज़ आवाज़ आई और उसकी गूँज पहाड़ों में फैल गई। निस्सो आगे बढ़ कर फिर चट्टान के किनारे पर आगई। वहाँ, चट्टानों के बीच, अश्तरे कलां के दांत बिजली की भाँति कौंधे। निस्सो का भय अब सभी सीमाएं पार कर गया था। उसके मुँह से एक हृदय वेधी-चीख निकली, और अगले ही क्षण वह नदी में कूद पड़ी।

लेकिन निस्सो डूबी नहीं। ठीक उसी समय जब कि उसे लगा कि वह अश्तरे कलां के पेट में समाती जारही है, ठन्डे पानी के स्पर्श का उसने अनुभव किया और उसकी सहजवृत्ति जाग्रत होगई। उसकी बाहें अपने-आप चिर परिचित हरकत करने लगीं, और कुछ देर तक लहर के साथ बहने के बाद वह ऊपर तिर आई। गहरा सांस लेकर उसने अपने फेंफड़ों में हवा भरी, और नदी के तेज बहाव के साथ तैरने लगी।

निस्सो ने घूम कर देखा। नदी का वह किनारा, किनारे से ऊँची उठती चली गई वह पहाड़ी, और पहाड़ी, के ऊपर स्थित अज़ीज़खान का मकान और उसकी पृष्ठभूमि में तारों जड़ा आकाश,—सभी कुछ पीछे छूटता जारहा था।

पानी अत्यधिक ठण्डा था। निस्सो जानती थी कि उसकी शक्ति शीघ्र ही चुक जाएगी। उसके चारों ओर पानी-ही-पानी था। नदी का कोई कूल-किनारा नहीं दिखाई देता था। उसके शरीर में कंपकंपी-सी दौड़ गई, और उसे ऐसा लगा मानो उसके हाथ-पांवों की जान निकल गई हो। भय ने उसे फिर घेर लिया। लेकिन यह एक दूसरे प्रकार का

भय था,—एक ऐसा भय जो जीवन के लिए लड़ने की प्रेरणा देता है। जब उसके हाथ-पांव निशक्त हो जाते तो पानी उसे अपनी लपेट में लेने के लिए आगे बढ़ता, लेकिन जीवन की प्रबल आकांक्षा भीतर से ज़ोर मारती, निस्सो के हाथों में गति आ जाती। यह अनुभूति कि वह डूब रही है, उसे बल देती और नीचे से ऊपर आकर वह फिर तैरने लगती।

संयोग से निस्सो एक ऐसी जगह पहुँच गई, जहाँ पानी छिछला था और तलहटी में तथा चारों ओर जहाँ-तहाँ पत्थर पड़े थे। निस्सो का पाँव एक पत्थर से टकराया और, वह कराह उठी। पानी का तेज़ बहाव उसे पत्थरों के बीच घसीट ले चला। उसने पत्थरों को पकड़ना चाहा, लेकिन सफल नहीं हो सकी। आखिर नदी ने एक तेज़ मोड़ लिया, और निस्सो को एक ओर पत्थरों पर फेंककर पानी का तेज़ धारा आगे बढ़ गई। शक्ति क्षीण होजाने के कारण निस्सो बेसुध हो गई थी।

जब निस्सो को होश आया तो उसने देखा कि वह एकदम सूने, अनजाने किनारे पर पड़ी है। उसने खिसक कर तट से और ऊपर चढ़ना चाहा, लेकिन वह इतनी कमज़ोर हो गई थी कि अधिक हिल-डुल न सकी। वह फिर आँखें बन्द करके लेट गई और काफी देर तक इसी प्रकार पड़ी रही। फिर उसने अपने माथे और बालों पर हाथ फेरा और कोहनियों के बल उठकर बैठ गई। चारों ओर पहाड़ों की काली चोटियाँ और सुनसान खोहें दिखाई देती थीं। उसने नदी के उस पार बहुत दूर तक देखने की कोशिश की। दूसरे किनारे पर उसे कुछ रोशनियां टिमटिमाती हुई दिखाई दीं। उसने और ध्यान से देखा। रोशनियां हरकत कर रही थीं। सहसा उसने अनुभव किया कि नदी को पार कर वह अब दूसरे किनारे पर आगई है, और वह अजीज़खान का बाग था जहाँ उसे रोशनियाँ दिखाई दी थीं। हो सकता है, वे उसकी ही खोज कर रहे हों।

निस्सो एक बार फिर भय से सिहर उठी। लेकिन एक हलकी सी हँसी के साथ उसने इस भय को दूर कर दिया। सिहरन का असली कारण भय नहीं, बल्कि यह था कि उसका बदन भीगा हुआ था।

निस्सो का सारा बदन चोट और खरोंचों से भरा था। एक सूखे पत्थर पर पहुँचने के लिए जैसे ही उसने ज़ोर लगाया कि उसकी कमर दर्द कर उठी। अगर ऐसी हालत में आकर उन्होंने उसे पकड़ लिया तो क्या होगा ? उसने खड़े होने की कोशिश की, पर ताकत ने साथ नहीं दिया। ज़मीन पर लेट कर वह रेंगने लगी। उसके सिरके ऊपर भारी भरकम चट्टानें लटकी थीं।

निस्सो ने बाहर को निकली चट्टानों से बनी एक गहरी खो में शरण ली। वहाँ वह चुपचाप पड़ी रही, और आखिर गहरी नींद ने उसे अपनी गोद में दबोच लिया।

: ६ :

सूरज की रोशनी वहाँ इनी-गिनी किरनों के रूप में ही प्रवेश कर पाती थी। सभी ओर निस्तब्धता छाई थी, और नदी के पानी की अनवरत गुंजार इस निस्तब्धता को और भी घनीभूत कर रही थी। निस्सो नींद में भी ठण्ड का बराबर अनुभव कर रही थी। उसका सारा बदन बुरी तरह दर्द कर रहा था।

सहसा सूरज की गर्म किरन ने उसके कपोल का स्पर्श किया। निस्सो ने अपना सिर बाहर निकाल कर भयभीत नजर से इधर-उधर देखा : चट्टानों से और ऊपर, फिर नीचे की ओर। नदी के धुंधले भूरे पानी के सिवा उसे और कुछ नहीं दिखाई दिया। प्रसन्नता से उसने अपनी आँखें आधी मूंद लीं, सूरज के सुहावने स्पर्श का उसने अनुभव किया, और लाल तथा हरे तिरमिरे उसकी आँखों के सामने तैरने लगे।

निस्सो रेंग कर बाहर निकल आई, और सूरज की किरनों में अपना बदन सेंकने लगी। अब वह कुछ शान्ति से सोच सकती थी। सामने, नदी के दूसरे किनारे पर, गाँव के बगीचों की हरियाली नजर आ रही

थी। ऊँचे चल कर वह पहाड़ी थी, जिस पर घृणित अजीज़खान का घर खड़ा था। क्या सोचते होंगे वे उसके गायब हो जाने के बारे में? क्या वे अभी भी उसकी खोज कर रहे होंगे? गाँव, बगीचे और नदी का तट, सभी शान्त थे। लोग खेतों में काम कर रहे थे। ध्यान से देखने पर निस्सो को एक गधा दिखाई दिया जो अजीज़खान के घर की ओर जाने वाले पथ से पहाड़ी पर चढ़ रहा था। गधे पर भारी बोझ लदा था, और काला चोगा पहिने एक आदमी उसे हाँक रहा था। दीवार या घर की छत पर कोई आदमी नहीं दिखाई देता था। और सब से अजब बात तो यह थी कि इस घर की ओर देखते समय निस्सो को भय ने आक्रान्त नहीं किया। लेकिन भय से मुक्त होने की यह भावना निस्सो में एकाएक नहीं आगई थी। निस्सो के हृदय और मस्तिष्क में पहली सहज प्रतिक्रिया तो यही हुई थी कि कहीं वे उसे देख न लें, कहीं वे अभी भी उसकी खोज न कर रहे हों? और जल्दी से खिसक कर वह एक ऐसी चट्टान पर पहुँच गई जो दूसरे किनारे से दिखाई नहीं देती थी। उसे लगा कि वे आसानी से उसका पीछा नहीं छोड़ेंगे। उसे दूर, बहुत दूर, कहीं ऐसी जगह चले जाना चाहिए जहाँ उसका कोई पता न पा सके!

ऊँची पहाड़ियों के बीच निस्सो को एक पथ दिखाई दिया जो यहाँ, नदी-किनारे की चट्टानों में आकर, खोगया था। निस्सो उसे ध्यान से देखने लगी। पथ खतरनाक था, पहाड़ियां एकदम ऊँची उठती चली गई थीं। लेकिन निस्सो ने दुविधा नहीं की। एक बार उसने चारों ओर देखा, ढलुवान के पद-तल में वह पहुँची, और उसने ऊपर चढ़ना शुरू कर दिया।

निस्सो ऊँचे, और ऊँचे, चढ़ती गई। ऊँचाई इतनी अधिक थी कि सिर चकरा जाता था। लेकिन निस्सो चुम्बक की भाँति चट्टानों से चिपकी थी। तीनसौ मीटर के करीब चढ़ने के बाद उसे एक तंग रास्ता दिखाई दिया। सांस लेने के लिए वह यहाँ रुकी, और नीचे गहराई की

और उसने देखा। उसकी बाहें एक अकेले पेड़ के चारों ओर ताला-सा डाले थीं, जो चट्टानों के बीच की दरार में से बाहर निकल आया था।

निस्सो के चेहरे पर लाली दौड़ गई। उसकी आँखें चमक उठीं और आत्म विश्वास का भाव उनमें हिलोरें लेने लगा। निस्सो ने गहरा और उन्मुक्त सांस लिया, और कई महीनों के बाद पहिली बार उसका चेहरा मुसकराहट से खिल उठा।

अब उसे कोई नहीं पा सकता, उसे कोई नहीं पकड़ सकता। निस्सो ने उस असीम आज़ादी का अनुभव किया जो प्रत्येक पहाड़ी जीव-जन्तु और पक्षी का अधिकार होती है, लेकिन अज़ीज़खान ने जिससे उसे वंचित कर दिया था!

: १० :

निस्सो दिन-भर चलती रही। न उसे दिशा का कोई ध्यान था, और न इस बात का कि रात कहाँ और कैसे बीतेगी। पत्थरों को उसने पार किया, उन पत्थरों को जिनमें से प्रत्येक का एक अपना आकार था और प्रत्येक अपने एक खास अन्दाज में स्थित था। ढलुवानों की सूखी और पांव के नीचे कर-करा कर टूटती घासों पर से वह गुजरी। घासों का रूप-रंग अलग था, उनकी सुगन्धि अलग थी। नंगे पाँव उन पर चलना और कभी-कभी झुक कर हवा के कारण अपने आप में सिमटे या धूप के कारण मुरझाए फूलों को देखना, कितना अच्छा लगता था।

कभी पहाड़ी ढलुवान पर से कोई पत्थर लुढ़कता हुआ आता और वह रुक कर उसे देखने लगती, उछलता और चट्टानों से टकराता अन्त में वह नीचे घाटी में आ गिरता और अपने अन्य साथियों के साथ आ मिलता। निस्सो फिर अपने पथ पर चलने लगती।

निस्सो को गहरी भूख लगी थी। वह भूख को टालने की कोशिश करती, लेकिन जब सूरज निर्मल नीले आकाश के पश्चिमी अर्द्ध-भाग में पहुँचा, तो भूख ने उसे पूरी तरह जकड़ लिया। उसे 'शोर्स्क'

नामक घास की याद आई, जिसे वह दो-आब में बटोर कर लाती थी। लेकिन यहाँ की सूखी घास 'शोस्कं' से ज़रा भी नहीं मिलती थी। खोजने पर भी ऐसी कोई हरी चीज़ निस्सो को नहीं मिली·जिसे वह खा सकती।

दिन-भर चलते-चढ़ते निस्सो अब इतनी ऊँचाई पर पहुँच गई थी कि वह खुद भी इसका गुमान नहीं कर सकती थी। अपने से कुछ ही दूर उसे बे पिघली नीली बर्फ का पहला खण्ड दिखाई दिया। वह उसके पास पहुँची और बर्फ की एक परत तोड़ कर उसे चूसने लगी। इसके बाद वह फिर आगे बढ़ी, और एक ऐसी तलहटी में पहुँची जिसमें रसीली घास उगी थी। हरी घास और रंग-बिरंगे पहाड़ी फूलों को देख कर निस्सो का हृदय ख़ुशी से भर गया। लेकिन यह ख़ुशी उसकी भूख को नहीं दबा सकी। हल्के पीले रंग के कोमल फूलों में से एक को तोड़ कर उसने मुँह में रखा, और फिर उसे तुरत ही थूक दिया। फूल कड़ुवा था!

तेज़ ठण्डी हवा चल रही थी। निस्सो के चारों ओर सदा बर्फ से ढकी चट्टानें थीं। तलहटी में से होकर उसने नीचे उतरने का निश्चय किया। शीघ्र ही वह एक झरने के पास पहुँच गई। वहाँ, छोटे-छोटे झुरमुटों में, एक अनजान किस्म की लम्बी घास उगी थी। यह जंगली प्याज़ थी। निस्सो ने उसे जी-भर कर खाया, और फिर झरने की धारा के साथ-साथ आगे बढ़ने लगी।

सूरज पहाड़ियों के पीछे खिसकने की तैयारी कर रहा था। झरने की धारा उत्तरोत्तर चौड़ी होती जा रही थी। अंधेरा होने तक निस्सो चट्टानों के बीच एक नदी के किनारे पहुँच गई। वह इतनी थक गई थी कि एक चट्टान पर लेटते ही उसे नींद आगई।

रात को, ठण्ड के मारे, निस्सो की आँख खुल गई। आसमान में तारे चमक रहे थे, और नदी की गूँज सुनाई दे रही थी। अंधेरा इतना घना था कि कुछ सुझाई नहीं पड़ता था। निस्सो ने फिर सोने की

कोशिश की, पर ठण्ड और भय के मारे सो नहीं सकी। जब अंधेरा कुछ कम हो चला और चट्टानें तथा झाड़ियां अंधेरे का भूत न रहकर अपने स्वाभाविक रूप में दिखाई पड़ने लगीं तो निस्सो का डर कम हुआ और वह फिर आगे बढ़ने लगी। एक ही इच्छा अब उसके हृदय में थी, वह अब लोगों के बीच पहुँचना चाहती थी, ऐसे लोगों के बीच जो उसके परिचित न हों। आग और चूल्हों से उठता हुआ धुवां देखने के लिए वह बेचैन हो उठी थी!

: ११ :

सांझ का समय था, सूरज तब तक छिप चुका था। निस्सो की नज़र एक छोटी-सी गोल इमारत पर पड़ी जो पत्थर की बनी थी और जिसकी छत नोकदार थी। निस्सो को लगा कि यह किसी का घर है। खुशी और भय के मिश्रित भावों से वह उसकी ओर बढ़ी। एक चट्टान के पीछे छिप कर उसने ध्यान से उसे देखा। तब मालूम हुआ कि यह किसी का घर नहीं, बल्कि मज़ार है। मज़ार के चारों ओर पतले बाँस लगे थे जिन पर याक की दुमें और रंग-बिरंगे चीथड़े लटके हुए थे। मज़ार की गोल छत जंगली बकरियों और मेढ़ों के सींगों से सजी थी। साफ़ मालूम होता था कि लोग यहाँ आते हैं। निस्सो ने चौकस रहने का निश्चय किया। जब मजार के पास पहुँची तो मालूम हुआ कि वह सूना है।

निस्सो दरवाज़े पर पहुँच कर रुक गई। सहमते हृदय से उसने भीतर झांक कर देखा। भीतर सब कुछ शान्त और सूना था। ज़मीन पर दो काले पत्थर पड़े थे। इनमें से एक पर बाजरे की सूखी रोटी रखी थी। निस्सो एकटक उसकी ओर देखने लगी। एक डग आगे बढ़ कर ही वह उसे उठा सकती थी। लेकिन साहस नहीं कर सकी। उसे डर था कि कहीं....

निस्सो ने मजार के भीतर प्रवेश नहीं किया। बाहर ही एक पत्थर पर बैठ गई। अंधेरा हो आया था, और तेज़ हवा चल रही थी। सहसा

तेज़ हवा के एक झोंके के साथ बारिश की बौछार शुरू हो गई। निस्सो सकपका कर उठी और मज़ार के भीतर भाग गई काले पत्थर के पास ज़मीन पर लेट कर अपना बदन गरमाने और दाँत किटकिटाना रोकने का प्रयत्न करने लगी।

आखिर नींद ने निस्सो को अपनी गोद में खींच लिया।

निस्सो देर तक सोती रही। अगली सुबह जब उसकी आँखें खुलीं तो सूरज काफ़ी चढ़ आया था। वह जल्दी से उठ बैठी और अपने चारों ओर उसने देखा। लेकिन अब अपने को मज़ार में देखकर उसे डर नहीं लगा। बाजरे की रोटी अभी भी उसके सामने काले पत्थर पर पड़ी थी। निस्सो ने झपट कर उसे उठा लिया और तेज़ी से भाग कर नदी के किनारे पहुँच गई। उसने एक बार भी पीछे फिर कर नहीं देखा।

नदी-किनारे पहुँच कर उसने सन्तोष का सांस लिया। जिस बात का उसे डर था, सो कुछ नहीं हुआ। रोटी के उसने टुकड़े किए, और अन्तिम कण तक गले के नीचे उतार गई। फिर जी भर कर उसने पानी पिया, और अपने पथ पर आगे बढ़ चली।

तीसरा परिच्छेद

: १ :

सियातांग नदी, हिमशिलाओं के बीच से निकल कर, एक गहरे दर्रे में से बहती थी। पानी के तेज़ बहाव ने, हज़ारों सालों के दौरान में पहाड़ों को काट-काट कर, इस दर्रे को इतना गहरा बना दिया था।

नदी इतनी चौड़ी और शक्तिशाली थी कि उसे पार करना टेढ़ी खीर था। वह झाग उगलती और उफनती, कभी इस ओर कभी उस चट्टान से टकराती, तूफानी गति से बह रही थी। कभी पथरीली चट्टानों के बीच से और कभी उनके अगल-बगल से चक्कर काटती, कगारेदार तटों को पखारती और उन्हें काट कर और भी गहरा बनाती, पहाड़ों-पत्थरों और चट्टानों से लोहा लेती, उनसे टकराती और खुद चूर-चूर होने के बजाए उन्हें चूर-चूर कर आगे बढ़ जाती, चिर अदम्य और सदा प्रवाहमान !

पथरीली पहाड़ियों से बने अन्तिम द्वार को पार करने के बाद वह अपनी बड़ी बहन महा नदी का आलिंगन करती, उस महानदी का जो दुनियाँ को दो युगों में, दो ऐतिहासिक कालों और एक-दूसरे से सर्वथा असमान दो शासन-तंत्रों में बाँटती है। वहाँ, महा नदी के दूसरे किनारे पर, यखबार था, बर्फानी पहाड़ों की एक श्रृंखला से घिरा हुआ। दो या तीन हज़ार सालों के दौरान में सियातांग नदी ने एक समतल, पत्थरों से छितरी, मुहाने से पन्द्रह मील दूर तक फैली, एक घाटी का निर्माण कर दिया था। इसके बाद यह अधिकाधिक ढलुवां भूमि में बहती और इसके तट पथरीली पहाड़ियों के रूप में अधिकाधिक ऊपर उठते चले जाते।

घाटी का लम्बा अर्द्ध वृत्ताकार फैलाव ऊँची चट्टानों से घिरा था। नदी का चिर-विद्रोही पानी इन चट्टानों से बराबर टकराता रहता था। दर्रे की गहरी ऊँची दीवारें घाटी को शेष दुनियाँ से अलग करती थीं। नंगे-बूचे मनमाने ढंग से फैले पहाड़ों के बीच स्थित यह घाटी मानो सबसे अलग-थलग थी !

लेकिन फिर भी, अनेक सदियों से यह घाटी आबाद थी। लोग सैकड़ों वर्षों से इसमें रहते आरहे थे।

ये लोग कई वर्गों में विभाजित थे। सबसे ऊँचा वर्ग खान लोगों का था। इसमें खान और इन इलाकों के शासक-वर्ग के लोग थे। दूसरे सबसे ऊँचे वर्ग में सैयद थे, खुदा के जीवित अमलदार पीर और खलीफा। सियातांग के निवासी जीवित खुदा के मुरीद थे और अपना कर पीर की मारफत अदा करते थे, जो सियातांग बस्ती में खान के साथ रहता था। कर जमा करने के लिए पीर अपने सहायक खलीफा को दो-आब, जारखोक तथा खानशाही के अन्य गाँवों में भेजता था। सैयद इस धरती पर 'खुदा के प्रतिनिधि' थे, इसलिए पीर और खलीफा की प्रत्येक माँग खुद खुदा की मांग समझी जाती थी।

खान के प्रतिनिधि हर गांव में मौजूद थे। ये तीसरे वर्ग के लोग थे और मीर कहलाते थे। चौथे वर्ग का नाम आकोबिर था। इस वर्ग में से खान अपने अंग-रक्षक भर्ती करता था। सबसे भिन्न वर्ग रैयत या फकीरों का वर्ग कहलाता था। इस वर्ग में वे सब किसान थे, जो अपने छोटे-छोटे पथरीले खेतों में ऊँचे वर्गों के लिए तो गेहूँ, जौ, बाजरा, मटर, शहतूत और खूबानी पैदा करते थे, और खुद भूखे मरते थे।

पूर्वजों द्वारा निर्मित सियातांग दुर्ग के निवासी आखिरी खान की मृत्यु ठीक उन्हीं दिनों होगई थी जब यखबारियों ने सियातांग पर पिछली बार कब्ज़ा किया था।

रूसियों के यहाँ आने और यखबारियों को महा नदी के दूसरी ओर अपनी खानशाही में खदेड़ देने के बाद भी कुछ पीर सियातांग में बने

रहे । लेकिन उस समय जब ऊँचे पहाड़ों में यह खबर पहुँची कि रूसियों ने ज़ार का तख्ता पलट दिया है और यह कि बोलोस्त में पहाड़ों के गरीब निवासियों ने सत्ता पर अपना अधिकार कर लिया है, तो पीरों के ये बचे-खुचे अवशेष भी, मीरों और शाकोबियों के साथ, सियातांग छोड़ कर भाग गए । जिन लोगों को पीर अपने दामन का छोर तक नहीं चूमने देते थे, वे अब खुश थे । नये विधान ने सियातांग के जीवन की बाग-डोर अब उनके हाथों में दे दी थी, और पीर वहाँ से विदा हो चुके थे ।

सियातांग का अर्थ है "काली घाटी" । घाटी में बहने वाली नदी का और चारों ओर के समूचे प्रदेश का,—दो-आब, ज़ारखोक तथा आसपास के अन्य दर्रों तथा उनके बीच से बहने वाली नदियों का,—यही नाम पड़ गया था । सियातांग के निकट दर्रे के दोनों ओर की ऊँची पहाड़ियाँ, ऊपर पहुँच कर आगे की ओर इतनी निकल आई थीं और कहीं-कहीं तो एक-दूसरे से इतनी मिल गई थीं कि सूरज की रोशनी उनमें प्रवेश नहीं कर पाती थी । इसी वजह से इसका नाम सियातांग, काली घाटी, पड़ गया था । सोवियत सत्ता के आगमन के बाद स्थानिक शासन का संचालन बोलोस्त से किया जाने लगा । लेकिन बोलोस्त इतनी दूर था कि वहाँ आने-जाने में दस दिन लगते थे । और बोलोस्त में सरकारी कर्मचारियों की इतनी तंगी थी कि एक लम्बे अर्से तक किसी को सियातांग नहीं भेजा जा सका । ज़ारखोक, दो-आब और सियातांग जैसे दर्जनों ऐसे दर्रे और घाटियाँ थीं जिनमें पहुँचना अत्यधिक कठिन था ।

जाड़ों में काली और मटमैली चट्टानें बर्फ से ढक जाती थीं । आने-जाने के रास्ते बर्फ से बन्द हो जाते थे और बाहरी दुनियाँ से इसका सम्बन्ध पूर्णतया कट जाता था । बसन्त में चट्टानों के तड़कने और गिर कर चूर-चूर होने की गरज सुनाई देती थी । गर्मियों में वायु इतनी निश्चल और चट्टानें धूप से इतनी गर्म हो जाती थीं कि सांस तक लेना दूभर होता था । केवल शरद के दिनों में जब हिम-खण्डों से ठण्डी हवाएं

आती थीं तो लोग कुछ खुशी का अनुभव करते थे। लेकिन, यह स्थिति भी कुछ ही दिनों तक रहती थी। शीघ्र ही तेज़ और शरीरवेधी हवाएं चलने लगतीं और जाड़ों की प्राणघाती ठंड शुरू हो जाती, जिसके सामने यहाँ के लोगों की कोई पार नहीं बसाती थी।

: २ :

शरद के प्रारम्भ का सुहावना मौसम शुरू होगया था। भूतपूर्व खान के दुर्ग के पास लोगों की एक भीड़ जमा थी। किसी जमाने में इस दुर्ग का भारी रोब-दाब और आतंक था। लेकिन अब काफी दिनों से इसकी वह पहिले वाली शान गायब होगई थी। दुर्ग की जगह पर अब मिट्टी का पलास्तर चढ़ी पत्थर की चार दीवारें और काई जमी दो ऊँची बुर्जियां रह गई थीं, जिनमें टेढ़ी-मेढ़ी दरारें पड़ी थीं। एक बुर्जी ठीक नदी के किनारे थी और पानी के बहाव ने उसकी नींव को खोखला बना दिया था। दीवार के बाकी बचे अंश के साथ यह किसी समय भी धराशायी हो सकती थी। दूसरी बुर्जी दर्रे के बीच से गुजरने वाली दीवार के अन्त में थी। दर्रा इस जगह पर सकरा हो गया था। चट्टानी नींव पर स्थित होने के कारण यह बुर्जी अभी भी काफ़ी मजबूत थी।

इस बुर्जी और पहाड़ी चोटी के बीच एक तंग रास्ता था जिस पर सियातांग बस्ती का समूचा जीना निर्भर करता था। यहाँ गल कर क्षीण हुए एक मात्र नहर के गटर थे जिनसे बस्ती को पानी मिलता था। सियातांग में बड़े पेड़ होते ही नहीं थे, इसलिए इन गटरों को बनाने के लिए भारी मेहनत खर्च करके, यखवार के उस पार दूर स्थित ज़िलों से लकड़ी के लट्ठे लाए गए थे।

सिंचाई की नहर का सिरा या उसका मुँह, दुर्ग से परे, काफ़ी ऊँचाई पर था। स्वभावतः यह कहीं अच्छा होता अगर नहर ऊँची पहाड़ी के बजाय दुर्ग के पास से गुज़रती। लेकिन खान को तो अपने ही हितों का ध्यान था। बड़ी नहर के मुहाने से उसने एक छोटी नहर निकाली थी, जिसके पानी की मात्रा को घटाना या बढ़ाना अथवा बिल-

कुल ही बन्द कर देना उसके अपने हाथ में था। पानी के बदले में खान अनाज और फलों की फसल का चालीसवां भाग वसूल करता था। बुर्जियों और पहाड़ी के बीच की खाई ही एकमात्र ऐसा रास्ता थी जिसके द्वारा सियातांग से पहाड़ी चरागाह तक पहुँचा जा सकता था। इसके लिए भी खान अनाज वसूल करता था। दुर्ग के भीतर एक पनचक्की थी जिसके बिना यहाँ के निवासियों का काम नहीं चल सकता था। इसके लिए भी उन्हें पीसे जाने वाले अपने अनाज का दसवाँ भाग खान को अदा करना पड़ता था।

लेकिन खानों के दिन बीत चुके थे। कुछ साल पहिले एक भारी चट्टान-पात ने खान की रिहाइश, ताल, आधे बगीचे और तीसरी बुर्जी को नष्ट कर दिया था। उनकी जगह पर अब आकारहीन नोक-नुकीले पत्थरों का ढेर पड़ा था। बगीचे का दूसरा अर्द्ध भाग काफ़ी दिन हुए, तभी सूख गया था। दुर्ग के आँगन में पनचक्की और सूने पशु-घर के सिवा और कुछ बाकी नहीं बचा था। जहाँ-तहाँ चट्टानों के बीच तंग मुँह के गढ़े अभी भी दिखाई देते थे। इनमें अनाज भरा जाता था। लेकिन अब वे सब खाली पड़े थे या मल्बे से आधे-पूरे भरे थे।

आखिरी खान का पोता दुर्ग का अब एकमात्र निवासी था। उसके सिवा शासक-वर्ग का अन्य कोई प्रतिनिधि बाकी नहीं बचा था। वह एक जर्जर शरीर, वृद्ध था। नाम बोबो कलां। पहाड़ी पर स्थित गुम्बद में अपने जीवन के आखिरी दिन काट रहा था। इच्छा से हो या अनिच्छा से, यह बड़ा-बूढ़ा आदमी यहाँ का चौकीदार बन गया था, और बुर्जी को व्यवस्थित ढंग से रखता था। रैयत या फ़कीरों से वह कभी नहीं बोलता था और उस समय जब कोई आस-पास नहीं होता था, वह अपना सारा काम करता था। लेकिन लोगों के आस-पास रहने पर वह एक तिनका भी नहीं उठाता था, मानो वह यह दिखाना चाहता था कि उसके वर्ग के लोगों के लिए काम करना उनकी शान के खिलाफ है। लगता था जैसे रात के अँधेरे में कोई अदृश्य हाथ प्रकट होते हैं,

और पनचक्की को इतना साफ़-सुथरा बना जाते हैं ।

वर्च वृक्ष की छाल, चीथड़ों और मिट्टी से जोड़-तोड़ करने और पैबन्द लगाने पर भी, नहर के गटर अपनी समूची लम्बाई में चूते थे । पानी के इस प्रकार बेकार जाने के अलावा सिंचाई की नालियाँ इतनी सकरी थीं कि छोटे-छोटे खेतों की तप्त पथरीली भूमि को काफ़ी पानी नहीं मिल पाता था । दर्रे के निवासी अपनी नहर को फिर से बनाने का सम्भवतः कभी साहस न करते, अगर वे अपनी मर्ज़ी से उस आदमी का कहना न मानते होते जिसका आदेश पाकर वे आज यहाँ दुर्ग के पास जमा हुए थे ।

बसन्त के दिनों से ही इस आदमी ने दुर्ग के आँगन में आकर खंडहर के पत्थरों को जाँचना और उनकी नाप-जोख करना शुरू कर दिया था । अन्त में उसने दर्रे के निवासियों को बताया कि ऊँचाई पर स्थित पुरानी नहर से नीचे एक नयी नहर का निर्माण किया जा सकता है और किया जाना चाहिए । इसके लिए उस पुरानी बुर्जी को हटाना ज़रूरी था, जो मज़बूती के साथ पहाड़ी पर खड़ी थी ।

सबने मिलकर इस काम को करने का निश्चय किया, और काम को शुरू हुए कई सप्ताह हो चुके थे ।

दोपहर होगई थी, और वे अभी भी बुर्जी की नींव के चारों ओर घास-फूस के पूले जमा कर रहे थे । काम का निर्देशन वही आदमी कर रहा था, जिसे वे शोपीर कहते थे । वह एक लम्बे कद और चौड़े कंधों का आदमी था । और शक्ल-सूरत में पहाड़ों के इन निवासियों से भिन्न मालूम होता था । वह ऊँचे जूते, खाकी कमीज़ और गहरे नीले रंग की बिरजिस पहिने था । उसकी टोपी में पाँच कोनों का एक लाल सितारा लगा था । उसके कपड़ों और टोपी का रंग धुंधला पड़ चुका था ।

कुछ साल हुए जब वह यहाँ आया था । यहाँ आने के बाद शीघ्र ही वह बोबो कर्ला से मिला । इस मुलाकात के दौरान में बोबोकर्ला ने

खीज कर उसे शो-पीर, पीरों का शाह कहा था। तब से यही उसका नाम पड़ गया। उसके यहाँ आने के बाद बोबो कलां का लोगों पर जो थोड़ा-बहुत असर था, वह भी जाता रहा और शोपीर का नाम दर्रे के निवासियों में इज्जत के साथ लिया जाने लगा।

शो-पीर सियातांग-बोली में आदेश दे रहा था और वे पूलों के बोझ से झुके, एक पत्थर के बाद दूसरे को फांदते, लगन और फुर्ती से काम में जुटे थे। पूलों का ढेर बुर्जी के एक तिहाई भाग तक ऊँचा उठ गया था और शो-पीर उन्हें अभी और भी पूले जमा करने का आदेश दे रहा था।

बोबो कलां, सफेद दाढ़ी वाला बुर्जी का निवासी, कुछ दूर एक पत्थर पर बैठा था। कभी वह नदी की ओर देखता और कभी अपने पालतू बाज की ओर, जो नीलम जड़ी टिकटिकी पर बैठा था। यह पालतू बाज ही अब बोबो कलां का एक मात्र मित्र और सगा-सम्बन्धी था। टिकटिकी की आड़ी छड़ उसने अपने टेढ़े पंजों में दबोच रक्खी थी। उपेक्षा-भरी अपनी गोल आँखों से वह अपने मालिक की ओर देखता, रोब के साथ अपनी गरदन को जरा तिरछी करता और अलस भाव से अपना एक पंख उठाकर चोंच से पीले परों को कुरेदता।

वृद्धावस्था के सौम्य सौन्दर्य और शान से दीप्त बोबो कलां के चेहरे पर कभी-कभी दया और बाज की सहायता करने के भाव उमड़ आते और वह अपनी कनकी उँगली के पील पड़े नाखून से पक्षी के परों का स्पर्श करता। और इस नाखून से जो उतना ही बड़ा था जितना कि बाज की चोंच, वह पंख के नीचे का हिस्सा सहलाना शुरू करता और बाज एक अदभुत सुख की अनुभूति से बेसुध सा हो जाता। इसके बाद, मिचमिचा कर, निर्लिप्त भाव से, वह वृद्ध की आँखों में देखने लगता।

बोबो कलां किसी रूप में भी यह प्रकट नहीं होने देता कि उसके हृदय पर क्या बीत रही थी। कुछ दिन पहिले मुलायम किन्तु

दृढ़ स्वर में शो-पीर ने उसे बताया था कि नयी नहर को दुर्ग के बीच से लेजाने के लिए लोगों ने पुरानी बुर्जी को गिराने और पहाड़ी को नष्ट करने का निश्चय किया है। मुश्किल से एकाध मिनट की दुविधा के बाद ही अपने-आपको काबू में कर उसने कहा, "इधर सब कुछ बदल गया है। लोग ही हैं जिन्हें इसकी ज़रूरत है और वही हैं जो अब फैसला करते हैं। निचली बुर्जी में, जिसकी नींव को खोखला बना दिया है, रहना ठीक तो नहीं होगा, लेकिन मैं वहीं रहूँगा। मेरा खयाल है वह मुझसे पहिले धूल में नहीं मिलेगी।"

सूरज निर्ममता से आग बरसा रहा था। जलती हुई चट्टानें गर्मी से तमतमा रही थीं। दर्रे के निवासी, पसीने में चूर, पूले ला-ला कर जमा कर रहे थे। आँधी बुर्जी पूलों से ढक गई थी। केवल दीवार के पास वाला हिस्सा रह गया था। पूलों को अब वहीं जमा किया जारहा था।

शो-पीर ने बुर्जी की ओर देखा, और एक आदमी से जो अभी-अभी अपने पूले डाल कर चुका था, चिल्ला कर कहा, "बस करो, बख्तियार! सबसे कहो कि दूर हट जाएं, अब हम इसमें आग लगाएंगे।"

बख्तियार, जिसे शो-पीर ने पुकारा था, एक युवक था : काली आँखें, सियातांग के अन्य निवासियों की तरह दुबला-पतला। दीवार के छोर पर खड़ा होकर वह चिल्लाया, "सब नीचे चले जाओ! कारा-शिर, दूर हट जाओ! खुदादाद, परे हो जाओ! यूसुफ, नीचे उतर जाओ!"

शो-पीर ने पूलों के ढेर के पास जाकर दिया सलाई दिखादी। बोबो कलां ने बाज़ की पीठ पर अपना हाथ रखा और ऊपर उठती हुई लपटों को ध्यान से देखने लगा। आग तेजी से बढ़ चली और नाचती हुई लपटों के ऊपर काला धुँआ घूमता हुआ ऊपर उठने लगा। शीघ्र ही लपटों ने समूची बुर्जी को घेर लिया और दर्रा धुवें से अट गया।

भयभीत बाज़ ने उड़ने के लिए अपने पंख फड़फड़ाए, लेकिन बोबो

कलां ने उसे उड़ने नहीं दिया। खुद बोबो कलां भी आग की लपटों को इस प्रकार देख रहा था मानो यह कोई चिर परिचित और ऐसा दृश्य हो जिसके रहस्य को केवल वही समझता हो।

"अब तमाशा देखना बन्द करो, साथियो!" शो-पीर ने कहा, "जब तक यह जले, बैठ कर सस्तालो। तुम्हारा पाइप कहाँ है, काराशिर?"

एक पीला, कड़ी काठी का और अत्यधिक मैला-कुचैला आदमी जो बड़े चाव से लपटों को देख रहा था, बेमर्ज़ी से हटकर धरती पर झुक गया। जल्दी से उसने एक छेद बनाया और घरेलू तम्बाकू से उसे भर दिया। शो-पीर और उसके साथ काम करने वाले दर्रे के अन्य लोग छेद के चारों ओर बैठ गए। काराशिर ने एक नल्की उसमें घुसा दी और पास में गिरा एक अंगारा उठाकर तम्बाकू पर रख दिया। फिर उसने छेद के ऊपर एक चपटा पत्थर रखा और नली का दूसरा छोर अपने मुँह में लेकर कश खींचा। तम्बाकू का धुँआँ चक्कर काटता हुआ छेद में से निकलने लगा। धरती पर लेट कर सभी ने बारी-बारी से कश खींचा और धूम्रपान का आनन्द लिया।

अपनी बारी से तीसरा कश खींचने के बाद काराशिर ने सन्तोष का साँस लिया और बुर्जी की ओर देखा जो अभी भी लपटों से घिरी हुई थी।

काराशिर बकरी की खाल के पुराने, घिसे-पिटे और बेतुके पेबन्द लगा लबादा पहिने था। खाल का कोई टुकड़ा सीधा सिला था और कोई उलटा। लबादा उसका बदन ढकने में असमर्थ था। सूरज की किरनें एक-एक दिखाई पड़ने वाली उसकी पसलियों, भीतर को धंसे हुए उसके पेट और मैल की मोटी पपड़ी जमी कोहनियों और उसकी पतली बालदार बाहों पर थिरक रही थीं। देखने में वह बिल्कुल ममी मालूम होता था। उसकी आयु तीस वर्ष से अधिक नहीं होगी, लेकिन उसके पीले, हरियाली मायल चेहरे, और दुःखों तथा थकान में डूबी मुद्रा से उसकी सही उम्र का कोई पता नहीं चलता था।

"तुम्हें भूख लगी होगी, शो-पीर ?" सहसा काराशिर ने कहा।

"क्यों, काराशिर, क्या तुम मुझे पनीर और रोटी खिलाने जारहे हो ?"

"इसमें भी कोई शक है ?" शो-पीर के चारों ओर बैठे लोगों में सबसे कमउम्र खुदादाद ने कहा, "खाल के इसके लबादे में ज़रूर रसीले माँस का कोई फालतू टुकड़ा छिपा होगा !"

सब हँस दिए। काराशिर की कटोरे-सी काली आँखें जिनके नीचे गहरे छल्ले पड़े थे, सहसा गर्व से चमक उठीं। इस खस्ता हालत में भी यह गर्व !

"मेरे पास तो कुछ नहीं है। लेकिन इसके पास जो सोवियत सत्ता का प्रतिनिधि और हमारा मुखिया है, अवश्य कुछ होगा। क्यों बख्तियार हमारे लिए रोटी, माँस और पनीर का कुछ प्रबन्ध किया है न ?"

बख्तियार सियातांग गाँव का सोवियत का मुखिया था। अपनी यखबारी जाकेट के भीतर से एक पोटली निकालते हुए बोला, "माँस या रोटी तो नहीं, लेकिन यह है।"

पोटली में बकरी के पनीर की कुछ गोलियाँ, और धूप में सुखाए हुए शहतूत थे। बख्तियार ने उन्हें सावधानी से एक पत्थर पर सजा दिया।

तुरन्त हाथ बढ़ा कर सबने खाना शुरू कर दिया। शो-पीर ने भी कुछ शहतूत उठा लिए।

"देखो न शो-पीर," सूखे और खट्टे पनीर को मुँह में रखते हुए काराशिर ने चिन्तित स्वर में कहा, "शीघ्र ही हम फसल बटोरते होते। कम मात्रा में ही सही, कुछ-न-कुछ अनाज तो हमारे पास हो जाता। अब तो लगता है कि जाडों में अकाल का सामना करना पड़ेगा।"

"अकाल से अब डरने की जरूरत नहीं। नहर के बनने से हमारी फसलों की पैदावार बहुत बढ़ जाएगी।"

"लेकिन यह सब तो अगले साल होगा। इस साल हम क्या

करेंगे ?"

"इस साल ? सचमुच, इस साल भी हम भूखों मरते अगर हमें बोलोस्त का भरोसा न होता। भला हो खुदादाद का जो हमारा खत लेकर वहाँ गया। हमें अधिक इन्तजार नहीं करना पड़ेगा। आटा और दूसरी चीजें लेकर कारवां आता होगा।"

"सो तो ठीक है," काराशिर ने उदास भाव से कहा, "कारवां जब आएगा तब आएगा। मेरी बात मानो शो-पीर, इस बीच सौदागर से कुछ अनाज ले लें। बाद में उसे लौटा देंगे।"

सौदागर का नाम सुनते ही शो-पीर झुँझला उठा। तेज़ स्वर में बोला, "फिर वही सौदागर! उसके चंगुल से न जाने तुम लोग कब मुक्त होगे ? आधे गाँव को उसने अपने कर्ज में दबोच रखा है। जो कुछ पैदा करते हो, सब कर्ज चुकाने में चला जाता है। मिर्जा हूर इसी ताक में तो है, कि कब तुम उसके पास जाओ, और कब वह तुम्हारी गरदन दबोचे। अगर तुम्हारी गरदन इतनी फालतू है तो जाओ, लेकिन मेरे सामने उसका नाम न लो!"

बुर्जी के चारों ओर जमा पूले जल चुके थे। शो-पीर उठकर खड़ा हो गया। बोला, "हाँ, तो अब काफी सस्ता लिए। अब चेतन हो जाओ। देखो, आग बुझ चली है। बाँसों से उसे हटाकर अलग कर दो। चट्टान के इधर-उधर उसे जलते रहने दिया जा सकता है, लेकिन मध्य भाग को साफ करना जरूरी है। वह तप कर लाल होगया है। उठो बख्तियार, मेरे साथ नहर तक चलो। और देखो, जब मैं पानी छोडूँ तो दूर हट जाना। नहीं तो गर्म भाप से झुलस जाओगे।"

दर्रे के निवासी खड़े होगए और लम्बे बाँसों से आग हटा कर उसे चट्टान के इधर-उधर जमा करने लगे। बुर्जी इसी चट्टान पर खड़ी थी।

शो-पीर और बख्तियार पहाड़ी पर चढ़कर नहर के उस 'गटर' पर पहुँचे जो बुर्जी के ठीक सामने था। यह जरूरी था कि उसका मुँह इस

प्रकार खोला जाए जिसमें पानी की धारा सीधी गर्म चट्टान की दिशा में बहे।

शो-पीर ने गटर की टेक के लिए नीचे लगा पत्थर हटा दिया। बख्तियार ने रस्सा खींचा। गटर घूम कर एकदम आड़ा होगया। शो-पीर ने लपक कर रस्सा पकड़ा, गटर को धीरे-धीरे नीचे गिराया और उसे नीचे रखे पत्थर पर टिका दिया।

पानी तेज़ी के साथ बहा, और तेज़ आवाज़ करता भाप बनकर उडने लगा। शो-पीर दोनों हाथों से अपना मुँह ढक कर दूर हट गया।

पत्थर के ठण्डा हो जाने पर शो-पीर ने देखा कि उसका अन्दाज ठीक निकला। बुर्जी में गहरी दरार पड़ गई थी। दरार काफ़ी चौड़ी थी, और बुर्जी के एकदम नीचे तक चली गई थी। चट्टान का आधा भाग, अपने ही बोझ के दबाव से. नीचे धँस गया था।

शो-पीर को यह समझने में देर नहीं लगी कि उसकी योजना का पहला अर्द्ध भाग सफलता के साथ पूरा हो गया।

: ३ :

अब आखिरी और निर्णयात्मक काम हाथ में लेने का समय आगया था। शो-पीर और बख्तियार नदी किनारे पहुँचे। यहाँ, पत्थरों के बीच, बारूद से भरे दस सूखे हुए सीताफल रखे थे। बारूद के लिए, मिरज़ाहूर के प्रति अपनी घृणा को पीकर, शो-पीर को उसकी शरण में जाना पड़ा था।

सियातांग के निवासी, आस-पास के पहाड़ी प्रदेशों के अन्य निवासियों की भाँति, हाट-बाज़ार में जाकर व्यापार करने के आदी नहीं थे। जीवन की तमाम ज़रूरी चीज़ें वे खुद ही बनाते थे : कपड़े, औज़ार और रकाबियां आदि। जो चीज़ वे खुद नहीं बना पाते थे, उन्हें वे मिरज़ाहूर से खरीद लेते थे।

बारूद के लिए शो-पीर को भी मिरज़ाहूर का मुँह ताकना पड़ा,

और बारूद के आकर्षक पीपों के, जिन पर विदेशी लेवल लगे थे, उसने कस कर दाम लगाए। और चूंकि शो-पीर के पास इधर कुछ दिनों से नकद पूंजी नहीं थी, इसलिए सियातांग के अन्य सभी निवासियों की भाँति उसे भी मिरज़ाहूर का कर्जदार बनना पड़ा।

शो-पीर ने बारूद पीपों से निकाल ली और उसे बड़े-बड़े सीताफलों में भर कर आज सवेरे, तड़के ही, उन्हें नदी-किनारे रख दिया।

शो-पीर और बख्तियार बारूद-भरे सीताफलों को उठा कर बुर्जी की ओर चल दिए। शो-पीर ने उन्हें चट्टान की दरार में, और उनमें से चार को ठीक बुर्जी के नीचे, लगा दिया। इसके बाद उसने उनमें, पलीता लगाया और सबको दूर हटकर चट्टानों के पीछे छिप जाने का आदेश दिया।

केवल बोबो कलां अपनी जगह पर बैठा रहा, मानो वह अपने चारों ओर की घटनाओं से बेखबर हो। लेकिन सहज भाव से लम्बे डग भारता हुआ जब शो-पीर उसके पास पहुँचा तो वृद्ध खड़ा होगया और इससे पहिले कि शो-पीर कुछ कहे, गम्भीर भाव से उसने अपना हाथ उठा लिया।

"मैं जानता हूं, शो-पीर!" उसने कहा, "पलीते में आग लगाने का समय आगया है। तुम समय के मालिक हो। मैं केवल यही चाहता हूँ कि एक क्षण रुक जाओ। जब किसी आदमी की आँखों की रोशनी जाने को होती है तो वह चाहता है कि एक बार और आखिरी नज़र से दुनियाँ को देख ले। मैं बुर्जी पर चढ़ना चाहता हूँ।"

वृद्ध की आवाज़ में न तो विनती की पुट थी, और न शिकायत की। उसके शब्दों में इतना विश्वास भरा था कि इन्कार करना असम्भव था। शो-पीर नें ध्यान से बोबो कलां की ओर देखा, और अपनी मौन सहमति प्रकट की।

सारी बस्ती में बोबो कलां ही एक ऐसा व्यक्ति था जो लम्बाई में शो-पी: के बराबर था। अपनी पूरी लम्बाई के साथ, सीधा और सतर,

वह बुर्जी की ओर बढ़ रहा था। बाज़ उसके कंधे पर बैठा था, और अपना सन्तुलन बनाए रखने के लिए जब-तब अपने पंखों को फड़फड़ा रहा था।

पत्थर की असम सीढ़ियों पर चढ़ते हुए बोबो कलां दुर्ग की दीवार पर निकल आया, और एक सीढ़ी के बाद दूसरी पर पाँव रखते हुए अंत में सबसे ऊपर की छतरी पर पहुँच गया।

बोबो कलां की आँखों के सामने चिर-परिचित दृश्य-पट फैला था। लेकिन मालूम ऐसा होता था मानो बोबो कलां की दृष्टि इस दृश्य-पट से न उलझ कर कहीं दूर पहुँची हुई हो। उसकी आँखें आधी मुंदी हुई थीं, और नीचे पत्थरों पर घेरा बनाकर बैठे लोगों की हँसी उसके हृदय में तीर की भाँति गुभ रही थी। भीतर-ही-भीतर घृणा से जलता वह चुपचाप खड़ा रहा।

"कितनी देर होगई बैठे-बैठे!" बख्तियार ने उकता कर कहा, "पता नहीं वह कब तक इसी तरह खड़ा रहेगा? मूर्खों की भांति बैठे हुए हम यहाँ उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं!"

"उसे खड़ा रहने दो, बख्तियार," शो-पीर ने शान्त स्वर में कहा, "पाँच मिनट में क्या बिगड़ा जाता है। संध्या आजकल काफी लम्बी होती है। सूरज अभी ऊंचा है। देखो न, इस समय बुर्जी कितनी सुन्दर दिखती है!"

बोबो कलां धीरे-धीरे बुर्जी से उतरने लगा। छिपते हुए सूरज की किरनें आखिरी पत्थर पर से ढल गईं। एकबार भी इधर-उधर देखे बिना वृद्ध उन लोगों के पास से गुजर गया जो वहाँ बैठे अपनी खामोश नजरों से उसका पीछा कर रहे थे। पनचक्की का चक्कर काटकर वह नदी किनारे वाली बुर्जी के पास पहुँचा, उसका महराबदार दरवाजा उसने खोला, और भीतर घुसते हुए उसने जोरों के साथ फाटक बन्द कर लिया।

: ४ :

शो-पीर खड़ा हो गया और दर्रे के निवासी पत्थरों के एक ढेर के पीछे छिपने के लिए वहां से चल दिए।

तेल में डूबी मशाल में दियासलाई दिखा कर शोपीर दरार से बाहर निकले पलीते के पास गया और तेजी के साथ उसमें आग लगा दी। फिर मशाल को दूर फेंक, पलीते के साथ-साथ साँप की तरह सरकती हुई चिंगारियों को देखता, वह घड़ियाँ गिनने लगा।

अनुभवी व्यक्ति की भाँति शो-पीर ने चट्टान और बुर्जी पर एक नज़र डाली। दो-ढाई मिनट के भीतर चट्टान टुकड़े-टुकड़े होकर धूल में मिल जाएगी। उसने ज़रा भी उतावली नहीं दिखाई। वह जानता था कि विस्फोट से एक मिनट पहिले वहां से भाग कर वह आसानी से ओट में हो जाएगा। लेकिन पत्थरों के पीछे छिपे दर्रे के निवासी काफी बेचैन थे।

"शो-पीर!" बख्तियार ने चिल्लाकर कहा, "जल्दी करो, शो-पीर!"

लेकिन शो-पीर वहाँ निश्चल खड़ा था, और शान्त भाव से घड़ियाँ गिनने में आनन्द का अनुभव कर रहा था। उसने बुर्जी और पहाड़ी के बीच की खाई में देखा। ऊपर गटर में से पानी की एक पतली धारा बह रही थी। और तभी, बुर्जी के टेढ़े-मेढ़े कगारे के पीछे, सहसा दो काली आँखों को चमकता देख शो-पीर आतङ्कित हो उठा।

"अरे, कौन हो तुम ?" भयभीत स्वर में उसने चिल्ला कर कहा, और काली आँखें तुरत गायब हो गईं।

एक क्षण की भी दुविधा किए बिना शो-पीर छलांग भर कर बुर्जी के पीछे पहुँच गया, और दीवार में दुबकी अनजान लड़की को लपक कर उसने दबोच लिया। लड़की ने भय से छटपटा कर निकल भागना चाहा, लेकिन शो-पीर उसे मजबूत हाथों से पकड़े था। रूसी भाषा में उसने चिल्ला कर कहा, "क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है जो यहाँ, बुर्जी के पास, खड़ी हो ?"

लड़की ने अप्रत्याशित ज़ोर से प्रतिरोध किया, लेकिन शो-पीर ने उसे खींच कर अपनी बाँहों में उठा लिया, और पलक-झपकते वहाँ से दूर हट गया। लड़की जंगली बिल्ली की भाँति उसे नोचती और काटती रही।

सुरक्षित दूरी पर, पत्थरों के ढेर के पीछे, पहुँचने के बाद ही शो-पीर ने लड़की को अपने शिकंजे से मुक्त किया। अगले ही क्षण बुर्जी आग की चमक और धुँए के बवण्डर में डूब गई। पत्थर के टुकड़े शो-पीर के सिर पर से सनसनाते हुए निकल गए। विस्फोट की गूँज दर्रे की गहरी-ऊँची दीवारों से टकराती विलीन हो गई, और कहीं दूर जाकर एक बार फिर उसकी आवृत्ति सुनाई दी। विस्फोट से चकनाचूर चट्टान के बड़े-बड़े टुकड़े ढलुवान पर से लुढ़कते नदी की ओर बढ़ चले,—पनचक्की को अछूता छोड़ कर खान के बगीचे के बचे-खुचे पेड़ों को चीरते, नदी के ऊपर बाहर को निकली दुर्ग की दीवार के छोर से टकराते। अन्त में पत्थरों का समूचा समूह नीचे नदी में जा गिरा, और नदी के पानी ने उछल कर उसे अपनी बाँहों में समेट लिया। धीरे-धीरे विस्फोट की गर्द नीचे बैठ गई, धुँवा छितरा कर विलीन हो गया, और घाटी में एक बार फिर निस्तब्धता छा गई।

शो-पीर ने अब अपने हाथों को देखा जो बुरी तरह नोचे-खरोंचे हुए थे। ख़ून चमक आया था। उसने झुँझला कर लड़की की ओर देखा। फिर कहा, "यह सब क्या है? तुम आदमी हो या जानवर,—या तुम एकदम पागल हो गई हो?"

अब वह चुपचाप बैठी थी। उसने भागने की कोई कोशिश नहीं की। दर्रे के निवासी भी विस्फोट को भूल निस्सो के चारों ओर जमा हो गए, और कौतुक से उसकी ओर देखने लगे। बोबो कलाँ भी, दरवाज़े की एक दरार में से, उसकी ओर देख रहा था।

शो-पीर ने निस्सो की क्षतविक्षत और सूजी हुई टाँगों, उसकी अनगिनती गुथी हुई चोटियों, मैले-कुचैले चेहरे और चिथड़ा-चिथड़ा

हुए कपड़ों पर एक नज़र डाली। उसका पहनावा यहाँ के पहनावे से मिलता था।

इतने लोगों की भीड़ में निस्सो ने अपनी आँखें नीची करलीं, और पिंजरे में बन्द जीव की भाँति सिमट-सिमटा कर बैठ गई। विस्फोट से वह इतनी स्तब्ध और आतङ्कित हो गई थी कि उसके हाथ और होंठ अभी तक काँप रहे थे।

"किस देव ने तुम्हें यहाँ लाकर छोड़ दिया है ?" हँसते हुए शो-पीर ने उससे पूछा। फिर दर्रे के निवासियों को सम्बोधित करते हुए कहा, "ज़रा इधर देखो। क्या तुममें से कोई इसे पहिचानता है ?"

दर्रे के निवासियों ने ज़ुबान से चटकारे लेते और सिर हिलाते हुए हुए नकारात्मक जवाब दिया।

"और तुम तो अपना मुँह खोलोगी नहीं ?" कुछ रुक कर शो-पीर ने कहा, "क्या तुम समझती हो कि हमारे यहाँ आसमान से लड़कियों की नित्य वर्षा हुआ करती है ? ज़रा अपना मुँह तो देखो। अगर किसी बिल्ली के मुँह पर इतनी गर्दा जमा होती तो गर्द चाटते-चाटते उसका पेट भर जाता।"

दर्रे के निवासी हँसने लगे। निस्सो ने एक बार पलकों के नीचे से देखा और अपनी गरदन और भी नीचे झुका ली।

"निश्चय ही तुम्हें भूख लगी होगी," सहानुभूति के स्वर में शो-पीर ने उससे कहा, "क्या तुम कुछ खाना चाहोगी ?"

निस्सो ने कोई जवाब नहीं दिया। शो-पीर ने बख्तियार की ओर आँख से इशारा किया। अपनी पोटली में से पनीर की गोलियाँ उठाकर उसने आगे बढ़ा दीं। निस्सो का हाथ अपने हाथ में लेते हुए शो-पीर ने कहा, "डरो नहीं, नन्ही चुहिया। तुम्हें यहाँ कोई डरा नहीं देगा। लो यह खाओ।"

निस्सो ने सन्देह भरी दृष्टि से एक बार अपने चारों ओर देखा। उसके चारों ओर जमा लोगों की आँखों में सहानुभूति थी।

आश्वस्त होकर उसने पनीर अपने हाथ में ले लिया, और नज़र उठाए बिना ही उसे मुँह में रख लिया।

शो-पीर ने निस्सो के सूजे हुए टखने का सावधानी से स्पर्श किया, लेकिन सकपका कर उसने अपना पाँव खींच लिया।

"ऐसा मालूम होता है मानो तुम किसी चीते से जूझ कर आ रही हो। लेकिन कोई बात नहीं, यहाँ रहोगी तो सब ठीक हो जाएगा। क्या तुम अपने आप चल सकती हो ?"

निस्सो की बाँह पकड़ कर उसे उठाने के लिए शो-पीर आगे झुका ही था कि वह उछल कर खड़ी हो गई और कन्नी काट कर भागने की कोशिश करने लगी।

दर्रे के निवासियों ने हँसते हुए उसे चारों ओर से घेर लिया।

"शो-पीर, हो न हो, इसके सिर पर ज़रूर कोई देव सवार है !"

निस्सो अब शान्त थी। उसका बदन काँप रहा था।

"लगता है, इसे काफी दुःख उठाने पड़े हैं," शो-पीर ने कहा—"हमें इसकी पूरी टहल करनी होगी। दिन का काम तो खत्म हो गया। अब घर चलना चाहिए। और तुम," प्रेमपूर्ण उलाहने के साथ उसने निस्सो से कहा—"तुम निरी पगली हो। भला हम से डरने की क्या जरूरत है ? चलो हमारे साथ नीचे चलो।"

गांव की ओर जाने वाले पथ से वह नीचे उतरने लगी। दर्रे के निवासी उसे चारों ओर से घेरे थे। रह-रह कर वह अपने इधर-उधर देखती थी, मानो वह निकल भागने की खोज में हो। बख्तियार सबसे आगे था। दर्रे के अन्य निवासी, कौतुक में डूबे, उसे निकट से देखने के लिए उचक रहे थे। निस्सो की हर चीज उनके कौतुक का कारण थी : उसके फटे हुए कपड़े जो यहाँ के पहनावे से सर्वथा भिन्न थे, उसकी भयभीत आंखें, धूप में तपे उसके शरीर पर पड़े खरोंचों के निशान जो फटे हुए कपड़ों के भीतर से दिखाई देते थे, और उसका कोमल चेहरा जो गर्द की मोटी तह जमी होने के बाद भी इतना सुन्दर मालूम

होता था।

दर्रे के निवासी एक-दूसरे से कानाफूसी करते उसके बारे में तरह-तरह की अटकल लगा रहे थे। हो सकता है कि वह अपने पिता या पति के साथ कहीं जा रही हो, और वे रास्ते में किसी दुर्घटना के शिकार हो गए हों, या ऊंचाई से कोई चट्टान लुढक कर उन पर आ गिरी हो, या बर्फीली खोह से निकल कर किसी चीते ने उन पर आक्रमण कर दिया हो, या हो सकता है कि किसी सौदागर के काफिले से छूट कर वह पहाड़ों के बीच खो गई हो। सबसे अजीब बात तो यह थी कि वह ऊपर से, पहाड़ी चरागाह के भी उस पार से, आई थी जहां बर्फ के सिवा और कुछ नजर नहीं आता था।

बस्ती में पहुंचने पर पत्थर के ऊंचे बाड़ों, घरों की छतों और पेड़ों के पीछे से स्त्रियों की आँखें भी निस्सो की ओर ताकने लगीं। बख्तियार के घर के पास पहुंच कर शो-पीर ने घूम कर लोगों की ओर एकटक देखा।

"यह लड़की ही तो है, कोई अजीब जानवर नहीं जो इस तरह घूर-घूर कर तुम इसे देख रहे हो," शो-पीर ने प्रभावपूर्ण ढंग से कहा, "डर के मारे अगर इसकी जान निकल गई तो कौन जिम्मेदार होगा? अभी यह बख्तियार के घर में रहेगी। जब अच्छी तरह से सुस्ता लेगी तो सोवियत सत्ता का प्रतिनिधि होने के नाते बख्तियार इससे बातें करेगा।"

दर्रे के निवासी अनमने भाव से लौट गए। लेकिन फिर भी कुछ लोग जो अत्यन्त कौतुक प्रिय थे, बगीचे की दीवार की दरारों के पीछे चिपके रहे

शहतूत के पेड़ों के बीच घास का एक मैदान था। शो-पीर निस्सो को वहाँ ले गया। निस्सो, निसत्व हो, ज़मीन पर ढह गई, और अपने हाथ का उसने तकिया लगा लिया।

"बख्तियार, गुलरीज़ से जाकर कहो कि कुछ पानी गर्म करले।

और अपनी बन्दूक को चिकनाने के लिए मैंने जो चर्बी रखी थी, उसे भी पिघलवा लेना। लड़की की मरहम-पट्टी करनी होगी। और देखो, गुलरीज से कहना कि वह यहां चली आए।"

बख्तियार अपनी मां गुलरीज की खोज में चला गया। उसके चले जाने के बाद शो-पीर बहुत ही साफ़-सुथरे ढंग से सियातांग भाषा में बातें करने लगा। तीन वर्षों से अपनी निजी रूसी भाषा की जगह, जिसे यहां कोई नहीं समझता था, वह सियातांग भाषा में ही बातें करता आ रहा था।

"पहले मरहम-पट्टी, फिर चाय या दूध, इसके बाद स्नान। कितने दिन हो गए तुम्हें स्नान किए ? फिर तुम निश्चिन्त होकर आराम से सोना। डरने की कोई बात नहीं। जरा मेरी ओर देखो। क्या तुम्हें मुझसे डर लगता है ?"

निस्सो ने, लजा कर, पलकों के नीचे से शो-पीर की ओर देखा।

"देखो न," शो-पीर ने मुसकराते हुए कहा, "हम एक-दूसरे को अच्छी तरह समझते हैं। लेकिन तुम चुप हो, मानो तुम्हारे मुंह में जुबान ही न हो ?"

"क्या तुम यखबारियन नहीं हो ?" निस्सो ने दुविधा में फुसफुसा कर कहा।

"मैं ?—बिल्कुल नहीं। क्या मैं यखबारियन मालूम होता हूं ?" अपनी रंग-उड़ी टोपी सिर से उतार कर घास पर फेंकते हुए शो-पीर ने पूछा।

निस्सो ने अब निर्मल, उन्मुक्त दृष्टि से, उसके भूरे और छोटे छंटे हुए बालों तथा धूप में तपे शान्त चेहरे की ओर देखा। उसकी हंसती हुई नीली आंखों की ओर देखकर वह लजा गई।

"तुम...तुम भी बड़े 'वह' हो !"

"बड़े 'वह' हो—ओह !" सम्पूर्ण हृदय से हंसते हुए शो-पीर ने कहा, "मैं बड़ा 'वह' हूं ?, यह भी खूब कहा !" फिर, अपनी हंसी को रोक

कर और जान-बूझ कर उपेक्षा का भाव जताते हुए, उसने पूछा, "और तुम,—क्या तुम यखबार से भाग कर आई हो ?"

एक लम्बा सांस लेकर निस्सो ने अपनी आंखें नीची करलीं। वह बोली कुछ नहीं। इसी बीच बख्तियार भी आ गया। एक हाथ में वह पिघली हुई चर्बी लिए था, और दूसरे में ठंडे पानी का कटोरा।

"गुलरीज़ कहीं गई है। यह लो, चर्बी और पानी। कुछ पानी मैंने गर्म होने के लिए आग पर भी रख दिया है।"

रुई की जगह घास से काम लेते हुए शो-पीर ने निस्सो के घाव धोए और चोट लगे स्थलों पर चर्बी मली। यह सब करते-करते निस्सो की पलकें झपकने लगीं और नींद की गोद में वह पहुंच गई। शो-पीर ने जब यह देखा तो धीरे से उसे अपनी बाँहों में उठाया, और भीतर अपने कमरे में उसे ले गया। उसे अपने बिस्तरे पर सुला कर वह खुद बाहर आ गया।

दर्रे के तीन निवासियों ने जो कौतुकवश बगीचे की दीवार की दरारों से अभी तक चिपके थे, शो-पीर को अकेला बाहर निकलते देखा। इसका मतलब यह कि अब और कुछ देखने को नहीं मिलेगा।

जीभ से चटखारा लेते हुए उनमें से एक ने कहा, "देख लेना, वह उसे अपने घर में डाल लेगा!"

"अल्लाह ही जानता है," दूसरे ने कहा, "कौन जाने, वह पहिले से ही विवाहिता हो ?"

"अगर ऐसा हुआ तो पता चलने पर उसका पति उसे जीता नहीं छोड़ेगा," तीसरे ने हँसते हुए कहा, और इच्छा न होने पर भी अपने कपड़ों को संभालते तीनों वहाँ से विदा हो गए।

उस दिन, काफी साँझ बीत जाने पर, बख्तियार की माँ गुलरीज़ घर लौटी। अपने अप्रत्याशित महेमान के बारे में उसने बहुत जानना चाहा। लेकिन न तो उसका बेटा और न शो-पीर, दोनों कुछ अधिक न बता सके। हल्के हाथों से उसने निस्सो के कपड़े उतारे, चुपके से उसे

कम्बल ओढ़ा दिया और लड़की के फटे कपड़े धोने के लिए झरने पर चली गई।

जीवन में यह पहला अवसर था जब निस्सो बिस्तरे पर सोई थी। समूचे सियातांग में मात्र यही एक पलंग था। सियातांग में यूरोपीय ढंग का यह पहिला घर था।

शो-पीर और बख्तियार ने मिल कर इसे बनाया था। लेकिन घर का आधा हिस्सा जिसमें गुलरीज़ रहती थी, सियातांग के अन्य घरों से किसी प्रकार भी भिन्न नहीं था। वृद्धा की यही इच्छा थी, और शो-पीर ने उसकी इच्छा का मान रखा। और जब शो-पीर ने गुलरीज़ के लिए भी ऐसा ही एक दूसरा पलंग बनाना शुरू किया तो उसने कहा कि देव उसे इस बिस्तरे पर चैन से नहीं सोने देंगे। सो बख्तियार ने उसके लिए चपटे पत्थरों का चबूतरा-सा बना दिया, और उसकी दरारों को मिट्टी से भर कर उसके ऊपर तख्ते बिछा दिए।

बख्तियार ने अपने लिए बाहर आँगन में बासों का एक मचान-सा बना लिया। गर्मी के दिनों में, मच्छरों की पहुँच से बाहर, वह यहीं सोता था।

: ५ :

थाल-ऐसा गोल चाँद पहाड़ों के पीछे से निकल कर और धीरे-धीरे पतली हवा में तैरता हुआ दर्रे के ऊपर आगया। उसकी पीली हरी रोशनी नदी के कभी न निश्चल रहने वाले पानी, निस्तब्ध पहाड़ियों, दुर्ग की खण्डहर दीवारों और गहरे नदी-तट की ऊँची अकेली बुर्जी पर पड़ रही थी।

रात की तमाम निश्चल परछाइयों में केवल एक परछाईं हरकत कर रही थी। यह परछाईं बोबो कलां की थी जो दुर्ग की दीवार के पास चुपचाप और क्षण-भर के लिए भी रुके बिना काम में जुटी थी। विनष्ट हुई बुर्जी के मलबे से वह पत्थर उठाता, उनके बोझ के नीचे झुका अपनी नयी रिहाइश तक जाता, और सफाई के साथ उन्हें एक के

ऊपर एक चुन देता। इस प्रकार अपनी रिहाइश और नयी नहर के बीच वह पत्थरों की एक दीवार खड़ी करना चाहता था, ताकि दोनों एक-दूसरे से अलग रहें।

बोबो कलां का बदन कमर तक नंगा था। वह केवल एक पतलून पहिने था, जिसे फीते के एक टुकड़े से उसने बाँध रखा था। काम करते समय चाँद की किरनें कभी उसके वक्ष पर, जिसे सफेद लम्बी दाढ़ी ने आधा ढक रखा था और जिसपर पसलियों की काली रेखाएं साफ दिखाई पड़ रही थीं, और कभी उसकी पतली कमर की गाँठ-गठीली माँस-पेशियों पर थिरक रही थी। वह नहीं चाहता था कि उसे कोई काम करता हुआ देखे। सुबह उठने पर लोग सोचेंगे कि रात को खुद देवों ने आकर यह दीवार चुन दी है, ताकि वह शेषदुनियाँ से अलग मालूम हो!

दीवार आधी बन चुकी थी।

ठीक उस समय जब वह एक पत्थर अपने स्थान पर चुन चुका था, बोबो कलां सहसा चौंक कर सीधा खड़ा हो गया और कान लगा कर सुनने लगा। बोबो कलां को किसी के आने की सरसराहट सुनाई दी, जो बराबर निकट आती जारही थी।

बोबो कलां परेशान हो तेजी से बुर्जी की ओर लपका, महराबदार दरवाजे पर लटके अपने लम्बे सफेद लबादे को उसने उतारा, और बदन पर डाल लिया। फिर, उतावलापन छोड़, चाँदनी की ओर मुँह कर शान्ति के साथ हरे धुंधलके की ओर देखने लगा, मानो उसके गम्भीर चिन्तन को अभी-अभी किसी ने भंग कर दिया हो!

काली दाढ़ी और काली पगड़ी बाँधे एक मोटा आदमी आँगन को पार कर बोबो कलां की ओर आरहा था। उसकी पेटी में पीतल की कोर लगी हुई थी, जो चमक रही थी। उसकी ढीली-ढाली पतलून नीचे टखनों के पास समेट कर बाँध दी गई थी, जिससे उसका नाटा शरीर और भी बेडौल मालूम होता था। बोबो कलां ने मिरज़ाहूर को तुरन्त पहचान लिया, और उसकी ओर अप्रसन्न दृष्टि से देखा। उसे इस

सौदागर से घृणा थी, वैसे ही जैसे कि उसे अन्य सभी विदेशियों से घृणा थी।

सौदागर बोबो कलां के निकट पहुँचने से पहिले कुछ दूर पर रुक गया। वृद्ध को यह आभास नहीं मिलना चाहिए कि उसने सब कुछ देख लिया है। उसने विनष्ट बुर्जी और विस्फोट से खण्डहर बनी चट्टान की ओर देखा, फिर विनाश की व्यापकता से अभिभूत व्यक्ति की भाँति उसने अपने छोटे और मोटे हाथ आसमान की ओर उठा लिए।

"ओ परवरदिगार," सौदागर ने कहा, "कैसा उल्टा जमाना आगया है यह !"

मिरजाहूर बोबो कलां के पास पहुँचा जो निश्चल दृष्टि से उसकी ओर देख रहा था। वृद्ध का हाथ अपने हाथों में लेकर वह उसकी उंगलियों के छोरों को चूमने के लिए झुका। यह सियातांग का पुराना रिवाज था। लेकिन मिरजाहूर ने सियातांग में जन्म नहीं लिया था। बोबो कलां को सौदागर का यह खुशामदी रूप अच्छा नहीं लगा। अभिनन्दन के जवाब में वह रुखाई के साथ झुका, और गर्व से भिंचे अपने होठों को मिरजाहूर के हाथ तक ले जाने का अभिनय करते हुए फिर सीधा खड़ा होगया।

ओह, "कितनी सुहावनी रात है," बोबोकलां द्वारा चुनी गई दीवार की ओर देखते हुए सौदागर ने कहा।

"बैठो !" एक चपटे पत्थर की ओर इशारा करते हुए उपेक्षा से बोबो कलां ने कहा।

दोनों बराबर-बराबर बैठ गए। सौदागर को कुछ कहने का मौका न दे बोबो कलां ने कहा, "इस धरती पर अभी भी अच्छे लोग मौजूद हैं। और उन लोगों के हृदयों में भी जिन्होंने मुझे तज दिया है, मेरे लिए प्रेम बाकी है। देखो न, रात के अँधेरे में आकर उन्होंने मेरे लिए यह दीवार चुन दी है।"

मिरज़ाहूर, सम्मानपूर्ण भाव से, चुप बैठा रहा। बोबो कलां भी चुप था। आखिर इस खामोशी को भंग करते हुए बोबो कलां ने कहा, "आज कल कैसे चल रहा है, मिरज़ाहूर ?"

"चलना क्या है, बोबो," मिरज़ाहूर ने जवाब दिया, "मेरी दुकान पर अब कौन आता है ? अपना कर्ज़ अदा करने की अब किसे चिन्ता है ? लुक, छिप कर अब वे आते हैं, अफीम की मात्रा लेने के लिए, और सब कोई एक-दूसरे से इसे छिपाते हैं। आपको तो अफीम नहीं चाहिए, बोबो ? मैं अपने साथ कुछ ले आया हूँ।"

"नहीं, मिरज़ाहूर," बोबो कलां ने कहा, "न जाने कितनी बार तुमने मुझे अफीम भेंट करनी चाही है। लेकिन मुझे किसी दूसरी दुनियाँ के सपनों में नहीं डूबना है। इसकी ज़रूरत तो उन्हें होती है जिन्हें इस दुनियाँ के जंजाल से मुक्ति मिलने की कोई आशा नहीं होती।"

बोबो कलां फिर चुप होगया। लगता था जैसे वह मिरज़ाहूर से बातें नहीं करना चाहता।

पनचक्की के पास से बहती पानी की पतली धारा का मृदु कलरव सुनाई पड़ रहा था। चाँद आसमान में ऊपर उठता जारहा था, और उसी अनुपात में परछाइयाँ छोटी होती जारही थीं।

"उस दिन मैंने सुना कि बख्तियार तुम्हारे सामने काफी मुँह फट हो गया था। उसका दुस्साहस तो देखो !" बोबो कलां की कमज़ोर रग छेड़ते हुए मिरज़ाहूर ने कहा।

"वह सबसे कमीना आदमी है !" आखिर बोबो कलां अपने को न रोक सका, "एक दम मनहूस ? उसके पास न घर था, न बार, न भेड़ और न बकरी। तन ढकने को उसके पास एक चिथड़ा तक नहीं था !"

"और अब भी वह वैसा ही बना रहता अगर यह रूसी यहाँ न आगया होता !"

"हाँ, उस रूसी ने उसका दिमाग खराब कर दिया है। अब तो जैसे सैकड़ों देव एक साथ उसके सिर पर सवार हो गए हैं। उसकी

आँखें, उसकी ज़ुबान और उसकी एक-एक हरकत इसकी गवाह है। तुम्हें याद है वह दिन जब सब काफिरों को जमा कर उसने कहा था : 'सैयदो और मीरो, तुम्हारा अन्त आगया है। अच्छा हो कि अपना बधना-बोरिया उठाकर यखबार सिधार जाओ !"

"हां, बोबो कलां, मुझे सब याद है। मैं भी तब वहाँ मौजूद था।"

"और सबसे शर्म की बात तो यह कि सैयद और मीर सचमुच यहाँ से भाग गए। क्या वे भी मेरी तरह यहाँ नहीं रह सकते थे ? लेकिन उन्हें अपने दीन-ईमान की नहीं, दुनियावी दौलत की भूख थी। अब वे उसे ग्राम सोवियत का मुखिया कहते हैं। ग्राम सोवियत का मुखिया,—क्या कहूँ, कलेजा मुँह को आता है। वह आदमी नहीं, शैतान है !"

"जो भी हो, यह तो मानना होगा बोबो कलां कि अब उसके हाथों में ताकत है।"

"अब......लेकिन तीन साल पहिले जब यह रूसी यहाँ आया था तो बख्तियार मेरी रैयत था। वह कभी अपनी गरीबी की शिकायत नहीं करता था, ऐश व इशरत के पीछे नहीं भागता था। वह नदी-तट के पत्थरों के समान जीवन बिताता था। वह जानता था कि कुछ पत्थर बड़े होते हैं, कुछ छोटे और कुछ केवल रेत के दाने। और इन सब में एक उसी का जलवा नज़र आता है। लेकिन जब से यह शो-पीर आया है......तुम्हें याद है न वह दिन, जब वह यहाँ आया था ?"

"हाँ, मुझे सब याद है।"

"मैंने सोचा था कि यह विदेशी भी यहाँ से चला जाएगा, और उसकी कोई याद बाकी नहीं रहेगी। लेकिन उसकी बातों का कुछ ऐसा जहर फैला कि सभी को उसने ग्रस लिया। अकेले फकीर ही नहीं, आकोबिरों के लड़के तक उसकी बातों को दोहराते हैं। लेकिन मुझे क्या करना है। अपने जीवन के पाँच चक्र मैं पार कर चुका हूँ, और जो कुछ मुझे जानना चाहिए था वह सब मैं जानता हूँ। मै अब केवल शान्ति

चाहता हूँ। मुझे अन्य लोगों के मामलों में कोई दिलचस्पी नहीं है, और मुझे विदेशियों से भी कुछ लेना देना नहीं है।"

मिरज़ाहूर के हृदय में बोबो कलां की आखिरी बात खुब गई। और अपनी झुंझलाहट को छिपाने का भी उसने कोई प्रयत्न नहीं किया। बोला, "बोबो कलां, क्या तुम यखबारियों को भी विदेशी समझते हो?"

बोबो कलां यखबार के बारे में कोई बात नहीं करना चाहता था। मिरज़ाहूर का सवाल जले पर नमक छिड़कने से कम नहीं था। सियातांग के लोग यखबार के लोगों को नहीं चाहते थे। उन दोनों के बीच सदा से ही छत्तीस का सम्बन्ध था। मिरज़ाहूर भी यह जानता था। बोबो कलां ने अनुभव किया कि व्यर्थ ही एक यखबार को उसने अपने मुँह लगाया।

अगर मिरज़ाहूर सौदागर न होता तो इसमें कोई सन्देह नहीं कि वह इस अपमान को न सह पाता। वह केवल अपना होंठ काट कर रह गया। इसके अलावा जिस काम से वह आया था, उसका तो वह अब तक जिक्र भी नहीं कर सका था। सो उसने सब कुछ सुनते हुए भी अनसुना कर दिया, और अपनी आँखें उठाए बिना ही कहा, "अच्छा, यह तो बताओ कि क्या तुम्हें रूसी कारवां के बारे में कुछ मालूम है?"

"इस सम्बन्ध में वे शो-पीर से कुछ बातें कर तो रहे थे।"

"क्या बातें कर रहे थे वे?"

"यह कि कारवां आ रहा है।"

"कब?"

"किसी भी समय। वे अब घड़ियाँ गिन रहे हैं।"

"कारवां अपने साथ क्या लेकर आएगा, इस बारे में भी वे कुछ कह रहे थे?"

"आटा।"

"और क्या?"

"यह मुझे नहीं मालूम।"

"तुम्हें नहीं मालूम, लेकिन मुझे मालूम है। वह अपने साथ किताबें लाएगा जो बच्चों को खुदा से इन्कार करना सिखायेंगी। वह अपने साथ कपड़े लाएगा, जिन्हें पहिनना अपमानजनक होगा। वह अपने साथ बदबूदार पानी लाएगा, जिसे बीमारों के गले के नीचे उतारा जाएगा। आह बोबो कलां, तुम्हारी रैयत का न जाने क्या हश्र होने वाला है? रूसी शक्कर उनके पेट में जाएगी, रूसी नमक उनके खून में शामिल होगा, स्त्रियाँ पुरुषों को धता बतायेंगी और पुरुषों के दिमाग खराब हो जायेंगे!"

"और वे तुम्हारी दुकान से चीज़ें खरीदना बन्द कर देंगे!" बोबो कलां ने तीखे स्वर में मिरज़ाहूर से कहा।

"मेरी चीजें......क्या तुम समझते हो कि मै अपनी चीज़ों के लिए परेशान हूँ। क्या तुम समझते हो कि उस कारवां के यहाँ आने का कोई अच्छा नतीजा निकलेगा? क्या तुम समझते हो कि उससे तुम्हारी रैयत का लाभ होगा? क्या तुम उन लोगों से भी बात नहीं करोगे जो अभी भी तुम पर विश्वास करते हैं? क्या तुम उनके सूने हृदयों को अपनी बुद्धिमत्ता से वंचित रखोगे? या तुम सभी को एक सिरे से काफिर समझ कर रद्द कर चुके हो?"

"तो तुम यह सिखाने आये हो कि मुझे क्या करना चाहिए," बोबो कलां ने रूखे स्वर में कहा, "एक सौदागर से मुझे यह सब सीखना होगा, क्यों?"

"मुझे माफ करो। अपने उबलते हुए हृदय पर मैं काबू नहीं रख सका। और यह तो बताओ कि क्या तुमने उसे देखा है जो इतने रहस्यमय ढंग से यहाँ आई है?

"मैंने उसे नहीं देखा।"

"लेकिन मैंने देखा है। वह एकदम जवान है।"

"तुम्हारी अपनी जाति की है?"

"उसने कुछ नहीं बताया। और खुद मैं भी कुछ नहीं कह सकता। उसका चेहरा-मोहरा हमारे अपने लोगों के जैसा है।"

"मैंने सुना है कि उसके कपड़े हमारे यहाँ के पहनावे से भिन्न हैं।"

"उसके कपड़े सब फटे हुए थे, लेकिन थे अमीरों जैसे। वे यखबारी कपड़े थे। हमारी स्त्रियाँ अपने बालों को उस तरह चोटियों में नहीं गँथती जैसे कि उसके गुँथे हुए थे।"

"तो तुम्हारी समझ में वह यखबार से आई है?"

"कौन जाने! हो सकता है, वहीं से आई हो। मेरा खयाल है कि वह वहीं से आई होगी।"

"उसके बारे में तुम्हरा और क्या ख्याल है, बोबो? क्या तुम समझते हो कि वह अपने पति को छोड़कर भाग आई है?"

"मैं नहीं जानता कि वह कौन है? मैं केवल यही जानता हूँ कि इन पहाड़ों में किसी स्त्री का अकेले घूमना और बिना किसी पुरुष के अँकुश के जो मन में आए करना, अच्छी बात नहीं है। आज कुछ ऐसा ही जमाना आगया है। एक गन्दी मछली सारी मछलियों को गन्दा कर देती है। अच्छा होता अगर वह यहाँ न आती। अच्छा होता अगर हमारी स्त्रियाँ उसे न देखतीं; और उसका अनुकरण न करतीं। लेकिन तुम्हारी दिलचस्पी उसमें इतनी क्यों है, सौदागर?"

"कुछ नहीं, कोई खास बात नहीं, बोबो!" मिरज़ाहूर ने तेजी से बुदबुदा कर कहा, "केवल कौतूहलवश ही मैंने यह पूछा, किसी खास मक्सद से नहीं। अरे, चाँद पहाड़ों के पीछे खिसकने लगा है। अब चलना चाहिए। यह दुनियाँ भी कितनी विचित्र है, समय की दीवार के पीछे कितने दिलचस्प रहस्य छिपे हैं? तुम से बातें करके मेरी आत्मा को बहुत शान्ति मिली। जब घर में अकेलापन काटने दौड़ता है, तो तुम्हारे पास आकर ही शान्ति मिलती है। आशा है, अपने संसर्ग से मुझे आगे भी वंचित न रखोगे।"

वृद्ध के उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना सौदागर जल्दी से उठा, और औपचारिक ढंग से विदा लेने के बाद वहाँ से चल दिया। हालाँकि चाँद अभी पहाड़ों की कोर तक नहीं पहुँचा था, लेकिन बोबो कलाँ ने

अपने बे बुलाए मेहमान को रोकने की कोई कोशिश नहीं की।

: ६ :

मिरज़ाहूर की दुकान, समूचे गाँव को पार करके, ठीक पहाड़ी के उस छोर पर स्थित थी। सामने नदी बहती थी। दुकान के कामदार दोहरे दरवाजों को मिरज़ाहूर ने चुपचाप खोला, और ड्योढ़ी पर ठिठक कर खड़ा हो गया। भीतर एक अन्धेरे कोने में से ख़र्राटों की आवाज आ रही थी। कोने में खूब ऊँचे तक माल चुना था।

"केन्दितरी, ओ केन्दितरी !" सौदागर ने धीमे स्वर में पुकारा।

ख़र्राटों की आवाज़ एकाएक बन्द हो गई।

"केन्दितरी !" सौदागर ने फिर दोहराया, "उठकर यहाँ आओ, तुम से बातें करनी है।"

"क्यों, क्या बात है ?" नींद में डूबी आवाज़ में उसने पूछा।

मिरज़ाहूर दरवाज़े की सीढ़ी पर बैठ गया। एक हाथ से अपनी पतलून थामे एक अधनंगा आदमी बाहर आया। उसका साफ-सुथरा हंसिये की भांति पैना और पतला चेहरा चाँद की रोशनी में चमक रहा था। चेहरे के लघु और रूखे नाक-नक्शे पर खाल कसकर चढ़ी थी। उसके बड़े-बड़े बाहर को निकले दाँत भावशून्य हँसी में खिले हुए थे, मानो अतीत में किसी समय यह कुत्सित हँसी स्थायी रूप से उसके चेहरे पर जम कर रह गई हो। उसका सिर, जिसके बाल उस्तरे से साफ किए हुए थे, चान्दनी में चमक रहा था।

दरवाज़े की सीढ़ी के पास पहुँच कर वह उकड़ूं बैठ गया :

अर्द्ध कानाफूंसी के स्वर में मिरज़ाहूर ने बोबो कलाँ से अपनी भेंट का जिक्र किया। केन्दितरी एक नाई मात्र था, जिसे सौदागर ने अपनी दुकान में रहने की अनुमति दे रखी थी। इसके बदले में वह उसकी दुकान का काम कर देता था। समझा जा सकता है कि यह फटे हाल दीन-हीन नाई जिसका जीवन सौदागर की दया पर निर्भर करता था, सौदागर के सामने विनम्रता और लिहाज से पेश आता होगा। भूखा और

गंदा, दो साल पहिले वह इस गाँव में आया था और उसके कन्धे पर सिवा एक थैले के और कुछ नहीं था, जिसमें एक घर का बना उस्तरा और चिथड़े में लिपटी उसे तेज़ करने की एक पथरी रखी थी। उस समय जब अन्य कोई उसे अपने यहाँ शरण देने के लिए तैयार नहीं था, मिरज़ाहूर ने उसे भर पेट भोजन कराया, सोने के लिए जगह दी और अपने भण्डार में से निकाल कर एक चोगा और पगड़ी तक भेंट की।

मिरज़ाहूर की यह उदारता देखकर शुरू-शुरू में सभी को अचरज हुआ, लेकिन जब केन्दितरी को उसके यहाँ रहते पहिले एक महीना बीता, फिर दूसरा बीता और अन्त में जब स्थायी रूप से वह यहां रहने लगा, तब दर्रे के निवासियों ने सोचा कि मिरज़ाहूर को एक सस्ता मज़दूर मिल गया है और जब तक वह उससे सौगुना वसूल न कर लेगा, कभी चैन से नहीं बैठेगा। अगर उसने यह भी नहीं किया तो फिर वह सौदागर कैसा!

केन्दितरी ने दर्रे के निवासियों के सिर और दाढ़ी के बाल साफ करने का धंधा शुरू कर दिया। इसके लिए वह कभी दाम तय नहीं करता था। जो मिल जाता था, उसी से सन्तुष्ट रहता था। टोपी-भर गेहूँ हों चाहें मुट्ठी-भर सूखे शहतूत, सब खुशी से स्वीकार कर लेता था। गाँव में कोई नहीं जानता था कि वह कहाँ से आया है, और किस जाति की वह सन्तान है। न तो वह यखबार मालूम होता था, न चीनी, न फारसी, न मंगोल। हो सकता है, वह उत्तर भारत के किसी कबीले से या उससे भी कहीं और दूर से आया हो!

चाहे जहाँ से भी वह आया हो, दर्रे के निवासी शीघ्र ही उसके अभ्यस्त हो गए। वह उनके मामलों में कभी दखल नहीं देता था, और दुकान पर मिरज़ाहूर की जगह बैठा वह बिरले ही सौदा बेचता दिखाई देता था। ऐसा तभी होता था जब सौदागर सौदा लेने यखबार जाता था। पिछले साल सौदागर ने उसे एक बन्दूक भेंट की थी। बन्दूक बढ़िया थी, जिसे वह यखबार से लाया था। तब से बन्दूक हाथ में लेकर

केन्दितरी शिकार के लिए जाता था, पहाड़ों में एक साथ कई-कई दिन तक गायब रहता था और हमेशा अपने साथ पहाड़ी बकरी, लोमड़ी या किसी अन्य जानवर की खाल लेकर लौटता था। हर कोई जानता था कि खाल और मांस सौदागर ले लेता था, और इस प्रकार केन्दितरी को बन्दूक भेंट करना कोई घाटे का सौदा नहीं था। दर्रे के निवासियों से बातें करते समय केन्दितरी अपने बारे में कभी कुछ नहीं कहता था, बल्कि हँसी के तेज पुट और लनतरानी के साथ एशिया के सभी पहाड़ी प्रदेशों की प्रेम-कहानियाँ सुनाया करता था।

केन्दितरी दुकान के कामदार दरवाज़े से टेक लगाए बैठा था। उसके कान अपने अन्नदाता की बातें सुनने के लिए तैयार थे। पहिले मिरज़ाहूर ने कारवां का जिक्र किया जो सियातांग जाने वाला था, और जिसके बारे में दोनों पहिले से ही जानते थे। लेकिन जब उसने निस्सो का ज़िक्र किया तो केन्दितरी ने उसे टोका।

"लड़की को गोली मारो, मिरज़ाहूर! उसके चक्कर में पड़ने से हमें क्या फायदा?"

"ठहरो केन्दितरी," मिरज़ाहूर ने विरोध किया, "वह मामूली लड़की नहीं है। मुझे लगता है कि वह हमारे लिए सोने की चिड़िया सिद्ध होगी। वह यखबारी कपड़े पहिने थी। बोबो कलां का कहना है कि उसके कपड़े अमीरों जैसे थे। कौन जाने, वह अपने पिता या पति को छोड़कर यखबार से भाग आई हो। वे जरूर उसकी खोज कर रहे होंगे। अगर हमें उनका पता चल जाए तो अच्छी रकम हाथ लग सकती है।"

"पागल न बनो, मिरज़ाहूर," केन्दितरी ने रूखी झुंझलाहट से कहा, "अगर वह बख्तियार और शो-पीर के पास न होती तो कुछ किया जा सकता था। लेकिन अब इस मामले में हाथ डालना मुसीबत मोल लेना है।"

सौदागर की गरदन झुक गई, और वह विचारों में डूब गया।

सचमुच, लड़की को यखबार वापिस भेजना टेढ़ी खीर था। केन्दितरी का कहना ठीक था। लेकिन काम जितना कठिन होता है, उसका पैसा भी तो उतना ही ज्यादा मिलता है।

"छोड़ो भी उसे," केन्दितरी ने निर्णयात्मक स्वर में कहा, "लेकिन यह बताओ, बोबो कलां को तुम चाय तो भेंट कर आए न ?"

मिरज़ाहूर अपनी सकपकाहट न छिपा सका। केन्दितरी की नज़र बचाते हुए उसने जबाव दिया, "मैं देने जा ही रहा था कि..."

"मैंने तुमसे एक सीधा सवाल पूछा था। वह यह कि तुम उसे चाय दे आए या नहीं ?"

"मैंने उसे एक दूसरी चीज़ भेंट की थी।"

"वह क्या ?"

"लेकिन उसने ली नहीं। इसमें मेरा क्या दोष अगर वह कोई चीज़ न लेना चाहे। मैंने उसे अफीम भेंट की थी।"

"फिर वही अफीम ? और यह जानते हुए कि वह अफीम का नशा नहीं करता !"

मिरज़ाहूर एक मुद्दत से बिना कुछ लिए बोबो कलां को सभी चीजें सप्लाई करता आरहा था। कभी आटा, कभी चाय, कभी नमक, कभी मटर, कभी साबुन, कभी माँस, कभी कुछ, और कभी कुछ। उसका हृदय पक गया था और वह केन्दितरी से साफ-साफ कहना चाहता था कि उसके बूते का यह सब नहीं है।

मिरज़ाहूर उठा और उस बही को निकालने लगा जिसमें बोबो-कलां के नाम पर ये सब चीजें दर्ज थीं। केन्दितरी ने हाथ के इशारे से उसे रोक दिया। मिरज़ाहूर विचलित हो उठा और झुँझला कर बोला, "अच्छी बात है। बिना हिसाब देखे भी तुम सब समझ सकते हो। मैं बराबर उसे चीजें देता आ रहा हूँ। इसका कोई अन्त नहीं दिखाई देता, और वह बूढ़ा हर चीज़ उठा कर रख लेता है, मानो वह खान हो और मैं उसकी दीन-हीन रैयत। वह मेरी ओर नज़र तक उठाकर देखना पसन्द

नहीं करता। उसके होठों पर उपेक्षा और घृणा साफ दिखाई देती है। और इधर तुम मुझे लालची, कंजूस, और न जाने क्या-क्या कहोगे। लेकिन घोड़ा घास से मुँह मोड़ेगा तो खाएगा क्या?"

"ज़रा यह तो बताओ, मिरज़ाहूर," धीमे और गम्भीर स्वर में केन्दितरी ने कहा, मानो उसने मिरज़ाहूर की किसी भी बात को न सुना हो, "क्या लड़की रात को बख्तियार के यहाँ सोती है?"

मिरज़ाहूर की झुँझलाहट एकाएक उत्सुकता में बदल गई।

"लड़की...हाँ, वह बख्तियार के घर में है। मेरे आदमी ने शो-पीर को उसे घर के भीतर ले जाते देखा था। सच कहता हूँ, इस लड़की की बदौलत एक अच्छी रक़म हाथ लग सकती है।"

"तुम्हारा कहना ठीक हो सकता है, मिरज़ाहूर!" केन्दितरी ने उसी गम्भीर स्वर में कहा, "यह मालूम करना ज़रूरी है कि वह किसके पास से भाग कर आई है।"

मिरज़ाहूर की खुशी और उत्सुकता का कोई अन्त नहीं था। केन्दितरी ने एक संक्षिप्त और रूखी नज़र से उसे देखा फिर चाँद की ओर देखकर अन्दाज़ लगाया कि सुबह होने में अभी कितनी देर है। इसके बाद उठते हुए बोला, "अब तुम जाकर सोओ, और मेरे लौटने तक भीतर से दरवाज़ा बन्द न करना।"

केन्दितरी दुकान के अँधेरे में गायब होगया और जब वह बाहर निकला तो अपना भूरा चोगा और तुबेताका (कामदार टोपी) पहिने था। मिरज़ाहूर की ओर ज़रा भी ध्यान दिये बिना वह नीचे उतरा, और हल्के डग भरता हुआ चल दिया।

मिरज़ाहूर ने एक गहरी साँस ली, और दुकान के भीतर जाकर दरवाज़ा ऐसे ही ओटका लिया।

पहाड़ियों की ओट में, बस्ती से बचता और चाँद की रोशनी से छिपता, केन्दितरी बख्तियार के घर की ओर चल दिया। जब वह बख्तियार के घर के निकट पहुँचा तो चाँद अपनी यात्रा करीब-करीब

पूरी कर चुका था। पत्थरों की दीवार लांघ कर वह दूसरी ओर उतर गया। दबे पाँव घर की ओर बढ़ा। बख़्तियार अपने मचान पर सो रहा था। एक पेड़ के नीचे कम्बल में अपने-आप को लपेटे शो-पीर नींद में डूबा था। घर की खिड़की चाँद की रोशनी में चमक रही थी। पेड़ों के पीछे से निकल कर, बिल्ली की भाँति बिना कोई आवाज़ किए, वह खिड़की के पास चला गया।

कमरे में चाँदनी का उजाला फैला था। निस्सो एक बड़े बिस्तरे पर लेटी नींद में भी छटपटा रही थी। उसका दाहिना हाथ पलंग की बांही से खिसक कर नीचे लटक आया था। उसके काले बाल तकिए पर छितरे थे और उसका सफ़ेद शान्त चेहरा ऐसा मालूम होता था मानो किसी मुलायम पत्थर से गढ़ कर बनाया गया हो।

केन्दितरी को सपने में भी आशा नहीं थी कि वह इतनी सुन्दर होगी। मन न करने पर भी लड़की के चेहरे से नजर हटाकर उसने कमरे में देखा। लेकिन वह चीज़ जिसकी खोज में वह था, दिखाई नहीं दी। इसके बाद सावधानी से उसने घर का चक्कर लगाया। सूने वराण्डे में, अन्य कपड़ों के साथ-साथ, निस्सो के फटे हुए कपड़े भी थे, जिन्हें बख़्तियार की माँ ने धोकर यहाँ सुखा दिया था। केन्दितरी ने उन्हें चुपचाप उतार कर अपने चोगे में छिपा लिया और दीवार लाँघकर तेज़ी से बाहर आगया।

चौथा परिच्छेद

: १ :

निस्सो नींद में भी रात-भर छटपटाती रही। आशंकाओं ने सपनों में भी उसका पीछा नहीं छोड़ा। उसे ऐसा लगा जैसे भारी आवाज आरही हो, जो हर घड़ी बढ़ती जारही थी। उसके चारों ओर काले रंग के पत्थर थे, पत्थर और चट्टानें। एक भीमाकार आदमी काली चट्टान के पीछे से प्रकट हुआ। वह काला और असाधारण रूप में मोटा था। ऐसा कि देखकर डर लगता था। छाज जैसे बड़े-बड़े उसके कान थे, और सिर गुम्मों से भरा था। नाक की जगह पर एक काला छेद था, उसकी ठोड़ी खुर की भाँति दो फाँकों में चिरी थी और गरदन के बाल सेह के काँटों की भाँति खड़े थे। निस्सो ने उसे तुरत पहचान लिया। यह अजीजखान था और निस्सो की ओर बढ़ा चला आ रहा था। निस्सो को जैसे काठ मार गया। काले रंग के अपने मोटे-मोटे हाथों से वह निस्सो को दबोच ही लेता, अगर नीले सींग वाली गाय एकाएक उन दोनों के बीच आकर खड़ी न हो जाती।

"आ-आ-यो !" निस्सो के मुँह से चीख निकली, और चीख के साथ उसकी आँखें खुल गईं।

निस्सो पसीने में तर थी। कोहनी के बल उठकर वह बैठ गई और यह जानने के लिए कि वह कहाँ है, भय से उसने अपने चारों ओर देखा।

लेकिन भय की कोई चीज उसे नजर नहीं आई।

निस्सो का गला सूख रहा था। पानी के लिए उसने झुककर बिस्तरे के नीचे देखा। लकड़ी के फर्श के सिवा उसे और कुछ नहीं दिखाई दिया। लकड़ी का फर्श भी क्या दुनियाँ में कहीं होता है ? जिस बिस्तरे पर निस्सो सोई थी, उसका उसने स्पर्श किया। कितना मुलायम बिस्तरा था, और कितना अच्छा ! रजाई बिस्तरे से खिसक कर नीचे फर्श पर गिर गई थी। निस्सो ने उसे उठा लिया, और उस पर हाथ फेर कर देखने लगी।

आवाज़ अभी भी आरही थी। लेकिन अब यह आवाज़ मृदु और सुहावनी थी, पानी के बहने की छल-छल आवाज।

निस्सो चुपचाप बिस्तरे से नीचे उतर आई। उसके पुट्ठे अभी भी दुःख रहे थे, लेकिन मन प्रसन्न था। अँगूठों के बल चलकर वह खिड़की के पास पहुँची। एक बहुत अच्छे, साफ-सुथरे, घास के मैदान पर उसकी नज़र पड़ी। शहतूत के पेड़ों के उस पार एक भीमाकार चट्टान खड़ी थी, और चट्टान से परे पहाड़ थे जो आसमान को छू रहे थे। आसमान नीला और साफ था। निस्सो से कुछ ही दूर, पेड़ के नीचे, एक चटाई पर कम्बल ओढ़े कोई सो रहा था। खाकी रंग की गोट लगे सुन्दर हरे तकिए पर उसका सिर टिका था। निश्चय, यह वही बड़ा आदमी होगा।

खिड़की से हट कर निस्सो कमरे में देखने लगी।

बिस्तरे के ऊपर एक बन्दूक लटकी थी जो पहलवान नज़र की बन्दूक से एक दम भिन्न थी। बन्दूक के नीचे चमड़े का एक थैला और कुछ चमकदार छड़ लटके थे। दीवार से सटी एक बिना पालिश हुई मेज़ रखी थी। निस्सो ने इससे पहिले कभी मेज नहीं देखी थी। इस पर मिट्टी के कुछ प्याले, चाय की एक केतली, लकड़ी का एक बक्स जिसमें सेब थे, और अन्य कितनी ही चीजें रखी थीं जो निस्सो के लिए सर्वथा नयी थीं। दूसरी दीवार के पास, चीजें रखने के लिए, लकड़ी के छोटे-छोटे खाने थे जिनमें दरवाज़े लगे थे। निस्सो ने उन्हें खोलना

चाहा, लेकिन उनके चरचराने की आवाज सुन तुरन्त हाथ खींच लिया। दीवार में कुछ खूटियाँ लगी थी, लकड़ी या पत्थर की नही, बल्कि धातु की। इन खूटियों पर, दरवाज़े के पास, सफेद रंग के दो लम्बे चोगे लटके थे। कमरे में दरवाज़ा भी है, यह निस्सो ने अभी देखा।

निस्सो, कुछ सोच मे पड़कर, दरवाज़े से हट गई। कैसे हैं ये लोग जिनके बीच वह अब आगई है? लुकती-छिपती, जान बचा कर वह भागी थी, और हजारों आशंकाओं ने उसके हृदय को मथ डाला था। अन्त में वह यहाँ पहुँच गई। शीघ्र ही वे आएगे, उससे पूछ-ताछ करेंगे, और उसे काम में जोत देंगे। उसके जीवन का भयानक दौर फिर शुरू हो जाएगा। और वह आदमी जो बाहर सोरहा है, हो सकता है कि वह उसे अपनी पत्नी बनाना चाहे। अगर ऐसा नहीं है तो वह उसे अपने घर मे लाकर क्यों रखता? और कौन जाने, ये अज़ीज़खान को जानते और उससे डरते हों? अगर वह इधर आया और इन लोगों ने उसे उसके हवाले कर दिया तो...?

निस्सो के सारे शरीर में भय के मारे कंपकंपी-सी दौड़ गई। यहाँ से भागने के लिए उसका रोम-रोम उतावला हो उठा। घबरा कर वह दरवाजे की ओर लपकी, लेकिन तभी उसे खयाल आया कि कपड़े तो वह पहिने नही है। ऐसी हालत में वह भाग कैसे सकती है? तभी दरवाजे के दूसरी ओर से किसी स्त्री की आवाज़ सुनाई दी, "क्या जाग रही हो?"

निस्सो लपक कर बिस्तरे पर पहुँची, और रजाई ओढ़ कर चुपचाप लेट गई।

दरवाजा खुला और एक सीधी, सफेद बालों वाली, बूढ़ी स्त्री ने कमरे में प्रवेश किया। तोते ऐसी नुकीली उसकी नाक थी, और चेहरे पर झुरियाँ पड़ी हुई थीं।

निस्सो ने आँख की कोर में से उसे देखा, इस तरह कि वह खुद तो

उसे देख सके, लेकिन उसे पता न चले।

"अहा, सोने का बहाना कर रही है! लेकिन मैं जानती हूँ कि तेरी आँखें खुली हैं।"

निस्सो ने तय किया कि वह बोलेगी नहीं। वह कुछ नहीं कहेगी, न तो अब और न बाद में। कल की भाँति वह आज भी चुप रहेगी।

"तुम चुप क्यों हो? क्या मुझसे डर लगता है?" गुलरीज ने शान्त स्वर में कहा। निस्सो ने देखा कि उसकी आँखों में हँसी खेल रही है।

"मुझे क्या पता कि तुम कैसी हो?" कुछ न कहने के अपने निश्चय के बावजूद निस्सो ने उत्तर दिया।

"ओह!" वृद्धा का चेहरा हँसी से खिल उठा, और निस्सो ने देखा कि झुर्रियाँ होने पर भी उसके चेहरे में ताजगी और निर्मलता है, और उसके दाँत किसी युवती स्त्री के दाँतों की भाँति सफेद चमक रहे हैं।

"मैं कैसी हूँ? मेरे दो हाथ हैं, एक सिर है। मुझसे भयानक भला और कौन होगा! लेकिन मैं सोच रही थी कि तुम्हें खाने के लिए कुछ दूँ। क्या तुम्हें भूख नहीं लगी है?"

"तुम कौन हो?" सिर पर से रजाई उतारते हुए निस्सो ने पूछा।

"मैं?" वृद्धा ने हँसते हुए अपनी ठोड़ी में उँगली गड़ा कर कहा, "मैं बहुत ही भाग्यवान हूँ। बस इतना ही जान लो कि मैं ग्राम सोवियत की मां हूँ।"

"तो क्या तुम्हीं यहाँ की मालिक हो?"

"नहीं, मैं नहीं, मेरा बेटा बख्तियार ग्राम सोवियत का प्रतिनिधि है। यह घर उसी का है। डरो नहीं, वह तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाएगा। अब उठो, बहुत सो चुकीं। तुम मुझे नाना (माँ) कह सकती हो। क्या तुम्हारी माँ नहीं है? जवाब के नाम फिर चुप्पी! अच्छी बात है, अब उठो। ऐसा मालूम होता है कि कोई देव तुम्हारे कपड़े उठा ले गया। उन्हें धोने में मैंने व्यर्थ ही मेहनत की। रस्सी पर मैंने

उन्हें सुखा दिया था, और आज सुबह जब मैं उन्हें उतारने गई तो वे गायब थे। समझ नहीं आता, कपड़े क्या हुए ? जाने भी दो, फटे कपड़ों का ख़याल करने से क्या फायदा। उठो, और मेरे कपड़ों में से कोई पहन लो।"

निस्सो ने चुपचाप रज़ाई उतार दी, और नीचे फर्श पर पांव लटका लिए। वृद्धा बहुत ही सहृदय स्त्री थी।

"क्या दुखते हैं ?" गुलरीज़ ने सहानुभूति के साथ उसके सूजे हुए पावों को देखा, "चल सकती हो न ?"

"अब अधिक नहीं दुखते," निस्सो ने कहा, और कपड़े न पहने होने के कारण सकुचाती सी उठ खड़ी हुई, "यह आवाज कहाँ से आरही है, नाना ? नदी कितनी दूर है ?"

"बड़ी नदी तो नीचे है। लेकिन उसकी एक धारा दीवार के पास से बहती है। इतना आरामदेह घर हमें शो-पीर की बदौलत मिला है। गर्मियों में जरा भी गर्म नहीं रहेगा। यह उसी की सूझ-बूझ का फल है।"

"शो-पीर कौन है ?"

"वह जो बाहर सो रहा है।"

"क्या वह तुम्हारा बेटा है ?"

"मेरा बेटा बख्तियार है। वह वहाँ मचान पर सो रहा है। शो-पीर रूसी है। उस जैसे बेटे को अपनी कोख से जन्म देकर मैं अपने को धन्य मानती !"

गुलरीज़ एक क्षण के लिए बाहर चली गई।

फिर वापिस लौटकर और घर का कता-बुना एक लम्बा चोगा बिस्तरे पर डालते हुए उसने कहा, "इसे पहन लो। उन सब के जागने से पहले हमें न्हा-धोकर तैयार हो जाना है।"

गुलरीज की बातों से आस्वश्त निस्सो ने अब कोई आना-कानी नहीं की, और चुपचाप उसके साथ चल दी। बराण्डा पार कर गुलरीज ने गर्म पानी का पिचर उठाया और निस्सो को साथ लिए पास एक झरने पर पहुँच गई।

निस्सो ने अपना चोगा उतार दिया, जो इतना नीचा था कि ज़मीन छूता था। गुलरीज़ ने खुद अपने हाथों से निस्सो का बदन साफ़ किया। फिर उसे कपड़े पहनाए। और कमर में एक ऊनी पेटी बाँध कर चोगे को छोटा कर दिया।

"अब चलो मेरे साथ," गुलरीज़ ने कहा, "घर चलकर चुपचाप बैठी रहना, कहीं जाना नहीं। मैं शो-पीर को बुला लाऊँगी। उसने कहा था कि जब तुम जाग जाओ तो खबर करना।"

निस्सो वापिस लौट कर वराण्डे की सीढ़ियों में से एक पर बैठ गई, और अपने गीले बालों को गूँथने लगी। उसने अपने बाल अब अनेक छोटी-छोटी चोटियों में नहीं गूँथे जैसा कि वह अज़ीज़खान के आदेश से करती थी, बल्कि दो बड़ी चोटियों में गूँथे जैसा कि वह बचपन में दो-आब में गूँथती थी। गुलरीज़ भी अपने बालों को इसी प्रकार दो चोटियों में गूँथती थी।

"तो वह रूसी है," निस्सो सोचने लगी, "मैंने पहिले कभी किसी रूसी को नहीं देखा। कितना अच्छा मकान है उसका, बड़ा साफ, और सारा लकड़ी का बना, फर्श तक लकड़ी का बना है। और उसकी नीली आँखें, रूसियों की आँखे नीली होती हैं? मजबूत इतना जैसे देव। वह अब आता होगा और..."

निस्सो की भौंहों में फिर बल पड़ गए, और उसके हृदय में बेचैनी तथा विरोध के भाव फिर उमड़ने लगे। अपने सिर को पीछे की ओर फेंकते हुए उसने बग़ीचे की दिशा में देखा जिधर से कि शो-पीर के आने की आशा थी। ओह नहीं, वह उसकी बातों में नहीं आएगी, अपनी ज़ुबान से एक शब्द भी वह नहीं कहेगी, और आज नहीं तो कल यहाँ से भी वह गायब हो जाएगी!

: २ :

सामने से तो नहीं, बल्कि घर के कोने के पीछे से वह आया। निस्सो ने चौंक कर अपनी आँखें नीची करलीं, और घुटनों के बीच

अपना सिर छिपा लिया।

"ओह, जंगली बिल्ली!" शो-पीर ने हँसते हुए कहा, "तुझे हाथ तक मिलाना नहीं आता। देखो, हम रूसी इस तरह एक-दूसरे का अभिवादन करते हैं।"

शो-पीर ने निस्सो का हाथ उसके घुटने से हटाकर अपने चौड़े हाथ में ले लिया। निस्सो की उँगलियाँ मुलायम और ढीली पड़ी थीं। शो-पीर ने दुलराते हुए कहा, "अरे यह क्या, तुम्हारी उँगलियाँ इतनी ढीली क्यों है, जैसे इनमें जान ही न हो! कस कर हाथ मिलाओ। तुम कमज़ोर हो, यह मैं नहीं मानता। जो लड़की अकेली पहाड़ों को लाँघ सकती है, वह..."

लड़की के गीले बालों को हल्के से छूते हुए शो-पीर ने उसका विचलित चेहरा अपनी ओर घुमा लिया। शो-पीर की ओर देखते समय निस्सो के चेहरे पर बरबस हँसी दौड़ गई।

"हाँ, यह ठीक है। देखो न बख्तियार, मैंने तुमसे क्या कहा था? यह मुसकराना जानती है!"

निस्सो ने मुड़ कर देखा। बख्तियार बराण्डे में खड़ा था। वह निस्सो की ओर इस प्रकार देख रहा था मानो उसने उसे पहिली बार ही देखा हो। और निस्सो ने जब मुड़ कर उसकी ओर देखा तो सबसे पहिले खुद उसने ही अपनी आँखें झुकालीं। फिर हँसी के स्वर में कहा, "लेकिन अपनी ज़ुबान को शायद यह चम्मच समझती है, जिसमें मधु भरा है। अगर ज़रा भी ज़ुबान हिलाएगी, तो मधु ढुलक जाएगा!"

"सो कुछ नहीं," शो-पीर ने हँसते हुए कहा, "असल बात यह है कि अभी यह हमें जानती पहचानती नहीं है। शीघ्र ही यह हमसे डरना छोड़ देगी। अच्छा, नन्ही चुहिया, तुम्हारा कोई नाम भी है या नहीं?"

"हाँ है," निस्सो ने साहस बटोरते हुए कहा।

"क्या नाम है?"

"तुम मेरा नाम जानना चाहते हो?" निस्सो के स्वर में अब चुनौती

का भाव था, "तो सुनो, मेरा नाम है निस्सो। और अब मैं तुमसे भी एक बात पूछना चाहती हूँ। तुमने मुझे इस घर में लाकर क्यों रखा है? मैं तुमसे जरा भी नहीं डरती। और देख लेना, तुम मुझे इस घर में बन्द करके नहीं रख सकोगे। मैं यहाँ से भाग जाऊँगी।"

"तुम यहाँ से भागना चाहती हो?"

निस्सो की भौहों में एक बार फिर बल पड़ गए।

"अच्छी बात है, तुम्हें भागने की पूरी छूट है!" कुछ गम्भीरता के साथ शो-पीर ने कहा, "अगर तुम्हें दुःख उठाने का इतना शौक है तो तुम्हारी मर्जी। तुम्हें कोई नहीं रोकेगा।"

शो-पीर की बातों में ऐसा कुछ नहीं था जिससे निस्सो डर का अनुभव करती।

"चलो, अब तुम हमारे साथ मेज पर बैठो, नहीं तो गुलरीज नाराज होगी। भोजन करने का समय हो गया है," शो-पीर ने कहा, और निस्सो का हाथ पकड़ कर उसे एक बड़े पेड़ के नीचे ले गया, जहाँ गुलरीज खाना सजा रही थी।

निस्सो की ललचाई हुई आँखें भोजन से चिपक गई।

"यह बेंच है निस्सो," बेंच पर बैठते हुए हल्के से निस्सो को कुन्हिया कर शो-पीर ने कहा, "तुम्हारे देश में इस तरह की कोई चीज नहीं होती, इसलिए तुम्हारी भाषा में इसका नाम भी नहीं है। आओ, मेरी तरह तुम भी इस पर बैठ जाओ।"

निस्सो सहमती-सी बेंच के एक छोर पर बैठ गई, और जल्दी से पाँव समेट कर अपने बदन के नीचे मोड़ लिए।

गुलरीज हँसी।

"यह अभी बैठना नहीं जानती। पहले-पहल मैं भी ऐसे ही बैठी थी। पाँव नीचे करो निस्सो, धुर जमीन तक!"

निस्सो ने पाँव नीचे लटका लिए। भूख जोरों से लग रही थी। अपनी अचकचाहट भूल वह खाने में जुट गई।

निस्सो की ओर अब किसी का ध्यान नहीं था। सब खाने में जुटे थे, और अपने काम-काज की बातें कर रहे थे। निस्सो ने कनखियों से अपने इधर-उधर देखा, और नज़र बचा कर पनीर का एक टुकड़ा अपने घुटनों के बीच दबा लिया। भविष्य के बारे में वह अभी अनिश्चित थी। अगर यहां से भागना पड़ा तो इसके लिए उसे कुछ-न-कुछ बटोर कर रखना होगा। लेकिन उसके गाल लाल हो उठे, और उसने अपनी आँखें नीची कर लीं, जब शो-पीर ने अपना हाथ बढ़ाया और छिपे हुए पनीर को बाहर निकाल कर मेज़ पर रख दिया।

"मुँह के बजाय तुम्हारे घुटने पनीर खाते हैं, निस्सो?"

सभी हँस दिए। निस्सो सिमट कर एक ओर खिसक गई। शो-पीर ने उसका सिर थपथपाते हुए कहा, "जी भर कर खाओ, निस्सो? खाने कीकभी कमी नहीं रहेगी। जब भी भूख लगे, गुलरीज़ से कहना।"

फिर, बख्तियार की ओर मुड़ कर, वह दूसरी बातें करने लगा,—नहर के बारे में, जमीन के प्लाटों के बारे में, जिन्हें लोगों के बीच बाँटना था। शो-पीर ने इन लोगों के नाम भी गिनाये।

गुलरीज़ घर के भीतर गई और एक कठुवे में मटर का दलिया ले आई, जिसे सब लकड़ी के चम्मचों से खाने लगे।

भोजन के साथ-साथ बातों का सिलसिला भी जारी था।

बख्तियार ने इस साल अकाल की सम्भावना प्रकट की। निस्सो की समझ में नहीं आया कि खाने की इतनी चीज़ों के रहते अकाल की बात कोई कैसे सोच सकता है। अज़ीज़खान के यहाँ खाने की चीज़ों की और भी बहुतायत थी। वहाँ अकाल की कभी चर्चा नहीं होती थी। लेकिन एक बात थी, अज़ीज़खान अकेला ही सब कुछ चट कर जाता था, और उन्हें उसकी झूठन ही नसीब होती थी।

निस्सो की काली आँखें एक-एक चीज़ को देख रही थीं। बख्तियार और गुलरीज़ की ओर उसका ध्यान नहीं था, लेकिन उसकी आँखें शो-पीर की हर हरकत का अनुसरण कर रही थीं।

शो पीर ने बख्तियार से शहतूतों की नई फ़सल के बारे में देर तक पूछताछ की। फिर वह निस्सो की ओर मुड़ा और मानो ऐसे ही उसने पूछा, "और जहाँ से तुम आई हो, वहाँ फ़सल का क्या हाल है ?"

"शायद फ़सल अच्छी नहीं होगी," निस्सो ने सीधे ढंग से जवाब दिया, "मुझे पता नहीं। वहाँ बे हिसाब आंधियाँ चलती हैं।"

"क्या नाम है उस जगह का ?"

"दोआब," उसने जवाब दिया।

"तो तुम दोआब से आई हो ? यहां से तीसरा दर्रा पड़ता है। चार दिन का रास्ता। मैं उस बस्ती को जानता हूँ, हालांकि वहाँ कभी गया नहीं। बहुत ही दुर्गम जगह है। तुम वहाँ से क्यों भाग आई ?"

"ऐसे ही," निस्सो ने जवाब दिया।

"क्या तुम्हारे माँ-बाप हैं ?"

"नहीं।"

"क्या तुम सीधे दोआब से यहाँ आई हो ?"

"नहीं," निस्सो ने मुश्किल से सुनाई पड़ने वाली आवाज़ में कहा।

शो-पीर ने अर्थपूर्ण नज़र से बख्तियार की ओर देखा, और उसने इस प्रकार सिर हिलाया मानो वह सब कुछ समझ रहा हो।

"क्या तुम दोआब वापिस जाना चाहती हो ?"

"नहीं।"

"और उस जगह जहाँ से तुम अब आई हो ?"

"ओह, नहीं !"

"क्या वह बहुत बुरी जगह है ?"

"हाँ, बहुत बुरी !"

"अच्छा तो बख्तियार," निस्सो की ओर से तेजी से मुड़ते हुए शो-पीर ने कहा, "अब नहर पर चलना चाहिए। हमें अपना काम पूरा करना है। और निस्सो, तुम यहीं रहना। कहीं जाना नहीं। यह मैं तुम्हारे भले के लिए ही कह रहा हूँ। चाहो तो अब कुछ देर सो जाओ,

यों बगीचे में चली जाओ। गुलरीज, निस्सो को जी भर कर खिलाना। चलो बख्तियार, अब चलें।"

: ३ :

दुकान भीतर से बन्द थी। केन्दितरी कालीन पर बैठा था, और उसके सामने बैठा हुआ मिरज़ाहूर जमुहाई ले रहा था। दोनों के बीच कालीन पर निस्सो के कपड़े पड़े थे।

दुकान के दोहरे दरवाजों में पड़ी दरारों से सूरज की रोशनी आ रही थी और दुकान का भीतरी हिस्सा जो तरह-तरह की चीजों से भरा था, आलोकित हो उठा था। यहाँ वे सभी चीजे मौजूद थीं जिनकी पहाड़ों के निवासियों को जरूरत हो सकती थी। काठियों को सजाने के लिए चटक रंग के अलंकार, लोहे के बरतन, रंगीन लेबिल लगे रंगों के डिब्बे, स्त्रियों के चेहरे पर लगाने की लाली, गुलाबी सेंधा नमक, पगड़ियाँ, सुइयाँ, दराँतियाँ, गोल आईने, सूखी मटर की बोरियाँ, सभी रोगों को दूर करने वाली रहस्यमय तिब्बती जड़ी-बूटियाँ, खाने का हरा तम्बाकू, रंग-बिरंगे सूत, ताम्बे के कड़े-छड़े, मिट्टी की रकाबियाँ, तंग गरदन की सुराहियाँ, खुशबूदार इत्र, सेम और बाजरा, हर वह चीज जो गधों पर लाद कर इधर के किसी भी प्रान्तीय नगर के बाजारों और उपनिवेशी मंडियों से लाई जा सकती थी। ये सभी चीज़ें, जिन्हें खरीद सकना सियातांग निवासियों के बूते से बाहर था, दुकान में अटी पड़ी थी और धूल चाट रही थीं। इन्हें खरीदने वाले मीर और सैयद यहाँ से विदा हो चुके थे, और ये चीज़ें मिरजाहूर को अब उसकी भावी गरीबी की याद दिलातीं थीं। खाने की चीजे और अफ़ीम, मिरज़ाहूर के व्यापार का अब एक-मात्र आधार थीं। सियातांग निवासी उससे ये चीज़ें लेते थे और पतझड़ के दिनों में जब फसलें पक जाती थीं, बदले में अनाज और आटा दे जाते थे। इस अनाज और आटे को बाद में वह यखबार ले जाता था, और अच्छे दामों पर उन्हें बेच कर वहाँ से अफीम तथा दूसरी चीज़ें जिनके बिना सियातांग निवासियों की गुज़र नहीं हो सकती थी, खरीद

लाता था। अनाज का एक हिस्सा वह दुकान में भी रख छोड़ता था जिसे वह बोवाई के दिनों में भारी सूद पर उधार देता था। जाड़ों के कठिन दिनों में जब बर्फ गिरने के कारण सियातांग का शेष सारी दुनिया से सम्पर्क कट जाता था, यहाँ के निवासियों को वह टोपी-भर गेहूँ, मटर या सूखे हुए शहतूत उधार देता था। पहिले वह किसी से इन्कार नहीं करता था। वह जानता था कि मौत के सिवा और कोई चीज कर्ज़दारों को उसके चंगुल से नहीं छुड़ा सकती, लेकिन अब तो ज़माना ही बदल गया था, और शो-पीर के आने के बाद तो उसके पाँव के नीचे से ज़मीन ही खिसक गई थी।

केन्दितरी निस्सो के बारे में बता रहा था और मिरज़ाहूर, कोयले-सी काली अपनी भौहों में बल डाले, अपनी दाढ़ी के कड़े बालों में उँगली फेरता हुआ सुन रहा था।

"उस जितनी सुन्दर लड़की केवल एकबार खोरासान में मैंने देखी थी," केन्दितरी ने कहा, "यह उन दिनों की बात है जब मेरी चढ़ती उम्र थी। तब मैं फिरंगी के भेष में था और घोड़े पर सवार होकर स्थानिक खलीफा के भाई से मिलने निशापुर गया था। कितना शानदार सफर था वह भी! रात बिताने के लिए हम एक बाग़ में रुक गए। एक स्त्री उबले हुए अंडे और छाछ लेकर आई। मैंने उसे देखा, और सोचा कि इतनी सुन्दर स्त्री तो शाह के हरम में भी नहीं मिलेगी। उसने समझा कि मैं फिरंगी हूँ। मैंने उससे कहा, मेरे साथ चलो। मेरी बीवी बनकर रहना। मेरा घर मशीद में है। वह तैयार नहीं हुई। लेकिन उसी रात जब वह आई तो मैंने उसे पकड़ लिया, उसके हाथ-पाँव बाँध दिए और घोड़े पर उसे लाद कर वहाँ से चल दिया..."

केन्दितरी ने अपनी इस कहानी और उस स्त्री की सुन्दरता का काफी विस्तार के साथ वर्णन किया। फिर बोला, "लेकिन यह तो उससे भी सुन्दर है, जैसे नया चाँद हो!"

"तुम घर के भीतर क्यों नहीं गए?"

"काम पहले, रास-रंग बाद में। चिन्ता न करो, उसका समय भी आएगा। लेकिन अब ज़रा दरवाज़ा खोल दो। उसके कपड़ों को देख लिया जाए।"

मिरज़ाहूर ने दरवाज़ा खोल दिया। सूरज की रोशनी में निस्सो के कपड़े चमक उठे। कपड़े अभी भी गीले थे। अपने घुटनों पर रख कर मिरज़ाहूर उन्हे देखने लगा।

"यह तो यखबारी नही मालूम होता। इसका डिजाइन गारमाइट जैसा है," उसने कहा, "सौदागर मुहीब उल्लाह की तुम्हे कुछ याद है?"

केन्दितरी ने अपनी आँखे सिकोड ली।

"वही जो चौथे दर्रे के उस पार रहता है, झील के किनारे। या फिर हो सकता है कि यह कपडा समन्दर बेग से खरीदा गया हो। लेकिन है यह गारमाइट डिजाइन। केवल तीन गाँवों में यह बुना जाता है, दिलखुश, नौबदन, और दज़ूम मे। इन गाँवो की बूढ़ी स्त्रियाँ ही अब इस डिज़ाइन का कपड़ा बुनती हैं। अन्य गाँवों के निवासी तो इसे भूल चुके हैं। इस फूल को देखो जो लाल और पीले धागो से काढा गया है। जानते हो, इस फूल का क्या नाम है? इसका नाम है खुशदिल। जो अल्लाह के पसीने की बूंद से उपजा है। और वह फूल जो इसके इधर-उधर बना है। इस फूल का रहस्य मेरे सिवा और कोई नहीं जानता। जब इसलाम का इन पहाड़ों में आगमन हुआ था तो रक्त की वर्षा हुई थी। यह हरा फूल उसी वर्षा से पैदा हुआ था। जहाँ-जहाँ रक्त की बूदें पड़ी..."

मिरज़ाहूर अपनी बेढंगी और मोटी उँगलियाँ निस्सो के कपड़ों में बने फूलों पर फेरता रहा। अन्त में बोला, "तो तुम्हारा जाना तय रहा न?"

"हाँ," केन्दितरी ने कहा।

"पहिले रिसालदार के पास जाना, फिर अरबाब हुसेन के पास। इसके बाद तुम अज़ीज़खान के पास भी जा सकते हो। इनके कान बातों की खान हैं। इन्हें पता रहता है कि किसकी लड़की या पत्नी खो

गई है। अगर इनसे पता न चले तो गारमाइट जाना। तुम्हारी यात्रा सफल हो, यही कामना है। अगर पता चल जाए तो उनसे सौदा करना कि लड़की वापिस हो सकती है, लेकिन काफ़ी खर्च करना पड़ेगा।"

"और यहाँ कोई पूछे तो कहना कि केन्दितरी दुकान के लिए सामान लेने गया है," निस्सो के कपड़ों को एक बण्डल में बाँधते हुए उसने उपेक्षा के भाव से कहा। इसके बाद वह पिछले दरवाज़े से आँगन में निकल आया।

: ४ :

मिरज़ाहूर ने बड़ा-सा पत्थर खिसका कर दुकान का दरवाज़ा खोल दिया। शहतूत के पेड़ के नीचे घास पर चिथड़े लपेटे काराशिर बैठा था। मिरज़ाहूर ने आँखें सिकोड़ कर सन्तोष के साथ उसकी ओर देखा। काराशिर जो शो-पीर की चाकरी करता था, जो नयी सरकार का हिमायती और बख्तियार की हर बात को पत्थर की लकीर मानता था। यहाँ आने के लिए निश्चय ही उसे लम्बे आन्तरिक द्वन्द्व का शिकार होना पड़ा होगा। मिरज़ाहूर उसकी कमज़ोरी जानता था। हो-न-हो, वह अफीम लेने आया होगा। वह उसे अफीम देगा भी, लेकिन इससे पहिले क्यों न उससे दो-चार बातें ही करले।

मिरज़ाहूर कालीन के बीचों-बीच जम कर बैठ गया। काराशिर कुछ नहीं बोला। हो सकता है, बात शुरू करने में उसे कुछ संकोच हो। और कहीं ऐसा न हो कि वह, बिना कुछ कहे ही, एकाएक उठकर चलदे!

"तुम मेरे पेड़ के नीचे इस तरह क्यों बैठे हो?"

धीरज चुक जाने पर मिरज़ाहूर ने प्रत्यक्ष रुखाई के साथ कहा, "इसका मतलब सिवा इसके और क्या हो सकता है कि तुम मुझसे मिलने आए हो!"

"हाँ, मुझे तुमसे कुछ बातें करनी हैं," काराशिर ने बैठे-ही-बैठे बिना किसी अभिवादन के कहा, "मुझे कुछ आटे की ज़रूरत है।"

"आटे की ज़रूरत है, ?" मिरज़ाहूर ने मन-ही-मन सोचा, "यह तो प्रश्न ही दूसरा है। मतलब यह कि इसे ग्राम सोवियत से आटा नहीं मिला, और मुझसे भी नहीं मिलेगा !"

लेकिन मिरज़ाहूर की सौदागरी बुद्धि ने उसे तुरन्त जवाब देने से रोक दिया। बोला, "इतनी दूर क्यों बैठे हो ? यहाँ कालीन पर आओ, और बताओ कि तुम्हें आटे की किसलिए ज़रूरत है ?"

काराशिर सहमता हुआ निकट आगया। बोला, "अभी तक मैंने अपनी फसल नहीं बटोरी। मेरे कई बच्चे हैं। आधा बोरा आटा दे दो। फसल कटने पर उसके बदले में एक बोरा अनाज तुम्हें दे दूँगा।"

"इतना कम। तीन बोरा अनाज दो," काराशिर की ओर तीखी नज़र से देखते हुए मिरज़ाहूर ने कहा।

काराशिर के हृदय को जैसे किसी ने मरोड़ दिया। तेज़ स्वर में बोला, "तुम अपना ही भला देखते हो। हमारा गला काटते तुम्हें संकोच नहीं होता ?"

"इसमें संकोच की क्या बात है ? अपना भला कौन नहीं देखता ?"

"लेकिन ईमानदारी भी तो कोई चीज़ है।"

"ईमानदारी छोटे लोगों के लिए है, बड़े लोगों के लिए नहीं। नहीं तो फिर छोटे और बड़े लोगों में क्या अन्तर रहे ?"

"ऐसे बड़े आदमी भी हैं जो ईमानदारी का कभी दामन नहीं छोड़ते," मिरज़ाहूर की ओर चुनौती-भरी दृष्टि से देखते हुए काराशिर ने कहा।

"कौन हैं वे ? क्या शो-पीर जिसने एक दूसरे आदमी की पत्नी को अपने घर में डाल लिया है ?"

"इस बारे में मैं कुछ नहीं जानता !" उपेक्षापूर्ण स्वर में काराशिर ने कहा।

काराशिर की इस आश्वस्त मुद्रा से मिरज़ाहूर झुँझला उठा। इस तरह की बातचीत के लिए वह तैयार नहीं था।

"तुम नहीं जानते, लेकिन अन्य सब जानते हैं। वह तुमसे काम लेता है और तुम्हें सब्ज़ बाग दिखाता है। और जब तुम्हारे पेट में चूहे कूदते हैं तो मेरे पास भेज देता है कि जाओ, सौदागर से आटा ले आओ। यही तो है उसकी ईमानदारी !"

"यह गलत है," काराशिर ने ज़ोरों से विरोध किया, "उसने मुझे तुम्हारे पास नहीं भेजा।"

"ऊँह, तो तुम अपने-आप आए हो, क्यों? बल्कि यह कहो कि उसकी मर्ज़ी के खिलाफ आए हो !"

"हां, मैं उसकी मर्ज़ी के खिलाफ आया हूं। वह तुम्हें धूर्त कहता है और हमें तुम्हारे पास आने से मना करता है। और तुम सचमुच में धूर्त हो ! यह मेरी बेवकूफी थी जो यहाँ चला आया। मुझे कुछ नहीं चाहिए। तुमसे मैं कोई वास्ता नहीं रखना चाहता।"

काराशिर एकाएक उठ खड़ा हुआ। मिरज़ाहूर ने अनुभव किया कि इसे अपने चंगुल से नहीं निकलने देना चाहिए। तेजी से वह एक खाने के पास गया, और छोटी सी थैली निकाल कर काराशिर की ओर बढ़ाते हुए बोला, "यह लो !"

काराशिर के चेहरे पर अचकचाहट और परेशानी के भाव उभर आए।

"नहीं, मैं नहीं लूंगा," उसने दबी हुई आवाज़ में कहा और उछल कर दूर हट गया।

"ठहरो काराशिर," मिरज़ाहूर ने उसे पुकार कर कहा, "बाद में अगर तुम आए तो सिर पटकने पर भी मैं तुम्हें अफ़ीम नहीं दूंगा। लेकिन अब मैं अपनी मर्ज़ी से दे रहा हूँ, यह लो !"

और थैली उसके पाँव के पास जा गिरी।

काराशिर के मन में हुआ कि थैली को रौंदकर गर्व से आगे बढ़ जाए। लेकिन वह ठिठक गया, और उसकी नज़र थैली से चिपक कर रह गई। उसके पांव ढीले पड़े, एक क्षण के लिए वह कुछ हिचका, फिर

झुक कर उसने थैली उठा ली और गाँव की ओर चल दिया।

बड़ी चट्टान की ओट में जहाँ गाँव के लिए रास्ता मुड़ता था, काराशिर की पत्नी उसका इन्तज़ार कर रही थी। गाँव वालों ने उसका नाम 'मछली का काँटा' रख छोड़ा था। आयु अधिक न होने पर भी वह काफ़ी मुरझा और चिड़चिड़े स्वभाव की हो गई थी। उसके लम्बे पतले चेहरे पर सदा उदासी छाई रहती थी, और उसकी काली सिकुड़ी आँखें सदा नीचे की ओर झुकी रहती थीं, मानो उसकी आँखें उज्ज्वल आकाश की ओर देखना भूल गई हों। पत्थर की भाँति निश्चल बैठी हुई वह काराशिर की प्रतीक्षा कर रही थी। उसके आठ भूखे और अध-नंगे बच्चे थे जिन्हें वह घर पर छोड़ आई थी।

आखिर जब काराशिर लौटा और उसने देखा कि उसके कन्धों पर कुछ नहीं है, एक दम खाली हाथ वह लौटा है, तो उसका चेहरा गुस्से से विकृत हो गया।

"तुम खाली हाथ क्यों आए?" 'मछली का कांटा' ने खड़े हो कर भर्राई हुई आवाज़ में पूछा, "क्या कहा उसने?"

"उसने कहा कि मुझ जैसे लोगों को अब कोई आशा नहीं करनी चाहिए। लेकिन कोई बात नहीं। मैंने भी उसे ऐसी खड़तल बातें सुनाईं कि हमेशा याद रखेगा!"

'मछली का कांटा' कुछ नहीं बोली। वह जानती थी कि उसका पति मूर्ख है, ज़रूर उसने कोई गड़बड़ की होगी।

"तुम्हें बात तक करना नहीं आता," उसने चिल्लाकर कहा, "उस रूसी ने तुम्हारा दिमाग़ आसमान पर चढ़ा दिया है। जाकर घर पर बैठो। मैं खुद आटा ले आऊँगी।"

काराशिर चुपचाप घर की ओर चल दिया। अफ़ीम की थैली उसकी बगल में दबी थी और उसके स्पर्श का अनुभव करते हुए वह एक दूसरी दुनियां में पहुँच गया था।

तेज़ डगों से 'मछली का कांटा' मिरज़ाहूर के सामने पहुँची। मिर-

जाहूर ने इतनी रूखी और घृणापूर्ण नजर से उसे देखा कि उसके बदन से पसीना छूटने लगा।

"हाँ तो अब तुम आई हो ?"

"हाँ, मैं आई हूँ। मेरा पति मूर्ख है। उसे बात तक नहीं करना आता। मैं वैसी नहीं हूँ। जितना भी बन सके......"

"क्या तुम अभी भुगतान कर सकोगी ?" निहंगपन से उसकी ओर देखते हुए मिरजाहूर ने कहा।

"अभी मैं कहाँ से भुगतान करूंगी। ओह, अली......"

लेकिन 'मछली का कांटा' का भय तुरत निरी दीनता में बदल गया। मिरजाहूर ने हिकारत की नजर से उसे देखा और धीरे-धीरे उठ कर खड़ा हो गया। दूकान के पिछले भाग में वह गया, सूखी मटर की दो बासी रोटियाँ उसने निकालीं; और उसके के पैरों के पास पटक दीं।

"यह लो 'मछली का काँटा'। बचा-खुचा हमारे कुत्तों के काम आता है। लेकिन मेरा हृदय उदार है। जाओ, इनके लिए तुम्हें कुछ अदा नहीं करना पड़ेगा।"

अपना अपमान छिपाने के लिए 'मछली का कांटा' ने अपना सिर इस हद तक नीचे झुका लिया कि उसके बालों से उसका सारा चेहरा ढक गया। अनिश्चित ढंगों से वह दुकान से चल दी। बासी रोटियों को वह अपनी छाती से चिपकाए थी, और रोटियों का स्पर्श उसके हृदय की वेदना को और भी तीखा बना रहा था।

: ५ :

सांझ का समय था। दिन भर अलसाहट में बिताने के बाद बगीचे के उस छोर पर शहतूत के एक पेड़ के नीचे धरती से चिपकी निस्सो शहतूत चुन रही थी। शहतूत गहरे नीले रंग के थे, और बहुत बड़े-बड़े थे। दोआब में ऐसे शहतूत नहीं होते थे। अजीजखान के बगीचे में शहतूत के कितने ही बढ़िया पेड़ थे, लेकिन वह भी इतने अच्छे नहीं थे।

मिस्सो की पेटी जाने कहाँ खो गई थी, और उसका चोगा इतना

लम्बा था कि नीचे घिसटता और पांवों से उलझता था। धीरे-धीरे शह-तूतों से उसकी झोली भर गई। घास पर बैठकर निस्सो ने एक बड़ा-सा शहतूत उठाया और उसे मुँह में डाल लिया। सहसा किसी ने पुकारा, "निस्सो, ओ निस्सो!"

चौंक कर निस्सो के हाथ से झोली छूट गई। शहतूत धरती पर बिखर गए।

"निस्सो, यहाँ आओ। वहाँ छिप कर क्या कर रही हो?"

निस्सो उठी और शो-पीर के पास चली गई जो उसे पुकार रहा था।

"तुम भी खूब हो, निस्सो!" शो-पीर ने कहा, "ज़रा आईने में अपनी छवि तो देखो। बिल्कुल भूत मालूम होती हो!"

केवल अब निस्सो ने देखा कि उसका सारा चोगा और हाथ मिट्टी में चिपचिपा रहे हैं। उसने भागना चाहा, पर शो-पीर ने पकड़ लिया।

"इधर आओ। खाने का समय हो गया है," शो-पीर ने कहा, और उसे घर की ओर ले चला।

"तुमने इसे इतना लम्बा चोगा क्यों दिया है, नाना? मालूम होता है जैसे किसी बड़े बोरे में मुर्गी के चूज़े को बन्द कर दिया हो!"

"मुझे तो कुछ भी पता नहीं!" गुलरीज़ ने कहा, "न जाने दिन-भर यह आज कहाँ गायब रही। ज़रा इधर को तो मुँह करो, निस्सो! अरे, तुम्हारी पेटी कहाँ है? क्या खो दी? बड़ी रानी बिटिया हो! लो अब, यह डोरी बाँध लो!"

"अच्छा, तो अब जल्दी से हाथ-मुँह धो आओ," शो-पीर ने कहा।

बख्तियार एक कठुए में खूबानी का हलुआ ले आया। शो-पीर जानता था कि गुलरीज़ ने बसन्त के उत्सव के लिए यह हलवा बनाया है।

"तुमने तो अभी से बसन्त मनाना शुरू कर दिया, बख्तियार? और तुम्हारे हृदय की रानी छोटे बछड़े की भांति न जाने कहाँ धूल में लोट

कर आई है। मैंने उसे हाथ-मुँह धोने के लिए रवाना कर दिया है।"

बख्तियार के चेहरे पर लाली दौड़ गई, और हलुवे को उसने अपने हाथों से ढक लिया।

"तुम्हें इस तरह मज़ाक नहीं करना चाहिए, शो-पीर ? किसी ने सुन लिया तो कानाफूसी शुरू हो जायगी कि ग्राम सोवियत के मुखिया ने किसी दूसरे की स्त्री को अपने घर में डाल लिया है।"

"स्त्री ? अभी दूध के दाँत तक तो उसके टूटे नहीं हैं, और तुम उसे स्त्री कहते हो ! वह एक नन्हीं लड़की ही तो है।"

"नहीं, वह नन्हीं लड़की नहीं है," बख्तियार ने कहा—"अच्छी खासी स्त्री है।"

"मालूम होता है, तुम्हारा हृदय उसके लिए कुड़मुड़ा रहा है। क्यों, ठीक है न ?"

बख्तियार शो-पीर की इस छेड़छाड़ का अभ्यस्त नहीं हो सका था। इससे पहिले कि वह नाराज़ी प्रकट करता, शो-पीर ने कहा, "लेकिन तुम उससे शादी क्यों नहीं कर लेते, निश्चय ही, सोवियत कानून के मुताबिक। क्या तुम्हारी आयु अभी बीस वर्ष की नहीं हुई ? माना कि तुम्हारा कद कुछ छोटा है, लेकिन इस कमी की पूर्ति तुम अपने अदम्य उत्साह और खुश मिज़ाजी से कर सकते हो !"

इसी बीच घर के भीतर से मटर का दलिया लिए गुलरीज़ भी आ गई।

"अरे, निस्सो कहाँ है ? उसे तो बुलाओ, नाना ?"

"वह अपना चोगा धो रही है," वृद्धा ने कहा, "तुम्हीं ने तो उसे इतना गड़बड़ा दिया, शो-पीर !"

"उसे पहनने के लिए कोई दूसरा चोगा दे दो। वह एक दम अल्हड़ बकरी है !"

आखिर निस्सो आई और मेज पर बैठ गई, साफ-सुथरी, बाल सफाई से चोटियों में गूँथे हुए। उसने कहा कि शहतूतों से उसका पेट भर गया

है। शो-पीर ने भी जोर नहीं दिया, लेकिन उसने उसे वहीं बैठाए रखा।

निस्सो का जङ्गलीपन अब काफी कम हो गया था, और सकुचाते हुए वह अब अपने मन से उनके सवालों का जवाब देने लगी थी। बख्तियार से भी जो उसके सामने पड़ते ही लज्जा से लाल हो उठता था, वह सहजभाव से बातें करती थी।

बख्तियार एक साहसी और उत्साही युवक था। शो-पीर की समझ में नहीं आया कि एक छोटी-सी लड़की के सामने वह क्यों इतना सकुचा जाता है? बख्तियार के साहस और उत्साह को देखकर ही तो गाँव वालों ने उसे गाँव-सोवियत का मुखिया और शो-पीर को उसका सहायक चुना था।

उन दिनों जब वह पहिले-पहल सियातांग आया था तब वह शो-पीर न होकर लाल सेना से विघटित हुआ सैनिक अलैक्सान्दरे मदवेदेव था। उस समय उसकी आयु केवल सत्रह वर्ष थी। उसके आते ही गाँव वालों ने उसे घेर लिया और कौतुक के साथ उसकी चीज़ों को, बन्दूक, फौजी थैले और बिस्तरे को, देखने लगे। गाँव वालों में एक तेज़ बहस छिड़ गई। काली आँखों वाला एक युवक खास तौर से गरमा गया था और बड़े बूढ़े लोगों पर वह टूट पड़ना ही चाहता था जो अपनी बात मनवाने के लिए गुस्से और अपने बड़प्पन का रौब डाल रहे थे। तब अलैक्सान्दरे सियातांग भाषा नहीं समझता था। बाद में मालूम हुआ कि वे बूढ़े लोग उसे यहाँ टिकने देने के पक्ष में नहीं थे जब कि युवक लोग उसका बचाव करने पर तुले थे। बख्तियार इन्हीं युवक लोगों का अगुआ था।

उस दिन से शो-पीर और उसमें गहरी मित्रता हो गई। यह जानने में उसे देर नहीं लगी कि सियातांग में सोवियत सत्ता धोखे की टट्टी है। बोबो कलाँ का भतीजा सफर अली इज्जत बेग सोवियत सत्ता को अपने हाथों में दबोचे था। वह सबसे धनी, बेहद प्रसिद्ध और बेहद अय्याश

था। जब बोलोस्त सोवियत सत्ता का केन्द्र बना तो उसने सैयदों और मीरों को गुप्त फैसले पर चलते हुए फकीरों को बोलोस्त जाने से रोका, "काफिरों के पथ पर जो पाँव रखेगा उसे कभी बहिश्त नसीब नहीं होगा। वह, उसके घर के सब लोग, पत्नी और बच्चे, उसका सारा कबीला, दोजख की आग में जलेगा!"

लेकिन जब कभी बोलोस्त से नयी सत्ता का कोई प्रतिनिधि यहाँ आता तो सफर अली इज्जत सबसे आगे बढ़कर अपने आपको 'बोलशेविकों, ग्राम सोवियत और क्रान्तकारी समिति' का मुखिया घोषित करता। और उसके हाली-मवाली, सैयद और मीर, जब कभी भूले-भटके बोलोस्त पहुँचते तो उसका राग अलापना न भूलते यह कि वह जनता का चुना हुआ नेता है और सियातांग के फकीरों के जीवन में आनन्द का संचार कर रहा है।

सफर अली इज्जत बेग का शासन सैयदों और मीरों का शासन था और खान के शासन से किसी रूप में भिन्न नहीं था। लोग अभी भी दबे-पिसे थे, और आशा की कोई किरण उन्हें नहीं दिखाई देती थी।

ऐसी स्थिति में बख्तियार का आगे बढ़ कर शो-पीर को अपने घर में जगह देना सचमुच में साहस का काम था।

पानी के किनारे शहतूत का बगीचा, जिसमें अब बख्तियार का घर था, उन दिनों एक मीर की सम्पत्ति था, जो बाद में भाग कर यखबार चला गया। बख्तियार और उसकी माँ तब धुंए में रची एक पहाड़ी खोह में अपना नगण्य जीवन बिताते थे। इस खोह में कुछ दिन बिताने के बाद शो-पीर ने सियातांग में रहने का निश्चय किया था।

इसके सिवा वह और करता भी क्या? उसकी टुकड़ी के अन्य सैनिक अपने-अपने घरों को चले गए थे। वह कहाँ जाता? कोई भी तो नहीं था उसके घर पर, न माता-पिता, न पत्नी, न बच्चे। सभी कुछ तो नष्ट हो गया था, बसमाचियों ने सभी को मार डाला था।

और तभी से, दो वर्ष से भी अधिक से, लाल सेना की एक टुकड़ी

के साथ वह इन पहाड़ों में बसमाचियों का, (क्रान्ति विरोधी डाकुओं का) सफाया करने में जुटा था। पूर्वीय घाटियों के सूने क्षेत्रों को पार कर वह महा नदी की घाटी में आया और सियातांग जैसी एक बस्ती में जब वह पहुँचा तो यहाँ के सीधे-सच्चे निवासियों से पहिली बार उसका सम्पर्क हुआ।

"स्थानिक लोगों से," कमीसार कारायेव ने कहा, "लाल सैना के सैनिकों को मेल जोल बढ़ाना चाहिए। देखो न, बकरी के सींगों से ये खेत जोतते हैं। और कितने अच्छे गीत गाते हैं ये, हालांकि इनके गीत सदा उदासी में डूबे होते हैं। इस हद तक दबे-पिसे होने के बावजूद इनकी अपनी एक कला और काफी पुरानी संस्कृति है। लेकिन खानों ने इन्हें रौंदा है, जैसे सूअर घास रौंद डालते हैं। अब ये फिर उठेंगे। केवल रास्ता दिखाने की जरूरत है। यह न समझना कि इनमें अच्छा जीवन बिताने की इच्छा नहीं है?"

कमीसार कारायेव बसमाचियों के साथ एक मुठभेड़ में मारे गए और इसके बाद...।

सभी घटनाएं, एक-एक करके, शो-पीर के दिमाग में घूम गईं। उधर बख्तियार और निस्सो दिलचस्प बातों में डूबे हुए थे।

"तुम अपने लिए एक पत्नी क्यों नहीं खरीद लेते, बख्तियार?" निस्सो ने बड़े-बूढ़ों की भाँति पूछा।

बख्तियार ने निस्सो को समझाना शुरू किया कि ग्राम सोवियत के मुखिया के लिए अपने वास्ते पत्नी खरीदना ठीक नहीं होगा, और ऐसी कोई लड़की है भी नहीं जो उसे खास तौर से पसन्द हो। वह सभी का अच्छा साथी है, और कई लड़कियों से उसका काफी मेल-जोल है। लेकिन यह बात वह उनके माता-पिताओं से छिपा कर रखता है। कारण कि गांव की सभी स्त्रियां अपने पतियों और पिताओं के जुवे के नीचे दबी हैं। पहिले उन्हें पुरुषों के जुवे से मुक्त करना होगा।

इन बातों से शो-पीर के विचारों का सिलसिला टूट गया। दलिये

में चमचा हिलाते हुए उसने बख्तियार की ओर गरदन उठाकर देखा।

"निस्सो का चोगा तो तुम ठीक कर दो नाना!" शो-पीर ने कहा, "देखो, न चलती है तो पाँव में उलझता है।"

"मेरे कपड़े कहाँ गए?" निस्सो ने शान्त भाव से पूछा, "उन्हीं को सीकर ठीक कर लेती। क्या अभी तक नहीं मिले, नाना?"

"नहीं, निश्चय ही उन्हें कोई देव चुरा कर ले गया," सहज भाव से वृद्धा ने कहा, "पता नहीं, तुम्हारा वह देव कैसा है, भला है या बुरा?"

"क्या तुम्हें निश्चय है कि निस्सो का कोई देव है?" शो-पीर ने गुलरीज़ से पूछा, "हो सकता है, कपड़े पानी की धारा में गिर पड़े हों।"

"नहीं, हर आदमी का एक अपना देव होता है," गुलरीज़ ने कहा, "बिना देव के कोई रह नहीं सकता। कपड़े नदी में कैसे गिरते, मैंने उन्हें बराण्डे में सुखाया था?"

"अँधेरा था," बख्तियार ने कहा, "हो सकता है कि अश्तरे कलां नदी में से बाहर निकल आया हो और कपड़े अब उसके पेट में हों!"

"तुम सबसे बढ़कर निकले, बख्तियार?" शो-पीर ने कहा, "क्या तुमने कभी अश्तरे कलां को देखा है?"

"नहीं। अगर देखता तो मैं तुरन्त मर जाता। जो भी उसे देखता है, मर जाता है।"

"यह बकवास है, बख्तियार! ग्राम सोवियत का मुखिया होकर भी तुम इन सब चीज़ों में विश्वास करते हो। आज तक कभी किसी ने उसे नहीं देखा, और न ही उसकी वजह से कोई मारा गया।"

"यह सच है!" बख्तियार ने नाराज़ होकर कहा, "जो कोई भी उसे देखता है, वहाँ-का-वहीं मर जाता है।"

"नहीं, यह बात गलत है!" सहसा निस्सो बीच में बोल उठी, और उसकी आवाज़ में कुछ इतना ज़ोर था कि सब उसकी ओर

देखने लगे।

"तुम्हें इसका क्या पता ?" शो-पीर ने उकसाते हुए पूछा, 'मुझे तो बख्तियार की बात ठीक मालूम होती है। आखिर इस दुनियाँ में देव-अजगर तो हैं न ? क्यों, तुम्हारा क्या खयाल है ?"

"मैं तो...केवल...," निस्सो ने शो-पीर की ओर दुविधा पूर्ण नजर से देखा, "लेकिन तुम तो मुझसे ज्यादा जानते हो ?"

"सो कैसे, निस्सो ?"

"तुम पीर जो हो। पीरों को सब मालूम होता है।"

"पीरों से मेरा क्या वास्ता ? क्या मैं पीर हूँ ?"

"हाँ, तुम पीर हो, शो-पीर (पीरों के शाह) !"

शो-पीर इतने जोरों से हँसा कि निस्सो अन्यमनस्क होगई।

हँसी शान्त होने पर शो-पीर विचारों में डूब गया। सब उसके मुँह की ओर उत्सुकता से देखने लगे।

शो-पीर फिर अपने अतीत के बारे में सोचने लगा। और यह अतीत ऐसा था जिसे आसानी के साथ वह यहाँ के लोगों को समझा नहीं सकता था। लाल सेना की टुकड़ी के साथ पहाड़ों में आने से पहले बड़े-बड़े नगरों की चौड़ी सड़कों पर मोटर चलाने का काम करता था। लेकिन वह इन लोगों को जिन्होंने मोटर तो दूर, कभी एक सादा पहिया भी नहीं देखा था और चौड़ी सड़कों की जगह पर जो दिमाग चकरा देने वाली सकरी पहाड़ी पगडंडियों से परिचित थे, वह कैसे समझाए कि वह क्या काम करता था।

शो-पीर ने निस्सो की उत्सुक और व्यग्र आँखों में देखा और हँसी का कुछ पुट मिलाते हुए उसने समझाना शुरू किया : यहाँ से बहुत दूर-सर्वथा भिन्न प्रदेशों में वह अगन-घोड़े चलाता था। इन घोड़ों के बदन में न चाम था न माँस, न इनके सिर था न हृदय। इन्हें खुद आदमियों ने लोहे और लकड़ी से बनाया था और पहाड़ों के उस पार के लोग उन पर सवारी करते थे। और वहाँ की धरती इतनी सपाट थी कि

महीनों चले जाओ कहीं एक भी पहाड़ी नहीं दिखाई दे।

विस्तार से यह सब बताने के बाद शो-पीर ने कहा, "इन घोड़ों को चलाने और उनकी देख-भाल करने वालों के लिए हमारी भाषा में एक शब्द है। उन्हें ड्राइवर या शोफर कहा जाता है। जब मैं पहले-पहल यहाँ आया, तुम्हें तो याद होगा बख्तियार, कि किस प्रकार बोबो कलाँ ने मुझसे पूछा था, 'तुम कौन हो?' मैंने जवाब दिया, 'शोफर'। लेकिन तुम लोगों के मुँह से 'फ' नहीं, सदा 'प' ही निकलेगा। सो बोबो कलां ने मुझे 'शोपीर' कहा। इसमें मेरा क्या कसूर जो मैं 'शोपर' बन गया। और जानती हो निस्सो, मुझे शो-पीर बनाकर वे कितना हँसे थे?"

निस्सो चुपचाप, सोच में डूबी, सुनती रही।

"अच्छा तो निस्सो," शो-पीर ने कहा, "अब यह बताओ कि बख्तियार ने जब कहा कि अख्तरे कलां को जो देखता है वह तुरत मर जाता है, तो तुमने इसे गलत क्यों कहा?"

"इसलिए कि मैंने उसे देखा है," निस्सो ने फुसफुसा कर कहा।

"तुमने उसे देखा है?" शो-पीर ने कहा, "और तुम जीवित रहीं!"

"तुम्हारे सामने मौजूद हूँ। और अब मैं उससे डरती भी नहीं!"

गुलरीज़ ने बीच में ही टोका, "अख्तरे कलां की बात अब बन्द करो। उसका नाम तक नहीं लेना चाहिए।"

"अच्छा निस्सो, इसके बारे में मुझे फिर कभी बताओगी न?"

निस्सो ने तुरत जवाब नहीं दिया, और जब जवाब दिया भी तो उसका स्वर काफी गम्भीर था, "शायद तुम्हें बता सकूँगी, शो-पीर!"

: ६ :

भोजन के बाद निस्सो गुलरीज़ से लकड़ी की एक बड़ी रकाबी लेकर उन शहतूतों को लेने चली गई जो उसने बटोरे थे। उसके चले जाने के बाद शो-पीर घर के भीतर गया और पुराना ग्रामोफोन निकाल लाया।

"क्या इसे निस्सो को दिखाना चाहते हो ?" बख्तियार ने पूछा।

"बोलो नहीं," शो-पीर ने कहा, "पेड़ के नीचे जल्दी से चटाई बिछादो।"

शो-पीर बख्तियार के बराबर में चटाई पर बैठ गया। ग्रामोफोन में उसका भोंपू फिट किया, चाबी दी और रिकार्ड चढ़ा कर खुद अलग हट गया। गुलरीज़ घर से बाहर नहीं निकली। 'देवों से भरे' हुए बक्स के बारे में उसके हृदय में अभी भी सन्देह था और वह उसे दूर से सुनना ज्यादा पसन्द करती थी।

पुश्किन के गीत 'मुझे याद है वे अद्भुत क्षण' की आवाज़ शुरू होते ही बख्तियार भी उछल कर दूर हट गया।

निस्सो ने जब गीत की आवाज़ सुनी तो पेड़ के पीछे ठिठक कर खड़ी होगई और सतर्क भाव से झाँक कर देखने लगी। फिर शहतूतों की रकाबी को सावधानी से ज़मीन पर रख निकट आगई और चटाई के एक छोर पर बैठ कर सुनने लगी।

गीत के समाप्त हो जाने पर उसने एक गहरी साँस ली और शो-पीर से पूछा, जो अब पास खड़ा उसे देख रहा था :

"यह क्या है, शो-पीर ?"

"एक तरह की मशीन है।"

"वह आदमी कहाँ है ?"

"कौन आदमी ?"

"वह जिसकी रूह इसमें बोल रही थी।" निस्सो ने भोंपू की ओर इशारा करते हुए कहा।

शो-पीर मुसकराया तक नहीं, "वह यहाँ से बहुत दूर है। पूरे साल भर तक चलो तब तुम वहाँ पहुँच सकोगी। मास्को,—तुमने यह नाम पहिले भी कभी सुना है ?"

"नहीं, शो-पीर।"

"मास्को, याद रहेगा न ? जिस आदमी की तुमने आवाज़ सुनी है,

वह मास्को में रहता है। लेकिन गीत के शब्दों में जिसकी आत्मा व्यक्त है, उसका नाम है अलैक्ज़ान्देर पुश्किन। वह एक बहुत ही बड़ा कवि है।"

"क्या वह भी मास्को में रहता है?"

"नहीं निस्सो, वह मर चुका है। उसे मरे नब्बे साल होगए।"

"लेकिन उसकी रूह को खाना कौन देता है?"

शो-पीर ने अपनी मुसकराहट दबाते हुए कहा, "तुम्हारे लिए यह समझना कठिन होगा, निस्सो। लेकिन मैं समझाने की कोशिश करूँगा।"

शो-पीर ने बहुत कुछ समझाया, पर निस्सो की समझ में नहीं आया कि बिना कुछ खाए-पिए किसी की आवाज़ कैसे जीवित रह सकती है।

निस्सो, बख्तियार और शो-पीर सारी सांझ गिनती के अपने रिकार्डों को बार-बार बजाते और सुनते रहे। आखिर शो-पीर ने ग्रामोफ़ोन बन्द करके अपने कमरे के कोने में रख दिया। निस्सो देर तक विस्तार के साथ पूछती रही कि पुश्किन कौन था, और यह कि वह कैसा आदमी था।

रात को जब चाँद निकल आया तो सब सोने के लिए चले गए। पहिले की भाँति आज भी निस्सो शो-पीर के कमरे में सोई। बहुत देर तक वह आँखें खोले पड़ी रही, और जब उसने देखा कि सब सो गए हैं तो वह उठ खड़ी हुई और दबे पाँव ग्रामोफोन के पास पहुँची। वह उसके सामने बैठ गई और भौंपू के पास कान सटाकर ध्यान से सुनने लगी। लेकिन भौंपू में से कोई आवाज़ नहीं निकली। निस्सो फिर भी कान लगा कर सुनती रही, मानो उसे भय था कि बक्स में जो भी छिपा हो, कहीं उसकी नींद न भङ्ग होजाए। सहसा उसे याद आया कि गुलरीज़ ने बराण्डे में बकरी का दूध रखा था। दबे पाँव वह उठी, दूध का बरतन उठा कर कमरे में ले आई और एक पतली धार बाँध कर भौंपू में उसे

डालने लगी।

दूध आवाज़ करता भोंपू के भीतर चला गया। दूध गले के नीचे उतर जाए, इसलिए निस्सो कुछ देर भोंपू को चुपचाप देखती रही।

"शायद इतना ही काफी हो," उसने अपने मन में सोचा।

"कल तुम्हें और भी ज्यादा दूध दूँगी, पुश्किन!" दूध के बरतन को जमीन पर रखते हुए निस्सो ने कहा।

उसने एक बार फिर भोंपू के पास अपना कान ले जाकर सुना। उसे कुछ आवाज़ सुनाई दी और इस बात से आश्वस्त होकर कि मशीन का पेट अब भर गया है, वह अपने बिस्तरे पर जाकर लेट गई।

"अब वह भी मुझे प्यार करेगा," निस्सो ने सोचा, "न जाने कब से उसे खाना नहीं मिला था!"

सुबह होने पर निस्सो ने देखा कि ग्रामोफ़ोन के इधर-इधर दूध बिखरा पड़ा है। भयभीत और परेशान निस्सो की समझ में नहीं आया कि यंत्र ने प्रेम से अर्पित भेंट को स्वीकार करने से इन्कार क्यों कर दिया।

चौथा परिच्छेद

: १ :

बख्तियार ने अपने मचान पर से झाँक कर देखा। सूरज अभी पहाड़ों के पीछे से नहीं उभरा था, लेकिन बर्फ से ढकी चोटियाँ उसकी रोशनी में चमकने लगी थीं। नहर पर जाने का वक्त हो गया था।

बख्तियार की आदत थी कि वह नहर पर सब से पहिले पहुँचता था। वह जानता था कि जल्दी आने वालों में दूसरा नम्बर ग्राम सोवियत के मंत्री खुदादाद का और उसके बाद काराशिर का होता है। अन्य सब, एक साथ, बाद में आते हैं।

आखिर सूरज पहाड़ों के कगारों से ऊपर निकल आया, और दुर्ग प्रकाश तथा सुहावनी गर्मी से भर गया। बुर्जों के खण्डहरों में दर्रे के निवासी काम में जुटे थे। उनकी कुदालियों और फावड़ों के चलने तथा पत्थरों के अपने स्थान से उखड़ने की आवाज़ सुनाई पड़ रही थी।

लेकिन काराशिर तथा नहर पर काम करने वाले अन्य कई लोग अभी तक नहीं आए थे। बख्तियार गुस्से और झुंझलाहट से उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। काम की जो योजना उसने आज बनाई थी, उनके न आने से वह गड़बड़ा जाएगी।

काम करने वालों में से रोज कोई न कोई गायब रहता था, या देर से आता था। उन्हें खदेड़ कर लाने के लिए बख्तियार उनके घर का चक्कर लगाता था। आज भी बख्तियार ने ऐसा ही किया। देख-भाल का काम खुदादाद को सौंप कर खुद गांव की ओर चल दिया।

आखीर के दो घर छोड़ कर तीसरा घर यूसुफ का था। वह अभी बूढ़ा नहीं हुआ था और अच्छी तरह काम कर सकता था; लेकिन उस का स्वभाव कुछ उलटा था। वह हमेशा बड़बड़ाता, रोता-झींकता और कोई-न-कोई नुक्स निकालता रहता। उसने अपनी पुरानी आदतों को अभी तक नहीं छोड़ा था।

गांव-सोवियत के मुखिया बख्तियार ने बिना खटखटाए ही यूसुफ के घर में प्रवेश किया। फटी हुई चद्दर ओढ़े यूसुफ एक पत्थर के चौके पर सो रहा था। चूल्हा ठण्डा पड़ा था और घर में खाने की कोई चीज़ या रकाबियाँ आदि नहीं दिखाई देती थीं। उसकी युवती पत्नी शोख़ बगोर चरागाह चली गई थी और अब घर में कोई ऐसा नहीं था जो सवेरा होने पर उसे जगाता। जहाँ तक ख़ुद उसका अपना सम्बन्ध था, वह चौबीसों घण्टे सोता रह सकता था। बदन उसका कमजोर था। ख़ूबानी के उसके तीन पेड़ साल-भर तक उसे सहारा नहीं दे सकते थे। शहतूत का पेड़ उसके पास एक भी नहीं था। उसकी दो बकरियाँ और एक मेमना चरागाह में थे, और घर के पीछे उसका गेहूँ का खेत इतना छोटा था कि भरपूर फसल होने पर भी उससे एक महीने से ज्यादा काम नहीं चलता था।

बख्तियार यह सब कुछ अच्छी तरह जानता था। लेकिन जब उससे यह तय हो गया कि वह काम करेगा और कारवाँ के आने पर उसके हिस्से का आटा उसे मिल जाएगा, तो फिर इस तरह लम्बी तान कर सोने का क्या मतलब है!

गुस्से में भर कर बख्तियार ने उसे झँझोड़ा।

"क्या है? ओह, तुम हो बख्तियार?" चेचक से बदनुमा और बेतरतीबी से दाढ़ी बढ़े उनिंदियाए चेहरे पर से चादर हटाते हुए उसने कहा, "क्यों जान खाते हो, सोने दो!"

"सब लोग काम कर रहे हैं, और तुम हो कि अभी तक," झुंझला-कर बख्तियार ने कहा, "सैयदों की भाँति लम्बी ताने हो! एक आदमी

तुम्हें जगाने के लिए चाहिए, क्यों ?"

"शोर न करो ! भाड़ में जाए तुम्हारा काम ! ऐसी क्या जल्दी है ? मानो मैं कोई स्त्री हूँ जिसके बच्चा होने वाला हो !" यूसुफ ने कहा और एक बार फिर चादर खींच कर अपना मुँह ढंक लिया।

बख्तियार ने उसकी चादर उतार कर कोने में फेंक दी। यूसुफ अलसाए भाव से पत्थर के चौके पर उठकर बैठ गया। एक अंगड़ाई उसने ली, नींद में डूबी आंखों से अपना चोगा टटोल कर कन्धे पर डाला, सूरज की रोशनी में बाहर निकल आया और आखें मिचमिचाता हुआ दुर्ग की ओर चल दिया।

बख्तियार ने एक भी घर बाकी नहीं छोड़ा और दर्रे के जो निवासी काम पर नहीं पहुँचे थे, उनके बहानों को अनसुना कर सभी को उसने काम पर रवाना कर दिया। काराशिर का घर ढलुवान के उस छोर पर शहतूत के दो पेड़ों की छाया में था।

"काराशिर !" बख्तियार ने चिल्लाकर पूछा, "घर पर ही हो न ?"

'मछली का काँटा' मुँह फुलाए दरवाज़े पर आकर खड़ी हो गई।

"हाँ, है तो घर पर ही। लेकिन तुम व्यर्थ आए बख्तियार, वह आज काम पर नहीं जाएगा।"

"क्यों ?"

"खुद आकर देख लो न !" होंठ दाबते हुए 'मछली का कांटा' दरवाजा छोड़ एक ओर हट गई, और बख्तियार से भीतर जाने का इशारा किया। बख्तियार ने झुक कर ड्योढ़ी पर पांव रखा, लेकिन ठिठक कर पीछे हट गया। भीतर से अफ़ीम की मीठी, भारी गन्ध आरही थी। अन्धेरे कोनों में से एक में औंधा पड़ा काराशिर कुछ बड़बड़ा रहा था। उसका सिर और हाथ पत्थर के चौंतरे पर से नीचे लटके हुए थे।

"मछली का कांटा, तुमने यह कैसे होने दिया ?" गुस्से में भर कर उसने पूछा।

'मछली का कांटा' ने डबडबाई आँखों से उसकी ओर देखा।

"मुझे क्या पता था, और पता हो भी कैसे सकता था ? जब मैं घर लौटी तो इसे इसी हालत में पड़ा देखा। सारी सांझ और सारी रात यह इसी तरह पड़ा रहा। अब सवेरा हो गया, लेकिन इसकी हालत और भी ज्यादा खराब है !"

"इसे अफ़ीम मिली कहाँ ?"

"मुझे क्या पता ?" 'मछली का काँटा' ने दुविधा पूर्ण स्वर में कहा। फिर गुस्से के स्वर में दृढ़ता से बोली, "मैं कुछ नहीं जानती, मुझे कुछ भी नहीं मालूम !"

"अच्छी बात है। जब इसका दिमाग ठिकाने पर आजाए, तो मेरी ओर से कहना कि जब नई ज़मीन का बटवारा होने पर इसे एक इंच भी ज़मीन नहीं मिलेगी।"

"यह कैसे हो सकता है ?" मछली का कांटा ने चीख कर कहा, "ऐसी बात मुँह से निकालते तुम्हारी जबान कट कर नहीं गिर जाती !"

"कह दिया मैंने, इसे एक इंच भी ज़मीन नहीं मिलेगी !" बख्तियार ने गुस्से में जोर से कहा, "अफ़ीम खाने वालों के लिए ज़मीन नहीं है।"

"एक इंच भी ज़मीन नहीं दोगे ?" कमर पर हाथ रखे हुए 'मछली का काँटा' ने आग-बबूला होकर कहा, "तुम्हारे ही कहने से पहाड़ी पर अपने खेत में काम न करके इसने नहर पर काम करना शुरू किया। तुम अधिकारी हो, और तुमने ज़ुबान दी थी। कोई ऐतबार नहीं तुम्हारी ज़ुबान का। क्या शो-पीर ने यही तुम्हें सिखाया है ? जहन्नुम में जाओ तुम, और तुम्हारा शो-पीर !"

घृणा से ज़मीन पर थूकते हुए बख्तियार वहाँ से चल दिया। यह खुद उसका अपमान था। कितनी ही बार उसने काराशिर को समझाया था कि अफीम छोड़ दे, और उसने दुनियाँ-भर के वायदे भी किए। ऐसे आदमी को ज़मीन हर्गिज़ नहीं मिलनी चाहिए। अफीम ही उसे पार लगा देगी। हो-न-हो, यह सब सौदागर की करतूत है।

तेज़ी से डग भरता हुआ बख्तियार मिरज़ाहूर की दुकान पर

पहुँचा। मिरज़ाहूर उस समय कालीन पर बैठा चाय पी रहा था।

"अफीम कहाँ है ? मुझे सब निकाल कर दो !" बख्तियार ने गुस्से में कहा।

मिरज़ाहूर ने चाय का कटोरा नीचे रख दिया।

"अफीम मेरे पास कहाँ से आती ? एक मुद्दत से मेरी दुकान में अफीम नहीं है। ग्राम-सोवियत ने अफीम बेचना ग़ैर क़ानूनी कर दिया है। और मैं इस कानून का पालन करता हूँ। एक मुद्दत से मैंने अफीम नहीं बेची, न ही अफीम मेरी दुकान में है।"

"तुम झूठ बोलते हो कि अफीम तुम्हारी दुकान में नहीं है ! अगर तुम देने से इन्कार करोगे तो मैं खुद ले लूँगा !"

इससे पहिले कि मिरज़ाहूर उसे रोकता, बख्तियार दुकान में घुस गया और एक-एक करके सारी चीज़ों का उसने फर्श पर ढेर लगा-दिया। सौदागर उसकी ओर लपका, लेकिन बख्तियार ने ठोकर मारकर तमाम चीज़ों को फ़र्श पर बिखेर दिया। सहसा एक छोटी-सी पोटली पर उसकी नज़र पड़ी। तेज़ी से झुक कर बख्तियार ने उसे उठा लिया। दुकान से बाहर निकल वह सीधा नदी के किनारे पहुँचा, और ज़ोरों से हाथ घुमा कर उसने उसे नदी में फेंक दिया।

मिरज़ाहूर, गुस्से में पागल हो, उसके पीछे झपटा और चोगे के भीतर से एक छुरा उसने निकाल लिया, "चोर...लुटेरा...!"

बख्तियार ने घूमकर देखा और उछल कर एक ओर हटते हुए उसने दोनों हाथों में पत्थर उठा लिया, "हाँ, अब आओ !"

मिरज़ाहूर सहम कर वहीं खड़ा होगया और दूर से ही उसे कोसने लगा।

बख्तियार उदास और अपने-आप में कुछ खिंचा हुआ-सा लौटा। शो-पीर से भी वह दूर-ही-दूर रहा। अन्त में जब खुद शो-पीर उसके पास पहुँचा और उसने उससे पूछा कि वह कहाँ चला गया था तो बख्तियार नीचे झुककर पत्थर के एक भारी खण्ड से जूझने लगा,

मानो उसे उठाने का प्रयत्न कर रहा हो। फिर उड़ते हुए भाव से बोला, "ऐसे ही एक काम से गया था। अब सब ठीक है।"

शो-पीर ने अचरज से उसकी ओर देखा, फिर उसके पास से खिसक कर एक अन्य फकीर से बातें करने लगा। बख्तियार अपने-आप में उलझा हुआ था। उसे इसका भी ध्यान नहीं था कि उसके चारों ओर क्या हो रहा है।

जब शो-पीर ने देखा कि अब बख्तियार कुछ शान्त है तो उसने उससे पूछा, "काराशिर काम पर क्यों नहीं आया, बख्तियार ?"

"अब वह काम नहीं करेगा," बख्तियार ने भारी स्वर में कहा, "और मैंने फैसला किया है कि काराशिर को कोई ज़मीन भी नहीं दी जाएगी।"

"क्या सचमुच तुमने यह फैसला कर लिया है ?" शो-पीर ने आँखें सिकोड़ कर देखते हुए पूछा।

"हाँ, मेरा फैसला यही है," बख्तियार ने कहा और उसका गुस्सा बाँध तोड़ चला, "वह निरा धोखे बाज़ है। वह सोवियत सत्ता के खिलाफ है।"

"इतना गरम होने की जरूरत नहीं। आखिर हुआ क्या ?"

"वह अफीम के नशे में डूबा है। कुछ समझ में आया ?"

"बहुत बुरा किया उसने। लेकिन अफीम उसे मिली कहाँ से ?"

"सौदागर ने छिपा कर रख छोड़ी थी। कम्बख्त मरता भी तो नहीं !"

"यह बात है," शो-पीर ने कहा, और कुछ क्षण चुप रहकर फिर बोला, "सुनो बख्तियार, काराशिर ने अफीम का नशा किया, यह बहुत बुरी बात है। लेकिन तुम्हें अपना फैसला रद्द करना पड़ेगा। वह अफीम का नशा इसलिए नहीं करता कि इसमें उसे कोई खास सुख मिलता है ? वह गरीबों में भी सबसे गरीब है, और एकाएक तुम फैसला कर लेते हो कि उसे ज़मीन नहीं दी जाएगी ! तुम खुद कहते हो

कि उसे अफीम सौदागर ने दी, सो तुम्हें उसके खिलाफ लड़ना चाहिए। क्या इतनी-सी बात भी तुम नहीं समझते, बख्तियार ?"

बख्तियार ने कोई उत्तर नहीं दिया, और यूसुफ को मदद देने के बहाने उसके पास चला गया जो एक पत्थर के नीचे कुदाली लगाए उसे उलटने की कोशिश कर रहा था।

पत्थर को अपनी जगह से खिसकाने के बाद यूसुफ ने कमर सीधी की, और आस्तीन से माथे का पसीना पोंछते हुए बोला, "बख्तियार !"

"क्या है ?"

"जो भी हो, काराशिर को हम जमीन देंगे ?"

"बेशक," बख्तियार ने प्रसन्न भाव से कहा, "शो-पीर का कहना ठीक है। मैं बहुत जल्दी गर्म हो जाता हूँ।"

यूसुफ ने अपने इधर-उधर देखा और कई वृद्ध लोगों पर उसकी नज़र पड़ी, जिनसे उसे आशा थी कि वे उसका समर्थन करेंगे। फिर बोला, "मैं सोचता हूँ कि हमें बोबो कलाँ को भी कुछ जमीन देनी चाहिए। अब वह भी तो हमारी ही तरह गरीब है। आखिर उसके पास अब रह क्या गया है ? खान यहाँ से चले गए हैं; और जाते समय वे उसे कोई धन-दौलत भी नहीं सौंप गए !"

फकीरों ने अपने फावड़े और कुदालियां नीचे रखदीं, और निकट आकर बातें सुनने लगे।

"क्या कहा, खान के पोते को भी हम जमीन दें," बख्तियार बोला, "क्या तुम भूल गए कि उसने हमारे खून की आखिरी बूँद तक बाकी नहीं छोड़ी है !"

यूसुफ अपनी बात पर अड़ा रहा, "वह समय अब नहीं रहा। बूढ़े को देख कर अब दया आती है।"

बख्तियार का हृदय फिर सुलग उठा।

"क्या उसने भी कभी हम पर दया की ? मैं उसकी एक-एक रग पहचानता हूँ। जब मैं छोटा था तभी से उसके यहाँ काम करते-करते

यह उम्र होगई। वह एक कुत्ता है जिसके भेड़िये की दुम लगी है। उसे जमीन क्यों दें? अपनी गंदी दाढ़ी में क्यों नहीं गेहूँ की खेती करता?"

यूसुफ ने अपनी कुदाली उठा ली और वहाँ से खिसक गया। फकीरों में से एक ने कहा, "बख्तियार ठीक कहता है। बीबीकलां को जमीन नहीं देनी चाहिए। उसे जमीन देकर तुम अपने ही गले में पत्थर बाँधोगे, यूसुफ!"

बख्तियार ने फुस फुसा कर कोसा और एक ओर चल दिया, रास्ते में पड़े पत्थरों को प्रतिशोध की भावना से ठोकर मारते हुए।

साँझ के समय बख्तियार और शो-पीर एक साथ घर लौटे। शो-पीर जेब में हाथ डाले अन्यमनस्क भाव से कोई गीत गुनगुना रहा था। बख्तियार अपनी उँगलियों में एक टहनी थामे उसे निरन्तर तोड़-मरोड़ रहा था। जब उससे नहीं रहा गया तो खामोशी भंग करते हुए बोला, "मैंने सौदागर से अफीम छीन कर उसे नौ-दो ग्यारह कर दिया।"

"नौ-दो ग्यारह कर दिया, यानी…?"

"यह कि उसे नदी में फेंक दिया। उसने मुझे चोर-लटेरा कहा, और चाकू निकाल कर वार करने झपटा। मैंने पत्थर मारकर उसकी जान ही ले ली होती। अगर वह मर जाता तो क्या होता, शो-पीर?"

शो-पीर ने कोई उत्तर नहीं दिया। कुछ देर वह चुप रहा। वह जानता था कि दर्रे के निवासी अभी भी सौदागर से डरते हैं। वे उसके खिलाफ एकाएक कार्रवाई नहीं करेंगे। वे नहीं समझते कि सौदागर के बिना भी उनका काम चल सकता है। इस हद तक वे उसके आदी हैं। तिसपर अफीम का उन्हें चस्का पड़ गया है…"

"हाँ, बख्तियार," एकाएक शो-पीर ने कहा, "यह हमारा दुर्भाग्य है कि हमारी सीमाएं अभी भी खुली हैं। सीमाओं पर एक भी चौकी नहीं है। अगर सीमाओं पर एक दरजन भी गारद की चौकियाँ होतीं तो इन उल्लंघनों को रोकना सहज हो जाता।"

फिर, पहाड़ों की ओर घूँसा उठाते हुए, वह इतनी तेज आवाज

में बोला कि बख्तियार चौंक उठा ।

"ये कम्बख्त पहाड़ ही हमारी सबसे बड़ी बाधा हैं । इन्हें हटाना ही होगा !"

आवेग के शान्त हो जाने पर शो-पीर विचारों में डूब गया, और दोनों चुपचाप घर की ओर चलने लगे ।

: २ :

गर्मियों में घाटी सूरज की सीधी किरणों से झुलसी थी । अब पहाड़ों से आने वाली ठंडी हवा शरद के आगमन की सूचना दे रही थी । सियातांग के छोटे-छोटे खेतों से हवा के झोंकों के साथ तम्बूरों के बजने की ध्वनि आ रही थी । जब तक गेहूँ की कटाई न हो, पंछियों को फ़सल से दूर रखने के लिए तम्बूरों को दिन-रात बजाते रहना जरूरी था । नजर गड़ा कर देखने पर छोटे-छोटे खेतों में सफेद चोगे पहिने स्त्रियाँ तम्बूरे बजाती दिखाई देती थीं ।

इस समय गुलरीज बराण्डे में बैठी बिनाई के अपने काम में उलझी थी और लाल, पीली, हरी तथा नीली ऊन को परखने में व्यस्त थी । उसकी हड्डी-भर रह गई गन्दुमी उंगलियों में लकड़ी की चार सलाइयाँ चमक रही थीं । निस्सो, अपनी टाँगों को बदन के नीचे समेटे, गुलरीज़ के पास बैठी थी, और चटक रंग की ऊन को सुलझाने में जुटी थी ।

गुलरीज एक थैलीनुमा मोजा बुन रही थी, जिसमें एड़ी-वेड़ी कुछ नहीं थी । मोज़े में वह कोई बहुत ही अद्भुत और निराले ढंग का डिजाइन बुन रही थी । इस तरह के मोज़े बुनना सियातांग की एक अपनी कला थी, और यहाँ की स्त्रियाँ न जाने कब से ऐसे मोज़े बुनती आ रही थीं ।

निस्सो बड़े ध्यान से डिजाइन को देख रही थी । गुलरीज़ की उंगलियों की प्रत्येक हरकत पर उसकी नजर थी । बाद में, बगीचे के एक सूने कोने में जाकर, शहतूत के पेड़ों के झुरमुट के पीछे वह खुद भी

बुनने का अभ्यास करती। उसके पास ऐसी ऊन नहीं थी, और गुलरीज़ से ऊन माँगने का उसे साहस नहीं होता था। सो छोटे-छोटे टुकड़ों को जोड़ कर वह अपना काम चलाती थी। गाँठ-गठीला ही सही, लेकिन जब मोज़ा बुन जाएगा तो वह गुलरीज़ से जाकर कहेगी, "देखो, मैं भी मोज़ा बुनना जानती हूँ। अब मुझे भी कुछ रंगीन ऊन दे दो। मैं सच-मुच का मोज़ा बुनना चाहती हूँ।"

धारा के बहने की धीमी आवाज़ आ रही थी। आज हवा बहुत ही ताज़ा और सुहावनी थी। गुलरीज़ अपने बेटे के बारे में सोच रही थी जो अब बड़ा आदमी बन गया था। स्थानिक सत्ता उसी के हाथों में थी। लेकिन यह सत्ता कैसी थी, कुछ समझ में नहीं आता था। पहिले जब भगवान् किसी को सत्ता देता था, तो इसके साथ-साथ उसे सम्पत्ति और स्त्री भी देता था। सम्पत्ति, एक स्त्री और सत्ता,—ये ऐसे ऊनी धागे थे, जिनसे सुखी जीवन का तानाबाना बनता था। लेकिन आजकल सत्ता होने पर भी न सम्पत्ति दिखाई देती है, न पत्नी। यह बात गुलरीज़ की समझ में नहीं आती थी। माना कि बख्तियार के पास अब एक घर है, बगीचा भी है, जो पहिले उसके पास नहीं था। और वह अपने को धनी भी कहता है। लेकिन वह कुछ नहीं जानता। घर में अभी भी गरीबी डेरा डाले है। बोने के लिए उनके पास ज़मीन नहीं है। जिस छोटे से टुकड़े में बख्तियार ने उस साल बोवाई की थी वह बहुत ऊँचे, पहाड़ों के उस छोर पर था, जिसके बाद बर्फ़-ही-बर्फ़ दिखाई देती थी। वहाँ इतनी ठंड पड़ती थी कि फ़स्ल का पकना तो दूर, उलटे पाला मारने का खतरा हर घड़ी बना रहता था।

इस खेत से उतना भी पैदा नहीं होगा, जितना कि बोबोकलाँ पहिले अपने मज़दूरों को दे देता था। लेकिन गरीबी का होना इतना बुरा नहीं। शुरू-शुरू में सभी गरीब होते हैं,—बोबोकलाँ के पास भी तो अब वह सब कुछ नहीं था, जो कि उसके पास कभी होता था। लेकिन बिना स्त्री के कोई कैसे रह सकता है? अगर पहिले वाले दिन होते, जब कि

लोग अपने लिए पत्नी खरीदते थे, तो बख्तियार सारी उम्र कुँवारा ही बैठा रहता। अब समय बदल गया है। शो-पीर कहता है कि आजकल लोग केवल प्रेम के भरोसे शादी करते हैं, उन्हें अपनी पत्नियों का मूल्य नहीं चुकाना पड़ता। फिर भी ऐसी लड़की कहां मिलेगी, जिसके सगे-सम्बन्धी बदले में कुछ न मांगें। आज़ादी तो है, पर आज़ाद लड़कियां कहाँ हैं ? बख्तियार कहाँ से लाता ऐसी लड़की ? भाग्य से एक लड़की इस घर में आ गई। बहुत सुन्दर और बहुत ही अच्छी। शो-पीर ने कहा, इससे काम न कराना, गुलरीज़। इसे आराम करने देना। जब घुल-मिल जाएगी तो अपने आप काम करने लगेगी। गुलरीज़ ने उससे काम के लिए ज़रा भी नहीं कहा। लेकिन वह है कि बराबर कुछ-न-कुछ करती ही रहती है। और अब तो उसे मोज़ा बुनना सीखने की धुन लगी है। वह बहुत अच्छी पत्नी बन सकती है।

बुनने के काम में ज़रा भी बाधा दिए बिना गुलरीज़ अपने विचारों में उलझी रही: क्या ही अच्छा होता अगर यह बात वास्तव में सच होती कि सत्ता हाथ में आने पर पत्नी मिलने में देर नहीं लगती। तब वह समझती कि निस्सो का घर में आना बख्तियार के सत्ता पाने का ही फल है। और कौन जाने, बख्तियार की पत्नी बन जाने पर इस घर के भी भाग्य जाग जाएँ !

: ३ :

घाटी पार करके बख्तियार ऊपर सियातांग गांव की ओर जा रहा था। सौदागर की दूकान और काराशिर के मकान की पृष्ठ भाग में गाँव की हरियाली फैली थी। सिंचाई की नयी नहर, अपने समूचे विस्तार में, बन कर तैयार हो गई थी। केवल बीच-बीच में, जहाँ-तहाँ, कुछ बड़े पत्थर हटाने भर रह गए थे।

सौदागर की दुकान और काराशिर का मकान पीछे छूट गया। नहर पगडंडी के बराबर-बराबर चली गई थी। बख्तियार निस्सो के बारे में सोच रहा था।

निस्सो के आने के बाद जीवन कुछ सरस हो गया था। पहिले जब बख्तियार काम के लिए सुबह ही घर से रवाना होता था, तो उसे फिर दिन-भर घर की याद नहीं आती थी। लेकिन अब रह-रहकर उसका मन करता कि एक मिनट के लिए ही सही, एक बार घर जाकर निस्सो को देख आए। उसका हृदय उमड़ता-घुमड़ता, और वह निस्सो से बहुत-बहुत बातें करना चाहता। लेकिन निस्सो के सामने पहुँचते ही जैसे उसकी बोलती बन्द हो जाती। आदमी भी कितना अजीब होता है। हज़ारों शब्द उसके हृदय में उमड़ते हैं; लेकिन ठीक मौके पर एक भी बात नहीं निकलती। क्या सभी के साथ ऐसा होता है? नहीं, शोपीर के साथ तो ऐसा नहीं होता। वह निस्सो से सारी सांझ बातें करता रहता है, और निस्सो उसकी बातें सुनती रहती है!

बख्तियार को यह अखरता कि निस्सो शो-पीर से तो बातें करे, और उससे नहीं। कल सांझ जब निस्सो दीये के लिए 'हार्कशोर' घास लेने के लिए चली गई तो खुद शो-पीर ने बताया कि उसे निस्सो का सारा भेद मालूम है। "उसके जीवन की कहानी बहुत ही सीधी है," उसने कहा और दोआब, निस्सो की चाची तथा अज़ीज़खान का सारा किस्सा बतलाने लगा, "ज़रा सोचो तो, खुद अज़ीज़खान ने उसे अपनी पत्नी बनाने के लिए खरीदा था, लेकिन वह उसके पास नहीं टिकी, वहाँ से भाग आई।" अन्त में शो-पीर ने कहा, "लेकिन निस्सो के सामने इन सब बातों का जिक्र न करना, और इस तरह व्यवहार करना मानो तुम्हें कुछ मालूम न हो।"

निस्सो अब बड़ी हो गई थी, और बख्तियार की समझ में नहीं आता था कि शो-पीर अभी भी उसके साथ एक लड़की ऐसा व्यवहार क्यों करता है। यह सही है कि रूसी स्त्रियां यहाँ की स्त्रियों के मुकाबिले देर में शादी करती हैं, लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि शो-पीर उसे निरी लड़की ही समझता रहे। अगर अब नहीं तो क्या उसकी शादी उस समय होगी जब वह बूढ़ी हो जाएगी!

सहसा रास्ते में एक पुरानी जन-शून्य खोह देख कर बख्तियार की विचार धारा टूट गई। खोह की दीवार अभी भी खड़ी थी। इसे गिराने का काम खुदादाद ने अपने जिम्मे लिया था, लेकिन अभी तक उसे पूरा नहीं किया। उसे इसकी याद दिलानी होगी।

नयी नहर सचमुच में बहुत अच्छी होगी। पुरानी नहर ऊँचाई से शुरू होकर गाँव के बाहर-बाहर जाती थी और सिंचाई की नालियों द्वारा पानी खेतों तक पहुँचता था। खेत और बगीचे पहाड़ी ढलुवान पर खूब नीचे नदी-किनारे तक फैले थे। लेकिन नहर का पानी नदी तक पहुँचने से पहिले ही चुक जाता था, और सब से गरीब फकीरों के खेत चिरकाल से पानी की पहुँच से बाहर इसी सूखे हिस्से में थे। पानी के अभाव से वे हमेशा परेशान रहते थे।

नयी नहर गाँव के ठीक बीचों-बीच से गुज़रती थी। अब सभी खेतों और बगीचों को पानी मिलेगा, और फकीरों के खेत हरे-भरे हो उठेंगे।

बख्तियार आधा गाँव पार कर चुका था। पथरीली दीवारों के बीच एक तंग रास्ते की ओर मुड़ते ही दर्रे के निवासियों का एक दल उसे दिखाई दिया। कुछ मोड़ पर खड़े थे, और कुछ पत्थर की एक सपाट चट्टान पर बैठे थे, जिस पर शहतूत के पेड़ के पत्तों की छाया पड़ रही थी। उनमें कोई तेज बहस चल रही थी। बहस में वे इतने डूबे थे कि बख्तियार की ओर उनका ध्यान नहीं गया।

"मैं कहता हूँ कि सूरज पसलियों तक पहुँच गया है," अपनी पसलियों की ओर अँगूठे से इशारा करते हुए काराशिर ने चिल्लाकर दोबारा कहा, "यहाँ, पसलियों तक!"

"नहीं, अभी पसलियों तक नहीं पहुँचा", यूसुफ ने झुँझलाकर कहा, "वह अभी केवल गले तक पहुँचा है!"

"बहुत सुस्त है तुम्हारा सूरज!" काराशिर ने कहा, 'तुम्हें गिनना भी नहीं आता।'

"तुम्हें तो आता है!" दर्रे के एक युवक निवासी ने कहा, जो अपने

सिर पर साफे की जगह टाट का एक टुकड़ा लपेटे था।

बख्तियार लोगों के निकट एक दीवार से सट कर खड़ा हो गया और दिलचस्पी के साथ उनकी बातें सुनने लगा।

"हाँ, मुझे गिनना आता है। अगर मैं गलती करूँ तो बीच में ही टोक देना", काराशिर ने तेज़ी से कहा, "चालीस दिन तक सूरज सिर के ऊपर टिका आराम करता रहा। क्यों, ठीक है न ?"

इस पर किसी ने आपत्ति नहीं की। सियाताँग की प्रथा के अनुसार सूरज पाँव के अँगूठे से ऊपर उठने के बाद चालीस दिनों तक सिर पर टिका रहता था।

"बेशक, तुम्हारी बात ठीक है", भीड़ में से एक ने कहा, "लेकिन इसके बाद का हिसाब तुम कैसे लगाते हो ?"

"इस प्रकार, चालीसवें दिन कौनसी घटना घटी थी ? दो दिन हुए तब सोहराब की नन्ही लड़की मरी थी, और हम उसे दफनाने गए थे। क्यों, ठीक है न ?"

"हाँ, दो दिन पहिले", आवजें आईं, "तुम ठीक कहते हो। इसके बाद..."

"इसके तीन दिन बाद हशमत के गधे की टाँग टूटी। उस दिन सूरज सिर से खिसक कर माथे पर आ गया। तीन दिन तक वह माथे पर रहा। तीसरे दिन ज़ीनत का एक चूज़े को लेकर हकीम से झगड़ा हुआ। तब सूरज नाक पर था और तीन दिन तक वहीं रहा। इसके बाद दूसरे दिन शो-पीर बारूद लेकर बुर्जी पर पहुँचा और उसने बताया कि बुर्जी को अगले दिन उड़ाया जाएगा। तब यूसुफ, खुद तुमने कहा था कि सूरज के दाँतों तक पहुँचने पर बुर्जी गायब हो जाएगी। क्या तुम्हें अपनी बात याद है ?"

"हाँ, मैंने कहा जरूर था", यूसुफ ने हामी भरी, "लेकिन यह मुझे याद नहीं कि वह दूसरा दिन था या तीसरा।"

"तुम्हें याद न हो, लेकिन मुझे तो है। सूरज को दाँतों पर आए

तीन दिन हो चुके थे जब बुर्जी को उड़ाया गया, और वह स्त्री हमारे बीच प्रकट हुई। और उस दिन जब सूरज खिसक कर ठोड़ी पर आया, तो मैं नहर पर काम करने नहीं गया था।"

"यह गलत है," यूसुफ ने ज़ोरों से प्रतिरोध किया, "वह दूसरा दिन था। तुम अफीम के नशे में थे, सो तुम्हें कुछ पता नहीं!"

"मैं एक ही दिन तो बीमार रहा।"

"नहीं, दो दिन।"

"एक..."

"नहीं, दो!"

काराशिर ने निराशा से अपने चारों ओर देखा। तभी बख्तियार पर उसकी नज़र पड़ी जो दीवार का सहारा लिए चुपचाप उनकी ओर देख रहा था।

"यह लो, बख्तियार यहाँ मौजूद है," काराशिर ने विजयी की भावना से कहा, "क्यों बख्तियार, मेरी तबीयत कितने दिन खराब रही, एक या दो?"

"दो दिन," बख्तियार ने हल्की हँसी के साथ कहा, "लेकिन तुम्हारी इस बहस का मतलब क्या है?"

सबकी आंखें बख्तियार की ओर घूम गईं।

"मैं कहता हूँ कि हमें छै दिन में अनाज काट लेना चाहिए," काराशिर ने तेज़ी से कहा, "लेकिन यूसुफ कहता है कि नौ दिन में। अगर सूरज कूल्हों तक पहुँच गया तो बहुत देर हो जाएगी। तेज़ हवाएं चलने लगेंगी। तब तो हम अपना अनाज फटकते हैं। अगर हमने नौ दिन में कटाई की तो हमें अनाज पिसाने का समय कब मिलेगा? अगर मैं दो दिन बीमार रहा तब भी नौ दिन बहुत ज्यादा होते हैं।"

"लेकिन बहस करने से क्या मामला सुलझ जाएगा?" बख्तियार ने चुटकी लेते हुए कहा, "जाकर बोबो कलां से क्यों न पूछ लो? आखिर तीन साल से वह हिसाब रखता आ रहा था। और खुद तुम भी यह

मानते हो कि वह सबसे बुद्धिमान है।"

"अब तो तुम यह कहोगे ही," यूसुफ की भौहें चढ़ गईं और सबसे आगे बढ़कर बख्तियार के सामने आते हुए उसने कहा, "बोबो कलां के पास जाने से अब क्या फायदा ? जब बुर्जी थी तो उस पर निशान बना कर सूरज के हर डग का वह हिसाब रखता था। अब कैसे मालूम हो कि सूरज कहाँ है ? एक कहता है कि पसलियों पर है, दूसरा कहता है कि गले पर है, और तीसरा कहता है कि पेट पर, तुम्हीं बताओ कि सूरज कहाँ है ?"

"लेकिन बोबो कलां क्या कहता है ?" कमर को सीधा करते हुए बख्तियार ने फिर पूछा।

"बोबो कलां क्या कहता है ?" यूसुफ ने कहा, "वह कहता है कि तुमने बुर्जी को उड़ा दिया, सो अब तुम खुद इसका पता लगाओ कि सूरज कहाँ है ? शो-पीर और बख्तियार ही अब तुम्हें बताएँगे कि सूरज कहाँ है ? अगर हिसाब लगाने में भूल होगई तो आँधियाँ सारा अनाज उड़ा ले जाएंगी या सारा अनाज बारिश से सड़ जाएगा और सभी कुछ उलट-पलट हो जाएगा। जाओ, मैं अब तुम्हारे लिए कुछ नहीं कर सकता !"

"अच्छी बात है। अगर वह कुछ नहीं कर सकता तो मरने दो उसे," यूसुफ को एक ओर हटा कर सबके बीच में आते हुए बख्तियार ने कहा, "मुझे यही बताना है कि दो दिन बाद हँसिया लेकर तुम्हें अपने खेतों में पहुँच जाना है। शो-पीर अपनी उँगलियों पर गिनकर समय का सारा हिसाब बता सकता है। उसका एक अपना तरीका है, और उसे एक-एक दिन का पता रहता है। उसका कहना है कि अनाज पक गया है। अगर हम इसी में उलझे रहे कि सूरज इस समय कूल्हों पर है या पेट पर तो आधी फसल इसी में नष्ट हो जाएगी। शो-पीर और मैं तुम्हारे खेतों को देखने गए थे। अनाज पक कर नीचे गिरने लगा है। कल अपने हँसियों को तेज़ करलो और परसों हम सबको बिला नागा

खेतों में पहुँच जाना है।"

बख्तियार की बात से लोगों की परेशानी कम नहीं हुई। सूरज की गति और स्थिति का पता लगाए बिना भला वे कैसे रह सकते थे। बख्तियार पहिले भी अनजाने और अनसुने 'महीनों' का जिक्र कर चुका था, जो उतने ही अनजाने और अनसुने 'सप्ताहों' में बंटे थे। जैसे सौदागर अपनी चीज़ों को गिनता है, वैसे ही उसने दिनों को गिन कर बताया था, दसवाँ, पन्द्रवाँ, तेईसवाँ। एक बार उसने तीस तक गिना और फिर शुरू से गिनने लगा, दूसरी बार उसने न जाने क्यों इकत्तीस तक गिना। तीस-इकत्तीस के नये चक्कर में कोई क्यों पड़े जब कि सीधा हिसाब मौजुद है। कौन नहीं जानता कि जाड़ों में चालीस दिनों तक सूरज निश्चल रहता है और बर्फ की भाँति जम जाता है। इसके बाद उसमें जान पड़ती है, और सूरज की जीवनदायी किरनें कोने में दुबके हुए कुत्ते की खाल गरमाती हैं। नौ दिन तक सूरज की किरनें कुत्ते को गरमाती हैं और ये दिन 'कुत्ते के दिन' कहलाते हैं। इसके बाद सूरज कुत्ते के मालिक की ओर हरकत करता है और तीन दिन तक उसके पाँव के अँगूठों पर रहता है। इसका मतलब यह है कि जाड़ों में जो पत्थर खेतों में आ गिरे हैं, उन्हें साफ किया जाए। इसके बाद सूरज ऊपर चढ़ता है, तीन दिन टखने पर, तीन दिन पिंडली पर, तीन दिन घुटनों के नीचे, और तीन दिन घुटनों के ऊपर। इस तरह लोगों को मालूम हो जाता है कि खेतों को कब जोता और सींचा जाएं, किस-किस दिन वे बड़े और छोटे त्यौहार मनाएं। चिरकाल से ऐसे ही चला आरहा था। लेकिन अब वे क्या करें जब कि सब कुछ गड़बड़ होगया और सूरज की गति का कुछ पता नहीं चलता!

"जो भी हो," बख्तियार ने कहा, "यह तय है कि दो दिन के भीतर तुम्हें खेतों में पहुँच जाना है। शो-पीर यही कहना है, और फसल का जिम्मा मैं खुद लेता हूं।"

"अच्छी बात है, हम ऐसा ही करेंगे," आखिर काराशिर ने कहा,

"अगर तुम ज़िम्मा लेते हो तो मैं जाऊँगा । लेकिन इस साल फसल अच्छी नहीं है । हम सब को पेट से पत्थर बाँधना पड़ेगा ।"

"नहीं, कारवां के आजाने पर हम भूखों नहीं मरेंगे," बख्तियार ने दो टूक जवाब दिया और इससे पहिले कि कोई कुछ कहे, वह अपने घर की ओर चल दिया ।

दो दिन बाद दर्रे के अधिकांश निवासी खेतों में फसल बटोरने पहुँच गए । बूढ़ों और कमज़ोर लोगों की मदद के लिए शो-पीर ने नहर पर काम करते दर्रे के भूमि विहीन निवासियों को भी बुला लिया । जो नहर पर काम कर रहे थे, उन्हें उम्मीद थी कि कारवां के आजाने पर अपने श्रम के बदले में उन्हें आटा मिल जाएगा ।

नहर करीब-करीब बन कर तैयार थी । लेकिन शो-पीर ने घोषित किया कि नहर का उद्घाटन-समारोह अनाज काटने और फटकने के बाद किया जाएगा ।

: ४ :

बख्तियार ने अपनी पतलून घुटनों तक चढ़ा ली थी और बदन पर केवल बिना आस्तीन की जाकेट पहिने था । वराण्डे के पास वह पत्थरों को चुनने-छाँटने में जुटा था । निस्सो जानती थी कि उसके लिए एक नया कमरा बनाने के लिए ही बख्तियार ने इन पत्थरों को जमा किया है । बख्तियार ने खुद अपने मुँह से इस बारे में कुछ नहीं कहा था । वह चुपचाप और लगन के साथ पत्थरों को यथा-स्थान जमाने में जुटा था ।

निस्सो और गुलरीज़ अपनी चमकदार ऊन पर सिर झुकाए पास-पास बैठी थीं । गुलरीज़ बुनने में व्यस्त थी और निस्सो ऊन के बिखरे हुए छोटे-छोटे टुकड़ों को चुन कर अपनी मुट्ठी में जमा कर रही थी ।

शो-पीर अपनी नोटबुक में कुछ लिख रहा था । जब कोई नया विचार आता तो वह लिखना रोक देता, नोट-बुक में कुछ काट-छाँट करता और फिर लिखने लगता, लेकिन अब लिखना बन्द कर वह खड़ा

हो गया था। एक अंगड़ाई लेकर उसने अपना बदन सीधा किया, और वराण्डे के पास आकर गुलरीज़ से बोला :

"इस साल फसल अच्छी नहीं है, गुलरीज़। मैंने अच्छी तरह से हिसाब लगा कर देखा है। बसन्त की बोवाई के लिए अगर हम अपनी समूची फसल उठाकर अलग रख दें तो हमें अभी से अपने आपको रोटियों से वंचित कर देना पड़ेगा। और अगर हम उसे खाने के काम में लाएं तो फिर बोवाई के लिए कुछ नहीं बचेगा। तब हम क्या करेंगे ?"

"अब हमारे पास सेब, बेर, खूबानियाँ, सेम और मटर हैं। अनाज को हम फिर क्यों हाथ लगाएं ?" वृद्धा ने कड़े स्वर में पूछा, "हम मर नहीं जाएँगे।"

"लेकिन तुम समझ सकती हो गुलरीज़ कि पूरा साल-भर हो गया हमें रोटियों का सपना देखते देखते !"

"सपना ही तो देखते रहे हैं, रोटियां खाते तो नहीं रहे। लेकिन तुम कहते न थे कि कारवां शीघ्र ही आने वाला है !"

"कारवां आएगा ज़रूर, लेकिन वह अपने साथ आटा लाएगा, अनाज नहीं। और अनाज बोया नहीं जा सकता। लोग भूखे तो अब हैं, कारवां के लिए कोई नहीं इन्तजार करना चाहेगा। और तुम जानती ही हो कि कारवाँ के यहाँ तक पहुँचने में कितनी देर लग रही है ? शीघ्र ही वे अपना अनाज पिसवाना शुरू कर देंगे और वसन्त में बोने के लिए हमारे पास कुछ नहीं बचेगा।"

एक क्षण चुप रहने के बाद वृद्धा ने समझदारी के साथ कहा,—"यह सोचने की बात है, शोपीर ! तुमसे बड़ा दिमाग और किसका होगा ?"

"तुम क्या सोचती हो, गुलरीज़ ?"

"एक बूढ़ी स्त्री इस बारे में क्या कह सकती है ? मुझे तो ऐसा लगता है कि उन्हें अनाज नहीं पिसवाना चाहिए, कारवाँ की इन्तज़ार करना चाहिए।"

"क्या तुम सचमुच ऐसा सोचती हो, गुलरीज़ ?"

सीधी और सही बात गुलरीज़ ने कही थी। लेकिन जिस अनाज के लिए लोग इतने दिनों से प्रतीक्षा कर रहे थे, उसका इस्तेमाल करने से वह उन्हें कैसे रोक सकता है ? फिर भी वृद्धा की बात विचार करने योग्य थी।

"और तुम क्या कहती हो, निस्सो ?"

निस्सो ने तेज़ी से मुड़ कर शोपीर की ओर देखा। निश्चय ही उसे चिढ़ाने के लिए शोपीर ने उससे यह सवाल पूछा था।

"मैं कुछ नहीं कहती, शो-पीर !" हरी ऊन के एक धागे को तोड़ते हुए उसने कहा।

"पगली, अभी भी कुछ कहते डरती है, लेकिन मैं जानता हूँ कि कितनी बातूनी ज़ुबान है तेरे मुँह में !" फिर, गुलरीज़ की ओर मुड़ते हुए, गम्भीर स्वर में उसने कहा, "अच्छा यह होगा कि खेतों में जाकर मैं एक बार फिर स्थिति की जाँच करूँ। सच बात तो यह है कि मैं खुद भी मटर खाते-खाते तंग आ गया हूँ। क्या आज भी मटर का ही दलिया बना रही हो, गुलरीज़ ?"

वृद्धा के जवाब की प्रतीक्षा किए बिना ही, विचारों में डूबा, वह बराण्डे से हट गया और सुनहरी खेतों की ओर चल दिया।

गुलरीज़ ने देखा कि निस्सो की आँखें शोपीर का अनुसरण कर रही हैं, और वृद्धा के चपल हाथ सलाइयों को और भी तेज़ी से चलाने लगे !

: ५ :

बख्तियार अपने गधे के साथ नहर पर चला गया। उसे वहाँ से मिट्टी लाद कर लानी थी।

निस्सो कुछ देर तो गुलरीज़ के पास बैठी रही। जब उसने देखा कि मर्द चले गए हैं और अब घर में कोई ऐसा नहीं है, जो यह जानने की कोशिश करे कि वह बगीचे में जाकर क्या करती है, तो वह उठ

खड़ी हुई ।

दीवार के पास अपनी प्रिय जगह पर पहुँच कर एक पत्थर के नीचे से उसने बुनने का अपना सामान निकाला, घर की बनी सलाइयों से धूल साफ की, फिर एक नज़र अपने काम पर डाली । मोज़ा अच्छा बनता जा रहा था । प्रसन्नता के साथ उसने सिर हिलाया और बुनने के अपने काम में जुट गई । उसके काम में यहाँ कोई बाधा नहीं देगा ।

लेकिन दीवार के दूसरी ओर, पत्थरों के पीछे, एक आदमी छिपा था । वह दो दिन से निस्सो को देख रहा था, और ऐसे अवसर की प्रतीक्षा में था जब घर पर वह अकेली हो । बख्तियार और शोपीर के चले जाने पर वह बाहर निकल आया ।

यह केन्दितरी था । निस्सो के पास पहुंच कर बोला, "काली आंखों वाली सुन्दरी, क्या शोपीर घर पर है ?"

"नहीं," निस्सो ने अनमने भाव से जवाब दिया ।

"और बख्तियार ?"

"नहीं ।"

केन्दितरी ने अपनी ज़ुबान से चटखारा भरा और वहीं खड़ा रहा । "उनसे मिलना ज़रूरी है । कुछ बातें करनी हैं ।'

एक लम्बी सांस लेकर केन्दितरी निस्सो के पास बैठ गया, "अच्छा तो कुछ देर बैठ कर उनका इन्तजार करता हूँ ।"

निस्सो ने गरदन झुका ली और अपना काम करती रही । केन्दितरी मुस्कराया, उसके दांत और मसूड़े दिखाई देने लगे ।

"तुम बहुत अच्छा बुनती हो," उसने कहा ।

"नहीं, मुझे बुनना नहीं आता," बिना सिर उठाए अनमने भाव से निस्सो ने कहा, "मैं अभी सीख रही हूँ ।"

"अरे नहीं, बुनना तुम्हें आता है । देखो न, यह डिज़ाइन तुमने कितना अच्छा बनाया है ? क्या कहते हैं इसे ? पीली पांख वाला फूल ! लेकिन यहाँ तुमने एक गलती की है । तुम्हें पीला धागा इस्तेमाल करना

चाहिए," डिज़ाइन पर उंगली रखकर बताते हुए केन्दितरी ने कहा, "नहीं तो पत्ती मुड़ी हुई दिखाई देगी।"

"क्यों, तुम्हें क्या पता कि यह कैसे बनता है?" निस्सो ने उत्सुकता से पूछा।

"मैं जानता जो हूँ। जैसा मैं कहता हूँ, वैसा करो। फिर देखना, डिज़ाइन कितना अच्छा लगता है!"

निस्सो पत्ती का डिज़ाइन बुनने लगी। केन्दितरी चुपचाप देखता रहा।

"इसी तरह न?" निस्सो ने पूछा।

"हाँ, देखो, अब कितना अच्छा लगता है। अगली पंक्ति भी ऐसे ही बनाना। लेकिन यहां मैं कब तक बैठा रहूँगा। क्या बख्तियार जल्दी ही लौट आएगा?"

"वह मिट्टी लेने नहर पर गया है।"

"न हो, वहीं जाकर उससे मिल लूँ," केन्दिरी ने मानो अपने आप से ही कहा, "या यहीं इन्तजार करना अच्छा होगा।" फिर, कुछ रुक कर, उसने निस्सो से पूछा, "लोग कहते हैं कि तुम पहाड़ों में से प्रकट हुई हो?"

"हाँ," निस्सो ने बहुत ही धीमी आवाज़ में कहा।

"यहाँ सुखी तो हो न?"

"हाँ।"

"सो तो होना ही चाहिए। शो-पीर बहुत अच्छा आदमी है, और वैसे ही बख्तियार भी। उन्हीं की बदौलत यहाँ सब अच्छा जीवन बिताते हैं। यखबार में यहाँ जैसा सुख नहीं है।"

"यखबार का तुमने कैसे ज़िक्र किया?" निस्सो ने पूछा और केन्दितरी की ओर पहली बार ध्यान से देखा। उसकी सिकुड़ी हुई आँखें दीवार के उस पार पहाड़ी ढलवानों पर टिकी थीं।

"इसलिए कि मैं कभी यखबार में रहता था," केन्दितरी ने इस

तरह कहा मानो वह निस्सो की सन्देह-भरी नज़र से बेखबर हो, "मुझे वहाँ से भागना पड़ा। अगर तुम वहाँ कभी रही होतीं तो पता चलता कि कैसी जगह है। गरीब लोगों को सांस लेने के लिए ताज़ा हवा तक नसीब नहीं होती। सारा काम चाबुक के ज़ोर से चलता है।"

सन्देह की जगह सहानुभूति का उदय हो गया। निस्सो के मन में हुआ कि वह भी अपना हृदय खोल कर रख दे और यखबार में उस पर जो बीती है, वह सब बता दे। लेकिन उसने अपने को ठीक समय पर सम्भाल लिया और सहज भाव से पूछा, "तो क्या तुम यखबार के रहने वाले हो?"

"नहीं," केन्दितरी ने माथे में बल डालते हुए कहा, "मैं यखबार का निवासी नहीं हूँ, न ही मैं यखबारियों को पसन्द करता हूँ।"

"मैं भी उन्हें पसन्द नहीं करती," निस्सो ने कहा, "मैंने सुना है कि वह बहुत बुरे होते हैं।"

"हाँ," केन्दितरी ने और भी ज़ोर देते हुए कहा, "लेकिन बुरों में भी कुछ अच्छे लोग निकल आते हैं।"

"नहीं, मैं ऐसा नहीं मानती।"

"मैं ठीक कहता हूँ। एक को तो मैं जानता हूँ। वह भी वहाँ से भाग आया है और यहीं सियातांग में रहता है।"

निस्सो की सलाइयां एक क्षण के लिए रुक गईं।

"कौन है वह?"

"एक गरीब सौदागर है, मिरज़ाहूर। क्या तुमने उसका नाम सुना है?"

"नहीं।"

आश्चर्य है कि शो-पीर और बख्तियार ने तुम से कभी उसका जिक्र नहीं किया। जो हो, तुम उससे पूछोगी तो मालूम हो जाएगा कि वह कितना अच्छा आदमी है। मैं जब यहाँ आया था तो उसने ही मुझे अपने यहाँ जगह दी थी। उसने मुझे वैसे ही अपना लिया जैसे शो-पीर ने

तुम्हें अपना लिया है। यह मोजे क्या तुम अपने शो-पीर के लिए बना रही हो ?"

"नहीं, मैं केवल बुनना सीख रही हूँ।"

"और यह ऊन कौनसी है जिसे तुम इस्तेमाल कर रही हो ?"

"तुम देख तो रहे हो। मेरे पास अच्छी ऊन नहीं है।"

"मैं बताता हूँ तुम्हें," निस्सो की गाँठ-गठीली ऊन को अपनी उंग-लियों में लपेटते हुए केन्दितरी ने कहा, "मिरज़ाहूर के पास बहुत बढ़िया ऊन है। उसे वह अपने लिए लाया था कि जाड़ों में काम आएगी। लेकिन उसे मोज़ा बुनकर कौन देता। सो वह योंही पड़ सड़ी रही है। मैं उससे कहूँगा तो वह तुरन्त दे देगा।"

"लेकिन उसे पैसा देना होगा। सो मैं कहाँ से दूँगी ?"

"वह वैसे ही दे देगा। उसके पास बेकार पड़ी सड़ रही है।"

ऊन का मोह कुछ कम नहीं था। चटक रंग की ऊन के गोले उसकी आंखों के सामने तैरने लगे।

"जो हो," निस्सो ने लम्बी सांस लेते हुए कहा, "मैं मुफ्त में ऊन नहीं ले सकती।"

केन्दितरी ने अनुभव किया कि निस्सो ऊन के मोह को आसानी से नहीं छोड़ सकेगी। धीमे स्वर में उसने समझाना शुरू किया कि मुफ्त में कोई चीज़ लेना सचमुच अच्छा नहीं है। लेकिन एक बात की जा सकती है। मोज़े का एक जोड़ा वह मिरज़ाहूर के लिए बुन दे। उसके बदले में एक मोज़े की ऊन वह उसे दे देगा। मिरज़ाहूर दुकान पर ही है, और यह काम अभी हाथ के हाथ हो सकता है।

निस्सो के लिए अब सन्देह करने की गुंजाइश नहीं रही। केन्दितरी के साथ वह मिरज़ाहूर की दुकान की ओर चल दी।

मिरज़ाहूर उस समय कालीन पर बैठा था। उसके यखबारी चोगे के बटन खुले थे और वह कोई प्राचीन पुस्तक पढ़ रहा था। निस्सो को देखकर उसे अचरज हुआ, लेकिन केन्दितरी की आंख का इशारा पाकर

उसने अपने अचरज को काबू में कर लिया।

"दरियादिल मिरज़ाहूर, इसे मैं तुम्हारे पास लाया हूँ," केन्दितरी ने कहा, "तुम्हारी दरियादिली के बारे में इसे मालूम है। मैंने इसे बताया है कि तुम उन यखवारियों में से नहीं हो जिनसे कि मैं खुद इतनी घृणा करता हूं। यह बहुत अच्छे मोज़े बुनना जानती है और तुम्हारे लिए एक जोड़ा मोज़ा बुनने को राज़ी है। तुम बढ़िया से बढ़िया ऊन निकाल कर दो।"

देखते ही देखते निस्सो के सामने रंग-बिरंगी ऊन का ढेर लग गया और मिरज़ाहूर ने कहा, "जो भी पसन्द हो, उठा लो। तुम इतनी अच्छी लड़की हो कि मैं मना नहीं कर सकता। मेरे लिए मोज़ा भी अपनी पसन्द का ही बुन देना।"

"ठीक उसी डिज़ाइन का बुनना," केन्दितरी ने गम्भीर स्वर में कहा, "और पत्ती वैसे ही बनाना जैसे मैंने बताया था। ऐसी कोई जल्दी नहीं है, धीरे-धीरे आराम से बुन देना। लेकिन तुमने अपने बालों में लाल चोटियां क्यों नहीं गूँथ रखी हैं? सियातांग में सभी लड़कियाँ लाल चोटियां गूँथती हैं।"

निस्सो यह जानती थी। लेकिन गुलरोज़ के पास लाल चोटियां थीं नहीं, और काली चोटियां लड़कियां गूंथतीं नहीं। लेकिन यह सब वह बताए कैसे।

"मिरज़ाहूर, इसे कुछ लाल चोटियां भी दे दो," केन्दितरी ने कहा, "जब सब लड़कियाँ लाल चोटियां गूंथती हैं तो यही क्यों बाकी रहे।"

"नहीं-नहीं," निस्सो ने परेशान होकर कहा, "मुझे चोटियां नहीं चाहिएं।"

"व्यर्थ का संकोच न करो," केन्दितरी ने हल्की झिड़की के साथ कहा, "जब तुम हम लोगों के बीच आ गई हो तो फिर संकोच किस बात का!"

इससे पहिले कि मिरज़ाहूर कुछ कहे, केन्दितरी दुकान के एक कोने

में रखे चीनी के सन्दूक के पास पहुँच गया और कपड़ों के ढेर में से एक जोड़ा चोटियां, एक सफेद चोगा जिसका गला कामदार था और कालीन की एक चपटी टोपी (तुबेतका) निकाल लाया।

अत्यधिक विह्वल और विचलित, कन्धे पर कपड़ों की पोटली रखे, निस्सो दुकान से बाहर आ गई।

"बख्तियार से मिलने में फिर कभी आऊँगा," केन्दितरी ने उससे विदा लेते हुए कहा, "और जब मोज़ा तैयार हो जाए तो उसे दे जाना। खुदा की बरकत तुम पर सदा बनी रहे!"

निस्सो अपने घर की ओर चलदी। बगीचे का उसने चक्कर लगाया और अपनी सुरक्षित जगह से दीवार फाँद कर भीतर पहुँच गई। कपड़ों की पोटली उसने खोल डाली और उसकी चीजों का ज़मीन पर ढेर लगा दिया।

सहसा उसकी नज़र एक कीमती यखबारी माला पर पड़ी। लापिस लाजली पत्थर के चपटे टुकड़े चांदी के तार में गुंथे थे। निस्सो ने माला को उठा लिया और मुग्धभाव से उसे देखा। पत्थर के प्रत्येक टुकड़े में सोने के कण इस तरह चमक रहे थे जैसे आसमान में सुबह के तारे!

अज़ीज़खान की सब से बड़ी पत्नी ऐसी ही माला पहनती थी और उसकी अन्य पत्नियाँ उससे ईर्ष्या करती थीं। निस्सो को लाल मनकों की उस माला की याद हो आई जिसे अज़ीज़खान ने उसके गले में डाल दिया था। उसके सारे शरीर में सिहरन-सी दौड़ गई।

"केन्दितरी ने यह माला उसे क्यों भेंट की है?" सहमे और विचलित हृदय से उसने सोचा।

लेकिन माला को अपने गले में डालने का मोह वह नहीं छोड़ सकी। कुछ देर माला के चपटे दानों से खेल करने के बाद उसने गुलरीज़ का पुराना चोगा उतार दिया और नये कपड़े पहिन लिए। फिर, मुग्धभाव से, अपने काले बालों में वह लाल चोटियां गूंथने लगी।

: ६ :

गगन चुम्बी पहाड़ों के बीच एक गोल जगह बना ली गई थी। यह जगह कोई खास बड़ी नहीं थी। पत्थरों के खुरदरेपन और ऊँच-नीच को समतल बनाने के लिए उसे मिट्टी से पाट दिया गया था। यह जगह सियातांग घाटी के ठीक बीचों-बीच थी और प्रकृति की इतरमानवीय शक्ति ने नोक-नुकीली चट्टानों से घेर कर उसे काफी हद तक दुर्गम और सुरक्षित बना दिया था।

दर्रे के निवासियों के लिए यह जगह खलिहान का काम देती थी। कई-कई कुनबे मिलकर दो या तीन बैल यहाँ लाते थे, गेहूँ की बालों को सफाई के साथ समतल जमीन पर बिछा दिया जाता था और बैल चक्कर काट-काट कर गेहूँ की बालों को अपने पांवों से रौंदते थे।

दर्रे के निवासी हर सुबह अपने-अपने पूले लेकर यहाँ आते थे और पत्थर पर बैठकर अपनी बारी की प्रतीक्षा करते थे। बातों का अन्तहीन सिलसिला चलता रहता था।

उस दिन जब केन्दितरी निस्सो को लेकर सौदागर की दुकान पर गया था, यूसुफ अपने पूलों को कमर पर लादे हुए आया और अपनी बारी की प्रतीक्षा में दर्रे के दूसरे निवासियों के साथ बैठ गया।

काराशिर सुबह से ही यहाँ बैठा था। वह खुदादाद की प्रतीक्षा कर रहा था। खुदादाद ने वायदा किया था कि वह भी अपने पड़ोसी से एक बैल माँग कर ले आएगा।

काराशिर ने यूसुफ के पूलों की ओर इशारा करते हुए पूछा, "बस, इतने ही ?"

"हाँ, यही मेरी समूचे साल की फसल है," यूसुफ ने भुनभुनाते हुए कहा।

"तुम से तो मेरी फसल तीन गुना ज्यादा होगी !"

"शेखी न बघारो," अपने होठों पर जीभ फेरते हुए यूसुफ ने कहा, 'तुम भी उतने ही भूखे मरोगे जितना कि मैं। इस साल सारे गांव पर

ख़ुदा की मार पड़ने वाली है। जो भी न हो, थोड़ा है!"

"क्यों, क्या हुआ, यूसुफ?"

"हमारे गांव ने एक बहुत बड़ा पाप किया है।"

पत्थरों पर बैठे दर्रे के निवासी एक-दूसरे की ओर देखने लगे। निश्चय ही यूसुफ कोई महत्व पूर्ण बात कहने वाला है। अपनी जगहों से खिसक कर वे यूसुफ के निकट आ गए।

यूसुफ ने जैसे कहीं दूर देखते हुए कहा, "केन्दितरी यखबार से लौट आया है।"

यह कह कर यूसुफ चुप हो गया।

"बोलो यूसुफ, तुम चुप क्यों हो गए?" दर्रे के निवासियों में से एक ने बेचैन होकर पूछा।

"अभी सब बताता हूँ" यूसुफ ने अपने आप को कुछ संभालते हुए कहा, "हां तो केन्दितिरी अब लौट आया है। उसने आकर अपनी बात मिरज़ाहूर के कानों में कही और मिरज़ाहूर ने नौरोज बेक को खबर दी। क्या तुम अज़ीज़खान को जानते हो?"

"उसे कौन नहीं जानता। वह कभी बहुत बड़ा खान था।"

"सो तो वह अब भी है," यूसुफ ने गम्भीर भाव से कहा, "समूचे यखबार में उसका शासन है। बड़े नगरों के सभी रास्ते उसकी अमल-दारी में से गुजरते हैं। अगर वह चाहे तो इन रास्तों को बन्द कर सकता है। अगर वह चाहे तो मिरज़ाहूर की सप्लाई (माल का मिलना) बन्द कर सकता है। उसकी ताकत की थाह नहीं है!"

यूसुफ फिर चुप होगया और सब उसके मुँह की ओर उत्सुकता से देखने लगे। ऐसा मालूम होता था मानो उसके शब्दों के पीछे कोई अनदेखी शक्ति छिपी हो।

"बसन्त के दिनों में अज़ीज़खान ने अपने लिए एक नयी पत्नी खरीदने का इरादा किया। हमारे पहाड़ों से उसने एक सुन्दर लड़की छांटी और उसके लिए चालीस मुद्राएं दीं। वह उस लड़की से प्यार

करता था। उसे आराम के साथ उसने रखा। उस लड़की का नाम था निस्सो। क्या तुमने यह नाम कभी सुना है ?"

"क्या कहा, निस्सो ?" काराशिर के मुँह से तुरत निकला, "क्या यह वही तो नहीं है ?"

"बीच में मत बोलो, काराशिर !" अपनी आवाज़ को ऊँचा उठाते हुए यूसुफ ने कहा, "अगर तुम्हें बोलना ही तो फिर मैं चुप हुआ जाता हूँ।"

दर्रे के निवासी बेचैनी से एक-दूसरे की ओर देखने लगे। काराशिर चुप होगया।

"हां वही !" यूसुफ ने अपने घुटने पर हाथ पटकते हुए कहा, "वही है यह आवारा लड़की जो अज़ीज़खान के पास से भाग आई और जिसे हमने अपने यहाँ रख लिया। हम भी कितने मूर्ख हैं ? वह अब दूसरों के साथ रहती है, और हम चुप हैं। अज़ीज़खान का गुस्सा हमें बरबाद कर देगा !"

अपने अन्तिम शब्दों से यूसुफ ने सभी को सहमा दिया। बड़े आदमी का छोटों से नाराज़ होना ऐसी बात नहीं है जिसे आसानी से टाला जा सके ! अगर सियातांग में नयी सरकार न होती तो वे लड़की को अज़ीज़खान के पास वापिस भेज देते और कहते, "हमें क्या पता था कि यह कौन है ?" लेकिन अब तो वह शो-पीर और बख्तियार के घर में रह रही है।

काराशिर के दिमाग में ये सब बातें घूम गईं। बोला, "हो सकता है कि अज़ीज़खान उसे वापिस न लेना चाहे। ऐसी स्त्री को भला कौन घर में रखना चाहेगा ?"

"हो सकता है...लेकिन वह उसे वापिस चाहता है। और हमें इस बात से सरोकार नहीं कि वापिस पहुँचने पर वह उसका क्या करता है। हमारा काम तो उसे उसके पति के पास भेज देना है।"

"शो-पीर कभी इसे मंजूर नहीं करेगा," काराशिर ने निश्चयात्मक

स्वर में कहा, "अब वह पहिले वाला ज़माना नहीं रहा।"

"जहन्नुम में जाए तुम्हारा शो-पीर ! गैरों के सामने हम अपने मामले क्यों ले जाएं ?"

"वह गैर नहीं है। हमारी भलाई के लिए उसने क्या कुछ नहीं किया है ?"

"हमारी नहीं, अपनी भलाई के लिए वह सब कुछ करता है। तुम उसके भेद को क्या समझो ?"

"तुम गलत कहते हो !" दर्रे के निवासियों में से एक ने कहा।

"मैं भी कहता हूँ कि तुम्हारी यह बात गलत है !" दूसरे ने अपने पत्थर पर से उचकते हुए कहा।

दर्रे के निवासियों का समर्थन पाकर काराशिर और भी उबल पड़ा। यूसुफ की बाँह पकड़ कर बोला, "तुम्हें शर्म नहीं आती ऐसी बात कहते ! तुम भूल गए कि मीर किस प्रकार तुम्हारे पेट में ठोकर मारता था ? और सैयदों के यहाँ जब मैं खाद बटोरने का काम करता था तो वे मुझे भी पत्थरों से मारा करते थे। अब हमें कौन मारता है ? शो-पीर ने नहीं तो फिर किसने हमारी मदद की है ? तीन साल हुए जब वह यहाँ आया था ? इन तीन सालों में उसने अपने लिए क्या किया है ? क्या उसने अपने लिए बैल, गाय, घोड़े और बगीचे खरीदे हैं ? कुछ भी तो नहीं है उसके पास ? हमारी ही तरह वह मटर का दलिया खाता है। तुम कहते हो कि बख्तियार के पास घर, गाय और बगीचा है। लेकिन क्या यह बुरी बात है ? बख्तियार हम सबसे गरीब था। तुम्हारे पास कुछ नहीं है, यूसुफ, और यह इसलिए कि तुम्हें काम करना नहीं सुहाता। मेरे पास भी कुछ नहीं है, यह इसलिए कि... सभी जानते हैं कि मेरे साथ पाप लगा है,—अफीम मेरा पीछा नहीं छोड़ती। फिर भी मुझे साफ दिखाई देता है कि नयी नहर से हम सभी को फायदा होगा। इसका श्रेय किसे है ? और अब तुम कहते हो कि शो-पीर ने इस स्त्री को अपने घर में रख लिया है। अच्छी बात है, उसे

घर में रख लिया है तो रखने दो। उसे वह कहीं से चुरा कर तो लाया नहीं है। वह अपने आप आई है। और शो-पीर उससे ब्याह क्यों न करे? या शायद वह बख्तियार के लिए है। क्या वह आदमी नहीं है? सभी जानते हैं कि एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकतीं। फिर भी, वे गहरे मित्र हैं। एक ही छत के नीचे रहते हैं। लेकिन कभी नहीं लड़ते। इसका मतलब क्या है? इसका मतलब यह है कि उनके घर में कोई बुरी बात नहीं हो रही है। और निश्चय जानो, ब्याह की खबर भी तुम्हें शीघ्र ही सुनने को मिलेगी!"

यूसुफ का चेहरा गुस्से से विकृत हो उठा। उसने काराशिर को रोकना चाहा, लेकिन जब वह नहीं रुका तो उसे धकेलते हुए चिल्लाकर बोला, "चुप रह, काफिर! विधाता का विधान तेरे पलटने से नहीं पलटेगा। इस बारे में तुझ से बात तक करना बेकार है। अब एक दूसरी बात तुझे बताता हूँ। मिरज़ाहूर ने कहा है कि अगर अज़ीज़खान ने रास्ता बन्द कर दिया और वह माल नहीं ला सका तो हम सब भूखों मर जाएंगे। तब हम क्या करेंगे? तेरा अनाज सूरज के घुटनों पर पहुँचने तक भी नहीं चलेगा। और मेरा तो सूरज के टखनों पर पहुँचने से पहिले ही चुक जाएगा। तब क्या हम पत्थरों से पेट भरेंगे? तुम अपने आठ बच्चों को क्या खिलाओगे?"

भूख का नाम सुनते ही काराशिर ढीला पड़ गया। पीछे हटते हुए अस्पष्ट स्वर में बोला, "कारवाँ...।"

"तुम कारवाँ पर अभी भी भरोसा रखते हो?" यूसुफ ने गुस्से में भरकर कहा, "मुझे तो कतई भरोसा नहीं। फिर, अजीज़खान का गुस्सा क्या मामूली गुस्सा होता है? एक आवारा स्त्री के लिए हम क्यों मुसीबत मोल लें? और यह बात क्या अकेले मैं ही कहता हूँ? नौरोज़ बेक, बोबोकलां, मिरज़ाहूर, सभी की यह राय है। एक ग़ैर बस्ती की स्त्री के लिए हम क्यों सबको नाराज़ करें, और स्त्री भी ऐसी जो हमारे यहाँ की स्त्रियों को भी बिगाड़ देगी। अजीज़खान के पास उसे लौटा दो

और किस्सा खत्म करो !"

"यह ठीक कहता है। उसे वापिस लौटा दो !" यूसुफ के चारों ओर खड़े दर्रे के निवासियों ने कहा।

काराशिर ने निराशा में भर अपने इधर-उधर देखा।

"तुम चाहे जितना चिल्लाओ, लेकिन ग्राम-सोवियत इसे कभी मंजूर नहीं करेगी।"

'ग्राम-सोवियत !" यूसुफ ने खीज कर कहा, "ग्राम-सोवियत क्या होता है ? शो-पीर कहता था कि ग्राम-सोवियत गांव के लोगों की बात मानती है। सो उसे हमारा फैसला मानना पड़ेगा।"

तभी, नोक-नुकीली चट्टानों के बीच, तंग रास्ते से शो-पीर आता दिखाई दिया। उसे देखकर सब चुप हो गए। लेकिन वे इतने ज़ोर-ज़ोर से बोल रहे थे कि उनकी आवाज़ दूर तक सुनाई देती थी।

"बड़े ज़ोर-शोर से बातें हो रही हैं," शो-पीर ने कहा, "आखिर मामला क्या है ?"

किसी ने एक शब्द मुँह से नहीं निकाला।

"शायद तुम लोग मुझे नहीं बताना चाहते ? अगर ऐसा है तो मैं ज़ोर नहीं दूँगा।"

"हमें एक सभा बुलानी होगी," आखिर यूसुफ ने कहा।

"सभा बुलानी होगी,—किस लिए ?"

"कुछ बातें हैं जिनके बारे में फैसला करना ज़रूरी है," यूसुफ ने कहा।

"कौनसी बातें ?" शो-पीर ने शान्त स्वर में धीमे से पूछा। लेकिन किसी ने जवाब नहीं दिया।

"तुम्हीं बताओ, काराशिर ?"

"हाँ, मैं ही बताता हूँ। तुम्हारी निस्सो, शो-पीर, अज़ीज़खान की पत्नी है। वह उसे वापिस मांगता है। इसीलिए हम सभा करना चाहते हैं। जैसा सब कहेंगे, वही करेंगे।"

शो-पीर ने हल्के से अपना होंठ दबाया, लेकिन अपने भावों को प्रकट नहीं होने दिया।

"अच्छी बात है। हम सभा बुलाएंगे। लेकिन अनाज फटकने का काम पूरा हो जाने पर। जिस दिन नहर का उद्‌घाटन होगा, उसी दिन यह सभा भी हो जाएगी।"

शो-पीर ने कहा और तेज़ी से मुड़ कर वहाँ से चल दिया।

: ७ :

पत्थरों के बीच मिट्‌टी खोदने में बख्तियार को काफी समय लग गया। जब दोनों झौवे भर गए तो पेड़ की एक टहनी से उसने गधे को हाँका और चल दिया। पुरानी नहर के गटर के नीचे, पत्थरों के बीच उस जगह जहाँ पानी चू-चू कर गिर रहा था, 'हासप्रोख' फूल निकल आए थे। बख्तियार ने एक फूल तोड़ा और उसे अपनी तुबेतका में खोंस लिया। उसका हृदय इस समय बहुत ही प्रसन्न था, और उसने एक गीत गुन-गुनाना शुरू कर दिया :

पहाड़ी हवा, कितनी चंचल हवा !
चाहे जितना बचो, नहीं रुकती ज़रा,
पहाड़ी हवा, कितनी चंचल हवा !

नीचे गांव दिखाई दे रहा था। और यहाँ चट्टानों के बीच, एक छोटी-सी गोल जगह में, दो बैल चक्कर लगा रहे थे और कितने ही लोग जमा थे। एक बैल की गरदन सफेद थी, और उसके बाएँ बाज़ू में भी एक सफेद चित्ता दिखाई देता था।

"पता नहीं किसका बैल है यह," बख्तियार ने सोचा और अपने गीत की कड़ियों को गुनगुनाता रहा :

"पहाड़ी हवा, कितनी चंचल हवा !"

बख्तियार अपने रास्ते पर चलता रहा। उसे जल्दी घर पहुँचना था। बगीचे की दीवार को पार कर उसका गधा अपने-आप बराण्डे के पास उस जगह रुक गया जहाँ निस्सो का कमरा बनाने के लिए पत्थरों का ढेर जमा था। अब बख्तियार गई रात तक काम करेगा। गुलरीज़

वराण्डे में बैठी बुनने में व्यस्त थी। लेकिन निस्सो यहाँ नहीं दिखाई देती ? शायद बगीचे में हो। ऊँह, कौन उसकी खोज करे। आजाएगी अपनेआप।

बख्तियार ने अपना चोगा उतार लिया, मिट्टी के झौवे नीचे उलट दिए, और काम में जुट गया।

तभी निस्सो वराण्डे में निकल आई। गुलरीज़ ने भेद भरी नज़र से बख्तियार की ओर देखा। निस्सो अपने नये कपड़े पहिने थी, बालों में लाल चोटियाँ गुथी थीं और सिर पर कमल का फूल कढ़ी चमकदार तुबेतका सजी थी। बख्तियार की ओर देखे बिना ही वह गुलरीज़ के पास आकर खड़ी हो गई।

बख्तियार की जब उस पर नज़र पड़ी तो उसने मिट्टी में सने अपने हाथ नीचे गिरा लिए। एकाएक उसकी समझ में नहीं आया कि निस्सो आज इतनी सुन्दर क्यों मालूम हो रही है। फिर उसने हाथों को रगड़कर मिट्टी साफ की, और वराण्डे की सीढ़ियों पर चढ़ते हुए निस्सो के पास पहुँच गया।

"कहाँ से लाई हो ये ?" उसने मुग्ध भाव से पूछा।

निस्सो ने हल्की मुस्कराहट से उसकी ओर देखा। बोली कुछ नहीं।

"बोलो निस्सो, तुम चुप क्यों हो ? नाना, ये कपड़े क्या तुमने इसे दिए हैं ?"

"मेरे पास क्या खजाना गड़ा है, बेटा ?"

वे दोनों हँसने लगीं। लेकिन यह क्या हँसने की बात थी ?

"कहाँ से लाई हो ये कपड़े, निस्सो ?"

"बताओ न, किसने दिए तुम्हें ये कपड़े ?" निस्सो को चुप देख बख्तियार ने फिर पूछा। इस बार उसके स्वर में आशंका की पुट थी।

"क्या तुम्हें अच्छे नहीं लगे, बख्तियार ?" निस्सो ने खिजाते हुए कहा, "तुम जानना चाहते हो कि मैं इन्हें कहाँ से लाई ? अच्छा तो सुनो, एक बहुत ही भले आदमी ने मुझे ये कपड़े दिए हैं।"

"कौन है वह भला आदमी ? शोपीर तो नहीं ?"

"क्या सियातांग में शोपीर के सिवा और कोई भला नहीं है ?"

"कोई और...?" बख्तियार के हृदय को जैसे पाला मार गया, "कौन है वह ? जल्दी बताओ निस्सो, तुम्हें ये कपड़े किसने दिए हैं ?"

"कहा तो कि एक बहुत ही अच्छा आदमी है," निस्सो ने फिर उसी बात को दोहराया, और पहिले की भांति मुस्कराती रही।

बख्तियार उसके निकट आगया। उसका चेहरा लाल हो उठा था और आंखों में कठोरता तथा आशंका के भाव साफ दिखाई देते थे।

"हँसी न करो, निस्सो ! किसने दिए हैं तुम्हें ये कपड़े ? और क्या इन्हें मुफ्त में ही ले आई हो ?"

गुलरीज़ ने आशंका से अपने बेटे की ओर देखा। निस्सो ने भी बख्तियार की आंखों में इससे पहिले कभी गुस्से की ऐसी लपक नहीं देखी थी। उसके होठों की मुस्कराहट विलीन हो गई। अचकचाते हुए उसने कहा, "उसका नाम केन्दितरी है। वह अभी यहाँ आया था..."

"ये सब चीजें क्या केन्दितरी ने तुम्हें दी हैं ?" बख्तियार अब आपे में नहीं रहा, "क्या मतलब है इसका ? तुम्हें क्यों दी हैं केन्दितरी ने ये चीजें? तुम्हारी उससे जान-पहिचान कैसे हुई ?"

"उससे जान-पहिचान करने में क्या कोई बुराई है ?" निस्सो ने कहा, और बख्तियार की नज़र से काँप कर तुरन्त बोली, "केन्दितरी ने नहीं, सौदागर ने मुझे ये चीजें दी हैं। मैं उसके पास गई थी।"

बख्तियार ने गुस्से में निस्सो के कंधे झकझोरते हुए चिल्ला कर कहा, "सौदागर......नये लकदक कपड़े......केन्दितरी......तुम उसके पास गई थीं......पागल तो नहीं हो गईं तुम.....वह कुत्ता है। उतार कर फेंक दो ये कपड़े। सुना नहीं, उतार दो इन्हें !"

निस्सो की टोपी (तुवेतका) उसके सिर से उतर कर नीचे ज़मीन पर जा गिरी। बख्तियार उसे बुरी तरह झंझोड़ रहा था। चिल्ला कर निस्सो ने अपने को छुड़ाना चाहा। गुलरीज भी आगे बढ़ी और बख्ति-

यार के कन्धों को खींचते हुए उससे बोली, "यह क्या पागलपन है, छोड़ दो उसे !"

इसी समय शो-पीर की गहरी आवाज सुनाई दी। वह बख्तियार को बुला रहा था।

बख्तियार ने निस्सो को तुरत छोड़ दिया। निस्सो फर्श पर गिर गई। उसका मुँह, उसके दोनों हाथों से ढका था।

शो-पीर अब बराण्डे में आ गया था, "यह क्या हो रहा है, बख्तियार ? आखिर बात क्या है ?"

"यह पागल हो गया है," गुलरीज़ ने हांफते हुए कहा, "मुझे जीवन में पहली बार आज अपने बेटे से डर लगा है।"

बख्तियार का अपने हाथों पर काबू नहीं रहा था, और खड़ा हुआ अपनी ऊनी पेटी को नोंच रहा था। वह लज्जित था, लेकिन उसका गुस्सा अभी भी धीमा नहीं पड़ा था।

"देखो न, कितनी सुन्दर मालूम होती है ! अब इसी से पूछो कि ये कपड़े इसे कहाँ से मिले ? पूछो कि कहाँ यह गई थी, किससे इसने बातें की थीं ?"

"यह कहाँ गई थी, और किससे इसने बातें की थीं !" शो-पीर ने तीखे स्वर में बख्तियरा से कहा, "शायद तुम अपने को खान समझते हो, क्यों ?"

शो-पीर का चेहरा एकदम लाल होगया। उसकी नज़र में इतनी तेज़ी थी कि बख्तियार सकपका कर पीछे हट गया और गुलरीज़ अपनी सलाइयाँ उठा कर बुनने का बहाना करने लगी। निस्सो ने भी, ज़मीन पर पड़े-पड़े, सिर उठा कर भयभीत नज़र से उसकी ओर देखा। शो-पीर ने अब उसकी ओर मुँह किया।

"ये कपड़े तुम्हें किसने दिए हैं ?" मुलायम स्वर में शो-पीर ने पूछा।

"गुस्सा मत होना, शो-पीर," निस्सो ने धीमे स्वर में कहा और

उसकी बड़ी-बड़ी मस्त आंखों में आशा की एक चमक दिखाई दी, "केन्दितरी यहाँ आया था और मुझे सौदागर के पास लेगया। सौदागर ने मुझे ये कपड़े दिए हैं।"

"सौदागर! और तुम कहती हो कि केन्दितरी के साथ तुम सौदागर के पास गई थीं?"

गुलरीज़ ने देखा कि शो-पीर की भौंहों में गहरे बल पड़ते जारहे हैं। उसके विचारों को भाँपते हुए उसने कहा, "तुम जो सोचते हो सो बात नहीं है, शो-पीर। मैं इसे बुनना सिखा रही हूँ। सौदागर ने एक जोड़ा मोज़ा बुनने का इसे आर्डर दिया है। ये कपड़े बुनाई के बदले में इसे मिले हैं।"

"नाना!" निस्सो ने झिड़की के स्वर में कहा, "मैंने तो तुमसे मना किया था न?"

"क्या हुआ अगर तुमने मना किया था?" गुलरीज़ ने चिल्ला कर कहा, "जो सच्ची बात है, वह शो-पीर को मालूम होनी चाहिए!"

"लेकिन सौदागर को सहसा एक जोड़ा मोज़े की ज़रूरत क्यों आ पड़ी?" शो-पीर ने वृद्धा की ओर मुँह करते हुए पूछा। लेकिन बख्तियार ने उसे उत्तर देने का अवसर नहीं दिया। बीच में ही बोल उठा:

"इससे कहो कि कपड़े उतार दे। मैं अभी सौदागर के मुँह पर फेंक आता हूँ।"

शो-पीर ने निस्सो के कपड़ों को भरपूर नज़र से देखा। कपड़े सचमुच में सुन्दर थे, और उसके बदन पर बहुत अच्छे लग रहे थे।

"नहीं बख्तियार, हम ऐसा नहीं करेंगे। सौदागर ने इसे कपड़े दिए हैं, और यह तय है कि किसी मकसद से ही दिए होंगे जिसके बारे में हम अभी कुछ नहीं जानते। लेकिन मान लो कि सौदागर है और उसने यह ऊन इसलिए दी हैं कि सौदागर का काम अपना माल बेचना है। निस्सो काम करके ऊन के दाम देगी। लेकिन कपड़ों और ऊन

के दामों में अन्तर है। कपड़ों के दाम में खुद उसे चुकता कर दूंगा। सो कपड़े निस्सो के पास ही रहेंगे।"

"उनके दाम तुम कैसे अदा करोगे ?"

"यह मेरा काम है। लेकिन निस्सो, भविष्य में हम लोगों के बिना तुम कभी गाँव न जाना।"

"हाँ, बिल्कुल नहीं जाना," बख्तियार ने कहा, "गाँव में जाने का मतलब भी क्या है ?"

"सोवियत सत्ता के तुम कैसे प्रतिनिधि हो बख्तियार ?" शो-पीर ने उसे छेड़ते हुए कहा, "क्या तुम निस्सो को ताले में बन्द करके रखना चाहते हो ? में उसे किसी दूसरे कारण से मना कर रहा हूँ..."

"वह क्या, शो-पीर ?"

"वह कारण है...निस्सो, तुम भी सुन रही हो न ? यहाँ कुछ लोग हैं जो तुम्हें अजीज़खान के पास वापिस भेजना चाहते हैं।"

निस्सो का चेहरा एकदम पीला पड़ गया। खुद अज़ीज़खान के प्रकट होने पर भी शायद वह इतनी भयभीत नहीं होती, जितनी कि अब होगई थी।

"डरो नहीं निस्सो," शो-पीर ने कहा, "यह अच्छा है कि हमें मालूम होगया। यह निश्चित है कि तुम यहाँ सियातांग में ही रहोगी। लेकिन बिना मुझसे पूछे कहीं न जाना। उठो, ज़मीन पर क्यों पड़ी हो ? और बख्तियार, तुम मिट्टी ले आए। देखो, वह ज़मीन पर तुबेतका पड़ी है। उसे उठा लो। अपने गन्दे हाथों से तुमने उसे भी मिट्टी में गंदा कर दिया है।"

: ८ :

इतनी निस्तब्ध साँझ केवल पहाड़ों में ही दिखाई देती है, जब ठंडे पड़ते हुए पहाड़ी दर्रे और चट्टानें निस्तब्धता से सराबोर होते हैं, जब हर सरसराहट, पांव के नीचे करकराते पत्थरों की हर आवाज़, नदी के पानी की हर छपछपाहट, समूची घाटी में गूँजती हुई वहाँ की सर्व-

व्यापी निस्तब्धता को और भी गहरा करती है। धीरे-धीरे चाँद की चाँदनी दुनिया पर छा जाती है। कहीं दूर, नीचे से, बाँसुरी की हल्की उदास ध्वनि आती है और किसी दूसरी ओर से तुरही के तेज़ स्वर रह-रह कर कानों का स्पर्श करते हैं।

बख्तियार, काफी देर हुई तभी, सीढ़ी के सहारे अपने मचान पर जाकर सोगया था, निस्सो अपने कमरे में चली गई थी और शो-पीर, दोनों हाथों से अपने घुटनों को घेरे हुए, झूला-सा झूलता, गुलरीज़ से बातें कर रहा था।

शो-पीर के मस्तिष्क में निस्सो की समस्या घूम रही थी। वह सोच रहा था कि अगर स्त्रियाँ भी सभा में भाग ले सकें तो अच्छा हो, और इसके लिए वह गुलरीज़ पर निर्भर करता था। इस बात को सीधे न कह कर वह धीरे-धीरे गुलरीज़ के हृदय की थाह ले रहा था।

"और अब अज़ीज़खान चाहता है कि हम अपनी निस्सो को उसे लौटा दें," शो-पीर ने कहा, "तुम्हारा क्या ख़याल है इस बारे में? क्या हमें उसे लौटा देना चाहिए?"

"वह सुन्दर है," गुलरीज़ ने कहा, "अज़ीज़खान उसे आसानी से नहीं भूलेगा।"

"अगर वह उसे नहीं भूलेगा तो हमें क्या करना चाहिए?"

गुलरीज़ शो-पीर के मुकाबिले में कहीं ज़्यादा अच्छी तरह से जानती थी कि अज़ीज़खान अपनी करनी में कुछ बाकी नहीं छोड़ेगा। अज़ीज़खान की भूतपूर्व ताकत से वह भली भाँति परिचित थी। जब सियातांग में सैयदों और मीरों का राज्य था, तो बोबो कलां भी उससे डरता था, हालांकि उसकी सत्ता यखबार के मातहत न थी। अगर अज़ीज़खान निस्सो को वापिस लेने पर उतर आया तो शो-पीर कैसे उससे लोहा लेगा।

"हमारे लोगों के हृदयों में डर समाया है," गुलरीज़ ने कहा।

"डर किस बात का?"

"बख्तियार अकेला है। तुम अकेले हो। मुट्ठी-भर लोग तुम्हारे साथ हैं। वे घास की उन पत्तियों के समान हैं जो हवा का मुकाबिला नहीं कर सकतीं। हमारे रीति-रिवाज तुम्हारे खिलाफ हैं। और बड़े-बूढ़ों का अभी भारी असर है। युवक तक उनके असर में हैं।"

"लेकिन सोवियत-राज्य में सब मामले हाथ गिन कर तय किए जाते हैं।"

"यह गिनती हमारे लिए उल्टी पड़ेगी। बहुत कम लोग खुदा और शरीयत के खिलाफ हाथ उठाएँगे।"

"क्या तुम भी खिलाफ हाथ उठाओगी ?"

"मेरा क्या है, मैं स्त्री हूँ।"

"लेकिन स्त्रियाँ भी अपने हाथ उठा सकती हैं !"

गुलरीज ने ऐसी बात सियातांग में किसी भी पुरुष के मुँह से अब तक नहीं सुनी थी।

"यह क्या कहते हो, शो-पीर ? अली के जन्म से लेकर आज दिन तक ऐसी बात पहिले कभी नहीं सुनी ?"

"गरीबों का सोवियत राज्य भी तो अली के जन्म से लेकर अब तक पहिले कभी कायम नहीं हुआ !"

"मेरा अकेला हाथ क्या कुछ काम देगा ?"

"गाँव में और भी तो स्त्रियाँ हैं। बख्तियार गिन कर उनका हिसाब लगा सकता है।"

"सो तो ठीक है," गुलरीज ने धीमे स्वर में कहा, "अगर गिनती में वे सचमुच ज्यादा हैं...स्त्रियों के मस्तिष्क तो सब एक से होते हैं, लेकिन उनके हाथ..."

"अगर तुम उनके घर जाकर उनसे बातें करो..."

गुलरीज ने अपना हाथ झुरियां पड़े अपने माथे पर रख लिया और शो-पीर की उपस्थिति को भूल कुछ सोचने लगी।

"अच्छी बात है, शो-पीर," आखिर दृढ़ स्वर में उसने कहा, "तुम्हें

मैं जानती हूँ। एक बार जो तुम तय कर लेते हो, उसे पूरा किए बिना नहीं छोड़ते। लेकिन मैं उनके घरों में नही जाऊँगी।"

"तुम नहीं जाओगी तो फिर कैसे होगा, गुलरीज़ ?" शो-पीर ने कुछ आशंकित होकर पूछा।

"मैं उनके घरों में नहीं जाऊँगी। हो सकता है यह मेरी मूर्खता हो, लेकिन मैं ऐसा ही सोचती हूँ। हर घर में एक मर्द मौजूद है। मैं घर में जाकर एकबार जो कुछ कहूँगी, उसकी वह सौ-बार काट करेगा, अपनी स्त्री को मारे-पीटेगा, तरह-तरह के डर दिखाएगा। नहीं, हमें कुछ और करना चाहिए। मेरी समझ में तो हमें उन स्त्रियों से बातें करना चाहिए जो अपने पतियों से दूर हैं। आजकल हमारी आधी स्त्रियाँ अपने रेवड़ों के साथ पहाड़ी चरागाह गई हैं। पुराने रिवाज के मुताबिक पुरुष वहाँ नहीं जा सकते। अगर किसी स्त्री के बच्चा होता है तब भी उसका पति वहाँ नहीं जा सकता। अगर जाता है तो स्त्रियाँ पत्थर मार कर उसे खदेड़ देती हैं कारण कि वे चरागाह की पत्नियाँ हैं। सभा कब होगा ?"

"नाना!" शो-पीर खुशी से उछल पड़ा और पहिली बार 'नाना' नाम का उसने प्रयोग किया, "इससे अच्छा तरीका और कोई नहीं हो सकता। तुम कितनी समझदार हो ? तुम स्त्रियों के पास जाओ। तीन दिन में अनाज फटकने का काम पूरा हो जाएगा। इसके बाद एक दिन नहर पर काम होगा। पाँचवे दिन सभा होगी। क्यों, ठीक है न ?"

"हाँ, ठीक है, शो-पीर। कल मैं चरागाह चली जाऊँगी। अनाज कटने का काम पूरा हो जाने पर सभी मर्द अपनी स्त्रियों को लिवाने चरागाह में जाते हैं। तुम उनसे कहना कि पहिले सभा होगी, उसके बाद वे चरागाह में जाएँगे। उधर चरागाह की पत्नियों से मैं कहूँगी कि नये कानून के मुताबिक उन्हें लिवाने के लिए मर्द नहीं आएँगे, और मर्दों के बिना ही वे अपने रेवड़ों को हाँक कर गांव ले जाएँगीं। इस प्रकार वे सब सभा के दिन आजाएँगीं।"

"अगर स्त्रियों में डर समाया रहा तो क्या होगा, गुलरीज़ ?"

"तब निस्सो को अज़ीज़खान के पास लौटा देना पड़ेगा। यह मैं नहीं चाहती, शो-पीर। अगर स्त्रियाँ डरती रहीं तो मेरे बेटे को इस मूर्ख मां की फिर क्या ज़रूरत रहेगी ? इससे तो अच्छा होगा कि मैं..."

अपने-आप को सम्भालने के लिए गुलरीज़ बोलते-बोलते रुक गई। अपने हाथों को आगे बढ़ाकर उसने शो-पीर का मुँह अपनी सीध में कर लिया, और देर तक एकटक उसकी आँखों में देखती रही।

शो-पीर चुपचाप बैठा रहा।

"आह शो-पीर," अन्त में उसने कांपती आवाज में कहा, "तुम्हारी आँखों में देखकर मुझे ढाडस बँधता है। तुम से मैं अपने हृदय की बात कह सकती हूँ। क्या तुम बख्तियार के साथ निस्सो का......"

खुद शो-पीर भी एक से अधिक बार यही बात सोच चुका था। अब उसने गुलरीज़ की चमकती हुई आँखों में देखा और बिना दुविधा के बोला, "हाँ, गुलरीज़ !"

यह कहने के बाद खुद उसके जीवन का सूनापन उसके हृदय पर छा गया। उसका हृदय भारी हो गया लेकिन उसने मुसकराने की कोशिश की। गुलरीज़ का हाथ अपने हाथों में लेते हुए बोला, "हाँ नाना, मैं चाहता हूँ कि तुम्हारा बेटा सुखी हो।"

फिर धीमे से बोला, "बहुत देर हो गई, अब सोना चाहिए।"

"हाँ, अब सोना चाहिए," गुलरीज़ ने दुलार से कहा और शो-पीर के बालों को सहलाने लगी।

शो-पीर उठ खड़ा हुआ, पिछले सात सालों के दौरान में उसके बालों को किसी ने भी इतने दुलार से नहीं सहलाया था। विचलित हृदय से वह उस पेड़ के पास पहुँचा जिसके नीचे उसका बिस्तरा, चटाई का एक टुकड़ा, बिछा था।

चांदनी खिली थी और पेड़ के पत्तों में से छन-छन कर उसके चेहरे और बदन पर थिरक रही थी। उसे दूर स्थित अपने प्रिय घर की याद हो आई, सात साल पहिले जिसका कोई चिह्न शेष नहीं बचा था। वह

भयानक दिन उसकी आँखों के सामने मूर्त हो उठा जब अध-भूखे लाल सैनिकों से भरी लारी लेकर वह अपने घर पहुँचा था, और घर की जगह जले हुए खण्डहरों का एक ढेर उसे दिखाई दिया था। इससे दो घण्टे पहिले उसके छोटे से गांव के पोस्ट मास्टर ने टेलीफोन से सूचना दी थी, "जल्दी करो, बसमाची आगए हैं।" बस, इतना ही वह कह सका। तभी गोली चलने की आवाज़ सुनाई दी और पोस्ट मास्टर की आवाज़ बीच ही में टूट गई। शो-पीर अपनी लारी को तेजी से दौड़ाता वहां पहुँचा। लेकिन बसमाची तब तक गायब हो चुके थे। अपने घर के खण्डहरों में उसे दो स्त्रियों, एक बच्चे और एक वृद्ध की झुलसी हुई लाशें दिखाई दीं। यह उसकी मां, पत्नी, पिता और छोटी लड़की की लाशें थीं। लड़की को छोड़ कर अन्य सब की गरदनें कटी हुई थीं। लड़की का सिर कुचला हुआ था। अपने प्रिय-जनों की लाशों को दफनाने के बाद अलैक्सान्देर मदवेदेव (शो-पीर) ने सदा के लिए अपना गाँव छोड़ दिया और बसमाचियों से लड़ने के लिए लाल सेना में भर्ती हो गया।

तब से अब तक किसी ने भी इतने दुलार के साथ उसके सिर पर हाथ नहीं फेरा था। लेकिन नहीं, एक बार और ऐसा अवसर आया था। वह पुरुष का हाथ था, पहाड़ों के बीच लम्बी मार्चों (दौड़ भाग और धावों) की आग में तपा खुरदरा और कड़ा हाथ। वह उस क्षण को कभी नहीं भूल सकता जब उसके विघटित साथी उत्तरी प्रदेशों के लिए रवाना हो रहे थे। साँझ का समय था और चारों ओर निर्जन पहाड़ी ढलुवान फैले थे। उसका कमाण्डर वसीली तेरेन्तीयेविच उसे अपने तम्बू में ले गया और अपने पास बैठा कर उससे जी खोलकर बातें कीं।

"मेरी बात मानो," कमाण्डर ने कहा, "तुम हमारे साथ चलो।"

कुछ देर मदवेदेव चुप रहा, लेकिन अपने हृदय को रोक न सका। बोला, "मैं नहीं जा सकता, तेरेन्तीयेविच! मुझ से नाराज़ न होना!"

इसके बाद मदवेदेव ने सारी घटना बता दी। कमाण्डर चुपचाप सुनता और अपनी रंग उड़ी मूछों पर हाथ फेरता रहा। अन्त में मदवेदेव के

कन्धों को थपथपा कर बोला, "तुम्हारे हृदय की स्थिति को मैं समझता हूँ। अगर तुम्हारे घर में कोई नहीं रहा है तो जो तुम्हें अच्छा लगे, वही करो। मैं खुद इन पहाड़ों का इतना अभ्यस्त हो गया हूँ कि इनसे विदा लेना मुश्किल मालूम होता है। अच्छी बात है, इन पहाड़ों के बीच ही तुम रहो। आदमी सभी जगह के अच्छे होते हैं, और मुझे उम्मीद है कि तुम यहाँ के पहाड़ी लोगों के लिए उतने ही उपयोगी सिद्ध होगे जितना कि तुम सोचते हो।"

तब से वह यहीं, इन्हीं पहाड़ों के बीच, रहता आ रहा है। अपने पुराने जीवन को वह भूल गया है। यहाँ तक कि अपना नाम अलैक्सान्देर मदवेदेव भी अब उसे अजनबी-सा मालूम होता है, मानो शो-पीर से भिन्न वह किसी अन्य व्यक्ति का नाम हो......!

छठा परिच्छेद

: १ :

सियातांग गणना के अनुसार सूरज अब मानव के घुटनों तक पहुँच गया था, और घाटी में शरद की पहिली ठंडी हवाएँ चलने लगी थीं। हिमकी भीमाकार शिलाओं ने अपना असर दिखाना शुरू कर दिया था। रात-भर पाला पड़ता था।

उस दिन भी, सदा की भांति, बख्तियार और शो-पीर जल्दी उठ खड़े हुए। नहर का सारा काम पिछली रात समाप्त हो गया था। दुर्ग से लेकर नीचे की बंजर भूमि तक नहर के समूचे विस्तार से पत्थरों को हटा दिया गया था। नहर के मुहाने के पास केवल एक बड़ा पत्थर रह गया था। शो-पीर ने निश्चय किया था कि इसे नहर के उद्घाटन के दिन हटाया जायगा।

शो-पीर और बख्तियार ज़मीन के नये प्लाटों की माप-जोख तथा उन्हें नियत करने के लिए घर से निकले थे। रास्ते में उन्होंने काराशिर और यूसुफ को भी अपने साथ ले लिया। हवा का बहाव अत्यधिक तेज था। ऐसा मालूम होता था जैसे बहुत दिनों तक किसी एक जगह बन्द रहने के हवा अभी-अभी मुक्त हुई हो। शो-पीर के मुँह से निकले शब्द उसके साथियों के कानों तक पहुँच भी नहीं पाते थे कि हवा उन्हें अपने साथ उड़ा कर ले जाती थी। हवा से बचने के लिए काराशिर अपने फटे हुए कपड़ों में दोहरा हो रहा था, और यूसुफ हवा से छितरी अपनी दाढ़ी को संभालने में व्यस्त था।

उस दिन आसमान एकदम साफ था। काराशिर के घर से कुछ ही दूर पहाड़ियों का एक सिलसिला गाँव को बंजर पथरीली भूमि से अलग करता था। यह घाटी का निचला अन्तिम छोर था। यहाँ की सकरी भूमि, नदी के किनारे तक, छोटे-छोटे पत्थरों से छितरी थी। पहाड़ियों और नदी के ढलुवां तट के बीच मिरजाहूर की दुकान थी। दुकान के पास से एक रास्ता गुजरता था जो गाँव से शुरू होकर बंजर भूमि को पार करता एक पहाड़ी की ओर चला गया था जिसके उधर जनशून्य दर्रा फैला था। सौदागर ने अपनी दुकान के लिए बिना मतलब ही यह जगह नहीं चुनी थी। महानदी से ऊपर गाँव की ओर जाने वाले हर व्यक्ति को वह अपनी दुकान से देख सकता था।

नई नहर समूचे गाँव में से होती हुई सौदागर की दुकान और पहाड़ियों के सिलसिले के बीच बंजर जमीन में प्रवेश करती थी। यहाँ वह, पंखे की भांति, दरजनों छोटी-छोटी खाइयों में फैली थी। प्रत्येक खाई एक या दो प्लाटों को सींचती थी। खाइयों के किनारों पर पत्थर की पाँत बिछी थी और जहाँ-तहाँ टहनिया तथा मिट्टी लगाकर उन्हें और भी पक्का बना दिया गया था।

शो-पीर और उसके साथी प्रत्येक प्लाट पर पत्थरों का एक छोटा सा ढूह बनाते जाते थे। फिर शो-पीर किसी समतल जगह पर, जानवरों तथा घोड़ों में से किसी एक की तस्वीर खींच देता था। इसके लिए शो-पीर उन्हीं जानवरों तथा घोड़ों को चुनता था जिनसे कि सियातांग के निवासी परिचित थे।

"यह किस लिए बना रहे हो?" एक प्लाट पर बिच्छू की तस्वीर बनाते हुए देख कर काराशिर ने पूछा।

शो-पीर ने काराशिर के सवाल को हंसी में टाल दिया और दूसरे प्लाट पर मछली की तस्वीर बनाने लगा। इसी प्रकार तीसरे पर उसने सांप की और चौथे पर पहाड़ी बकरी की तस्वीर बनाई। लेकिन एक प्लाट पर जब शो-पीर अजगर की तस्वीर बनाने लगा तो कारा-

शिर का हृदय कांप उठा। सिर हिलाते हुए बोला, "अब क्या होगा ?"

शो-पीर ने हँसते हुए रूसी भाषा में जवाब दिया, "ये लाटरी की तस्वीरें हैं।" फिर सियातांग भाषा में समझाया, "उद्घाटन के दिन दर्रे के निवासी पत्थरों के एक ढेर में से, जिन पर इसी तरह की तस्वीरें बनी होंगी, आँखें बन्द कर पत्थर उठायेंगे। अगर तुम्हारे पत्थर पर सांप की तस्वीर होगी तो तुम्हें सांप वाला प्लाट मिलेगा, अगर तस्वीर मछली की होगी तो तुम्हें मछली वाला प्लाट मिलेगा।"

"यह तो बहुत अच्छा है," काराशिर ने कहा, "मैं तो मछली वाला प्लाट लूँगा।"

यूसुफ और काराशिर शो-पीर से कुछ पीछे रह गये थे। वे खाइयों के किनारे धीरे-धीरे चल रहे थे और पत्थरों के छोटे-छोटे नए ढेर बनाते जाते थे। आखिर काराशिर शो-पीर के पास पहुँचा और बोला, "क्या उस दिन बहुत बड़ा उत्सव मनाया जाएगा ?"

"हां," शो-पीर ने कहा, "इससे ज्यादा खुशी की बात और क्या होगी कि तुम सब लोगों के पास अपनी जमीन हो जायगी।"

"तब तो हम खूब जश्न मनायेंगे," काराशिर ने सपना-सा देखते हुए कहा, "बड़े-बड़े देगों में पुलाव पकेगा, और रोटियों का एक अंबार लग जायगा। हम दिन भर खायेंगे, गाना-बजाना होगा। क्यों, ठीक है न, शो-पीर ?"

"मालूम होता है, तुम कभी खान की दावत में शामिल हुए हो ?" शो-पीर ने पूछा।

"मैं खुद तो शामिल नहीं हुआ, शो-पीर! दावत में केवल सैयद शामिल हुए थे। मैं फकीर हूँ। फकीर तो बस दूर से ही देखते रहे। एइयो, मांस का कितना बड़ा अम्बार लगा था ? कुछ नहीं तो चालीस भेड़ें कटी होंगीं। इस बार दावत में फकीर भी शामिल होंगे। भेड़ों के बिना भी क्या कोई दावत होती है ? चालीस न हों तो दस, या

शायद बीस काफी होंगी। इतनी भेड़ें हम कहाँ से लायेंगे ?"

"सैयद कहाँ से लाये थे ?"

"उन्होंने तो अपनी भेड़ें हलाल की थीं," काराशिर ने तुरत जवाब दिया। फिर कुछ रुक कर बोला, "नहीं, वे अपनी भेड़ें नहीं लाए थे। भेड़ें उन्होंने हमसे, फकीरों से, ली थीं। मेरा नवजात मेंमना भी उनके पुलाव की भेंट चढ़ गया था।"

"तब तो ठीक है," शो-पीर ने कहा, "हम अपनी दावत के लिए भी इसी तरह भेड़ें जमा करेंगे।"

"ओहो," काराशिर ने अपनी आंखों को सिकोड़ते हुए कहा, "मेरे पास तो भेड़ हैं नहीं !"

"तब तो पुलाव का मोह छोड़ना पड़ेगा, काराशिर !" शो-पीर ने कहा।

काराशिर ने आंखें नीची कर लीं। उसकी झुकी हुई आंखों को, एक बार फिर, पत्थरों के सिवा अब और कुछ नहीं दिखाई देता था।

प्लाटों पर निशान लगाने का काम समाप्त होने पर काराशिर और यूसुफ चले गए। बख्तियार और शो-पीर रह गए।

"वे कहते तो ठीक हैं, शो-पीर," बख्तियार ने कहा, "जिसमें खान-पान न हो, वह भी कोई उत्सव है ?"

"मैं तुम्हारी बात मानता हूँ, बख्तियार," शो-पीर ने कहा, "लेकिन किया क्या जाए ? अगले साल तो सब ठीक हो जायगा, लेकिन अभी... क्या ही अच्छा हो, बख्तियार, अगर अपना कारवाँ कल आ जाए...?"

लेकिन कारवाँ का अभी तक कोई पता न था। कारवाँ पर शो-पीर ने अपनी सारी उम्मीद बाँध रखी थी। कारवां के भरोसे ही उसने लोगों से नहर पर काम कराया था कि जब कारवाँ आ जाएगा तो काम के बदले में आटा उन्हें मिलेगा। फिर बसन्त की बोवाई के लिए मौजूदा फसल का अनाज बचा कर रखना भी जरूरी था। अगर कारवां आजाता तो इस फसल का अनाज बोवाई के काम में लाना सरल हो

जाता ।

शो-पीर के मस्तिष्क में यही सब बातें घूम रही थीं। बख्तियार उसके साथ-साथ चुपचाप चल रहा था। शो-पीर जितना ही सोचता था, उसका यह भी विश्वास उतना ही दृढ़ होता जाता था कि चाहे जैसे हो, अनाज तो वसन्त की बोवाई के लिए बचाकर रखना ही चाहिए।

"मेरा तो यह निश्चय है, बख्तियार," शो-पीर ने कहा, "दर्रे के निवासियों को एक प्रस्ताव पास कर गेहूँ का पिसना रोक देना चाहिए। तुम्हारा क्या ख्याल है, बख्तियार ? इस साल फसल क्यों कम हुई, इस बात को क्या वे सब समझते हैं ?"

"हाँ, वे समझते हैं," बख्तियार ने कहा, "पुरानी नहर से पानी बहुत कम मिला, जाड़ों में चट्टान गिरने से नहर के गटर टूट गए, बारिश कम हुई, और सबसे बढ़कर यह कि करीब आधे लोगों को बोवाई के लिए सौदागर से अनाज लेना पड़ा।"

"पानी की कमी और सौदागर, यही सबसे बड़ दुश्मन हैं। लोग पहिले को तो पहचानते हैं, लेकिन दूसरे को..."

इसी समय निस्सो के पुकारने की सुस्पष्ट आवाज़ सुनकर दोनों चौंक पड़े। न बख्तियार और न शो-पीर, दोनों में से किसी को भी यह ध्यान नहीं था कि वे अपने बगीचे में दाखिल हो गए हैं।

पेड़ों के बीच से दौड़ कर निस्सो उनके पास पहुँची।

"चल कर देखो, मैंने क्या किया है ? एकदम तैयार है।"

"क्या तैयार है ?" शो-पीर ने अचरज से पूछा और निस्सो के हाथों की ओर देखा जो कोहनी तक चटक लाल रंग में रंगे हुए थे।

"मैंने रंग लिया है। इधर आओ, तुम्हें दिखाऊँ!" निस्सो शो-पीर की बाँह पकड़ कर अपने साथ ले चली। बख्तियार ने भी उनका अनुसरण किया।

खाने की मेज़ के पास, दो पेड़ों के बीच, लाल रंग में सराबोर चादर का एक टुकड़ा लटका था। पेड़ के नीचे धुँए से काले पत्थरों पर

लाल रंग से भरा लोहे का एक बरतन रखा था।

यह चादर शो-पीर के सैनिक जीवन की यादगार थी। दो झण्डे बनाने के लिए आज सुबह ही उसने उसके दो टुकड़े करके निस्सो को दे दिए थे।

"बहुत खूब !" शो-पीर ने कहा, "तुमने बहुत अच्छा रंगा है। दूसरा झंडा कहाँ है ?"

"यह रहा," निस्सो ने कहा और लोहे के बरतन के पास जाकर रंग में डूबा दूसरा टुकड़ा भी निकाल लिया।

"यह कहाँ फहराएगा ?" निस्सो ने गर्व के साथ पूछा।

"ज़मीन के नये प्लाटों पर ?" शो-पीर ने कहा और कपड़े के लाल रंग को मुग्ध भाव से देखने लगा।

बख्तियार की आँखें, झंडे के बजाय शो-पीर के चेहरे पर टिकी थीं। शो-पीर के चेहरे पर उस समय निरे आनन्द का एक ऐसा भाव छाया था कि बख्तियार मुसकराये बिना नहीं रह सका। सहसा शो-पीर, मानो एक झटके के साथ अपने को होश में लाते हुए, निस्सो की ओर मुड़ा और बोला, "क्यों निस्सो, आज झंडे ही रंगती रही या खाने-वाने को भी कुछ बनाया है ?"

"क्यों नहीं ? खाना भी तैयार है !" निस्सो ने कुछ आहत भाव से कहा।

"क्या बनाया है,—वही मटर का दलिया उबाल कर रख दिया होगा ? जो भी हो, भूख में सब अच्छा लगता है। लेकिन पहिले अपने हाथ साफ करके आओ !"

निस्सो अनमनी-सी हाथ धोने चली गई। शो-पीर की आवाज़ का अप्रत्याशित रूखापन उसे अच्छा नहीं लगा।

: २ :

दो दिन से, एक क्षण का भी विराम लिए बिना निरन्तर तेज़ हवा चल रही थी: गर्मियों में पत्थर की दीवारों के पास जमा हुई धूल के बबूलों

को उड़ाती, फलों के पेड़ों की पत्तियों को नोचती और घरों की छतों पर पत्थरों से दाब कर सूखने के लिए रखे गए पूलों से तिनकों को छीनती। नहर के उद्‌घाटन से एक दिन पहिले हवा एकदम शान्त हो गई। हरियाली मायल पीले चाँद की चान्दनी में डूबी घाटी पर निस्तब्धता छा गई। सुबह के समय हवा खास तौर से निखरी हुई थी, मानो वह अभी-अभी स्नान करके आई हो।

अपने नंगे पाँव में सलीपर और कंधों पर चोगा डाले मिरज़ाहूर अपनी दुकान से निकला और धूप में गरमाई दीवार के सहारे टिक कर देर तक पहाड़ों की ओर, जागते हुए गाँव और दुकान के सामने बह रही नदी के सफेद झागों की ओर, देखता रहा। केन्दितरी बाल बनाने की अपनी दुकान का पर्दा ठीक करने में व्यस्त था। उसे उम्मीद थी कि दर्रे के निवासी आज बाल बनवाने आएंगे।

पर्दा ठीक करने के बाद केन्दितरी ने अपना लम्बा उस्तरा निकाला और अलस भाव से उसे तेज़ करता हुआ मिरज़ा हूर के निकट दीवार से सट कर खड़ा हो गया।

"सुनते हैं कि आज उत्सव का दिन है!" मिरज़ाहूर ने कहा।

"हाँ," केन्दितरी बोला।

सौदागर ने हाथ अपनी पीठ के पीछे कर लिए और दीवार से अलग हुई मिट्टी की पपड़ियों को नोचने लगा।

"जब खान कोई उत्सव मनाता था तो सोना बरसता था। लेकिन यह उत्सव तो बर्फ़ की चट्टानों से आई हवा की भाँति है, सूना और सर्द। न तो कोई एक गिरह कपडा लेने आएगा, न आटे की बिक्री होगी, न नमक की। बस, बहुत हो चुका केन्दितरी! अब मैं यहाँ नहीं रह सकता। मैं यहाँ से चला जाऊंगा, यखबार, गारमाइत, या इससे भी दूर। यहाँ से तो रेगिस्तान भी अच्छा। मैं मूर्ख हूँ जो यहाँ पड़ा-पड़ा सड़ रहा हूँ, आखिर किसलिए?"

"चुप भी रहो, मिरज़ाहूर," केन्दितरी ने कहा, "तुम सब जानते हो

कि तुम्हें यहाँ क्यों रहना चाहिए !"

मिरज़ा हूर ने अनुभव किया कि केन्दितरी को उसकी बात अच्छी नहीं लगी। फिर भी वह चुप नहीं रहा। बोला, "और आज सभा होगी। कुछ लोग मेरे पास आए थे और मैं भी उनके पास गया था। हम सब की यह राय है कि लड़की को यहाँ से निकाल देना चाहिए। वे सभा में बोलेंगे, मैं भी अपनी बात कहूंगा। लेकिन हम सब से तुम्हारी बात का ज्यादा असर होगा। अगर तुम बोलोगे तो सब ध्यान से सुनेंगे। तुम बोलोगे न ?"

केन्दितरी भौहें चढ़ाए सुनता रहा। फिर, मानो सौदागर के धीरज को कसौटी पर कसते हुए, उसने कुछ देर से जवाब दिया।

"हो सकता है कि मै बोलूं," उसने कहा, "लेकिन अब बस करो, मिरज़ाहूर ! देखो, कुछ लोग आ रहे हैं। आज उत्सव है न ? हजामत के लिए बहुत से लोग आएंगे। अच्छा तो मै अब चलता हूं।"

नाई की दुकान का एक मात्र सामान मटमैले पानी से भरा लकड़ी का एक बड़ा कटोरा और भूरे रंग का एक पत्थर था, जिस पर बैठकर लोग हजामत बनवाते थे। दो बूढ़े आदमियों ने उसकी दुकान में प्रवेश किया। उन में से एक गठिया से पीड़ित था और लंगड़ा कर चल रहा था। उसकी दाढ़ी चटाई नुमा थी। दुआ-सलाम के बाद वह चुपचाप पत्थर पर बैठ गया।

"तुम सभा में आ रहे हो न, नौरोज़बेक ?" उड़ते हुए भाव से अपने खामोश गाहक से केन्दितरी ने पूछा।

"सभा में जाकर मैं क्या करूंगा ? मेरे लिए तो न सावन सूखा, न भादों हरा !"

"मैं जानता हूं कि तुम्हारे पास कोई खेत नहीं हैं, न ही नहर का पानी तुम्हारे लिए है। लेकिन फिर भी आना जरूर। देखना, रूसी क्या-क्या कहता है ?"

"मैं सभा मे जाकर क्या करूंगा ? बूढ़े काज़ी को कौन पूछता है ? सारे

फ़ैसले अब ग्राम-सोवियत करती है।"

"फिर भी आना ज़रूर। मेरी तो राय है कि बोबोकलाँ को भी लाना। तुम्हारा आना ज़रूरी है।"

"अच्छी बात है, मैं आऊंगा," नौरोज़बेक ने कहा और फिर पहिले की भांति चुप हो गया।

वृद्ध की दाढ़ी बनाते समय केन्दितरी की आंखें दुकान से लेकर पहाड़ियों तक फैली सियातांग के निचले छोर की बंजर भूमि पर टिकी थीं। वहाँ कितने ही लोग जमा थे और घूम-घूम कर ज़मीन के प्लाटों को देख रहे थे। स्पष्ट ही वे इस बात का अन्दाज़ लगा रहे थे कि किसको कौन सा प्लाट मिलेगा। काराशिर और यूसुफ भी उनमें मौजूद थे और दोनों में, गर्म बहस छिड़ी थी।

केन्दितरी जानता था कि वे किस बात को लेकर बहस कर रहे हैं। वह यह भी जानता था कि अभी सारी बहस बेकार थी, लेकिन वह यह देख कर खुश था कि लोगों के हृदयों में उथल-पुथल मची है।

नौरोज़बेक की दाढ़ी बनाने के बाद केन्दितरी दूसरे गाहक की दाढ़ी साफ करने लगा। नौरोज़बेक ने उससे विदा ली और सौदागर की दुकान में चला गया। केन्दितरी जानता था कि दोनों धीमे स्वरों में निस्सो के बारे में बातें कर रहे हैं।

केन्दितरी का इरादा था कि वह भी सभा में बोलेगा। वह हजामत बनाता जाता था और अपने भाषण के प्रत्येक शब्द को मन-ही-मन तौलता जाता था। उसकी अपनी एक योजना थी, जिसकी सफलता उसके शब्दों से पैदा होने वाले असर पर निर्भर करती थी। यह योजना शत-रंज की बिसात की भांति थी, जिस पर दर्रे के निवासी, देर या सबेर, उसकी चाल के अनुसार हरकत करेंगे।

दूसरे वृद्ध की दाढ़ी बनाने तक काराशिर और यूसुफ इतने निकट आ गए थे कि बिना चिल्लाए ही अब वह उनसे बातें कर सकता था।

"यहाँ आओ, काराशिर!" उसने कहा, "दाढ़ी नहीं बनवाओगे

आज ?"

"नहीं ।" नाई के निकट आते हुए उसने गर्व के साथ कहा ।

"क्या उत्सव के दिन भी अपने चेहरे पर घास उगाए घूमोगे ?" केन्दितरी ने हँसते हुए कहा, "आओ बैठो । और यूसुफ, तुम भी आओ । जिन लोगों को आज जमीन मिल रही है, उनसे मैं दाढ़ी बनवाई कुछ नहीं लूँगा ।"

काराशिर पत्थर पर बैठ गया । उस्तरे के प्रत्येक स्पर्श पर वह दर्द से मुँह बिचका लेता था ।

"एक बात बताओ, काराशिर," "केन्दितरी ने कहा, "नई जमीन में छितरे पत्थरों को क्या तुम अपनी पीठ पर लाद कर साफ करोगे ?"

"अपनी पीठ पर लाद कर क्यों साफ करूंगा ? मेरा गधा जो है ।"

"लेकिन अगर मिरजाहूर ने अपना कर्ज चुकता करने के लिए तुम से गधा ले लिया तो क्या करोगे ?"

काराशिर चौंक कर पीछे हट गया और नाई का हाथ सामने से को हटा कर उसके चेहरे की ओर देखने लगा ।

"वह मेरा गधा क्यों लेगा ?"

"तुम्हारे पास देने के लिए और क्या है ?"

"अगले साल मैं गरीब नहीं रहूँगा," काराशिर ने विश्वास बटोरते हुए कहा, "मेरी जमीन में बहुत-सा गेहूँ पैदा होगा, और आटे के रूप में मैं अपना कर्ज चुका दूँगा ।"

"अगले साल !" केन्दितरी के चेहरे पर व्यंग-पूर्ण हँसी खेलने लगी, "लेकिन इस साल सौदागर से क्या तुम और कोई चीज नहीं लोगे ?"

"नहीं," केन्दितरी की ओर मुँह करते हुए उसने कहा, "मैं तो उसकी सूरत तक नहीं देखना चाहता ।"

"अच्छी बात है," केन्दितरी ने कहा "लेकिन मैंने सुना है कि सौदागर उन सब से अपना कर्ज चुकता करना चाहता है जो उसकी सूरत

तक नहीं देखना चाहते ।"

"यह नहीं हो सकता," काराशिर ने हठ-धर्मी से कहा, लेकिन फिर चुप हो गया। सच बात तो यह थी कि अगर सौदागर ने तुरन्त कर्ज़ अदा करने की माँग की तो वह क्या करेगा ? अगर ऐसा हुआ तो न केवल उसका गधा ही, बल्कि बकरी और गिनती के उसके दो चूज़े भी गायब हो जायेंगे, और कर्ज़ शायद तब भी चुकता नहीं होगा।

तभी केन्दितरी ने काराशिर के कान के पास मुंह ले जाकर कहा, "मेरी राय है कि तुम उसे कुछ भी अदा करने से इन्कार कर देना ।"

"क्या... ?" काराशिर ने चिल्ला कर कहा और एकाएक इतनी तेज़ी से घूमा कि केन्दितरी अपने उस्तरे को बड़ी मुश्किल से दूर हटा सका।

"इसमें चौंकने की क्या बात है ?" केन्दितरी ने कहा, "मैं जानता हूँ, शो-पीर तुम्हें पहिले ही ऐसी सलाह दे चुका है।"

"नहीं," काराशिर ने कहा "शो-पीर ने मुझे ऐसी कोई सलाह नहीं दी ।"

"नहीं दी, तो देगा, मेरी इस बात को गाँठ बाँध कर रखलो," केन्दितरी ने धीमे स्वर में कहा, और फिर एकाएक ऊंचे स्वर में बोला, "देखो, तुम्हारा चेहरा अब कितना अच्छा लगता है। आओ, यूसुफ, तुम्हारा चेहरा भी निखार दूं ।"

तभी दूर से तम्बूरों के बजने की आवाज़ सुनाई दी जो इस बात की सूचक थी कि नहर के उद्घाटन के लिए दर्रे के सभी निवासी मौके पर पहुँच जाएँ। यूसुफ को वहीं छोड़ काराशिर तेज़ी से दुर्ग की ओर चल दिया।

: ३ :

तेंतालीस स्त्रियाँ, सियातांग की कुल स्त्रियों में से करीब-करीब आधी, गर्मियों के प्रारम्भ से पहाड़ी चरागाहें में थीं। इन में से दो या तीन फटे हाल सैयदों की पत्नियाँ थीं, एक खलीफा की रिश्तेदार थी, जो

अखबार भाग गया था और एक भूतपूर्व काज़ी नौरोजबेक की भतीजी थी। शेष सब फकीरों की पत्नियाँ और बेटियाँ थीं। इनमें से कुछ गुलरीज़ से इसलिए नाराज़ थीं कि उसने अपने बाप-दादाओं की लीक को छोड़ दिया था। लेकिन ये सब स्त्रियाँ एक ही जगह रहती थीं और एक-सा जीवन बिताती थीं। सब एक-दूसरे की मदद करती थीं, सब रेवड़ों को चरातीं और उनकी देख-भाल रखती थीं, सभी देवों से डरती थीं और एक साथ खाती-पीती तथा एक साथ सोती थीं। उनमें से प्रत्येक अपने से बड़ों की इज्ज़त करती थी, और गुलरीज़ उन सब में बड़ी थी।

पहाड़ों से घिरी इस चरागाह में आए गुलरीज़ को तीन दिन हो गए थे। पहिली साँझ सियातांग में निस्सो के आने के बारे में उसने किसी से कुछ नहीं कहा। लेकिन अगली सुबह वह उन स्त्रियों के साथ चरागाह में गई जिनके पति उसके बेटे बख्तियार का साथ देते थे। उनसे उसने इस घटना का ज़िक्र किया और कहा कि बहुत दिनों के बाद उसके हृदय की आन्तरिक इच्छा पूरी हुई है और, काम में उसका हाथ बटाने के लिए एक लड़की भगवान् ने उसके घर में भेज दी है। निस्सो के पिछले जीवन का, उसके दुःख और मुसीबतों का, इतने विस्तार के साथ उसने वर्णन किया कि लड़की के प्रति उन सबकी सहानुभूति जाग्रत हो गई। वृद्ध गुलरीज़ जानती थी कि सियातांग की स्त्रियों के हृदयों को किस प्रकार छुआ और कुरेदा जा सकता है।

उस दिन निस्सो की खबर समूची चरागाह में फैल गई और तेंतालीस स्त्रियों में से प्रत्येक ने उसके बारे में अपनी राय प्रकट की।

गुलरीज़ ने अपने मन की बात अपने मन में ही छिपाए रखी। स्त्रियों से यह कहने की क्या ज़रूरत थी कि निस्सो एक दिन बख्तियार की पत्नी बन सकती है। स्त्रियों के ईर्ष्या-द्वेष और कुत्सा से गुलरीज़ भली-भांति परिचित थी। वह जानती थी कि उसके बेटे बख्तियार से कितनी ही स्त्रियाँ मन-ही-मन कुढ़ती हैं। सो उसने इस बात को गुप्त ही

रखा। इसके प्रतिकूल यह बात सभी की समझ में आने वाली थी कि घर के काम-काज में हाथ बटाने के लिए उसे एक लड़की की ज़रूरत है। यह एक ऐसी बात थी जिससे किसी को भी इन्कार नहीं हो सकता था।

गुलरीज़ प्रत्येक स्त्री के जीवन से उतनी ही परिचित थी जितनी कि अपने जीवन से। करीब आधी स्त्रियाँ तो उसकी आँखों के समय ही पैदा हुई थीं, उस समय जब कि उसका विवाह भी हो चुका था। उनसे बातें करते समय उसने उन्हें उनके जीवन की याद दिलाई, और एक-एक के साथ पूरी घनिष्टता के साथ उनसे बातें कीं।

"तुमने वृश्चिक वर्ष में जन्म लिया था, ज़ुबेदा! एक थैला चावल, एक भेड़ और एक छोटी-सी बकरी के बदले नेमत ने तुम्हें खरीद कर अपनी पत्नी बना लिया। मुझे खूब अच्छी तरह याद है कि नेमत ने तुम्हारे बाल पकड़ कर किस प्रकार तुम्हें समूचे गाँव में घसीटा था। गुस्से में भर कर तुमने नेमत के मुंह पर थूका और दो जाड़ों तथा दो गर्मियों भर तुम रोती रहीं। और उस समय जब नेमत दुर्ग से परे ऊंची पहाड़ी पर पुरानी नहर की मरम्मत करते-करते नीचे आ गिरा था और पत्थरों से टकरा कर उसके सिर के दो टुकड़े हो गए थे, तब तुम्हारी आँखों से एक भी आंसू नहीं निकला था। तुम्हें याद है न? नेमत की मिट्टी ठिकाने लगाने के बाद जब तुम्हारा भाई खुदादाद तुम्हें अपने घर ले जाने लगा तो तुम्हारे होठों पर मुस्कराहट खेल गई और तुम्हारे भाई ने कहा कि अब मैं तुम्हें किसी के हाथ नहीं बेचूंगा। तब से तुम अकेली ही हो और तुम्हारा जीवन वैसे ही बीत जाएगा जैसे कि युवावस्था बीती है। न तुमने पति का सुख देखा, न बच्चों का।"

"इन सब बातों को क्यों याद दिलाती हो, गुलरीज़?" अपने झुर्रियों पड़े चेहरे को ऊपर उठाते हुए ज़ुबेदा ने कहा, "हम सबी का जीवन इसी प्रकार बीता है।"

"कहती तो तुम ठीक हो, ज़ुबेदा! लेकिन मैं भी क्या करूं?

बुढ़ापे में बीते दिनों की याद पीछा नहीं छोड़ती," गुलरीज ने कहा और झुर्रियों पड़े अपने हाथों को घुटनों पर टेक कर कराहती हुई उठ खड़ी हुई। इसके बाद वह दूसरी स्त्री के पास जाकर बैठ गई।

"शोखबगोर, अपनी उम्र के लिहाज से तुम्हें सहज ही 'वसन्त की घास' कहा जा सकता है। लेकिन जब मैं तुम्हारे मुँह की ओर देखती हूँ तो तुम्हारी आँखों के नीचे शीत की झुर्रियाँ दिखाई देती हैं, मानो वसन्त की घास को पाला मार गया हो! अरे, अपने चेहरे को हाथों से क्यों ढकती हो? मुझ जैसी वृद्धा के सामने तुम्हें शरमाने की ज़रूरत नहीं। यार-मस्तन, तुम्हारा पति और यूसुफ का भाई, अच्छा आदमी था। तुम उसे प्यार करती थी और वह तुम्हें। तब फिर वह इस पहाड़ी को छोड़ कर क्यों चला गया? क्या तुम अब भी अपने हृदय में यह विश्वास संजोए हो कि वह जीवित है? हो सकता है, लेकिन वह कभी वापिस नहीं आएगा। अगर वह यहाँ रहता तो यूसुफ कभी तुम्हें अपनी पत्नी नहीं बना पाता। मैं जानती हूँ कि दिन में तुम यूसुफ की मार से कराहती हो, और रात को देवों के डर से। तुम्हारे प्रिय यार-मस्तन का घर नरक बन गया है। यूसुफ के साथ रहकर भला तुम्हें क्या सुख मिल सकता है?"

"दुखते घावों को कुरेदने से क्या फायदा" घास की पत्तियों को एक के बाद एक तोड़ते और उन्हें अपने सफेद दाँतों से कुतरते हुए शोखबगोर ने कहा, "यूसुफ से मैं डरती हूँ। लेकिन इन बातों का जिक्र करना ठीक नहीं।"

"मैं तो बहुत चाहती हूँ कि इन बातों का जिक्र न करूं," गुलरीज ने कठोरता से कहा, "और कहूँ कि तुमने बहुत सुखी जीवन बिताया है। लेकिन क्या करूँ, मुझे सुख की झलक नहीं दिखाई देती। तुम्हीं बताओ न..."

शोखबगोर चुप हो गई। बात सच थी। कोशिश करने पर भी अपने जीवन में सुखी क्षणों का पता नहीं नहीं कर सकी।

इस प्रकार दो दिन तक चारागाह में घूम-घूम कर गुलरीज़ स्त्रियों से बातें करती रही। जब भी किसी को अकेला बैठे देखती, वह उसके पास पहुँच जाती और उसके हृदय के घावों को कुरेदती। गुलरीज़ जानती थी कि वह क्या कर रही है। वह यह भी जानती थी कि इस प्रकार कुरेदे जाने पर प्रत्येक स्त्री अपने दुःख को अपने हृदय में ही छिपा कर रखेगी। और यह देख कर गुलरीज़ ने निर्मम सुख का अनुभव किया कि उसके यहाँ आने के तीसरे दिन चरागाह की पत्नियों का हँसना-बोलना और गीत गाना बन्द होगया।

अब वे गुमसुम घूमती थीं, मानो उनके हृदयों में किसी ने ज़हर घोल दिया हो। और अब खुद गुलरीज़ का हृदय भी भारी होगया, मानो किसी अदृश्य पत्थर का बोझ उस पर लदा हो। लेकिन अपने बेटे बख्तियार के बारे में सोचते समय अब वह तीखे सुख का अनुभव करती जिसे, अगर निस्सो न आगई होती तो, अपना सारा जीवन अकेले ही बिताना पड़ता। उसका हृदय उन लोगों के प्रति घृणा से भर गया जो निस्सो को अज़ीज़खान के पास वापिस भेजना चाहते थे, और यह कह कर वह अपने मन को समझाने लगी कि बेटे के प्रति उसका प्रेम ऐसा कभी नहीं होने देगा।

तीसरे दिन, साँझ के करीब, गुलरीज़ ने सभी स्त्रियों को बताया कि कल सियातांग में एक बहुत बड़ी सभा होगी जिसमें निस्सो के बारे में विचार किया जाएगा और शो-पीर उन लोगों के हाथ गिनेगा जो निस्सो को अज़ीज़खान के पास वापिस भेजे जाने के खिलाफ होंगे।

"मेरा तुमसे अनुरोध है कि," गुलरीज़ ने कहा, "कल तुम मेरे साथ चलो और सभा में मेरे लिए हाथ उठाओ जिससे निस्सो मेरी बेटी की भांति मेरे घर में रहे।"

गुलरीज़ की बात एकाएक स्त्रियों की समझ में नहीं आई। गुलरीज़ ने उन्हें समझाया कि सदा की भाँति मर्द अब भी तुम्हें लेने के लिए आते। लेकिन अब जमाना पलट गया है और नये कायदों से हमें चलना है।

मर्दों के बिना ही हमें यहाँ से चल कर सभा में शामिल होना है।

गुलरीज की यह बात सुनते ही स्त्रियों में खलबली मच गई और वे ज़ोर-ज़ोर से बोलने लगीं। नौरोज़बेक की भतीजी उछल कर खड़ी हो गई और पत्थर की बट्टियों को पाँव से ठुकराते हुए चिल्ला कर बोली कि गुलरीज़ के सिर पर तो देव सवार हैं, उसकी बात किसी को नहीं सुनना चाहिए। उसकी बात सुनकर इन पहाड़ों का हृदय फट जाएगा और जो उसके कहने पर चलेगा उसके सिर पर ये पहाड़ टूट पड़ेंगे। कई स्त्रियों ने कहा कि जो अब तक नहीं हुआ, वह आज भी नहीं होगा। हम यहाँ से अकेली नहीं जाएंगी। इससे खुदा भी नाराज़ होगा और हमारे पति भी। अगर खुदा नाराज़ होगया तो कुछ भी बाकी नहीं बचेगा, न हमारा गाँव, न हमारे बच्चे, न ये पहाड़ !

गुलरीज़ ने देखा कि सभी उसके खिलाफ हैं। जुबेदा और शोख-बगोर चुप थी, लेकिन उनकी ओर गुलरीज का ध्यान नहीं गया। गई रात तक स्त्रियाँ जोर-ज़ोर से बोलती और बहस करती रहीं। गुलरीज़ का हृदय बैठा जा रहा था। उसे विश्वास होगया था कि कल सुबह एक भी स्त्री उसके साथ नहीं जाएगी।

गुलरीज को रात-भर नींद नहीं आई। सुबह, अंधेरे मुँह, वह उठी और अकेली ही चल दी। सब स्त्रियाँ चुपचाप उसे देखती रहीं। गुल-रीज़ ने एक बार भी घूम कर नहीं देखा। बाड़े को उसने पार किया और पाला मारी घास को रौंदती आगे बढ़ गई।

तभी, हाथ हिलाती और चिल्लाती, सहसा ज़ुबेदा उसके पीछे दौड़ी, "ठहरो गुलरीज़, मैं भी चलती हूँ।"

ज़ुबेदा के पीछे-पीछे शोख बगोर और छः अन्य स्त्रियाँ, अपने-अपने डंगरों के साथ, बाड़े से बाहर आगईं।

गुलरीज़ ने अब घूम कर देखा। उसकी पथराई सी आँखों में एका-एक चमक दौड़ गई और अप्रत्याशित आँसू कपोलों पर से ढुरकने लगे। तेज़ी से उसने अपने आँसुओं को पोंछ लिया।

"रात को हमने सबसे बातें कीं। अन्य कोई तैयार नहीं हुई, लेकिन हम तुम्हारे साथ चल रहीं हैं," ज़ुबेदा ने कहा।

गुलरीज़, आठ स्त्रियों के साथ, सियातांग की ओर चल दी।

: ४ :

हवा, मानो सांस लेने के लिए रुक कर, फिर चलने लगी थी। दुर्ग की ढहती हुई दीवार पर लाल झण्डा निर्बाध फहरा रहा था।

निस्सो, शो-पीर और बख्तियार के पास, उस जगह जहाँ ग्राम सोवियत के अन्य सभी सदस्य थे, बैठी थी। दो सौ आँखें, एकटक निस्सो के चेहरे, उसके हाथों, उसकी लाल चोटियों और उसके कपड़ों पर टिकी थीं।

शो-पीर उठ कर खड़ा होगया और दर के निवासियों को सम्बोधित करते हुए उसने कहा, "यह है वह लड़की जो यखबार से हमारे यहाँ आई है। वहाँ के दुःखी जीवन से तंग आकर लोग हमारे यहाँ भाग आते हैं यह लड़की एक इन्सान की भाँति हम लोगों के साथ रहना चाहती है। यह इस आशा से हमारे पास आई है कि उसे यहाँ न्याय मिलेगा, और संरक्षण प्राप्त होगा। सो आज हमें यह दिखाना है कि हम आज़ाद हैं और न्याय की कद्र करना जानते हैं। सबसे पहिले कौन बोलना चाहता है?"

"सबसे पहिले मैं कुछ कहना चाहता हूँ," गठिया-पीड़ित नौरोज़बेक ने धीरे-धीरे उठते हुए कहा।

एक मुद्दत के बाद नौरोज़बेक बोलने के लिए खड़ा हुआ था। लोग ध्यान से उसे सुनने लगे।

"शो-पीर, तुमने कहा कि हमारे लोग न्याय की कद्र करना जानते हैं। यह बात बिल्कुल ठीक है। हमारे लोग वास्तव में न्याय की कद्र करना जानते हैं, लेकिन तुम इस बात को नहीं समझते। तुम्हें यहाँ रहते अभी दिन ही कितने हुए हैं, और बहुत सी बातें हैं जिनके बारे में तुम कुछ भी नहीं जानते। तुम्हें नहीं मालूम कि इन पहाड़ों की रचना कैसे

हुई, लेकिन हम जानते हैं। उस नीली छतरीवाले ने जब यह देखा कि दुनियाँ पाप की दल-दल में फँसी है तो उसने इन पहाड़ों की रचना की। ये दुनियाँ के पापों से मुक्त थे।

हमारे लोग इन पहाड़ों में आकर बस गए। हरे तारे की किरनें केवल यहीं अपना प्रकाश फैलाती थीं। एक दिन एक स्त्री हमारे यहाँ आई। वह पापों की दुनियाँ से आई थी। उसकी छाया पड़ते ही हरे तारे का आलोक खत्म होगया और वह टूट कर धरती पर आ गिरा। पत्थर जो उस दिन तक हरे थे, काले पड़ गए। उस दिन से हमारा देश मौत की घाटी बन गया। यहाँ के सब पत्थर काले और धरती का बोझ बन गए। क्या तुम समझते हो कि हमारा आकाश उज्ज्वल है? सहसा से उसकी ओर देखो तो पहिली नज़र में वह काला दीखेगा, और फिर नीला मालूम होगा। असल में वह एक दम काला है। और यह सब उस स्त्री के कारण हुआ। जब से वह यहाँ आई, काली सन्तानों को उसने जन्म दिया, जिनकी आत्माएं भी काली थीं। क्या तुम जानते हो कि उस स्त्री की सन्तान कौन हैं? वे फकीर कहलाती हैं। और वे लोग जो उस स्त्री की सन्तान नहीं हैं, शाना, सैयद और मीर। इन सबका रंग सफेद है। तुम अभी नये-नये आए हो, शो-पीर! हमारे लोगों के बारे में तुम क्या जान सकते हो? तुम क्या जानो कि शाना, सैयद और मीर काले कपड़े नहीं पहनते। खुदा ने उन्हें काले रंग के जानवर रखने से मना किया है, कि जब कभी काले रंग का मेमना उनके घर में पैदा होता है तो उसे हलाल कर दिया जाता है। जब कभी कोई सैयद किसी के घर जाता है और ओढ़ने के लिए उसे काली चादर मिलती है तो वह उस घर में नहीं ठहरता। जरा अपने चारों ओर नज़र डाल कर देखो। यहाँ तुम्हें सफेद और काले कपड़े दिखाई देंगे। काले कपड़े कौन पहनते है? फकीर, उस स्त्री की सन्तान जिसने हमारी घाटी को मौत की घाटी बना दिया, जिसकी छाया पड़ने से हरे सितारे की रोशनी जाती रही। केवल एक ही फकीर है जो मुझे

सफेद कपड़े पहिने दिखाई देता है। क्या तुमने जानबूझ कर सफेद कपड़े पहिने हैं, बख्तियार ? वह दिन दूर नहीं है, जब तुम्हें इसका जवाब देना पड़ेगा ?"

नौरोज़बेक के हाथों की मुट्ठियाँ बंध गईं और मुँह से झाग निकलने लगे। शो-पीर की ओर से घूम कर अब उसने लोगों की ओर मुँह किया। ऐसा मालूम होता था कि अगर किसी ने उसकी बात काटने का दुस्साहस किया तो वह उसकी बोटी-बोटी नोंच डालेगा।

"तुम कहते हो कि एक स्त्री हमारे यहाँ आई है ? ओहो, तुम उसे स्त्री कहते हो ? उस पर ज़रा नज़र डाल कर तो देखो। पहिली नज़र में वह हम सब जैसी मालूम होगी। हम जानते हैं कि वह एक खान की बीवी है। लेकिन उसने एक फकीर के यहाँ जन्म लिया है। उसकी आत्मा काली है, काली और घिनौनी। देखने में सीधी, लेकिन एक ऐसे गुनाह का बोझ लिए हुए जिसकी सज़ा मौत होती है। अगर हमने उसे यहाँ रहने दिया तो क्या होगा ? सूरज का चमकना बन्द हो जाएगा और वह धरती पर आ गिरेगा। तमाम घास और पानी काला हो जाएगा, ठीक वैसे ही जैसे कि पहिले पत्थर काले पड़ गए थे। सब लोग मर जायेंगे और ये पहाड़, पहिले गुनाह के कारण जो मौत की घाटी बन गए थे, अब खुद मौत बनकर हमारे सिरों पर टूट पड़ेंगे। क्या शो-पीर यही चाहता है ? क्या यही वह न्याय की भावना है जिसका उसने ज़िक्र किया था ? क्या यही वह आज़ादी है जिसके पीछे तुम इतने पागल हो ? लोगो, शो-पीर की बात न सुनो। वह पागल हो गया है। स्त्रियाँ खुद अपने मुंह से बतायगी कि मेरी बात ठीक है या ग़लत। हमारे यहाँ की बड़ी-बूढ़ी और समझदार स्त्रियाँ। यहां वे मौजूद हैं, ज़ीनत बगादूर, तुमने ज़माना देखा है। तुम बताओ कि तुम्हारी राय क्या है ?"

नौरोज़बेक चुप हो गया और कुछ दूर बैठी चार स्त्रियों में से एक उठकर खड़ी हो गई। दर्रे के निवासियों की ओर मुड़ते हुए उसने कहा, "सपने में मैंने तीन चाँद देखे। जिस रात यह स्त्री यहाँ आई थी, मैंने

आकाश में तीन चाँद देखे। मेरे इस सपने का क्या अर्थ है ? इसका अर्थ यह है : दो चाँद आसमान में इसलिए प्रकट हुए थे कि सूरज की रोशनी गायब होने वाली थी। नौरोज़बेक की बात सच है। सुबह जब मैंने अपनी गाय का दूध निकाला तो वह खट्टा था। इसका मतलब यह कि घास काली पड़नी शुरू हो गई थी। जब कोई मुसीबत आने वाली होती है तो जानवरों को उसका आभास सब से पहिले मिल जाता है। कौन बता सकता है कि ठीक उसी रात जब यह स्त्री अज़ीज़खान के पास से भाग कर सियातांग आई तो मुझे यह सपना क्यों दिखाई दिया ? क्या भेद है मेरे इस सपने का ?"

"बोबो कलाँ को सब मालूम है," किसी ने भीड़ में से कहा, "वह इस सपने का भेद बता सकता है।"

"ठीक है, बोबो कलां को बुलाओ।" मिरज़ाहूर ने कहा, "मैं यहाँ का निवासी नहीं हूँ। लेकिन इससे क्या, मैं सब की बात सुनने के लिए तैयार हूँ। हाँ तो बोबो कलाँ, तुम्हारी क्या राय है ?"

शो-पीर और बख्तियार ने एक दूसरे की ओर देखा। निस्सो उनके पास ही खड़ी थी। उसकी ओर हाथ बढ़ाते हुए शो-पीर ने कहा, "बैठ जाओ निस्सो, और किसी बात की चिन्ता न करो।"

निस्सो पत्थर पर बैठ गई।

बोबो कलां उठकर खड़ा हो गया। अपनी लाठी का सहारा लेते हुए उसने आँखे उठाई और लोगों के सिरों के उस पार पहाड़ों की चोटियों पर जमा दीं। वह धीरे-धीरे बोला, मानो वह चोटियों पर खुदे हुए अक्षरों को पढ़ रहा हो, जो केवल उसे ही दिखाई देते थे।

"मेरी दढ़ी के बाल पक गए हैं, मेरे हाथों में झुर्रियाँ पड़ गई हैं; अपने जीवन के पाँच चक्र मैं पूरे कर चुका हूं। मूर्ख हैं वे लोग जो दुनिया को बदलना चाहते हैं, हालाँकि दुनिया न कभी बदली है, न बदली जा सकती है। वह पहाड़ हमेशा से ऐसा ही खड़ा है और मेरे पीछे जो नदी है, वह सदा से इसी प्रकार गरजती हुई बह रही है, और उसके पानी में न

कोई कमी हुई है न बेशी। और सूरज सदा से चमकता और घास सदा से उगती आ रही है। हर दिन के बाद सदा रात होती है और रात के बाद आकाश में चाँद तैरता है। जैसे सदा से था, वैसे ही आज भी है। हजारों साल पहिले भी ऐसा ही था और हजारों साल बाद भी ऐसा ही रहेगा। खुदा के काम में कौन दखल दे सकता है? यही सत्य है, और यह सत्य ज्ञान और प्रकाश से पूर्ण है। इसी में हर व्यक्ति की खुशहाली निहित है।"

"क्या तुम्हें अपनी खुशहाली की याद आ रही है, बोबो कलां?" सहसा बख्तियार ने तीखी आवाज़ में चिल्ला कर कहा।

"तुम्हारे शब्द ज़हर में बुझे हैं, बख्तियार!" बोबो कलां ने अपनी बात को जारी रखते हुए कहा, "मेरी निजी खुशहाली आत्मा की शान्ति और सत्य की अनुभूति में छिपी है। लेकिन इस समय मैं उन लोगों की खुशहाली के बारे में सोच रहा हूं जो यहां जमा हैं। उन लोगों का भी मुझे ख्याल है जिन्हें उथल-पुथल की भावना ने ग्रस लिया है। मुझे उनका भी ख्याल है जिनका रँग सफेद है और उनका भी जिनका रंग काला है और जो असत्य में ही अपनी खुशहाली देखते हैं। नौरोजबेक ने ठीक ही कहा कि पहिला गुनाह एक गैर स्त्री के रूप में यहाँ आया था। यह एक ऐसा गुनाह था जिससे हरे तारे की रोशनी बुझ गई। अब फिर एक गैर स्त्री हमारे बीच आई है। क्या पहिले इस तरह की घटना की कोई कल्पना कर सकता था? ऐसी स्त्री को एक थैले में बांध लिया जाता, सभी लोग लाठियों से उसे पीटते और अन्त में नदी में फेंक देते। लेकिन अब ज़माना बदल गया है। इस स्त्री ने न्याय-अन्याय का सवाल खड़ा कर दिया है। फिर भी जो कुछ होता है, खुदा की मर्ज़ी से होता है। यही मेरा कहना है। यह स्त्री यहां रहे ताकि सूरज का चमकना बन्द हो जाए और घास काली पड़ जाए।"

बोबो कलाँ एक पत्थर पर बैठ गया। निस्सो ने भयभीत-हृदय से शो-पीर की ओर देखा।

शो-पीर जानता था कि दर्रे के निवासियों के हृदयों पर इस तरह की कहानियों और विश्वासों का गहरा असर पड़ता है। उसका मस्तिष्क विद्युत गति से काम कर रहा था। दुनिया की हर चीज़ हर घड़ी बदल रही है : नदी पहाड़ों को काट रही है, दर्रा अधिकाधिक चौड़ा और गहरा बनता जा रहा है, एक ज़माना था जब खान की नहर का कोई चिन्ह तक नहीं था और जिस नदी के पानी से घाटी को सींचा जाता था, वह गायब हो चुकी थी, और केवल एक साल पहिले यहाँ नई नहर जैसी कोई चीज़ नहीं थी...

लेकिन ये सब बातें तो बाद में भी बताई जा सकती हैं। इस समय कुछ और कहना चाहिए।

"अच्छी बात है," शो-पीर ने उठ कर एक कदम आगे बढ़ते हुए कहा, "अब मैं जो कहता हूँ वह सुनो। यह सच है कि मैं यहाँ से बहुत दूर का रहने वाला हूँ। लेकिन मैं भी थोड़ी-बहुत बातें जानता हूँ। तुम्हारे पहाड़ों की दुनियाँ ही समूची दुनियाँ नहीं है। हमारी इस लम्बी-चौड़ी दुनियाँ में भिन्न-भिन्न प्रकार के देश हैं। ऐसे देश हैं जिनमें घोड़े पर सवार होकर साल भर तक चलो तब भी कहीं पहाड़ नहीं दिखाई देगा। ऐसे भी देश हैं जिनके जंगल इतने घने हैं कि अगर उनमें आग लगा कर तेज़ हवा चलाओ तब भी आग की लपटें उन्हें पूरा-का-पूरा भस्म करने में सफल नहीं हो सकतीं। ऐसे भी देश हैं जहाँ जमीन बिल्कुल नहीं है, केवल पानी है, हर जगह पानी। पानी का रेगिस्तान। तुम्हारी भाषा में पानी की इस दुनियाँ के लिए कोई शब्द नहीं है। फिर ऐसे देश भी हैं जहां सूरज ६ महीने तक नहीं निकलता, दिन में भी अंधेरा रहता है, और रात में भी। इसके बाद, अगली छमाही में, सूरज आकाश से कभी विदा नहीं होता, और ६ महीने तक केवल दिन-ही-दिन रहता है।"

शो-पीर अटक गया और सोचने लगा कि इसके बाद वह क्या कहे। उसके माथे पर पसीने की बूँदें उभर आईं। दर्रे के निवासियों की

आंखें उस पर जमी थीं और वह कुछ कह नहीं पा रहा था। उसने अपने सिर से टोपी उतारी और उसे अपनी उँगलियों में मरोड़ने लगा। सहसा उसकी उँगलियों ने टोपी में लगे लाल सितारे का स्पर्श किया। उसने अपनी टोपी को ऊँचा उठाया और तेज़ी तथा विश्वास के साथ कहने लगा :

"इधर देखो, क्या तुम्हें कोई चमकदार चीज दिखाई देती है ? यह लाल सितारा है जिसे तुम अक्सर मेरी टोपी में लगा देखते हो ? क्या तुमने कभी सोचा है कि यह क्या है ? नहीं, तुमने कभी नहीं सोचा कि यह क्या है, कहाँ से आया है, और इसका अर्थ क्या है ? मैं तुम्हें बताता हूँ। जिस देश से मैं आया हूँ, एक ज़माना था जब उस देश में दुःख का राज छाया था। वहाँ कुछ लोग थे जो आदमी से अधिक भेड़िये के समान मालूम होते थे। उनके बदन का रंग सफेद था, उनके हाथ सफेद थे, लेकिन उनके हृदय......

"बर्फ से दबी उन चोटियों की ओर देखो। क्या ये चोटियाँ यहाँ से बहुत दूर हैं ? जो हो, हमारे देश में गेहूँ के खेत यहाँ से लेकर उन चोटियों तक फैले थे। और गेहूँ की फसल इतनी ऊँची होती थी कि छाती को छूती थीं। तुमने सपने में भी ऐसे खेत नहीं देखे होंगे। हमारे लोग इतना गेहूँ पैदा करते थे कि अगर उसका एक ढेर लगाया जाए तो वह तुम्हारे पहाड़ों से भी ऊँचा हो जाए। फिर भी वे भूखे रहते थे, तुम से भी ज्यादा भूखे। वे क्यों भूखे रहते थे ? इसलिए कि भेड़ियों का दल उनके पास एक दाना नहीं रहने देता था। दस लाख ! मैं समझता हूँ कि तुम्हारे पेड़ों के सभी शहतूतों को अगर गिना जाए तो वे दस लाख से कम होंगे। लेकिन वहाँ मेरे देश में सैंकड़ों लाख लोग हैं। इन लाखों लाख लोगों को अपने वश में रखने के लिए भेड़िये के पास बन्दूकें थीं, जेलें थीं, फांसी देने वाले जल्लाद थे। जो भी ज़रा चूँ करता, वे उसका गला दबोच लेते। लेकिन हम उनके खिलाफ संघर्ष करते और अपनी जानों पर खेलते रहे। तभी एक आदमी का

उदय हुआ जो बहुत ही बुद्धिमान था। वह न्याय से प्रेम करता था और अन्याय से घृणा। उसके हृदय में दुनियाँ-भर के लोगों के लिए प्रेम था, और उसकी रगों में जीवन से भरपूर लाल रक्त बहता था। उसने अमर शब्दों को जन्म दिया, ऐसे शब्दों को जिनमें समूची दुनियाँ के लोगों का हृदय धड़कता था। उसके इन शब्दों से एक भीमाकार सितारे का जन्म हुआ। इस सितारे का प्रकाश इतना अधिक था कि......

तभी बख्तियारने शो-पीर की बाँह खींचते हुए कहा, "शो-पीर, देखो, वे आ रही हैं!"

"क्या बात है?" शो-पीर ने कहा, "कौन आ रही हैं?"

"चरागाह की पत्नियाँ, वह देखो!"

शो-पीर ने घूम कर देखा, और उसके साथ-साथ दर्रे के अन्य सभी निवासियों की आँखें भी उसी ओर मुड़ गईं जिधर से चरागाह की पत्नियाँ अपने रेवड़ के साथ आ रही थीं।

: ५ :

ऐसी बात पहिले कभी नहीं हुई थी। सभा में मौजूद हर व्यक्ति जानता था कि ऐसी बात पहिले कभी नहीं हुई थी। अपनी आंखों के सामने वे सब कुछ उलट-पुलट होता हुआ देख रहे थे।

चरागाह की पत्नियों का समय से पहले ही वापिस आना और सो भी मर्दों के बिना...और चरागाह की ये पत्नियाँ सीधी सभा की ओर ही चली आ रही थीं इस बात की चिन्ता किए बिना कि उनके मर्द भी वहाँ मौजूद हैं। और यह कोई सपने की बात भी नहीं थी। वे सचमुच, जीती और जागती, पथ पर दौड़ती हुई चली आ रही थीं। गुलरीज़ सबसे आगे थी, उसके बाल हवा में फहरा रहे थे, और उसके पीछे......

दर्रे के सभी निवासी, आँखें फाड़-फाड़ कर देखने लगे कि गुलरीज़ के पीछे और कौन-कौन हैं। कहीं ऐसा तो नहीं है कि उनमें उनकी पत्नी या लड़की भी हो!

शो-पीर अपनी जेबों में हाथ डाले खड़ा था, और उसके होठों के छोर फड़क रहे थे। उसके हृदय में खुशी की एक अदमनीय लहर उमड़ रही थी। अनायास ही उसने निस्सो का कंधा दबाया, जो विश्वास में भर कर, उसके और अधिक निकट खिसक आई थी।

गायों के रम्भाने, भेड़ों के मिमियाने और स्त्रियों के चिल्लाने की तेज़ आवाज़ दूर से सुनाई दे रही थी।

तो क्या सचमुच गुलरीज़ ने सभी स्त्रियों को अपनी ओर कर लिया है? क्या होगा अब?

शो-पीर के चेहरे से मुसकराहट विलीन हो गई। पाँच, छै...... आठ......नौ......भेड़ें तो दिखाई दे रही थीं, लेकिन अन्य स्त्रियाँ कहाँ थीं?

क्या वे केवल नौ ही थीं? पहाड़ी की ओट में से क्या अन्य प्रकट नहीं होंगीं?

ये नौ स्त्रियाँ अब इतनी निकट आ गई थीं कि दर्रे के निवासी उनके चेहरों को अच्छी तरह पहचान सकते थे। लेकिन शो-पीर की नज़र उनके सिरों को पार कर अभी भी पथ पर टिकी हुई थी।

पथ सूना पड़ा था।

बख्तियार ने शो-पीर की बाँह खींची और चिंता से फुसफुसा कर पूछा, "बाकी स्त्रियां कहां हैं, शो-पीर?"

शो-पीर ने अपनी आंखों को हाथ से सहलाया जो ताकते-ताकते थक गई थीं।

"और नहीं हैं, बख्तियार!" शो-पीर ने भारी आवाज़ में कहा, और फिर लोगों की ओर मुड़ते हुए फुसफुसा कर बोला, "लेकिन कोई बात नहीं। नौ स्त्रियों का आना भी बहुत बड़ी बात है।"

बंजर ज़मीन के पास आकर गायें रुक गईं और उनके रम्भाने की

लम्बी और अडिग आवाज़ ने निस्तब्धता को भंग कर दिया। भेड़ें पथ से इधर-उधर बिखर गईं और अपनी ज़ुबान तथा कमचियों से काम लेते हुए स्त्रियां उन्हें बटोरने लगीं।

शो पीर ने देखा कि स्त्रियों में शोख बगोर भी है। उसका चेहरा पहचानते ही शो-पीर की आँखें युसुफ की खोज में घूम गईं जो, हाथों की मुट्ठियाँ कसे, अगले ही क्षण अपनी पत्नी पर टूट पड़ने के लिए तैयार खड़ा था। स्थिति को बचाने के लिए शो-पीर लपक कर आगे बढ़ा और पत्थरों को फांदता स्त्रियों के पास जा पहुँचा।

उनके पास पहुँच कर शो-पीर ने खुशी से भरपूर आवाज़ में कहा, "आज सचमुच में उत्सव का दिन है, बहुत बड़े उत्सव का दिन!" फिर चिल्लाकर बोला जिससे सब सुन सकें, "हम अपने यहाँ की स्त्रियों का स्वांगत करते हैं। स्वागत, शोख बगोर! स्वागत, ज़ुबेदा! स्वागत, नफ़ीम! स्वागत, तुम सब! हम तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रहे थे, गुल-रोज़! भेड़ों को रहने दो, और हमारे साथ चल कर बैठो!"

क्या सियातांग में किसी अन्य पुरुष ने भी आज तक स्त्रियों से इस तरह बातें की थीं?

शो-पीर ने शोखबगोर की बाँह पकड़ी और उसे तथा अन्य स्त्रियों को उस बड़े पत्थर की ओर लेगया जहां बख्तियार, खुदादाद और उनके दूसरे साथी खड़े थे। वह जानता था कि यूसुफ को अब पत्नी पर टूट पड़ने का अवसर नहीं मिलेगा। वह एक ओर खड़ा गुस्से से होंठ काटता रहा, और स्त्रियां उसके सामने से निकल गईं।

शोख बगोर ने अपनी आँखें नीची करली थीं जो चादर की भाँति सफेद पड़ गई थीं। अपने कृत्य की दुस्साहसिकता का उसे केवल अभी पूर्णतया अनुभव हुआ था। लेकिन शो-पीर ने उसे सहारा दिया। अन्य स्त्रियां भी, एक दूसरे से सटी हुई, भीड़ में से उसके पीछे-पीछे आ रही थीं। पुरुषों की आँखें उन पर टिकी थीं।

बोबो कलां दाहिनी ओर एक पत्थर पर बैठा था। शो-पीर उसके

पास से इस तरह गुज़र गया मानो उसने उसे देखा ही न हो। लेकिन उसकी तेज़ नज़र से कोई चीज़ छिपी नहीं रही। बोबोकलां की लकड़ी बीच से टूट कर दो हो गई थी। उसकी आँखें ज़मीन पर पड़ी किसी चीज़ से उलझी थीं। और उसके कंधे पर बैठा उसका बाज़ बार-बार अपनी गरदन उचका कर और अपनी चोंच ऊपर उठा कर कुत्सित दृष्टि से स्त्रियों की ओर देख रहा था। बोबो कलां की बगल में ही केन्दितरी पाँव पसारे बैठा था और उसकी कोहनियाँ पत्थर पर टिकी थीं। वह एक दम निर्लिप्त मालूम होता था और उसके होठों पर मुसकराहट की एक हल्की रेखा खेल रही थी। क्या रहस्य था उसकी मुसकराहट का? सौदागर मिरज़ाहूर भी, बोबो कलां जैसी भारी मुद्रा बनाए, अपनी काली दाढ़ी सहला रहा था।

"बैठ जाओ, साथियो," मेज़ की भाँति सामने पड़ी पत्थर की एक सिल की ओर स्त्रियों को ले जाते हुए शो-पीर ने शान्त स्वर में कहा, "खुदादाद, अपनी बहन को अपने पास बैठा लो। तुम भी बैठ जाओ, ज़ुबेदा। देखो, यह निस्सो बैठी है जो बेचैनी के साथ तुम्हारा इन्तज़ार कर रही थी।"

शो-पीर अपनी पहले वाली जगह पर खड़ा होगया और लोगों की ओर उसने मुँह किया। लोगों में एक भारी भनभनाहट फैल रही थी।

"सुनो नौरोज़बेक, अब मेरी बात सुनो!" शो-पीर ने सबल और सुस्पष्ट आवाज़ में कहा, "तुमने कहा था कि खुद स्त्रियों के मुँह से उनकी राय सुनो। ज़ीनत बगोर ने तीन चाँदों और खट्टे दूध के बारे में हमें बताया। वह बड़ी बूढ़ी और समझदार है। लेकिन यहां एक अन्य बड़ी बूढ़ी और समझदार स्त्री भी मौजूद है। गुलरीज़ के बारे में कौन नहीं जानता? गुलरीज हम इस बारे में विचार कर रहे हैं कि निस्सो का क्या किया जाए? तुम अपनी राय बताओ। हम सब ध्यान से सुनेंगे।"

"यह क्या बताएगी?" उछल कर, विकृत चेहरे से और अपने हाथों को बगल में दाबे हुए, मछली का कांटा ने कहा, "मैं भी स्त्री हूँ, और

अपनी बात कहना चाहती हूं । कुतिया है तुम्हारी यह निरसो । अपने पति को छोड़ कर भाग आई और अब दो मर्दों की पीठ पीछे अपने को छिपाना चाहती है । यह छिनाल है । हमारा इससे कोई वास्ता नहीं हो सकता । हम इसे यहां नहीं रहने दे सकते ।"

"ठीक है, हम इसे यहाँ नहीं रहने दे सकते !" यूसुफ ने चिल्ला कर कहा, "यह हमारी स्त्रियों को भी बिगाड़ देगी और वे अपने पतियों के बस में नहीं रहेंगी । हम कुत्ते नहीं हैं, अपनी पत्नियों के मालिक हैं । इसे अज़ीज़खान के पास वापिस भेज दो ।"

"इसे वापिस भेज दो ! इसे यहां से खदेड़ दो !" दर्रे के एक अन्य निवासी ने एक भेड़ के ऊपर लड़खड़ाकर गिरते हुए कहा जो उसकी टांगों के बीच घुस आई थी ।

"इसे पत्थर मार कर भगा दो ।"

ऐसा मालूम होता था कि भीड़ को काबू में रखना अब मुश्किल होगा । लेकिन तभी गुलरीज़ एक लड़की की भाँति लपक कर सामने आ गई ।

"भेड़ियों की भांति चिल्लाना बन्द करो !" उसने ऊंची आवाज़ में कहा, "मेरी, एक बूढ़ी स्त्री की, बात सुनो । सांप की तरह जीभ लपलपाने वालों की बातों पर कौन ध्यान देता है ? मछली का कांटा ने जो कुछ कहा, झूठ कहा । उसके दिमाग़ पर शैतान सवार है । निरसो को मर्दों ने नहीं, मैंने शरण दी है । मैंने उसे अपने घर में रखा है क्योंकि मेरे कोई लड़की नहीं थी और मैं एक बेटी अपने घर में चाहती थी । वह मेरे घर रहे, तब देखना कि कितनी अच्छी लड़की वह बनती है । अज़ीजखान ज़बर्दस्ती उसे अपनी पत्नी बनाना चाहता था, और वह कभी उसकी सच्ची पत्नी नहीं बनी । अब खानों का ज़माना नहीं रहा । हमारा राज्य खानों का राज्य नहीं है । अज़ीज़खान अब हम पर रौब नहीं गांठ सकता !"

नरसो ने जो निराशा और अपमान से अपना सिर नीचे झुकाए

थी, आँखें उठाकर गुलरीज़ की ओर देखा। गुलरीज़ अब दर्रे के निवासियों को खुद अपने कठोर जीवन के बारे में बता रही थी! सभी जानते थे कि गुलरीज़ ने अपने जीवन में कभी कोई बुरा काम नहीं किया। वे लोग भी जो बख्तियार के सख्त खिलाफ थे, गुलरीज़ की इज्जत करते थे। वे चुपचाप, बीच में कोई बाधा दिए बिना, गुलरीज़ की बात सुनते रहे।

गुलरीज़ के भाषण के बाद गहरी निस्तब्धता छा गई। मिरज़ाहूर को लगा कि मामला हाथ से निकला जा रहा है। केन्दितरी ने उसे रोकना चाहा, लेकिन वह रुका नहीं और बोलने के लिए खड़ा होगया।

"गुलरीज़ का भाषण एक बूढ़ी कोयल का राग था। हो सकता है कि वह तुम्हें अच्छा लगा हो, और शायद तुम चाहो कि खान की पत्नी यहीं रहे। यह भी हो सकता है कि हमारे सिरों पर खान का कहर न टूटे। मैं यहाँ का निवासी नहीं हूं। मैं यखबार का रहने वाला हूं। वहाँ का राज्य दूसरा है, यहां का दूसरा। लेकिन इससे लोगों की ईमानदारी में कोई फर्क नहीं पड़ता। तुम भूल गए कि खान ने निस्सो के लिए चालीस सिक्के दिए थे। अगर एक गाय किसी दूसरे गांव में भटक कर चली जाती है और उस गाँव वाले उसे वापिस नहीं करना चाहते तो गाय का मालिक क्या कहता है? वह कहता है, 'मुझे मेरी गाय का दाम दे दो, नहीं तो तुम चोर कहलाओगे।' क्या तुम यह कहलाना पसन्द करोगे कि सियातांम में सब चोर बसते हैं? मुझे चालीस सिक्के दे दो, मैं उन्हें अज़ीज़खान के पास पहुँचा दूँगा। तब कोई गड़बड़ नहीं होगी। बस, मुझे इतना ही कहना था।"

सौदागर के भाषण से लोगों में फिर एक बार भनभनाहट दौड़ गई। अज़ीज़खान को देने के लिए चालीस सिक्के वे कहाँ से लाएंगे?

नौरोज़बेक फिर उठ कर खड़ा होगया।

"बहुमत से फैसला होगा। अपने-अपने हाथ उठाओ। अब हाथों की

गिनती होगी ।"

"हाँ, अब हाथों की गिनती होनी चाहिए ।" किसी ने भीड़ में से चिल्ला कर कहा ।

सहसा केन्दितरी खड़ा हो गया। वह अब तक इतना चुपचाप बैठा था कि किसी का उसकी ओर ध्यान नहीं गया था। बूढ़े लोग वह सब कुछ कह चुके थे जो कि वह चाहता था और जो कि वह उनके मुँह से कहलाना चाहता था। लेकिन उसे किसी दूसरे ही नतीजे पर पहुँचना था। सियातांग के लोगों से उसे कोई वास्ता नहीं था। उसके लिए वे जैसे शतरंज के मोहरे थे और निस्सो शतरंज के इस खेल की मुख्य आधार थी। वह अगर हाथ से निकल गई तो सारा खेल ही खत्म हो जायगा।

भारी विश्वास के साथ वह उठा और शान्त स्वर में उसने कहा : "मैं बोलना चाहता हूँ ।"

सब चुप हो गए। केन्दितरी आगे बढ़ा, शो-पीर की ओर मुसकरा कर उसने देखा और फिर कहना शुरू किया :

"मैं एक मामूली आदमी हूँ। पहले मैं महा नदी के उस पार रहता था, लेकिन अब खुदा के फज़ल से तुम लोगों के बीच रहता हूँ। मिरज़ाहूर की कृपा से मैं कभी-कभी उस देश में भी हो आता हूँ। मिरज़ाहूर अपनी दुकान के काम से मुझे भेजता है। बड़े आदमियों की बात सुनने में छोटे आदमियों को बड़ा सुख मिलता है। मिल्कियत की दृष्टि से अज़ीज़खान बहुत बड़ा आदमी है, और उसे लेकर जिन बातों पर यहां बहस हुई है वे भी बड़ी हैं। कहा गया है कि अपनी पत्नी बनाने के लिए अज़ीज़खान ने एक युवती खरीदी थी जिसके साथ वह रहता था। वह पत्नी फूल की पंखुरी के समान थी। लेकिन स्त्री की तुलना एक तालाब से दी जा सकती है जिसका पानी निश्चल रहता है और जो अपनी सीमाओं के भीतर रहने पर आकाश की निर्मलता को प्रतिबिम्बित करती है। लेकिन जब सीमाएँ टूट जाती हैं तो पानी वेग से बह निकलता है, चट्टानों से टकराता है और उसकी शान्ति विलीन हो जाती है :

उसे कोई रास्ता नहीं सूझता, सिवा उस ढलवान के जिसकी ओर अबाध गति से बहने के लिए वह मजबूर होता है। जहां भी जमीन नीची होती है, उसी ओर वह लपकता है, निरन्तर नीचे की ओर !

"अजीज़ खान ने अपने घर के दरवाजे बन्द नहीं रखे, और उसकी पत्नी भाग निकली। वह अब यहाँ है। तुम सब उसे देख सकते हो। कुछ लोगों ने कहा कि अगर यह स्त्री यहां रही तो सूरज का चमकना बंद हो जायगा। क्या दुनियाँ की सारी बागडोर इस स्त्री के हाथ में है ? आखिर यह स्त्री है क्या ? अपने पति के साथ विश्वासघात करने वाली एक कुलटा। क्या तुम समझते हो कि दुनियाँ में एक यही है जिसने अपने पति के साथ विश्वासघात किया है ? नहीं, ऐसी स्त्रियों की संख्या कुछ कम नहीं है, और उनकी वजह से घास की एक पत्ती भी कभी काली नहीं पड़ती। काज़ी नौरोज़ बेक की बात गलत थी। रेत के ज़र्रे को वह पहाड़ समझ बैठे। और बोबोकलां की बात भी गलत थी। गुलरीज़ ने कहा कि वह निस्सो को अपनी बेटी बनाना चाहती है। वृद्धा को घर के काम-काज के लिए एक साथी की जरूरत है। क्या यह बुरी बात है ? नहीं, हम इस पर आपत्ति नहीं कर सकते स्त्री चाहे जहाँ अकेली रह सकती है। सोवियत कानून किसी स्त्री के अकेले रहने पर रोक नहीं लगाता। वह यहाँ रहे और काम करे। उसे भी ज़मीन दी जाए। अगर वह चाहे तो उसमें गेहूँ बोए। मिरज़ाहूर ने कहा कि हमें अज़ीज खान को चालीस सिक्के अदा करने चाहिएं। मानो अज़ीज़ खान अब भी उस स्त्री को चाहता है जो उसकी इज्जत पर बट्टा लगा कर भाग आई ! नहीं, ऐसी पत्नी के मुँह पर वह थूकता है। उसने एक दूसरी, निस्सो से भी अधिक सुन्दर, पत्नी खरीद ली है जिसके लिए उसने चार सौ सिक्के दिए हैं। अज़ीज़ खान धनी और शक्तिशाली है। वह अपने लिए हर रोज नयी पत्नियां खरीद सकता है। क्या वह तुम्हारे चालीस सिक्कों की परवाह करता है ? चालीस सिक्के तो वह अपने गधे पर न्यो-छावर कर सकता है, किसी भिखारी गायक की झोली में डाल सकता

है। फिर चालीस सिक्के होते भी क्या हैं ? इन्हें तो खुद निस्सो भी अदा कर सकती है ? वह इस कर्ज को खुद अपने जिम्मे ले सकती है। क्या कोई ऐसा भी है जिसके सिर पर कर्ज नहीं है ? क्या तुम सब मिरज़ाहूर के कर्जदार नहीं हो ? और क्या तुम सब अपने-आप को चोर समझते हो—सिर्फ़ इसलिए कि तुम अब तक अपना कर्ज़ अदा नहीं कर सके हो। मिरज़ाहूर का सब पर विश्वास है। कर्ज़ देना उसका धंधा है। अभी निस्सो को भी उसने नए कपड़े उधार दिए हैं। देखते हो न, यही कपड़े जो वह यहाँ पहने बैठी है। मिरजाहूर का कर्ज़ अदा करने के लिए वह मोजे बुन रही है। दो साल के भीतर वह मिरजाहूर का और अज़ीज खान का सारा कर्ज अदा कर देगी। खुद मेरी ओर देखो। एक भिखारी की भांति मैं आया था। लेकिन मिरजाहूर की बदौलत अब मेरे पास सब कुछ है। वह जानता था कि यहां जो भी आता है, वह फिर वापिस नहीं जाता। मैं भी नहीं गया, और मैंने अपना सारा कर्ज़ अदा कर दिया। और तुममें से कौन है जो सौदागर का कर्ज़ अदा करना नहीं चाहता ? क्या हम ईमानदार नहीं हैं ? लेकिन एक बात मैं बता दूँ। मिरज़ाहूर नाराज़ है कि उसकी दुकान अब नहीं चलती। उसने मुझसे यहाँ तक कहा है कि अगर यही हाल रहा तो वह किसी दूसरी जगह चला जायगा। अगर वह यहां से जाने लगा तो वह समूचा कर्ज तुरंत अदा करने की मांग करेगा। मैं पूछता हूँ, तुममें से कौन इस स्थिति में है कि अपना कर्ज तुरंत अदा करदे ?"

केन्दितरी चुप हो गया। दर्रे के निवासी भी चुप थे। केन्दितरी ने निस्सो का पक्ष लिया था। यह अचरज की बात थी। शो-पीर की समझ में नहीं आया कि उसने ऐसा क्यों किया ?

केन्दितरी अब शो-पीर की ओर मुड़कर देख रहा था। उसके पीले दाँत मुसकरा रहे थे।

"शो-पीर, तुम चाहते थे कि लोग हाथ उठा कर अपनी राय प्रकट करें। सबसे पहले मैं अपना हाथ उठाता हूँ कि निस्सो यहाँ रहे।

मेरे साथ और कौन-कौन हाथ उठाता है ?"

केन्दितरी ने लोगों की ओर देखा। सबसे पहले नौरोज़बेक ने अपना हाथ उठाया। बड़े बूढ़ों ने अचरज से उस पर नज़र डाली, और उसकी गरदन का इशारा पाकर अपने हाथ भी उठा लिए। गुलरीज ने अपना हाथ उठाया, उसके बाद बगोर ने, और फिर चरागाह से लौटी अन्य स्त्रियों ने। उन लोगों ने भी अपने हाथ उठाए जिन्हें उस दिन जमीन मिली थी। शो-पीर को एकाएक अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हुआ। उसने देखा कि बहुमत निस्सो के पक्ष में है।

बोबोकलां उठ खड़ा हुआ और धरती पर नजर गड़ाए सभा से विदा हो गया। मिरज़ाहूर अभी भी अपनी दाढ़ी सहला रहा था, और चुपचाप बैठा था।

निस्सो सीधी खड़ी थी, और उसके कपोलों पर लाली दमक रही थी।

शो-पीर खुश था कि फैसला निस्सो के पक्ष में हुआ। लेकिन अपने से वह नाराज़ था। उसकी आँखों के सामने एक ऐसी बात हो गई थी जो उसकी समझ में नहीं आरही थी। जो भी हो, एक बात साफ थी। वह यह कि यहाँ के बड़े बूढ़ों और मजहबी लोगों पर केन्दितरी का प्रभाव अत्यधिक है। वे आँखें मूँद कर इस फटे हाल नाई का अनुसरण करते हैं। यह केन्दितरी कौन है? उसकी इस शक्ति का रहस्य क्या है? किस तरह के और कैसे इरादे वह अपने हृदय में छिपाए है?

सातवां परिच्छेद

[१]

इस में कोई सन्देह नहीं कि अगर बख्तियार होता तो काम जलदी निबट जाता। लेकिन बख्तियार इस समय सियातांग में था नहीं। निस्सो ने पहिले कभी पत्थर की दीवार नहीं बनाई थी। अगर वह अकेली ही काम करती होती तो दीवार साझ तक उसके कंधों जितनी ऊँची भी न हो पाती। सौभाग्य से शो-पीर भी आ गया और उसे मदद देने लगा। काम अब तेजी से चलने लगा। जिन पत्थरों की ओर शो-पीर इशारा करता उन्हें निस्सो उठा लाती और वह उन्हें दीवार में चुनता जाता।

"अब यह लाऊं ?" निस्सो ने पूछा।

शो-पीर ने घूम कर देखा। बोला, "नहीं, यह नहीं, वह दूसरा !"

काम के साथ-साथ दोनों बातें भी करते जाते थे।

"शो-पीर, अगर तुम्हारे देश में लोग अपने लिए स्त्रियां नहीं खरीदते तो फिर क्या करते हैं ?"

"बहुत सीधा उपाय वे करते हैं। अगर कोई पुरुष किसी स्त्री से प्रेम करता है तो वह उससे कहता, 'मैं तुम से प्रेम करता हूं।' अगर वह जवाब में यह कहती है कि मैं भी तुम से प्रेम करती हूं' तो वे दोनों विवाह कर लेते हैं।"

"बस, और कुछ नहीं !"

"और क्या करते ?" शो-पीर ने मुस्करा कर कहा, "वे विवाह कर लेते हैं; और एक रजिस्टर में लिखते हैं कि हम पति और पत्नी हैं। बस !"

"वे खुद अपने हाथ से लिखते हैं...देखो, यह पत्थर ठीक है न ?"

"हाँ, बहुत ठीक। उठा कर ले आओ। निश्चय ही वे खुद अपने हाथ से लिखते हैं, और नीचे अपने दस्तखत कर देते हैं। जब तुम्हारा विवाह होगा तो तुम भी अपने दस्तखत करोगी।"

निस्सो चुप हो गई। केवल पत्थरों के टकराने की आवाज़ सुनाई देती थी।

"नहीं, मैं कभी विवाह नहीं करूंगी !" निस्सो ने दृढ़ स्वर में कहा।

"क्यों ?"

"मुझ से कोई प्रेम नहीं कर सकता। मैं बहुत बुरी हूँ। मेरी वजह से सूरज का चमकना बन्द हो सकता है..."

"क्या यही सब तुम सोचती रहती हो, निस्सो ?"

निस्सो की भौहों में बल पड़ गए। लेकिन वह कुछ बोली नहीं।

"बोलती क्यों नहीं, निस्सो ? क्या सचमुच तुम अपने को इतना बुरा समझती हो ?"

"हाँ, शो-पीर, मैं सचमुच में बुरी हूं।"

"सचमुच में बुरी हो...ज़रा बताओ तो सही, किस के साथ क्या बुराई की है तुम ने ? क्या तुम ने किसी की जान ली है ? क्या तुमने कभी चोरी की है—या तुम सुबह से सांझ तक झूठ बोलती रहती हो ?"

"मैं नहीं जानती, शो-पीर...नहीं...लेकिन मेरी बात सुनो, मैं तुम्हें सच बात बताऊंगी...सचमुच, मैं किसी की हत्या करना चाहती हूँ ....इस तरह...छुरे से... !"

"ओह, कौन है वह ? देखो, वह पत्थर उठा कर मुझे दो। कहीं तुम मुझे तो नहीं मारना चाहती ?"

"तुम्हें ? नहीं शो-पीर, तुम्हें नहीं," निस्सो ने कुछ इतनी भयभीत दृष्टि से देखा कि शो-पीर अचकचा गया।

"तुम्हारे मुंह से ऐसी बात निकली ही कैसे ? मैं तो तुम्हें..."

निस्सो के मुंह से वे शब्द निकला ही चाहते थे जिन्हें कि वह कभी प्रकट नहीं होने देना चाहती थी। तुरन्त अपने को संभाल कर बोली, "तुम्हें भला मैं क्यों मारना चाहूंगी ?"

"तो फिर किसे ?"

निस्सो ने उस पत्थर को फिर से ढेर पर फेंक दिया जिसे उसने अभी-अभी उठाया था, और शो-पीर के निकट आ गई। उसके चेहरे का परिवर्तन देख कर शो-पीर चकित रह गया।

"वह अजीजखान है जिसकी मैं हत्या करना चाहती हूँ," उसने धीमे किन्तु दो टूक शब्दों में कहा, "और उन सब लोगों की जो मेरे खिलाफ हैं ?"

"बस-बस, निस्सो !" सिवा इसके शो-पीर से और कुछ कहते नहीं बना "देखो न, अभी कितना काम और बाकी है ?"

निस्सो ने फिर पत्थर पकड़ाना शुरू कर दिया। दीवार अब शो-पीर के कंधों तक पहुंच गई थी; और पत्थर चुनने के लिए अब उसे अपने हाथों को सिर से ऊपर तक उठाना पड़ता था। इस असुविधा को दूर करने के लिए उसने दीवार से सटा कर कुछ बड़े पत्थर रख लिए, जिन पर खड़े होकर काम किया जा सके।

"नहीं निस्सो," आखिर शो-पीर ने कहा, "तुम जरा भी बुरी नहीं हो। और सब से अच्छी बात तो यह है कि तुम सुस्त नहीं हो। तुम कभी हाथ-पर-हाथ रखकर नहीं बैठतीं, और गुलरीज तुम से बहुत खुश है। तुम सारे काम में उसका हाथ बंटाती हो।"

"हाँ, मैं काम में उसका हाथ बंटाती हूं। वह अकेली है। तुम गांव के काम में व्यस्त रहते हो, बख्तियार बाहर गया है। लेकिन यह तो बताओ, शो-पीर, बख्तियार के आने में इतनी देर क्यों लग रही है ?"

"क्यों, उसके बिना क्या तुम्हे सूना लगता है ?"

"नहीं, बल्कि गुलरीज़ परेशान होती है कि न जाने क्यों, वह अब तक नहीं लौटा ?"

"अभी कारवाँ बोलोस्त नहीं पहुंचा होगा। मेरा ख्याल है कि वह कारवाँ का इन्तज़ार कर रहा होगा।"

"शो-पीर..."

"हां।"

"एक बात मेरी समझ में नहीं आती। बताओगे?"

"कहो।"

"मेरी समझ में नहीं आता कि यहाँ सब लोग भूख का रोना क्यों रोते हैं? कल जब तुम घर पर नहीं थे तो ज़ुबेदा आई थी। वह भी भूख का रोना रोती थी। वह भूखी क्यों रहती है? यहां सेब हैं, बेर हैं, दूध है। क्या ये चीजें कुछ कम हैं? मैं जब दोआब में रहती थी तो हम सब घास उबाल कर अपना पेट भरते थे, और इसी को बहुत कुछ समझते थे। सियातांग के लोगों का तो जैसे कभी पेट ही नहीं भरता। मुझे तो लगता है कि यहां का जीवन बहुत अच्छा है..."

"हाँ, यहां जीवन बहुत अच्छा है," शो-पीर ने धीमे स्वर में कहा, और उसकी आँखों में मटर का वह दलिया घूम गया जिससे पेट तो भर जाता था लेकिन...

"हाँ, यहाँ जीवन बहुत अच्छा है, निस्सो!" शो-पीर ने अपनी बात को दोहराते हुए कहा, "लेकिन जब बख्तियार आटा लेकर आएगा तो और भी अच्छा हो जाएगा। तुम्हें याद होगा, एक बार मैंने तुम से पूछा था कि तुम दोआब क्यों नहीं लौटना चाहती?"

"मैं वहाँ क्यों जाऊँ? वहाँ के लोग मुझे पराये मालूम होते हैं।"

"लेकिन तुम तो वहाँ पैदा हुई थी न?"

"वहाँ सभी ने मेरे साथ बुरा बरताव किया। मेरी मौसी ने मुझे अजीजखान के हाथ बेच दिया।"

"क्या यखबार में भी तुम्हें सब लोग पराये मालूम होते थे?"

"हाँ।'

"और यहाँ ?"

"यहाँ ? पहले तो मैं समझती थी कि यहाँ के लोग भी वैसे ही होंगे..."

"लेकिन अब ?"

"यहाँ बख्तियार है, गुलरीज है, और तुम हो...और फिर जुबैदा है, शोखबगोर है...नहीं, यहाँ के लोग पराये नहीं हैं।"

"नहीं निस्सो, पराये लोग यहाँ भी हैं। मिसाल के लिए मुझे ही लो, मैं रूसी हूँ..."

"हँसी न करो, तुम तो अपने ही आदमी हो।"

"और 'अपना' कौन नहीं है ?"

"अजीज़खान अपना नहीं है, नौरंज़बेक अपना नहीं है, बोबो कलां अपना नहीं है, और 'मछली का कांटा'...वे सब लोग जो मेरा बुरा चाहते हैं, अपने नहीं हैं।"

शो-पीर मुसकरा दिया और दीवार पर अगला पत्थर चुनना भूल गया।

"और सबके बारे में तो मैं तुम्हारी बात मानता हूँ, लेकिन 'मछली का कांटा' के बारे में नहीं। वह तुम्हारे अपने आदमियों में से है।"

"वह ? क्या तुम भूल गए कि उसने मेरे बारे में क्या-क्या कहा था ?"

"उसने बहुत-सी मूर्खतापूर्ण बातें कही थीं। लेकिन उन सब बातों को तुम एक दिन भूल जाओगी।"

"कभी नहीं," निस्सो ने गुस्से में भरकर कहा, "अगर वह अपनी हो सकती है तो फिर पराया किसे कहेंगे ? तुम कुछ नहीं जानते, शो-पीर ? न वह तुम्हें पसन्द करती है, न बख्तियार को। जाते समय उसने बख्तियार को अपना गधा देने से इन्कार कर दिया।"

"गधा देने से इन्कार कर दिया था ? यह तुम क्या कहती हो, निस्सो ? क्या गधा उसके पास नहीं है ?"

"मैं कहती न थी कि तुम्हें कुछ मालूम नहीं। तुम्हें याद है कि गधे जमा करने के लिए बख्तियार गाँव में सबके पास गया था। तुम तब नहर पर थे। मैं बख्तियार के साथ गई थी। लेकिन 'मछली का काँटा' ने अपना गधा नहीं दिया। काराशिर अफीम के नशे में धुत्त पड़ा था। जब हम उसके घर पहुँचे तो 'मछली का कांटा' ने हमें अपने घर टिकने तक नहीं दिया। कहा कि जाओ यहाँ से, मैं अपना गधा नहीं दूँगी। बख्तियार उसे कोसता हुआ लौट आया।"

"लेकिन बख्तियार ने मुझसे इसका जिक्र तक नहीं किया?"

"मैं क्या जानूँ! तुमने हमसे पच्चीस गधे बटोरने के लिए कहा था। हम केवल चौबीस ही बटोर पाए। 'मछली का कांटा' के बाद हम शेख बगोर के यहाँ गए। उसके भाई खुदादाद ने हमें पच्चीसवां गधा दिया। वह भी अच्छा आदमी है। लेकिन 'मछली का कांटा' तो नागिन है। मुझे उससे घृणा है।"

'मछली का कांटा' के बारे में फिर किसी दिन बात करेंगे। अभी तो काम पूरा करना है। अब तुम दीवार पर चढ़ जाओ। मेरा हाथ वहाँ तक नहीं पहुँचता। मैं तुम्हें पत्थर पकड़ाता जाऊँगा, तुम उन्हें चुनती जाना। अगर मैं चढ़ूँगा तो सारी दीवार ढह जाएगी।"

शो-पीर ने उसे पकड़ कर उठाया और अनायास ही उसके बदन के दबाव का, उसकी शक्ति और चपलता का, पहली बार उसने अनुभव किया। अगले ही क्षण निस्सो दीवार पर पहुँच गई। शो-पीर ने सिर उठा कर देखा। उसकी आँखों में हँसी चमक रही थी।

"शैतान कहीं की!" शोपीर ने मन-ही-मन कहा और पत्थर उठा-उठा कर उसे देने लगा।

दीवार अब शोपीर के सिर से भी ऊँची होगई थी।

(२)

सौदागर को अपना गधा देने के बाद काराशिर अफीम के नशे में इतना धुत्त हो गया कि उसे तीन दिन तक होश नहीं रहा। वह एक

दूसरे ही लोक में पहुँच गया था। उसे ऐसा मालूम होता था मानो वह एक नदी के बीच में चल रहा हो जिसका सुनहरा पानी उसके कन्धों को छूता था। पानी ने उस में अद्भुत स्फूर्ति पैदा कर दी थी। जब वह अपनी बाँहों को तेज़ी से फैलाता था तो पानी की सुनहरी लहरियां पीछे हटती चली जाती थीं। हर कदम पर उसे एक नयी दुनियाँ दिखाई देती थी। इस समय वह पादरदर्शी उन्नाबी पहाड़ों के देश में था। काराशिर को ऐसा मालूम हुआ जैसे इन पहाड़ों में रहने वाली स्त्रियाँ उन्नाबी धुँध में तैर रही हों, ठीक वैसे ही जैसे किसी झील की गहराई में मछलियाँ तैरती हैं। वे उसकी झलक पाने के लिए तट की ओर बढ़ी आ रही थीं। उसने उनके निकट पहुँचने की कोशिश की। लेकिन जितना ही वह किनारे के निकट पहुँचता था, पानी उतना ही घना होता जाता था, यहाँ तक कि काराशिर के पाँव आगे नहीं बढ़ सके। वह तेज़ी से मुड़ कर फिर नदी के बीच की ओर चल दिया, और किनारे पर ही खड़ी स्त्रियाँ खिलखिला कर उसकी हँसी उड़ाने लगीं... अब वह एक ऐसे देश में था जहाँ के पहाड़ों पर चटक रंग के कालीन बिछे थे। वह इन पहाड़ों की ओर बढ़ा, और उसने देखा कि नदी-तट उबले हुए चावलों का बना है। तट पर और कोई नज़र नहीं आता था, और ऐसा मालूम होता था मानो ये चावल केवल उसी के लिए तैयार किए गए हों। ज़रा-सा हाथ बढ़ाने पर ही वह जी भर कर चावल खा सकता था। लेकिन तभी पहाड़ों पर बिछे कालीनों पर हरे रंग के चूहों की चहल-पहल दिखाई देने लगी, और उन्होंने चावलों को चट करना शुरू कर दिया। अनगिनती चूहों के चटकारों तथा चावल चबाने की आवाज़ आ रही थी। भयभीत काराशिर फिर नदी के बीच धारा के तेज़ बहाव में पहुँच गया। एक के बाद एक नयी दुनियाँ उसकी आँखों के सामने आती थी, भारी आशा और फिर गहरी निराशा का उसके हृदय में संचार होता था, कभी वह खुशी से खिलखिलाता था और कभी भय से चीख उठता था। केवल तीसरे दिन वह इस सुनहरी नदी के आल-जाल

से मुक्त हुआ जिसका पानी सहसा रंगविहीन और अत्यधिक ठंडा होगया, उस पानी की भाँति जिसे उसकी पत्नी 'मछली का कांटा' ने उसकी चिल्लाहट और बड़बड़ाने से तंग आकर उसके सिर पर तीन बार घड़े से पानी उंडेला था।

कुछ होश आने पर काराशिर ने आँखें खोल कर देखा। 'मछली का कांटा' फर्श पर बैठी शहतूत का आटा पीस रही थी। उसके चारों ओर आठ बच्चे खड़े थे, और माँ से शहतूत का मीठा आटा पाने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

"थोड़ा-सा मुझे भी देना," काराशिर ने फुसफुसा कर कहा और घने बालों वाला अपना हाथ फैला दिया।

"सो तुम होश में आ गए!" उसका हाथ दूर धकेलते हुए 'मछली का कांटा' ने दांत भींच कर कहा, "लेकिन तुम तो आटा लेने गए थे न? बोलो, कहां है वह आटा?"

"तुम पागल तो नहीं हो? कैसा आटा? और तुम्हारी आंखों के सामने यह क्या धरा है?"

"यह नहीं, कुत्ते! मैं गेहूँ के आटे के बारे में पूछती हूँ। क्या इसी तरह पड़ रहोगे? उठ कर खड़े क्यों नहीं होते?" 'मछली का कांटा' ने कहा और काराशिर के एक ऐसा धौल जमाया कि वह पत्थर के चौंतरे से नीचे आ गिरा, "तीन दिन हो गए इस तरह उल्टा पड़े हुए!"

काराशिर चौंतरे की टेक लगा कर फर्श पर बैठ गया। उसकी कुछ समझ में नहीं आ रहा था और उसका सिर बुरी तरह दर्द कर रहा था।

मछली का कांटा ने उसके सिर पर एक और धौल जमाया और गुस्से में भर कर बोली, "गधा कहाँ छोड़ आए? हमारा गधा कहाँ है? मैं पूछती हूँ, कहाँ है हमारा गधा?"

"गधा......?"

हाँ, अब उसे याद आया। वह अपने गधे को लेकर नयी जमीन की

ओर जा रहा था। किस लिए? सिंचाई की नाली पत्थरों के बीच से कई जगह पर चूती थी न? सो दराज भरने के लिए उसे मिट्टी लानी थी। जब सौदागर की दूकान के सामने पहुँचा तो उसे मिरजाहूर की आवाज सुनाई दी, वह उसे बुला रहा था। वह उसकी बात सुनना नहीं चाहता था, लेकिन उसने दूसरी बार पुकारा, सो वह रुक गया, और तभी उसका गधा उसके हाथ से जाता रहा। सौदागर ने कहा कि मेरा कर्ज़ तुरन्त अदा करो, नहीं तो मैं गधा नहीं दूँगा। काराशिर उससे झगड़ने लगा। तब वह बोला कि अगर मुझे अपना गधा दे दोगे तो मैं तुम्हें पूरा एक थैला-भर कर आटा उधार दे दूँगा। कुछ ही देर पहले काराशिर और 'मछली का काँटा' में झड़प हो चुकी थी। वह कहती थी कि काराशिर अनाज को पिसा लाए। काराशिर ने कहा कि यह नहीं हो सकता। सभा में तय हुआ है कि अनाज को कोई हाथ न लगाए। शो-पीर ने यह कहा, फिर बख्तियार ने भी यही कहा और सबने इसे मंजूर किया। अगर अनाज पिसा लेंगे तो फिर बोएंगे क्या?

सौदागर देर तक काराशिर को समझाता रहा। इसके बाद न जाने कैसे क्या हुआ कि काराशिर अपने हाथों में अफीम की एक थैली लिए खड़ा था और सौदागर के हाथों में उसका गधा था। काराशिर ने कहा कि आटे का थैला लाद कर घर ले जाने के लिए ही गधा दे दो, लेकिन उसने कहा कि दिन में आटा ले जाना ठीक नहीं होगा, रात को आना। सो वह अपना गधा वहीं छोड़ घर लौट आया। 'मछली का काँटा' से उसने सारी बात बतादी और कहा कि रात को दोनों चलेंगे और आटा ले आएंगे।

इसके बाद......?

इसके बाद जो हुआ वह उसे कुछ याद नहीं था।

"क्या तुम मिरजाहूर के पास आटा लेने गई थी?" काराशिर ने अपने दुखते हुए माथे को सहलाते हुए पूछा।

"हाँ, गई थी?"

"आटा कहाँ है ?"

"यह तो तुम अपने कर्मों से पूछो कि आटा कहाँ है। उसने मुझे कोई आटा नहीं दिया। कहने लगा, तुम्हारा आटा मेरे पास है। उसे कोई हाथ नहीं लगाएगा। अभी तुम्हारे पास अपना अनाज है। उससे काम चलाओ। जब वह चुक जाएगा तो आटा ले जाना।"

"लेकिन तुमने उसे बताया नहीं कि...."

"मैंने उससे कहा कि अनाज चुक जाएगा तो बसन्त में क्या बोएंगे ? बोला, बसन्त की बोवाई के लिए मैं तुम्हें पाँच साल से अनाज देता आ रहा हूँ, क्या तुम समझती हो कि इस साल नहीं दूँगा ?"

"बड़ा दाता है न," काराशिर ने कहा, "यह उसी के अनाज की तो बरकत है जो आज हमारे पास पिसाने के लिए कुछ नहीं है !"

"चुप रहो। तुम निरे मूर्ख हो। वह ठीक कहता है। मैं भूखी नहीं मर सकती। मैं केवल तुम्हारे सिर से अफीम का भूत उतरने की प्रतीक्षा कर रही थी। आज रात को हम अपना अनाज लेकर पनचक्की पर पिसाने जाएंगे।"

"मज़ाक न करो," काराशिर ने कहा, "जो तय हो चुका है, मैं उसके खिलाफ नहीं जाऊँगा !"

"तुम्हें जाना पड़ेगा।"

"मैं नहीं जाऊँगा !"

"जाओगे कैसे नहीं ?" 'मछली का काँटा' ने फुंकारते हुए कहा, "मैं बहुत बरदाश्त कर चुकी। बख्तियार को इसी डर से मैंने गधा नहीं दिया था कि उसे कहीं कुछ हो न जाए। लेकिन तुम उसे सौदागर को दे आए, और हमारा गधा हमेशा के लिए हाथ से निकल गया। अब तुमने ज़ुबान खोली तो......"

'मछली का काँटा' ने अपने नाखून काराशिर की कनपटी में गड़ा दिए,

"बोलो, मेरे साथ पनचक्की पर चलोगे या नहीं ?"

काराशिर ने कोई जवाब नहीं दिया, और अपना कान छुड़ाने का प्रयत्न करने लगा। 'मछली का काँटा' ने उसके गाल पर एक थप्पड़ जमाया और फिर एक के बाद एक धौल बरसाने लगी। आखिर काराशिर ने अपने को मुक्त कर लिया, और बेसुध-सा जान बचा कर भागा। भागते समय छोटी लड़की के हाथ पर उसका पाँव पड़ गया। लड़की चीख मार कर रो उठी।

'मछली का काँटा,' फिलहाल काराशिर को भूल, लड़की को चुप कराने लगी। पनचक्की पर तो रात के अँधेरे में जाना था!

: ३ :

सुबह ठंड के मारे शोपीर की आँखें खुल गईं। उसने रजाई उतार दी और सिर बाहर निकाल कर देखा। पहाड़ बर्फ से ढंके थे। गाँव में अभी बर्फ नहीं गिरी थी, लेकिन पीले पड़े और मुरझाए पेड़ हवा में काँप रहे थे। उनके पत्ते हवा के प्रत्येक झोंके के साथ चक्कर काटते हुए नदी, घरों और बस्ती के चारों ओर ढलुवानों के ऊपर आकाश में उड़ जाते थे।

शो-पीर को सबसे पहले बख्तियार और खुदादाद की चिन्ता हुई। स्थिति गम्भीर होती जा रही थी। अगर वे अभी तक वोलोस्त में बैठे कारवां की इन्तज़ार ही कर रहे हैं, तब तो आटा मिलने की कोई आशा नहीं करनी चाहिए। अगर वे सामान लाद कर चल दिए हैं और बर्फ की आँधी ने उन्हें घेर लिया है तो उनके लिए आगे बढ़ना मुश्किल होगा और उनकी मदद के लिए आदमी रवाना करने पड़ेंगे। लेकिन यह कैसे पता चले कि बख्तियार और खुदादाद इस समय हैं कहाँ? जो हो एक बात निश्चित थी। वह यह कि अगर वे बर्फ की आँधी में फंस गए होंगे तो बख्तियार सामान,—लदे गधों को अकेला नहीं छोड़ेगा, और खुदादाद को मदद के लिए गाँव भेजेगा। लेकिन शो-पीर अब

इन्तज़ार नहीं कर सकता था। यह ज़रूरी था कि उनका पता लगाने या तो वह खुद जाए या किसी और को भेजे।

शो-पीर ने रज़ाई उतार कर अलग रख दी और ठंड से काँपता हुआ कपड़े पहनने लगा। बरांडे में गुलरीज़ पर उसकी नज़र पड़ी। वह चूल्हे पर झुकी आग जला रही थी। शो-पीर की आहट पाकर उसने सिर उठाया और चिन्तित स्वर में पूछा, "जाड़े आ गए शो-पीर, लेकिन बख्तियार का अभी तक कुछ पता नहीं ?"

"वह शीघ्र ही आ जाएगा," अपनी आशंका को छिपाते हुए शो-पीर ने कहा "मेरा ख्याल है, वह रास्ते में ही होगा। तुम चिंता न करो। मैं जरा बाहर जा रहा हूँ।"

शो-पीर के चले जाने के बाद गुलरीज़ बख्तियार के बारे में सोचने लगी। उसकी इन्तज़ार करते-करते गुलरीज़ का हृदय पक गया था, और आज वह विशेष रूप में चिन्तित थी। रास्ता बन्द हो गया था, और पहाड़ बर्फ से ढके थे। कितनी भयानक थी यह बर्फ !

अपना जी बहलाने के लिए गुलरीज़ बुनाई का अपना काम लेकर बैठ गई। जाड़ों में पहनने के लिए निस्सो के पास कुछ नहीं था। सो वह उसके लिए जाकेट बुन रही थी। सहसा दूर से किसी गधे के हिनहिनाने की आवाज़ सुन कर वह चौंक उठी।

गुलरीज़ ने बुनाई का अपना काम अलग रख दिया, और आँखों के ऊपर अपने हाथ की ओट कर पथ की ओर देखने लगी। धीरे-धीरे उसे अपने बेटे की आकृति, और उसका आकार-प्रकार, स्पष्ट होता दिखाई दिया। उसका हृदय जोरों से धड़कने लगा। वह एक गधे के पीछे-पीछे, उसे हाँकता हुआ, आ रहा था। वह कुछ लंगड़ा भी रहा था। आखिर वह लंगड़ा क्यों रहा है ? लेकिन यह कुछ नहीं। सबसे बड़ी बात यह कि वह जीता-जागता घर आ रहा था। उसके पीछे खुदादाद था। लेकिन वह तीसरा व्यक्ति कौन था जो खुदादाद के बराबर में

गधे पर सवार था ? वह किसी दूसरे देश के कपड़े पहने था । जो भी हो, यहाँ बैठ कर अटकल लगाने से क्या फायदा ?

गुलरीज के होठों पर मुस्कराहट खेलने लगी ।

वह अब काफ़ी नजदीक आ गया था । "एश-एश" की आवाज़ के साथ वह गधों को हाँक रहा था, और पत्थरों पर गधों के खुरों की चाप सुनाई पड़ रही थी । उसने अपनी तुबेतका में एक सफेद फूल खोंस रखा था । जाड़े के इन दिनों में यह सफेद फूल उसे कहां मिला ? लेकिन वह बहुत ज्यादा लंगड़ा रहा था । वह किसी दुर्घटना काशिकार तो नहीं हो गया ? रास्ता भी बहुत लम्बा है । चलते-चलते थक गया होगा ।

"खुश तो हो, माँ !" बख्तियार ने माँ का अभिवादन करते और आँगन में गधों को रोकते हुए प्रसन्नता से चिल्लाकर कहा, "और सब भी अच्छी तरह हैं न ?"

गुलरीज ने जल्दी से एक नज़र अजनबी पर डाली जो गधे पर सवार था । वह रूसी बूट, हरे रंग की बिरजिस, भेड़ की खाल की कीमती जाकेट और कनटोप पहने था । गुलरीज ने ऐसी वेश-भूषा पहले कभी नहीं देखी थी । क्या वह रूसी है ? लेकिन जिसे वह पुरुष समझे थी, असल में वह एक लड़की था । कनटोप के नीचे उसके लम्बे बाल दिखाई दे रहे थे । थकी हुई सी वह गधे से खिसक कर नीचे आ गई, और अपना सामान उतारने लगी ।

"हाँ बख्तियार, सब ठीक है," गुलरीज ने कहा और कांपती हुई उंगलियों से सामान के चारों ओर बंधी रस्सियाँ खोलने में मदद करने लगी । ईर्ष्या के साथ उसने सोचा, "बख्तियार इस लड़की को अपने साथ क्यों लाया है ? कौन है यह ? लेकिन यह रूसी लड़की है । हो सकता है कि शो-पीर के लिए आई हो । और यह बात ठीक भी मालूम होती है, बहुत ठीक !"

गुलरीज़ की नज़र बख्तियार के पांवों पर गई। उसके जूते लिथड़ा हो गए थे, और पांव के पंजों को उसने कपड़ा लपेट कर ढक रखा था।

"बेटा, तुम लंगड़ा कर क्यों चल रहे थे ?"

"क्या बताऊँ माँ, उस गधे को देखती हो न, कम्बख्त मेरे ऊपर ही गिर पड़ा," खुदादाद के गधे की ओर इशारा करते हुए बख्तियार ने कहा। गधे के मुँह और बदन पर खून के दाग लगे थे।

"डरने की कोई बात नहीं," खुदादाद ने हँसते हुए कहा जो अब पहिले से भी ज्यादा दुबला मालूम होता था और उसके होंठ फटे हुए थे, "अच्छी तो हो, गुलरीज़ !"

बख्तियार अब लड़की की ओर मुड़ा जो अपनी जाकेट के हुक खोल रही थी।

"दौस्तोवा, यह मेरी माँ है !" फिर फुसफुसा कर उसने अपनी माँ से कहा, "यह यहाँ काम करने के लिए आई है। शीघ्र ही हम लोगों के साथ घुल-मिल जाएगी।"

गुलरीज़ के मन में हुआ कि, "एक रूसी लड़की भला यहाँ क्या काम करेगी ? कौन जाने, यह शो-पीर की पत्नी हो, हालांकि शो-पीर ने पहिले कभी ज़िक्र नहीं किया कि उसके पत्नी भी है।"

लेकिन लड़की गुलरीज़ के पास आगई थी और हाथ बढ़ाकर कह रही थी, "सलाम गुलरीज़ ! मेरी कामना है कि तुम्हारे घर में सुख का राज्य हो।"

गुलरीज़ को हाथ मिलाने की आदत नहीं थी। सो उसने लिजबिजे ढंग से अपना हाथ बढ़ाया, "तुम्हारी इस कामना के लिए धन्यवाद !"

इसके बाद गुलरीज़ चुप हो गई। उसकी समझ में नहीं आया कि इस अजनबी लड़की से वह और क्या बात करे। सो वह बख्तियार की ओर मुड़ कर बोली, "बहुत लम्बा सफर था, बख्तियार ?"

"हाँ, लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि हम सही-सलामत यहाँ आ गए," उसने जवाब दिया, "अब बैठ जाओ और कुछ सुस्ता लो, दौस्ते

तोवा ।"

"मुझे इस नाम से पुकारना तुम नहीं छोड़ोगे ?" दौलेतोवा ने मुस-कराते हुए कहा, "मैंने तुम से कहा था न कि मुझे मरियम नाम से पुकारा करो ।"

"अच्छा, मरियम ही सही !" बख्तियार ने कुछ परेशान हो बुदबुदा कर कहा ।

भेड़ की खाल की अपनी जाकेट की जेब में से दौलेतोवा ने एक आईना निकाला, सिर पर से अपना कनटोप उतार लिया, पाले में मुर-झाए अपने गोल चेहरे को एक बार देखा और फिर अपने उलझे हुए बाल गूँथने लगी ।

सामान उतारने के बाद बख्तियार ने गधों को पेड़ से बाँध कर उन्हें आराम करने के लिए छोड़ दिया । फिर खुदादाद से कहा, "तुम अब जाओ ।"

खुदादाद अपने घर की ओर चल दिया ।

गुलरीज़ ने एक पेड़ के नीचे चटाई बिछा दी थी । बख्तियार उस पर बैठ गया, और दौलेतोवा को भी अपने पास बैठने के लिए कहा । गुलरीज़ उनके लिए नाश्ते का प्रबन्ध करने घर के भीतर चली गई ।

(४)

कारवाँ के आने की खबर गाँव में बिजली की भांति फैल गई । शो-पीर जब घर पहुँचा तो लोगों की एक भीड़ वहाँ जमा थी । शोपीर को देखते ही उन्होंने रास्ता छोड़ दिया और चिल्ला कर बोले-"वे आगए हैं । और बख्तियार के साथ एक स्त्री भी आई है । शायद रूसी है । वह सो रही है ।"

"मुझे मालूम है," शो-पीर ने हाथ हिलाते हुए कहा, हालांकि उसे मालूम कुछ भी नहीं था । बगीचे की दीवार में एक जगह रास्ता खुला था । शो-पीर ने भीतर प्रवेश किया, और उस पेड़ के पास से गुजरा जिसके नीचे वे सो रहे थे ।

"श-श-श, उन्हें सोने दो !" उसने गुलरीज़ से कहा ।

वृद्धा ने जल्दी मे वह सब उसे बता दिया जो कि उसे मालूम था। शो-पीर ने दौलेतोवा के चेहरे की ओर देखा, और गुलरीज़ को अचरज में डालते हुए बोला, "मैं उसे नहीं जानता । यह रूसी नहीं है, सम्भवतः ताजिक है ।"

इसके बाद शो-पीर ने सामान को छांट कर अलग-अलग रख दिया। फिर गधों पर एक नज़र डाली जो पेड़ों से बँधे थे। गधों के मालिक बाहर मौजूद थे। शो-पीर ने सोचा कि लगे हाथ गधों को भी लौटा दिया जाए ।

गधों को उसने खोला और एक-एक करके उन्हें लौटाने लगा । जिनके गधे थे, वे तेज़ी से आगे बढ़े और अपने-अपने गधों को लेकर उनकी टाँगें, पसलियाँ और गरदन टटोल-टटोल कर देखने लगे । वे अपने गधों को देखते जाते थे और ज़ोरों से आह भर कर शिकायत करते जाते थे कि लम्बे सफ़र ने उनके गधों को दुबला कर दिया है। उनकी हड्डियाँ निकल आई हैं, चलते-चलते उनके पाँव छलनी हो गए हैं । शो-पीर दर्रे के निवासियों की आदत से परिचित था । उनकी शिकायतों और झिड़कियों पर उसने कोई ध्यान नहीं दिया और खुदादाद तथा बख्तियार के गधे को छोड़ कर बाकी सब गधे लौटा दिए।

गधों के साथ-साथ दर्रे के निवासियों ने रस्सियाँ और बोझा लादने का दूसरा सामान भी दिया था। लेकिन शो-पीर ने इन सब चीज़ों को एक ढेर में जमा कर दिया था। दर्रे के निवासियों ने जब इन्हें लौटाने की माँग की तो शोपीर ने कहा कि कुछ गड़बड़ न हो, इस लिए खुद बख्तियार कल इन चीज़ों को लौटा देगा ।

यह कहकर शो-पीर घर के भीतर चला गया। उसका अन्दाज़ ठीक निकला। दर्रे के निवासियों ने जब देखा कि इस समय और कुछ नहीं होने जा रहा है तो विचलित स्वरों में बातें करते हुए लौट गए।

"आज मटर का दलिया नहीं खिलाना," शोपीर ने गुलरीज़ से

कहा, देखो, नये सामान में से चाहे जो ले लो। बढ़िया और स्वादिष्ट खाना बनाना।"

शोपीर नयी लड़की के बारे में जानने के लिए उत्सुक था। इतना तो वह उसकी शक्ल देख कर जान गया था कि वह ताजिक है, और कपड़ों से मालूम होता था कि वह नगर की रहने वाली है। उसके कपड़े, भेड़ की खाल की जाकेट और खाकी रंग की उसकी बिरजिस फौजी ढंग की थी। यहाँ वह किस लिए आई है ? शो-पीर की उत्सुकता का कोई अन्त नही था, लेकिन बख्तियार और वह, दोनों अभी-अभी गहरी नींद में सो रहे थे।

साँझ के करीब दौलेतोवा की आँखें खुली। वह उठ कर बैठ गई, अपनी आखे मली, और शो-पीर पर उसकी नज़र पड़ी।

"क्या तुम्हीं मदवेदेव हो ?" उसने सादगी और हार्दिकता के साथ रूसी भाषा में पूछा, "बल्कि कहना चाहिए कि शो-पीर, जैसा कि इन इलाकों में तुम्हारा नाम पड़ गया है। श्वेत्सोव ने तुम्हें याद करना कहा है।"

शोपीर ने उससे हाथ मिलाया, इतने ज़ोरों से कि उसने तुरत अपना हाथ खींच लिया और दर्द कम करने के लिए अपनी उँगलियाँ सहलाने लगी।

"माफ करना," शो-पीर ने अचकचा कर कहा, "तुम्हारे मुँह से रूसी भाषा सुन कर मैं उत्साह से बेसुध-सा हो गया था। श्वेत्सोव! कौन है वह ?"

"वोलोस्त में रक्षक सेना का वह दूसरा कमाण्डर है।"

"मुझे याद नहीं पड़ता कि मैं उससे परिचित हूँ।"

"लेकिन वह तुमसे परिचित है। तुम्हारा नाम दूर-दूर तक फैल गया है।"

"यह भी खूब कहा। मेरा नाम दूर-दूर की सैर कर रहा है, और मैं यहाँ इस अनजान बस्ती में पड़ा हूँ, दीन-दुनियाँ से अलग!"

"वोलोस्त में तुम्हें सब अच्छी तरह से जानते हैं। और मुझे लगता है कि तुम्हें श्वेत्सोव से परिचित होना चाहिए। क्या तुम सिल्कोव की फौजी टुकड़ी में नहीं थे ?

"हाँ, मैं उसी टुकड़ी में था।"

"श्वेत्सोव भी तुम्हारे साथ उसी टुकड़ी में था। क्या तुम भूल गए ?"

"एक मिनट ठहरो !" शो-पीर ने विचलित स्वर में कहा "श्वेत्सोव ? वही, छोटा और हंसमुख आदमी ?"

"हाँ, तुम्हारे मुकाबिले में तो उसे छोटा ही कहना चाहिए। दुबला-पतला, मझोला कद!" दौलेतोवा ने मुस्कराते हुए कहा और गीत की एक पंक्ति गुनगुनाने लगी : "सनसनाती हवा, ले जाती पेड़ों को उड़ा, अँधेरी औ' तूफानी रा-आ-आ-त !"

"ओह वही !" शो-पीर ने प्रसन्नता से चिल्लाकर कहा, "शायद ही कोई दिन बीतता हो जब वह यह गीत न गाता हो। वह अकार्डियन भी बहुत अच्छा बजाता था। उसका नाम पीटर ही था न ?"

"हाँ, पीटर निकोलायेविच। मैं उसी के साथ यहाँ आई। इन इलाकों में मेरी दिलचस्पी जगाने का श्रेय भी उसे ही है। एक मुद्दत से वह इधर आना चाह रहा था।"

श्वेत्सोव के बारे में शो-पीर और भी बहुत कुछ जानना चाहता था, लेकिन यह सोच कर कि ऐसा करना ठीक नहीं होगा, उसने पूछा, "सो तुम यहाँ काम करने के लिए आई हो ?"

"हाँ, मैं स्कूल-मास्टर हूँ। तुम्हारा स्कूल यहाँ किस जगह है ?"

"स्कूल ?" यह सवाल खुद अपने-आप में एक समस्या था, "स्कूल हम कहाँ से पैदा करते ?"

"तो यहाँ कोई स्कूल नहीं है ? मैं तो समझी थी कि......"

दौलेतावा ने पहाड़ों पर एक नजर डाली जो चारों ओर घेरा डाले थे, फिर नीचे घाटी की ओर देखा, जहाँ गाँव बसा था, बगीचों पर उसकी नजर गई, जो शरद की हवाओं में मुरझा गए थे।

इसी बीच बख्तियार की भी आँखें खुल गईं और वह उनकी बातों का सिलसिला पकड़ने की कोशिश करने लगा :

"मुझे मरियम कह सकते हो।"

"केवल मरियम ही, या और भी कुछ ?"

"दौलेतोवा। एक साल तक मैं सियातांग भाषा सीखती रही। मैं तो समझती थी कि यहाँ आते ही अपना काम शुरू कर दूँगी, लेकिन......"

मरियम के चेहरे पर लाली दौड़ गई। संभल कर बोली, "यह न समझना कि मैं कठिनाइयों से घबराती हूँ। बात इतनी ही है कि मुझे यहाँ की स्थिति का सही ज्ञान नहीं था। तुम कैसे काम चलाते हो ?"

"बहुत अच्छी तरह," शो-पीर ने कहा, "यह देखो : काफी अच्छा घर है, बगीचा है, और इस जैसे मेरे साथी हैं !"

यह कहते समय शो-पीर ने बख्तियार के घुटने पर इतने अप्रत्याशित रूप में हाथ मारा कि वह उछल पड़ा और दौलेतोवा ज़ोरों से हंसने लगी।

"चिन्ता न करो, बख्तियार!" शो-पीर ने सियातांग भाषा में कहा, "मैं तुम्हारी ही तारीफ कर रहा था कि तुम कितने अच्छे आदमी हो।" फिर रूसी भाषा में दौलेतोवा से बोला, "यहाँ रहने पर तुम खुद सब जान जाओगी। एक नये जीवन का, सोवियत जीवन का, हम यहाँ निर्माण कर रहे हैं। लेकिन यह क्या, तुम तो अपने साथ रिवाल्वर लेकर आई हो ?"

"हाँ, नगर से चलते समय उन्होंने मुझे दिया था। उनका कहना था कि पूर्वीय घाटियों में से गुज़रते समय कोई भी दुर्घटना पेश आ सकती है। लेकिन मुझे इसकी कोई ज़रूरत नहीं पड़ी।"

"और यहाँ भी तुम्हें इसकी कोई ज़रूरत नहीं पड़ेगी। यह एक अच्छी चीज है, लेकिन गाँव में जाते समय इसे उतार कर अलग रख

देना। नहीं तो वे तुम्हें स्त्री नहीं समझेंगे। लेकिन यह तो बताओ कि चार महीनों तक तुम्हारा कारवाँ कहाँ उलझा रहा ? इतनी देर कैसे लगी ? हम तो करीब-करीब निराश हो चुके थे।"

"हम समूचे पहाड़ी प्रदेश के लिए चार सौ ऊँटों पर रसद लाद कर चले थे। और ऊँटों को तो तुम जानते ही हो ? पूर्वीय घाटियों में जब तक रहे, तब तक कोई अड़चन पेश नहीं आई। लेकिन वोलोस्त के निकट दर्रा बर्फ से अटा था। वहाँ जाड़ा जल्दी शुरू हो जाता है। उस पेड़ जितनी ऊंची बर्फ जमी थी।"

"मैं जानता हूँ। उस बर्फ से मैं भी जूझ चुका हूँ। गर्मियों तक में वहाँ बर्फ पड़ती है। लेकिन ऊँटों के साथ तुमने उसे कैसे पार किया ?"

"यही तो समस्या थी। रास्ता इतना तंग था कि हम ज़रा भी आगे नहीं बढ़ सके।"

"इसका मतलब यह कि तुम लोग फंस गए, नमक की झील के पास !"

"हाँ उसी जगह। हममें से कुछ लोग घोड़े लाने के लिए पूर्वीय सीमा की ओर रवाना हो गए। लेकिन वहाँ बसमाचियों ने उत्पात मचा रखा था। सो वे खाली हाथ लौट आए। पूरा एक महीना दर्रे की तलहटी में इन्तजार करते बीत गया। चारे के अभाव में ऊँट भूखे मरने लगे। नब्बे ऊँट इस तरह कम हो गए। हमने सोचा कि वापिस लौट चलें। लेकिन श्वेत्सोव ने कहा कि वापिस लौटना हमारी प्रथा के खिलाफ है। इसके सिवा लौटने का रास्ता भी तो बर्फ से बन्द था। सो रसद का आधा सामान तो हमने खोहों में छिपा दिया कि बसन्त के दिनों में आकर ले जाएंगे, और एक लम्बा घुमावदार रास्ता हमने पकड़ा। इस तरह हमें दो सौ किलोमीटर ज्यादा चलना पड़ा, लेकिन हम यहाँ पहुँच गए।"

"तो यह कहो कि रास्ते का तुमने भरपूर आनन्द लिया ?"

"हाँ, सियातांग में काम करने के लिए हमारे साथ अन्य कई लोग भी आए थे। एक मोटा डाक्टर जिसका नाम अनुफ़ीएव था, और देकिन नामक एक युवक जो सहकारी दुकानें खोलने के लिए आया था। देकिन वोलोस्त पहुँच कर उनमें से अधिकांश वहीं रुक गए। कुछ बीमार पड़ गए, कुछ ने निश्चय किया कि वसन्त शुरू होने पर वे यहाँ आएंगे।"

"और तुम ?"

"मैं ?—मैं बख्तियार के साथ चली आई। यह मेरा सौभाग्य था। देकिन बिना सामान के अपनी दुकान खोल नहीं सकता था, डाक्टर इतना मोटा था कि जाड़ों में उसके लिए हिलना-डुलना एक मुसीबत था,—रास्ते में ही उसका वज़न कम हो गया था, इसके अलावा वह कुछ डरपोक भी था। जो भी हो, वसन्त में वे सब आजायेंगे।"

"एक तुमने ही यहाँ आने का साहस किया ?" शो-पीर ने कहा—"रास्ते में बख्तियार के साथ कैसे गुज़री ? दोनों में जान-पहचान तो खूब हो गई होगी ? क्या तुम सियातांग भाषा जानती हो ?"

"हाँ," मरियम ने कहा और गुनगुना कर सियातांग का एक प्रिय गीत सुनाने लगी—

इस पहाड़ से उस पहाड़ पर
प्रकाश की भांति थिरकती पहाड़ी बकरी
उछलती कूदती नीचे उतरती
लेकिन उससे भी ज्यादा चपल और निडर
है वह लड़की जिसे करता हूँ मैं प्यार
कोयले-सी काली हैं उसकी आँखें !

"बहुत सुन्दर। तुमने यह गीत कहाँ सीखा ?"

"जिला-कमेटी ने इन इलाकों के बड़े-बूढ़ों से ये गीत जमा किए हैं। एक साल तक मैंने अध्ययन किया.........और तुम्हारा यह बख्तियार,—अगर यह न होता तो मैं यहाँ कभी न पहुँच पाती !"

दौलेतोवा अब सिमालोय भाषा में बात कर रही थी, जिससे बख्तियार भी समझ सके। बातों का सिलसिला देर तक चलता रहा।

सांझ हो आई थी। एक पेड़ के नीचे चटाई बिछा कर गुलरीज ने खाना सजा दिया। मिट्टी और लकड़ी की रकाबियां चटाई पर रखी बड़ी अच्छी मालूम होती थीं।

"खुदादाद को भी बुला लाओ, बख्तियार!" शो-पीर ने कहा—"एक मुद्दत के बाद इतना अच्छा खाना बना है।"

"जरूर," बख्तियार ने कहा—"मैं उसे बुलाकर अभी लाता हूँ... लेकिन तुम्हारी इस निस्सो का क्या करें, शो-पीर? अंधेरा हो आया, वह अभी तक नहीं लौटी?"

"निस्सो? अरे हाँ, कहाँ चली गई वह?"

"बातों में तुम उसे भूल ही गए," गुलरीज ने कहा—"सुबह ही, न जाने कब में, चुपचाप खिसक गई। मुझे तो पता भी न चला।"

ठीक उसी समय, मानो वह इसी बात का इन्तजार कर रही थी कि कब वे उसका जिक्र करते हैं, निस्सो बगीचे में आती दिखाई दी। वह अपनी पीठ पर गेंहूँ के पूलों का भारी बोझ लादे थी। पूलों पर बर्फ के कण चिपके थे। शो-पीर और बख्तियार उछल कर खड़े हो गए और उसका बोझ हल्का किया।

"मैं वहाँ पहाड़ी पर गई थी," निस्सो ने कहा—"बख्तियार के खेत में। अगर गेंहूँ काट कर न लाती तो उन्हें पाला मार जाता।"

निस्सो की आँखें खुशी से चमक रही थीं। शो-पीर ने उसकी पीठ थपथपाई—"जंगली बिल्ली, तुमसे किसने कहा था कि अकेली वहाँ जाना?"

"कहता कौन? क्या मैं खुद नहीं जा सकती?" निस्सो ने कहा, लेकिन दौलेतोवा पर नजर पड़ते ही अचकचा कर रुक गई, और तेजी से घर के भीतर भाग गई।

"गुलरीज, उसे ले कर आओ," शो-पीर ने कहा—"खाना ठंडा

हो रहा है।"

गुलरीज निस्सो को लाने के लिए घर के भीतर चली गई।

[५]

बख्तियार, खुदादाद और शो-पीर ने एक स्कूल और रहने के लिए एक क्वार्टर बनाने का निश्चय किया। तब तक के लिए मरियम निस्सो के साथ बख्तियार के घर के नये हिस्से में रहने लगी। इसी हिस्से में वह सब सामान भी रखा गया जो कि बख्तियार अपने साथ लाया था। शो-पीर ने अगले दिन लड़कियों के लिए लकड़ी के बिस्तरे तैयार करने का जिम्मा लिया। उस रात वे आटे के बोरों पर कपड़े बिछाकर सोईं।

लड़कियों ने अधिकांश रात एक-दूसरे को अपने बारे में बताने में बिता दी। मरियम की आयु बीस वर्ष थी। उसने निश्चय किया कि वह निस्सो से ही अपने शिक्षा-कार्य की शुरूआत करेगी। निस्सो के साथ घनिष्टता प्राप्त करने के लिए उसने अपने-आपको उसके सांस्कृतिक स्तर के अनुकूल बना लिया। निस्सो ने गर्व के साथ देखा कि बड़प्पन और अनुभव में वह अपनी नव-परिचिता से कम नहीं है।

"दूसरे शब्दों में यह कि तुम भी ठीक मेरे जैसी ही हो ?" अन्त में उसने कहा।

"हाँ, ठीक तुम्हारे जैसी, केवल इस बात को छोड़ कर मुझे तुम्हारी तरह अजीजखान के यहाँ से नही भागना पड़ा !"

"यह इसलिए कि जहाँ से तुम आई हो, वहाँ खान नहीं हैं। लेकिन इसके बदले में तुम्हें भूखे जो मरना पड़ा।"

"यह बात तो ठीक है। अगर वे मुझे उठा कर बच्चों के गृह में न भेज देते तो समरकन्द की सड़कों पर ही मैं दम तोड़ देती।"

"बच्चों का गृह, समरकन्द की सड़कें, मुझे इन सब के बारे में बताओ।"

निस्सो बड़े ध्यान से, बीच में कोई बाधा दिए बिना, सुन रही थी। लेकिन उसके प्रश्नों की संख्या इतनी अधिक थी कि मरियम ने कहा,

"एक ही दिन मे सारी बातें कैसे बता सकती हूं, निस्सो ! और दिनों के लिए भी तो कुछ रहने दो।"

"अच्छी बात है," निस्सो ने कहा, और फिर कुछ सोचने लगी। अन्त में बोली, "क्या तुम विवाहित हो ?"

"नहीं, मैं विवाह करना नहीं चाहती।"

"यही मेरे साथ भी है। क्या तुम किसी से प्रेम करती हो ?"

"नहीं।"

"लेकिन मै करती हूं," निस्सो के मुंह से अनायास ही निकल गया, फिर कुछ संभल कर परेशान-सी अपनी उंगली काटने लगी।

मरियम अंधेरे में मुसकराई, उसके मन मे हुआ कि उस आदमी के बारे में पूछे जिससे वह प्रेम करती है, लेकिन उसने चुप रहना ही उचित समझा।

"अब सोओ, निस्सो !"

"हाँ, अब सोना चाहिए," निस्सो ने सहमति प्रकट की, लेकिन वावजूद उस निस्तब्धता के जो इसके बाद छाई रही, दोनों काफी देर तक जागती रही। मरियम सोच रही थी कि वह अपने हृदय के अन्तरतम भावों को किसी पर प्रकट नहीं करेगी। समरकन्द मे उसे जो छोड़ गया था, उसे पता भी नही चलेगा कि वह अब कहाँ है। फिर वह सोचने लगी कि वह कौन है जिससे निस्सो प्रेम करती है ? शायद वह बख्तियार से प्रेम करती हो। लेकिन अभी उसकी उम्र ही कितनी है, वह क्या जाने कि प्रेम किसे कहते हैं ?

अंधेरे में आँखें गड़ाए निस्सो सोच रही थी कि मरियम से अपना भेद बता कर उसने बड़ी मूर्खता की। अन्य किसी के सामने अब वह कभी ऐसी बात नही करेगी। मरियम क्या जाने कि प्रेम कितना अद्भुत और कितना तीखा होता है ?

: ६ :

अगली सुबह लड़कियां अभी सो रही थीं। शो-पीर और बख्तियार

उठ बैठे थे और आटे का वितरण किस प्रकार किया जाए, इस बारे में बातें कर रहे थे। गुलरीज ने लड़कियों के कमरे मे झाँक कर देखा, लेकिन उन्हें जगाना उचित न समझ चुपचाप लौट गई।

बख्तियार जो आटा लाया था, उसे सब से गरीब बत्तीस घरानो में वितरित करना था। शो-पीर ने निश्चय किया कि प्रत्येक को दो पौंड आटा दिया जाए। इतने आटे मे वसन्त तक तीन महीने पार हो जाएंगे। कम-से-कम किसी को भूखों मरने या केवल घास-पात पर गुजर करने की जरूरत नहीं पडेगी। बीस पौंड आठा आड़े वक्त के लिए सुरक्षित रखा जाएगा। इसके सिवा आठ पौंड चावल और स्टाक मे रहेगा जो खास उत्सवों पर या अच्छा काम करने वालों को पुरस्कार के रूप में दिया जाएगा। दर्रे के उन निवासियों की एक सूची बनाने के बाद, जिन्हें कि आटा दिया जाने वाला था, शो-पीर ने अपना तौलिया उठाया और झरने की ओर चल दिया। गुलरीज से उसने कहा कि मरियम और निस्सो को जगा दे।

भोजन की मेज़ पर उसने घोषणा की कि आटा आज वितरित किया जाएगा। उसने सूची पढ़कर सुनाई और बख्तियार से कहा कि वह गाँव में जाकर सबको खबर कर दे कि उन्हें बिना शुल्क आटा दिया जाएगा, लेकिन वे अपने साथ अपना अनाज अवश्य लाएँ जो वसन्त तक बख्तियार के पास जमा रहेगा और बोवाई के समय उन्हें वापिस कर दिया जाएगा।

"तुम उन्हें सूचना देने जाओगे और इस बीच में तोलने का कुछ प्रबन्ध करता हूँ," शो-पीर ने कहा, "लड़कियाँ बोरों को खोल कर आटे को बराबर-बराबर के हिस्सों में अलग कर देंगी। तब तुम्हारी मदद से मैं उन्हें वितरित कर दूंगा।"

जब बख्तियार चला गया तो शो-पीर ने कहा, "चलो, अब अपना काम शुरू कर दो। नहीं तो लोग हमारे तैयार होने से पहिले ही आ जाएंगे।"

निस्सो और मरियम अपने कमरे में वापिस चली गईं और शो-पीर गुलरीज से लकड़ी की दो तश्तरियाँ लेकर तराजू बनाने लगा।

निस्सो ने शो-पीर से उन दो झंडों में से एक ले लिया जो सभा के बाद उसके पास ही रखे हुए थे। निस्सो और मरियम ने उसे अपने कमरे के दरवाज़े पर लगा दिया। इसके बाद ख़ुशी से छलछलाती निस्सो वराण्डे में गई और एक बड़ा सा चाकू ले आई।

"यह किस लिए ?" मरियम ने पूछा।

मरियम आटे के बोरे पर झुकी हुई थी और आटा पाउडर की भांति उसके चेहरे, बालों और कपड़ों पर लगा हुआ था।

"यह है निशान बनाने के लिए," निस्सो ने कहा।

सब से पहिले दर्रे के दो निवासी आए। उनका कद छोटा था और निस्सो उन्हें नहीं पहचानती थी। वे अपने साथ अनाज-वनाज कुछ भी नहीं लाए थे। न ही उनके पास कोई बोरा या कपड़ा था। लेकिन शो-पीर ने मरियम से कहा, "इन्हें दो-दो पौंड आटा दे दो।"

"इन्हें क्या दें ?" निस्सो ने कहा, "इनका अनाज कहां है ?"

"तुम भी कितनी सख्त हो, निस्सो ?" शो-पीर ने कहा, "इनके पास अनाज नहीं है, न ही इनके पास अनाज हो सकता था क्योंकि इन्होंने अनाज बोया नहीं था। इन्होंने नहर पर काम किया था और अब पहिली बार इन्हें ज़मीन मिली है। इन्हें आटा दे दो।" फिर दर्रे के निवासियों की ओर मुड़ते हुए उसने कहा, "लेकिन तुम लोग आटा लोगे किस चीज़ में ? कोई कपड़ा या बोरा तो लाते ?"

तराज़ू अभी तैयार नहीं हुई थी। शो-पीर ने अन्दाज से दो बोरों में से एक-एक तिहाई आटा निकाल लिया और बोरों को उनकी पीठ पर रखवा दिया। उनके चेहरे ख़ुशी से चमक उठे और आटा लेकर वे चल दिए।

शो-पीर लड़कियों को अकेला छोड़ जल्दी से तराज़ू बनाने के लिए चला गया।

इसके बाद ज़ुबेदा आई, अपने गधे को लिए हुए। गधा गरदन उठा कर अपनी थूथनी ज़ुबेदा के कंधे से रगड़ रहा था। उसके कान खड़े थे। लेकिन वह कमरे में नहीं घुसा और दरवाज़े पर ही दुलत्ती झाड़ कर मुड़ गया। सब हंसने लगे।

ज़ुबेदा ने उसका मुंह थपथपाया और अनाज से भरे दो भारी बोरे खींचकर कमरे के भीतर ले गई।

"इधर ले आओ," निस्सो ने कहा, "अनाज का ढेर यहां लगेगा।"

भारी बोरों को खींचने में ज़ुबेदा का हाथ बटाते हुए उसने कहा, "देखो न ज़ुबेदा, तुमने मेरे पक्ष में अपना हाथ उठाकर मेरी मदद की थी। उसके बदले में मैं भी तुम्हें खुश कर दूंगी।"

और मरियम से सलाह लिए बिना, यह दिखाते हुए कि वह अकेली ही इसे निबटा सकती है, नज़र से उसने बोरे का वजन जांचा, उसे उठाया और फ़र्श पर धम्म-से रख दिया। आटे के कणों का एक बादल हवा में तैरने लगा। फिर उसने कहा, "ले जाओ इसे!"

बोरे में तीन पौंड से कम आटा नहीं होगा। निस्सो यह जानती थी। ज़ुबेदा कुछ हिचकी। निस्सो ने फिर दोहराया, "उठा क्यों नहीं लेती?" निस्सो के स्वर में ज़ोर था, मानो वह और कुछ नहीं सुनेगी। दोनों बोरों को खींचकर दरवाज़े तक ले गई। निस्सो फिर जल्दी से कमरे के दूर वाले कोने में गई जहाँ चावल और शक्कर रखी थी। उसने एक पोटली उठाई जो कि उसने पहिले से ही बांध कर रख छोड़ी थी, और मरियम की ओर कनखियों से देखती कमरे से बाहर आ गई। मरियम उस समय दूसरी ओर मुंह किए खड़ी थी।

"यह भी तुम्हारे लिए है, ज़ुबेदा!" निस्सो ने मुलायम स्वर में कहा, "तुम बहुत भली हो। किसी से बताना नहीं, शो-पीर मुझ पर गुस्सा होगा। और देखो, जब फुरसत हो तो मेरे पास आना न भूलना। तुमसे मिल कर मुझे बड़ी खुशी होती है।"

ज़ुबेदा ने निस्सो का चुम्मा लिया, गधे को थपथपाया। और नीचे

गांव की ओर चलदी।

निस्सो कमरे में लौट आई और कामकाजी ढंग से एक तख्ते पर चाकू से तीन निशान बना दिए।

इसके बाद, कितनी देर तक, और कोई नहीं आया। मरियम और निस्सो अचरज करने लगीं कि दर्रे के निवासी क्यों नहीं आ रहे हैं?

तराजू तैयार करने के बाद शो-पीर बखटरे बनाने के लिए कुछ पत्थर चुनने-छांटने लगा। तभी, बगीचे की दीवार के दूसरी तरफ, केन्दितरी पर उसकी नजर पड़ी। "यह यहाँ किस लिए?" शो-पीर ने अचरज में सोचा। दीवार लाँघ कर केन्दितरी अब उसकी ओर आ रहा था। एक हाथ अपने सीने पर और दूसरा माथे पर रख कर वह झुका। अभिवादन का यह ढंग सियातांग को छोड़ कर प्राच्य के सभी देशों में प्रचलित था।

"मैं आपके स्वास्थ्य की कामना करता हूँ, बाइज्जत शो-पीर!"

"हलो," पत्थर चुनने के अपने काम में बाधा दिए बिना ही शो-पीर ने कहा, "क्या तुम मुझसे मिलना चाहते हो?"

"हाँ, अगर आप अनुमति दें," केन्दितरी ने कहा, "मुझे आपसे कुछ कहना है। लेकिन मैं यह नहीं चाहता कि मेरी बात किन्हीं अवांछनीय कानों में पड़े।"

"यहाँ तो ऐसे कोई अवांछनीय कान हैं नहीं। कहो, तुम्हें जो कहना हो," शो-पीर ने अपने पत्थरों को अलग रख दिया और केन्दितरी के चोगे, तुबेतका तथा उसके भावशून्य चेहरे पर एक नजर डाली, "क्या कोई जरूरी बात है?"

"हाँ आपके लिए जरूरी है," केन्दितरी ने निस्सो की ओर से जो दरवाजे में से झाँक कर देख रही थी, बेखबर रहने का भाव जताते हुए कहा, "क्या यह अच्छा न होगा, भीतर घर में चलकर बातें करें?"

"अच्छी बात है," शो-पीर ने उससे सहमति प्रकट की और अपने हाथों से गर्द झाड़ते हुए केन्दितरी को घर के भीतर ले गया।

निस्सो दरवाज़े से खिसक आई। तभी 'मछली का काँटा' पर उसकी नज़र पड़ी। उसकी भौंहों में तुरन्त बल पड़ गए और घृणा से उसने अपने होंठ भींच लिए।

"सो तुम हो! किसलिए आई हो यहाँ?" निस्सो ने चुनौती के स्वर में पूछा।

"शो-पीर कहाँ है?"

"इस समय वह यहाँ नहीं है।" निस्सो ने उपेक्षा से जवाब दिया। फिर मरियम से पूछा : "तुमसे यह क्या कह रही थी, मरियम?"

"आटा माँगती थी।"

"सो तुम आटा लेने आई हो, क्यों?" निस्सो ने पूछा।

"हाँ, मुझे भी कुछ दे दो," 'मछली का काँटा' ने रूखे स्वर में कहा। गुस्से के मारे वह सफेद पड़ गई थी, लेकिन वह अपने को संभाले रही।

"नहीं, तुम्हें मैं कुछ नहीं दूँगी। जाओ यहाँ से!"

मरियम अचरज के साथ दोनों की बातें सुन रही थी। दोनों की मुट्ठियाँ बँधी थी, और ऐसा मालूम होता था कि दोनों एक-दूसरे पर टूट पड़ना चाहती हैं।

"ठहरो निस्सो!" मरियम ने उठते हुए चिल्ला कर कहा, "यह है कौन?"

निस्सो घृणा और गुस्से में भरी चुप खड़ी रही।

"तुम कौन हो?" मरियम ने 'मछली का काँटा' की ओर मुड़ते हुए कहा।

"और तुम खुद कौन हो?" 'मछली का काँटा' ने चिल्ला कर कहा।

"मैं यहाँ पढ़ाने का काम करने आई हूँ। गुस्सा छोड़ो, और शान्ति

से अपना नाम बताओ। फिर मैं सूची देखकर बताऊँगी।"

"इसका नाम मछली का काँटा है!" निस्सो ने चिल्ला कर कहा, "इसके सिवा इसका और क्या नाम होगा? सूची में इसका नाम नहीं है। शो-पीर ने आज सबके नाम पढ़कर सुनाए थे। मुझे अच्छी तरह से याद है।"

"तुमसे कौन बोल रहा है, मुई बिल्ली!" 'मछली का काँटा' चिल्ला उठी, "इस मरदूद की बातों पर ध्यान न दो। यह किराये की टट्टू न जाने अपने को क्या समझती है? सूची में देखो, मैं काराशिर की पत्नी हूँ।"

"तुम दोनों की दोनों ही पागल हो!" दौलेतोवा ने सूची पर नज़र डालते हुए कहा, "तुम चुप रहो, निस्सो! और तुम भी कोसना बन्द करो। मैं तुम दोनों के झगड़े के बारे में कुछ नहीं जानती, लेकिन काराशिर का नाम सूची में है।"

"काराशिर, लेकिन इस नागिन का नहीं! काराशिर कहाँ है? उसका अनाज कहाँ है? इन्होंने गेहूँ बोया था। जब तक अनाज लेकर न आएं, इन्हें कुछ न देना!"

मरियम ने निराशा से काराशिर की पत्नी की ओर देखा।

"अगर तुम काराशिर की पत्नी हो तो अपना अनाज लेकर क्यों नहीं आई?"

'मछली का काँटा' चुपचाप अपने होंठ काटती और निस्सो की ओर जंगली नज़रों से देखती रही। उसके चेहरे पर दुःख से बल पड़ रहे थे। काराशिर की इच्छा थी कि वह एक-एक बात खोल कर कह दे, लेकिन वह डरता था। 'मछली का काँटा' ने उसका मुँह बन्द कर दिया था कि वह कुछ न कहे। उसे आशा थी कि शो-पीर के सामने आकर वह गिड़गिड़ाएगी और आटा देने के लिए उसे तैयार कर लेगी। लेकिन यहाँ तो मामला ही दूसरा था। लगता था कि देना-लेना सब कुछ इसी जंगली बिल्ली के हाथों में है। मन करता था कि उसकी आँखें नोच ले।

लेकिन 'मछली का कांटा' को अपने बच्चों का ध्यान हो आया। सौदागर ने उन्हें पूरा धोखा दिया था। उससे कुछ पाने की अब कोई उम्मीद नहीं थी। घर में आटे का एक कण भी नहीं था, और जाड़ा सिर पर आ गया था। नहीं, आटे के लिए वह सब कुछ सहेगी। उसने दरवाजे में से झाँक कर भीतर देखा, कमरा बोरों से भरा था, दीवारों और फर्श तक पर आटा बिखरा था। उसका गुस्सा गायब हो गया, और आँखों में आटा पाने की लालसा तैरने लगी।

"मेरे पास अनाज का एक दाना नही है......मुझे अब आटा दे दो......ज्यादा नहीं, थोड़ा सा!"

"अनाज का एक दाना नहीं है!" निस्सो ने गुस्से से चिल्ला कर कहा—"यह झूठ बोलती है, मरियम! इसने अनाज छिपा लिया है। वह घर देखती हो न, और वह खेत जो पहाड़ी के दाहिनी ओर दिखाई दे रहा है। अन्य सब की भांति इसके खेत में भी फसल हुई थी। नहीं, इसे मैं कुछ न दूँगी, यह झूठ बोलती है। बख्तियार जब वोलोस्त जा-रहा था तो इसने हमें अपना गधा तक नहीं दिया!"

'मछली का कांटा' की आंखों में आंसू चमक आए।

"थोड़ा-सा दे दो," उसने मुलामियत से कहा।

"नहीं, मैं नहीं दूंगी!" निस्सो ने तेज़ स्वर में जवाब दिया।

"ठहरो निस्सो शो-पीर से भी राय ले लें। देखें, वह क्या कहता है?"

"शोपीर से अब पूछने की जरूरत नहीं। वह भी वही कहेगा जो मैं कह रही हूँ। निकल जाओ यहाँ से,—जाओ!"

'मछली का काँटा' ने कोई जवाब नहीं दिया। आँसुओं के बीच उसने निस्सो की ओर घृणा से देखा और धीरे से मुड़ कर चल दी। बगीचे की दीवार उसने पार की और चट्टानों के पीछे गायब हो गई।

"तुम्हारा हृदय बहुत सख्त है, निस्सो! मुझे लगता है कि तुमने

ठीक नहीं किया। कम-से-कम शो-पीर से तो सलाह लेनी चाहिए थी। पता नहीं, वह किससे इतनी देर से बातें कर कर रहा है ?"

"तुम नहीं जानतीं, मरियम !" निस्सो के मुंह से निकला, जो 'मछली का कांटा' की आंखों में गुस्से की जगह आंसू देख कर अब अपनी ज्यादती का अनुभव कर रही थी। वह उसका पारा जरूर नीचे उतारना चाहती थी, फिर भी अच्छा यह होता अगर उसके रोने की नौबत न आती। लेकिन नहीं, दया की इस आकस्मिक भावना को दबाते हुए उसने सोचा—"वह झूठ बोली। जैसे के साथ तैसा ही बरताव करना चाहिए।"

"और मरियम, तुमने मुझसे पूछा कि शो-पीर किससे बातें कर रहा है ? उसका नाम केन्दितरी है। वह बहुत अच्छा आदमी है। वह नाई है, और सौदागर के साथ उसके काम में हाथ बंटाता है।"

"मेरा तो अब भी यही खयाल है निस्सो कि उस स्त्री के बारे में शो-पीर से पूछना चाहिए।"

"तुम्हें रोकता कौन है ? जाकर पूछ न लो ? वह चाहती थी कि मुझे अज़ीज़खान के पास वापिस भेज दिया जाए !"

"ओह, यह बात है !" दौलेतोवा ने कहा और सामने पथ की ओर देखा जहाँ एक पत्थर पर 'मछली का कांटा' बैठी थी। सम्भवतः वह शो-पीर का इन्तज़ार कर रही थी। लेकिन दौलेतोवा ने निस्सो से इसका कोई जिक्र नहीं किया।

[७]

"जैसा कि आप जानते हैं, शो-पीर, मैं यहां एक साल से हूं।"

"हाँ, ठीक कहते हो तुम।"

"मैं सौदागर के साथ रहता हूँ, जैसा कि आप भी जानते हैं।"

"हाँ।"

"आप कभी मेरी दुकान पर नहीं आए,—अपनी दाढ़ी आप खुद ही बनाते हैं। और मैं भी कभी आपके घर नहीं आया। आपकी समझ से

मैं क्यों कभी आपसे बातें करने आपके पास नहीं आया ?"

"यह तो तुम्हीं ज्यादा अच्छी तरह बता सकते हो।"

"मैं आज उसी उद्देश्य से आया हूँ।"

"मालूम होता है, तुम पूरे एक साल तक यह सोचते रहे कि तुम्हें मुझसे कुछ बातें करनी हैं ?"

"हँसो नहीं। मेरी बात सुनोगे तो सब समझ जाओगे। मैं पहाड़ों में बहुत घूमा हूँ। बहुत से लोगों से मिला हूँ और तरह-तरह की सरकारें मैंने देखी हैं। मुझ जैसे घुमक्कड़ नाई की अधिकारियों से पटरी नहीं बैठती। कुछ जगहों में उन्होंने मुझे मारा। कुछ में मुझे पत्थर मार कर भगा दिया गया,—उन्होंने समझा कि मैं चोर हूँ। दो साल तक मैं कानजूत की जेल में बन्द रहा। क्या तुम जानते हो कि क्यों ?"

"मैं कैसे जान सकता हूँ ?"

"कानजूत में वे अंग्रेजों को पसन्द नहीं करते। वे रूसियों को चाहते हैं।"

"हो सकता है"

"मैं सच कहता हूँ। मैं चाकता के चौक में लोगों के बाल बनाता था। सब जगह खबर फैल गई कि मैं अच्छा नाई हूँ। एक सैनिक आया और कहने लगा—'वज़ीर के पास चलो। उसकी दाढ़ी बनानी है।' सो मैं गया और उसकी दाढ़ी बनाने लगा। उसने अंग्रेजों की तारीफ़ कर दी। मैंने मूर्खता की, और बिना कुछ सोचे समझे कहा—'तुम्हारी रिआया तो रूसियों को पसन्द करती है।' वज़ीर की अभी एक तरफ़ की दाढ़ी बनानी बाकी थी, और उन्होंने मुझे जेल में बंद कर दिया। जेल क्या थी, ज़मीन के भीतर एक तहखाना था। मकड़ियां, सांप और बिच्छु हमारे ऊपर रेंगते थे। उन्होंने छड़ों से हमें पीटा,—मेरे गाल पर अभी भी एक निशान मौजूद है। दूसरा निशान मेरे माथे पर है और देखो, तीसरा निशान यह है !" केन्दितरी ने अपने चोगे की तनी खोल कर अपनी छाती पर पड़े लाल निशान दिखाए—"अन्य कैदी तो

मर गए, लेकिन मैं जिन्दा बच गया। इसके बाद उन्होंने मुझे जेल से खदेड़ दिया और मरता-गिरता मैं यखबार आ गया। मौत का स्वाद अभी तक मेरे मुँह में मौजूद था। यहाँ एक आदमी ने मुझसे कहा—'मेरे साथ चलो। तुम्हें अजीजखान की दाढ़ी बनाने का भारी सौभाग्य प्राप्त होगा।' कानजूत का अनुभव मेरे दिमाग में ताजा था, और मैं जानता था कि 'भारी सौभाग्य' का क्या फल होता है। मैं भाग खड़ा हुआ। मैं यहाँ आया, और सौदागर मिरज़ाहूर के साथ रहने लगा। एक साल तक मैं उसके साथ रहा। उसने मुझे अपना सहायक बना लिया और मेरा हृदय उसके प्रति कृतज्ञता से भर गया। तुम्हारे और अख्तियार के पास मैं कभी नहीं गया। मैं जानता था कि तुम भी अधिकारी हो। कानजूत के अनुभव के बाद मेरे हृदय में अधिकारी लोगों के प्रति डर बैठ गया था। पूरे एक साल तक आप लोगों को मैं डर से देखता रहा, और अब मैं खुद जानता हूँ कि कानजूत के लोग रूसियों की क्यों तारीफ करते थे। मेरी पहले समझ में नहीं आता था कि तुम सौदागर को क्यों पसन्द नहीं करते। लेकिन अब मैं समझता हूँ। वह इस योग्य नहीं है कि तुम उसकी इज्जत करो।"

"क्यों, अब क्या हो गया? क्या तुम दोनों में कोई झगड़ा हुआ है?"

"नहीं, मेरा उससे झगड़ा नहीं हुआ। लेकिन एक गरीब का रास्ता फकीरों के रास्ते से भिन्न थोड़े ही हो सकता है। सौदागर का रास्ता दूसरा है। मेरा चेहरा जरूर बुरा है। मेरे चेहरे की ओर न देख कर मेरे हृदय की ओर देखो। मेरे हृदय में कपट नहीं है। सभा में मेरी बातें सुन कर क्या तुम्हें आश्चर्य हुआ था?"

"हां, तुम निस्सो का पक्ष लो, यह बात कुछ अजीब मालूम होती थी।"

"उस सभा के बाद सौदागर ने मुझे कुत्ता कह कर कोसा। अगर सौदागर के हाथ में ताकत होती तो वह मुझे जेल में बंद करा देता। बड़े-बूढ़े असमंजस में पड़ गए। सौदागर के सहायक को हाथ उठाता

देख कर उन्होंने भी हाथ उठा दिए। अब वे सब मुझसे नाराज हैं। लेकिन अब नाराज होने से क्या होना है? निस्सो यहीं मौजूद है। अब आप समझ गए होंगे कि मैं क्यों उस तरह बोला था?"

"मैं कह नहीं सकता, केन्दितरी? अगर तुम झूठ"......

"खुदा गवाह है कि मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ। झूठ मैं क्यों बोलूँगा, शो-पीर? उससे मुझे क्या लाभ होगा?"

"अच्छी बात है। लेकिन तुम क्या कहने के लिए यहाँ आए थे?"

"बताता हूँ। यहाँ के लोग निरे जंगली हैं। उन्होंने अभी दुनिया नहीं देखी। मैंने बहुत कुछ देखा है। क्या तुम जानते हो कि सौदागर लोगों के साथ क्या करता है? मैं उसके बारे में सब जानता हूँ, हालाँकि मैं एक मामूली नाई ही हूं।"

केन्दितरी ने सौदागर की धांधली के बारे में बताना शुरू किया और शो-पीर ध्यान से सुनने लगा।

"अब मैं आपको अत्यन्त महत्वपूर्ण बात बताता हूं," केन्दितरी ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "तुम रसद की इस प्रकार व्यवस्था करना चाहते थे कि दर्रे के निवासियों को साल-भर तक काफी खाना मिलता रहे। लेकिन सौदागर की करतूत की वजह से अब लोगों को भूखों मरना पड़ेगा।"

"क्यों, लोग भूखे क्यों मरेंगे?"

"सुनो, शो-पीर, सौदागर ने हरेक से कहा कि कारवां नहीं आएगा, और किसी को कोई आटा नहीं मिलेगा। बख्तियार और शो-पीर तुम्हें धोखा दे रहे हैं। उन्होंने तुम्हारे अनाज का सोवियत सौदागरों से सौदा कर लिया है। बख्तियार उन्हें लिवाने के लिए गया है। वे बन्दूकों के साथ आएंगे और तुम्हारा सारा अनाज छीन लेंगे। सो बख्तियार के लौटने से पहिले ही बोबो कलां के पास जाओ। वह अपनी पनचक्की चला कर तुम्हारा आटा पीस देगा। अपना बाकी अनाज मेरे पास ले आओ। तुम मुझे पांच साल से जानते हो। मैं सोवियत सौदागरों से कह

दूंगा कि अपने कर्ज़ के बदले में तुम लोगों ने मुझे अनाज दिया है। सोवियत सौदागरों के हाथ कुछ नहीं पड़ेगा, और वे खाली हाथ लौट जाएंगे। जब भी तुम्हें आटे की ज़रूरत हो, मुझ से ले जाना। बसन्त में मैं अज़ीज़खान के इलाके में जाऊँगा और पिछले पाँच सालों की भाँति बोवाई के लिए अनाज ले आऊँगा। इस तरह तुम्हें जाड़े के दिनों में आटा और बसन्त में बोवाई के लिए अनाज मिल जाएगा। बस, फिर क्या था, दर्रे के निवासी सौदागर के बहकाने में आ गए, और रात के अँधेरे में उन्होंने अपना अनाज पिसवा लिया। जो अनाज पिसने से बच गया था, उसे उन्होंने सौदागर को दे दिया। अब आधे फकीरों के पास अनाज नहीं है। कल बख्तियार आटा लेकर आ गया, और जब लोगों ने देखा कि वह अपने साथ सोवियत सौदागर लेकर नहीं आया है तो उनकी समझ में आ गया कि मिरज़ाहूर ने उन्हें धोखा दिया है। उन्हें यह भी डर है कि कहीं मिरज़ाहूर उनका अनाज लेकर यखग़ार न भाग जाए। इस डर का कारण यह है कि सौदागर ने अपने कर्ज़ के बदले में उनके सत्रह गधों को भी हथिया लिया है। जिन लोगों ने बख्तियार को अपने गधे नहीं दिए थे, वे सब अब सौदागर ने अपने कब्ज़े में कर लिए हैं। सौदागर का कारवाँ तैयार है। क्या तुमने टेढ़ी घाटी का नाम सुना है? मिरज़ाहूर ने इन गधों को वहीं रखा है। और मैं उनकी रखवाली कर रहा हूँ। आए दिन मैं टेढ़ी घाटी से यहाँ सौदागर के पास आता हूं, और रात के अंधेरे में कर्ज़ में वसूल किए गए अन्य गधों को हांक कर वहाँ ले जाता हूं। मिरज़ाहूर के कहने से अनेक बुरे काम मैंने किए हैं। लेकिन बुरे कामों की भी एक हद होती है। कल मैंने सोचा कि तुम्हें इन सब बातों की खबर देनी चाहिए। मैंने जो कुछ कहा है, उसका एक-एक शब्द सच है। चाहे तुम जाँच करके देख लो। मैं उन लोगों के नाम बता सकता हूं जिनके पास न अब उनका अनाज है, न गधे हैं। अली मोहम्मद और करीम शो, यूसुफ और रहीम, काराशिर और हैदर, मुबारक शो और रजब, बोगादूर और अलीनूर, चाहे किसी से जाकर पूछ लो। तुम्हें

तुरन्त पता चल जाएगा कि मेरी बातें सच है या झूठ । बस, इतना ही मुझे कहना है । लेकिन तुम से एक बात मैं चाहता हूं । मुझे डर है कि मिरज़ाहूर मुझ से बदला लिए बिना नहीं छोड़ेगा । सो उसे मेरी बातों के बारे में कुछ नहीं मालूम होना चाहिए ।"

"अच्छी बात है, केन्दितरी," शो पीर ने धीमे से कहा, "फिलहाल मैं वचन देता हूँ कि तुम्हारी बातें मुझ तक ही सीमित रहेंगी ।"

पहिले की भाँति अभिवादन करने के बाद केन्दितरी चला गया। जब केन्दितरी बातें कर रहा था तो शो-पीर उसे ध्यान से देख रहा था। लेकिन उसकी आँखें रूखी थीं और चेहरा भावशून्य । शो-पीर ने उसमें ऐसी कोई चीज़ नहीं देखी जिससे पता चलता कि उसकी सहानुभूति पाने के लिए वह ये सब बातें घड़ रहा है ।

तो क्या सचमुच सौदागर ने दर्रे के निवासियों को धोखा देकर उनका अनाज और गधे हथिया लिए हैं ? अगर केन्दितरी की बात सच है तो तुरन्त कोई कार्रवाई करनी चाहिए । दर्रे के निवासी अभी अधिक अनाज नहीं पिसवा सके होंगे, और उनका बाकी अनाज अभी भी सौदागर के पास जमा होगा । अगर यह बात सच हुई तो एक ही आघात में सियातांग को सदा के लिए सौदागर से मुक्त किया जा सकता है ।

: ८ :

शो-पीर उठा, अपने पाइप से उसने राख झाड़ी और बाहर बराण्डे में आ गया ।

"कितने-एक लोग और आए ?"

इससे पहिले कि कोई जवाब देता, बगीचे की दीवार पार करके 'मछली का कांटा' तेजी से भीतर आई और शो-पीर के सामने घुटनों के बल गिर कर चिल्लाने लगी, "शो-पीर, मैं मर जाऊँगी, मेरे बच्चे मर जाएँगे । उसकी बातों पर कान न देना शो-पीर !"

"यह क्या, उठ कर सीधी खड़ी हो !" शो-पीर ने कहा, "क्या तुम मुझे भी खान समझती हो ? सुना नहीं, उठ कर सीधी खड़ी हो !"

"मछली का कांटा' शो-पीर के जूतों से और भी चिपक गई। लेकिन शो-पीर झुका और उसे उठा कर खड़ा कर दिया।

'मछली का काँटा' खड़ी हो गई और अपने हाथों से अपनी सुबकियों का मुंह बँद करने लगी।

"बात क्या है?"

'निस्सो ने इसे आटा देने से इन्कार कर दिया," बौलेतोवा ने कहा जो चौखट के सहारे खड़ी थी, "और इसने हाथ-पाँव पटकना शुरू कर दिया। यह अपना अनाज नहीं लाई थी।"

इसी क्षण निस्सो भी लपक कर कमरे से बाहर निकल आई।

"इसने मुझे बिल्ली कहा, इसने मुझे चोर कहा, इसने मुझे किराये का टट्टू और जाने क्या-क्या कहा। इसने बख्तियार को गधा देने से इन्कार कर दिया था, और न ही यह अपना अनाज लेकर आई। यह सिर्फ दुलत्ती झाड़ना जानती है। नहीं, इसे अनाज नहीं दिया जा सकता।"

"जिधर देखो उधर काँटे-ही-काँटे, आशा की कोई किरन नहीं। मेरी तरफ से तो तुम सब मर गए। क्या तुम समझते हो कि मैं पत्थरों से अपना पेट भरूंगी? मेरे और मेरे बच्चों के भाग्य में अगर मरना ही बदा है तो..."

"बन्द करो यह रोना-झींकना!" शो-पीर ने चिल्ला कर कहा, "और निस्सो, तुम भी चुप रहो। हां तो 'मछली का काँटा', यह बताओ कि तुम्हारे पास अनाज क्यों नहीं है? कहां गया तुम्हारा अनाज?"

"मेरा दुर्भाग्य, इतना ही मैं जानती हूं। कुछ भी तो नहीं रहा मेरे पास, सभी कुछ चला गया!"

"एक मिनट ठहरो। तुम नहीं जानतीं, लेकिन मैं जानता हूं। क्या तुमने अपना गधा मिरज़ाहूर को दे दिया है? डरो नहीं, मुझे बताओ।"

स्त्री ने अपनी आँखें नीचे झुकालीं।

"बोलो?"

"हाँ," मछली का काँटा ने कुछ दुविधा के बाद कहा, "मैं नहीं, काराशिर उसे गधा दे आया।"

"मुझे मालूम है। अब यह बताओ कि क्या तुम या काराशिर अपना अनाज पिसवाने चक्की पर गए थे? क्या तुमने अपना अनाज पिसवाया? क्या तुमने अपना अनाज सौदागर को दिया?"

"हम अनाज पनचक्की पर ले गए थे। हमने उसे पिसवाया नहीं, न ही सौदागर को दिया..."

"तो फिर कहाँ गया?"

"चला गया, शो-पीर, सदा के लिए चला गया, बोबोकलां ने उसे नदी में डलवा दिया!"

"नदी में डलवा दिया, सो क्यों? इधर आओ, और सब बताओ। घबराने की जरूरत नहीं। हम तुम्हारे दुश्मन नहीं हैं, और तुम्हें कभी कोई नुक्सान नहीं पहुँचाएंगे।"

'मछली का काँटा' ने बोलना शुरू किया, पहले कुछ हिचकते हुए, फिर साफ-साफ और सीधे-सादे शब्दों में। जब वह अपनी बात कह चुकी तो शो-पीर मरियम और निस्सो की ओर मुड़ा और शान्त तथा गम्भीर स्वर में बोला:

"क्या तुम्हें मालूम है कि यहाँ क्या कौतुक रचा जा रहा है? जब कि तुम, निस्सो, और 'मछली का कांटा', जंगली बिल्लियों की तरह आपस में लड़ती हो और मैं कितना मूर्ख हूँ जो मुझे कुछ नहीं सुझाई देता। चिन्ता न करो, 'मछली का काँटा', तुम्हारा कसूर कोई ज्यादा बड़ा नहीं है। तुमने सच बात बता दी, यह बहुत अच्छा किया। अब तो सौदागर की कलई खुल गई न? चिंता न करो, और अपने घर जाओ। तुम्हें आटा मिल जाएगा। इस समय फुरसत नहीं है। लेकिन एक बात सुनो। क्या तुम अपना गधा वापिस चाहती हो? और अपना आटा? क्या तुम चाहती हो कि काराशिर अफीम का नशा करना छोड़ दे? क्या तुम चाहती हो कि तुम्हारे बच्चे हृष्ट-पुष्ट और मजबूत हों,

उन्हें खाने की कभी भी तंगी न हो ? क्या तुम यह भी चाहती हो कि तुम्हारे बदन पर अच्छे कपड़े हों ? क्या तुम यह सब चाहती हो ?"

"यह सब कौन नहीं चाहेगा, शो-पीर ! मैं तुम्हारे पाँव........."

"नहीं, इसके लिए पाँव पड़ने की ज़रूरत नहीं। यह सब पाने का रास्ता सीधा और साफ़ है। बस, गाँव में जाओ और सबको बताओ कि सौदागर ने तुम्हारे साथ क्या किया है। तुम्हारी तरह अन्य कितने ही लोग भी डर के मारे चूहों की भाँति अंधेरे बिलों में अपना मुँह छिपाए हैं। और सबसे कहना कि सारा अनाज और सारे गधे वापिस मिल जाएंगे। उन्हें यह भी बताना कि सभी फकीरों को आटा मिलेगा। अब जाओ !"

"लेकिन आटा, शो-पीर ?"

"क्या तुमने सुना नहीं ? जो कुछ मैंने तुमसे कहा है, अगर उस पर अमल करोगी तो तुम्हें हर चीज मिल जाएगी। और सौदागर से ज़रा भी नहीं डरना। उसके दिन आ लगे हैं।"

अपना सिर उठाए विना मछली का काँटा वहाँ से चल दी।

शो-पीर ने मरियम और निस्सो को सौदागर की नयी करतूत के बारे में जो कुछ मालूम था वह सब बता दिया। तभी बख्तियार भी आ गया। वह काफी विचलित और उत्तेजित था। हांफते हुए बताने लगा कि दर्रे के निवासी आटा लेने के लिए आते डरते हैं, क्योंकि उनके पास अनाज नहीं है, और कितनों के पास उनके गधे तक नहीं हैं।

सही बात की जाँच करने के लिए वह एक-एक के घर गया था, और उसे अब यह भी अन्दाज़ हो गया था कि अनाज और गधे कहाँ है।

"मुझे सब मालूम है, बख्तियार !" शो-पीर ने बीच में ही कहा, "और मैंने निश्चय किया है कि हम दोनों अभी गांव चलेंगे। यह एक

अच्छी बात है कि लोग उत्तेजित हैं। उन्हें साथ लेकर हम सौदागर की दुकान पर धावा करेंगे और सभी चीजें वापिस ले लेंगे। यह एक ऐसा मौका है कि अगर हम चूक गए तो फिर हमेशा पछताना पड़ेगा।"

"मैं भी चलूँगी," निस्सो ने कहा।

"अच्छी बात है। लेकिन सबसे पहले तुम दो मन आटा गधे पर लाद कर 'मछली का कांटा' को दे आओ। अब तो तुम समझ गई न कि मछली का कांटा से तुम्हारा घृणा करना कितना गलत था?"

"मैं समझ गई शो-पीर!"

"तो फिर जल्दी करो। सौदागर की दुकान पर पहुंचने से पहले 'मछली का कांटा' को यह मालूम हो जाना चाहिए कि मैं झूठ नहीं बोलता, और कि मेरे वायदे मिरज़ाहूर के वायदे नहीं होते। समूचे गाँव को मालूम हो जाएगा कि तुम उसके लिए आटा ले जा रही हो। इसके अलावा एक मक्सद और है, वह यह कि 'मछली का कांटा' से तुम्हारा झगड़ा भी खत्म हो जाएगा। अच्छा तो अब चलो, बख्तियार! और मरियम, तुम कमरा बन्द कर दो। इस समय आटा वितरित नहीं किया जाएगा।"

निस्सो गधे पर आटा लाद कर चल दी। दौलेतोवा कमरे का भारी दरवाजा बन्द करते हुए बोली, "मैं भी साथ चलूँगी, शो-पीर!"

"क्यों नहीं, तुम भी चलो!" शो-पीर ने रूसी भाषा में उत्तर दिया।

: ६ :

शो-पीर का अन्दाज ठीक निकला। गाँव में प्रवेश करते ही उसने देखा कि दर्रे के निवासी, विचलित और उत्तेजित स्वरों में, खुल कर उन बातों की चर्चा कर रहे हैं जिन्हें कि वे अब से पहले तक छिपा कर

रखते थे। आखिर अधिकारियों को सब बातें मालूम हो ही गई थीं, और आटा न मिलने का उनका डर भी अब जाता रहा था। अब उनसे यह छिपा नहीं था कि सौदागर कितनी चतुराई के साथ उन्हें लूटता था, और सोवियत सौदागरों के हाथ उनका अनाज बेचने की उसकी कहानियां झूठ के सिवा और कुछ नहीं थीं।

खुदा की खुदाई के दावेदार दर्रे के निवासियों की तीखी बातों को सुन कर इस प्रकार गुज़र जाते मानो उन्होंने कुछ सुना ही न हो। उनका ख्याल था कि कुछ भिनभिना कर ये अपने-आप चुप हो जाएंगे। सैयदों, खानों और मीरों के हाथों से सत्ता निकल जाने के बाद पहले भी अनेक बार फकीर इसी प्रकार उबल-उफन कर शान्त हो गए थे। सो वे समझते थे कि लोगों का रोष पहाड़ी आँधी के एक झोंके के समान होता है, उसके रास्ते में न आओ तो वह बिना नुक्सान पहुँचाए निकल जाता है, और उसके बाद शान्ति और निस्तब्धता छा जाती है।

शो-पीर और बख्तियार जब गाँव में पहुँचे तो खुदाई के इन दावेदारों का हृदय आशंकित हो उठा और उन्होंने अनुभव किया कि इस बार आँधी का झोंका यों ही नहीं निकल जायगा। अच्छा यही है कि वे रास्ते से एकदम हट जाएँ और घरों में घुस कर अपने दरवाज़े बंद कर लें। लेकिन शो-पीर अब उनके नज़दीक पहुँच गया था, और उनके लिए आसानी से खिसकना सम्भव नहीं रहा था। फिर खिसकने का मतलब था जान-बूझ कर अपने को अपराधी घोषित करना। सो वे चुपचाप अपनी जगह पर खड़े रहे। उनमें से प्रत्येक यह आशा कर रहा था कि अधिकारियों का गुस्सा उस पर नहीं पड़ेगा।

शो-पीर आया और उनके पास से गुज़र गया। उनकी ओर उसने एक बार भी नज़र उठा कर नहीं देखा। वह सीधा फकीरों के पास गया और वहाँ जाकर उनके बीच बैठ गया। सीधे-साधे ढंग और हार्दिकता के साथ वह उनसे बातें करने लगा। ऐसा मालूम होता था

जैसे वह उनका मित्र हो । फकीरों की जुबान खुलते देर न लगी और उन्होंने मिरजाहूर के खिलाफ अपनी शिकायतों का अम्बार लगा दिया ।

"अब हम क्या करें शो पीर ?"

"इन फटे चिथड़ों के सिवा अब हमारे पास और क्या रह गया है ? हम भूखों मर जायेंगे !"

"सौदागर ने हमें बहुत बुरा धोखा दिया !"

लोग गलियों में निकल आए थे और दीवारों पर चढ़ गए थे । वे दूर से सुनते रहे,—पहले आशंकित हृदय से, फिर आशा में भर कर ।

शो-पीर और बख्तियार के चारों ओर भीड़ बढती जारही थी। शो-पीर ने देखा कि भीड़ में कुछ स्त्रियाँ भी मौजूद हैं और गहरी उत्सुकता से सुन रही हैं । पुरुष अपनी मुसीबतों में इतने डूबे थे कि उन्हें स्त्रियों को खदेड़ने का भी ध्यान नहीं रहा ।

"बस यही मौका है," शो-पीर ने अपने मन मे सोचा और सहज भाव से उछल कर पत्थर की दीवार पर पहुँच गया । शहतूत के पेड़ की एक शाख के सहारे अपने बदन को स्थिर कर उसने लोगों की निस्तब्ध भीड को सम्बोधित किया :

"अब तक तुम लोग डरे और सहमे हुए थे । किस बात का डर था तुम्हें ? जरा सोचो तो कि कितने मज़बूत हो तुम ! न्याय पाने से क्या तुम्हें कोई रोक सकता है ? जिस प्रकार 'मछली' कांटे में फँस जाती है, उसी प्रकार सौदागर तुम्हें अपने झूठे वायदों में फाँसता रहा । वर्ष-प्रति-वर्ष सौदागर तुम्हारी चीजों को हथियाता रहा, तुम्हारा अनाज, तुम्हारे बेर और सेब, तुम्हारे ढोर-डंगर और कपड़े-लत्ते, किसी भी चीज को उसने नहीं छोड़ा । अपने जीवन का आधा भाग तुमने उसका कर्ज चुकाने में खपा दिया, और वह तुम लोगों के बीच अपने पेट पर हाथ रखे उन्हें गरमाता रहा । वह चोर और धोखेबाज है। उसने तुम्हारा सारा अनाज क्यों हथिया लिया ? तुम्हारे गधों पर उसने क्यों कब्जा कर

लिया ? तुम डरते क्यों हो ? तुम क्यों हड्डियों और चमड़ी का ढाँचा भर रह गए और तुम्हारे बच्चे क्यों भूखों मर रहे है ? खाली गाल बजाना अब बन्द करो। डरना किस काम का ? कैसे कर्जे, और किसके कर्जे ? सौदागर को तुम्हे कुछ नहीं देना है ? उसका चोरी किया हुआ अनाज तुम्हारा है ; गधे तुम्हारे हैं। तुम्हारी भेड़ों की ऊन, तुम्हारी पकडी हुई लोमड़ियों की खालें, सभी उस चोर सौदागर के पास हैं। चलो, चोरी का सारा माल उसके पास से बरामद करे, और हर व्यक्ति को उसकी चीज़ वापिस लौटा दे ; चलो मेरे साथ !"

शो-पीर कूद कर दीवार से नीचे उतर आया और बख्तियार की ओर गरदन से इशारा करते हुए दृढ़ कदमों से सौदागर की दुकान की ओर चल दिया। एक रोषपूर्ण धारा की भाँति लोग उसके पीछे-पीछे चल दिए।

उन्हें निकट आता देख सौदागर अपनी दुकान से तेजी से निकला और घर के पीछे से खिसकने की कोशिश करने लगा। लेकिन शो-पीर की आवाज़ ने तभी उसके पाँव बाँध दिए।

अपने हाथों को सीने पर एक-दूसरे के साथ बांधे मिरजाहूर खड़ा होगया, झाग उगलते किन्तु भयभीत और आक्रमण करने मे असमर्थ बैल की भाँति उसने अपना सिर नीचे कर लिया। लेकिन यह तो केवल उसका वाह्य रूप था। वस्तुतः उसके हृदय की धड़कन धीमी पड़ती जारही थी, यहाँ तक कि ऐसा मालूम हुआ मानो उसके हृदय ने भय से धड़कना बन्द कर दिया हो। वह अपनी जगह पर जैसे जाम हो गया था।

शो-पीर ने उसके पास पहुँच कर देखा कि उसके होंठ काँप रहे हैं, और उसकी आँखें भय के मारे ऊपर उठने से इन्कार कर रही हैं।

तभी दुकान की चपटी छत पर केन्दितरी प्रकट हुआ, और वहाँ से भीड़ की ओर देखने लगा। उसके मुँह के एक छोर पर मुसकराहट थिरक रही थी। टांगें मोड़ कर वह छत पर बैठ गया, शान्त और

निर्द्वन्द्व भाव से, ठीक उस मुद्रा में जिसमें कि मुसलमान खुदा की इबादत करते हैं।

"हाँ तो मिरज़ाहूर," शो-पीर ने धीरज के साथ कहा, "अब समय आगया है कि हिसाब चुकता कर लिया जाए। अपनी दुकान खोलो। हम तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाएंगे। लोगों से तुमने जो कुछ लिया है, उसे बस सीधे-सीधे वापिस कर दो। अनाज कहाँ है?"

भीड़ ने दूकान को चारों ओर से घेर लिया। सौदागर अनिश्चित डगों से दुकान खोलने के लिए आगे बढ़ा। तभी निस्सो, सबसे पहिले, बिजली की भाँति दुकान की ओर लपकी।

"तुम कहाँ जारही हो, निस्सो?"

लेकिन निस्सो दुकान के अँधेरे में प्रवेश कर चुकी थी। अगले ही क्षण उसकी आवाज सुनाई दी:

"अनाज यहाँ है, शो-पीर! छत तक अटा है। और आटा? ज़रा यहाँ आकर देखो, आटे का भी पूरा अम्बार लगा है!"

:१०:

गुलरीज़ के कमरे में चूल्हे की लाल रोशनी थिरक रही थी, और झाड़ियों की लकड़ियों के जलने और चटखने की आवाज़ आ रही थी। अंधेरा सिमट कर कोनों में घना हो गया था जिसकी गहराइयों में मिट्टी की रकाबियों से भरे लकड़ी के खाने और पत्थर की लम्बी चौकियाँ जिन पर कम्बल और बकरी की खालें तह करके रखी थी, धुंधली-धुंधली दिखाई दे रही थी।

फ़र्श से लेकर छत के धूमालय तक, धुएँ में काले पड़े चार सतूनों से चूल्हा घिरा था। जब धुवाँ विलीन हो जाता था तो धूमालय में से तारे टिमटिमाते दिखाई देते थे। बख्तियार, शो-पीर, मरियम, निस्सो, ज़ुबेदा, खुदादाद, काराशिर और 'मछली का कांटा' चूल्हे के इर्द-गिर्द बैठे या लेटे हुए थे। गुलरीज जिसका चेहरा आग की रोशनी से चमक रहा था, चूल्हे पर झुकी थी। अतिथियों ने पुलाव के प्याले अभी-अभी खत्म

किए थे, और अब चाय के पानी के गर्म होने की इन्तजार कर रहे थे।

'मछली का काँटा' अपने नये घर के कते-बुने चोगे में बहुत ही साफ़-सुथरी मालूम होती थी। प्यार में पगी वह अपने बच्चे की ओर देख रही थी जो उसकी गोदी में सोया हुआ था। बख्तियार पत्थर की चौकी पर नीचे पांव लटकाए बैठा था और बाँसुरी से एक गीत की धुन बजा रहा था जिसमें पहाड़ी बकरी प्रेमिका के घर में घुस जाती है और प्रेमी का हृदय छटपटाता रहता है। उसने अपनी आँखें बन्द कर रखी थी और निस्सो के सिवा और किसी पर उसका ध्यान केन्द्रित नहीं था। निस्सो की नजर अपने नये जूतों पर जमी थी और उसका मस्तिष्क सम्भवत: उस दूर देश की सैर कर रहा था जहाँ से कि शो-पीर और मरियम आए थे।

शो-पीर पत्थर की चौकी पर लेटा था। उसकी सैनिक जाकेट के बटन खुले थे। पाँव में वह शोख रंग के मोजे पहने था, जिन्हें आज सुबह ही निस्सो ने उसे भेंट किया था। उसकी नजरें जुबेदा के आधे चेहरे पर जमी थी जो कोमल भी था और कठोर भी। उसके चौड़े माथे पर लपटों का आलोक थिरक रहा था। शो-पीर उसे निर्लिप्त भाव से देख रहा था, लेकिन उसकी नजर से चौकन्नी होकर जुबेदा ने अपना मुंह सीधा कर लिया। अब उसका चेहरा उतना आकर्षक नहीं मालूम होता था, उसकी नाक बहुत चौड़ी थी और आँखें छोटी। शो-पीर अब काराशिर के पसीना छाए चेहरे की ओर देखने लगा। वह एक सतून की टेक लगाए बैठा और उसकी आँखें मुंदी हुई थीं।

"काराशिर, क्या सो गया ?" शो-पीर ने कहा।

"नहीं," काराशिर ने कहा और अपनी आँखें खोल लीं।

"नया चोगा पहनने के बाद काराशिर बहुत रोबदार मालूम होता है !" शो-पीर ने हंसते हुए कहा।

"रोबदार तो यह है ही," 'मछली का काँटा' ने कहा, "लेकिन उस समय तुमने इसे नहीं देखा जब यह पिल्ले की भाँति..."

"किस समय ?" शो-पीर ने पूछा ।

"उस समय जब केन्दितरी, काराशिर और मैं टेढ़ी घाटी से गधों को हाँक कर लाए थे ।"

"हाँ तो क्या हुआ उस समय जब तुम गधे लेकर आए ?"

"मैं भी उस समय वहाँ नहीं थी," निस्सो ने अपने विचारों से जागते हुए कहा ।

"तुम और खुदादाद सौदागर की दुकान से बोरे निकाल कर बाहर रख रहे थे," बख्तियार ने कहा, "शो पीर और मरियम दुकान के सामने खड़े सब चीज़ों की सूची तैयार करने में जुटे थे । क्या तुम्हें याद है कि दर्रे के निवासी अपने गधों को देखते ही किस प्रकार उनकी ओर लपके थे ?"

"नहीं, मैं तो बोरे गिन रहा था," शो-पीर ने कहा ।

"लेकिन मैंने सब देखा । दर्रे के सभी निवासी एक साथ गधों की ओर लपके । वे इतने उत्तेजित थे कि यह तय करना भी भूल गए कि किस को क्या लेना है । प्रत्येक अपने गधे से लिपट गया । काराशिर अपने गधे पर सवार हो गया..."

"मुझे कहने दो," मछली का कांटा बीच में ही बोल उठी, "वह गधे पर सवार हो गया और मैं भी तुरत उसके पास पहुंच गई । मेरा गधा, मैं झुक कर देखने लगी कि वह सही-सलामत तो है न ?"

"झुक कर देखने लगी ?" काराशिर ने चिढ़ाते हुए कहा, "तुम उसकी गरदन से लिपट गईं और उसके कानों को सहलाने लगीं । और तुम्हारी आँखों से टपाटप आँसू गिरते देख सब हँस रहे थे ।"

"नहीं, मैंने आंसू नहीं बहाए !"

"बहाए कैसे नहीं, तुम्हारी आँखों से आँसुओं की झड़ी लगी थी । तुमने न जाने कैसा मुंह बनाया और आंखों से टपाटप आँसू गिरने लगे ।"

"तो इससे क्या हुआ ?" 'मछली का कांटा' ने अपने पति के मुँह पर हाथ रखते हुए कहा, "इनकी बात पर ध्यान न देना, शो-पीर ! मैंने

अपने गधे को पाने की सारी उम्मीद छोड़ दी थी। यूसुफ की आंखों में भी आंसू ढुरक आए थे। फिर वह उसकी पीठ पर चढ़ कर पागलों की भांति उसे घुमाने लगा। मेरे पति के सिर पर भी मूर्खता सवार हुई और गधे के एक एड़ लगाई। लेकिन गधा टस-से-मस न हुआ। यूसुफ अपने गधे पर बैठा उसके पास आ गया और दोनों एक-दूसरे को गधे से नीचे गिराने के लिए आपस में जूझने लगे। सभी उन्हें देख-देख कर हंस रहे थे। मैंने सोचा कि मेरा पति भी कितना मूर्ख है जो सब उसकी हँसी उड़ा रहे हैं। लेकिन इस समय देखो, कितने रोब के साथ बैठा है।"

"रोब के साथ तो बैठना ही चाहिए," शो-पीर ने कहा, "नये जीवन की यह शुरुआत कर रहा है। जानती हो, अब यह अफीम को कभी हाथ नहीं लगाएगा।"

"सो कैसे ?" बख्तियार ने पूछा।

"जब तुम उसके और केन्दितरी के साथ गधे लेने चले गए थे तो निस्सो और खुदादाद सौदागर की दुकान का सामान निकालने लगे। तभी सौदागर की दुकान में उसका अफीम का जखीरा भी मिल गया। निस्सो, तुम्हें अफीम कहां मिली ?"

"दुकान के कोने में, चिथड़ों के नीचे। कालीन की थैलियों में अफीम सिली हुई थी। सौदागर मुझे बहुत दिनों तक नहीं भूलेगा। और यह ठीक भी है। कम्बख्त मुझे अजीजखान के हाथ बेचना चाहता था। लेकिन यह तो बताओ शो-पीर, मैं उन मोज़ों का क्या करूं जो मैंने उस के लिए बुने थे ? कायदे से तो मुझे मोज़े लौटा देने चाहिएँ।"

"तो लौटा दो। केवल एक बात है। क्या तुम जानती हो कि उसके पास ऊन कहाँ से आई ?"

"हमने ही उसे दी थी," जुबैदा ने कहा, "मैं खुद उसे अपनी भेड़ की ऊन देकर आई थी।"

"और उसने कुछ नहीं दिया ?" 'मछली का कांटा' ने पूछा।

"नहीं, उसने केवल रंग देने का वायदा किया था।"

"उसने अपना वायदा पूरा नहीं किया ?"

"उसने मुझे ऊन लौटा दी और कहा कि इसका एक चोगा बना कर ले आओ। तभी मैं तुम्हे रंग भी दे दूंगा। मैं चोगा बना कर उसके पास ले गई, लेकिन न तो उसने रँग दिया, न ऊन ही लौटाई।"

"यह कब की बात है ?" शो-पीर ने पूछा।

"पिछले जाड़ों की।"

"इसका मतलब यह कि आज तुम्हे अपना चोगा वापिस मिल गया।"

"नहीं, यह मेरा नहीं है। वह दूसरा है। क्या तुम जानते हो कि मेरा चोगा कहाँ है ? वह देखो, उसे खुदादाद पहने है। अपने चोगे को मैंने तभी पहचान लिया था जब शो-पीर उसे खुदादाद को दे रहा था।"

"और यह मेरा चोगा किसने बनाया था ?" काराशिर ने पूछा।

"यह मैं नही जानती। हम में से ही किसी ने बनाया होगा," काराशिर के चोगे को हाथ में लेकर देखते हुए ज़ुबेदा ने कहा।

"तुमने अफीम का क्या किया, शो-पीर ?" बख्तियार ने पूछा।

"वही जो तुमने किया था। उसे नदी के हवाले कर दिया।"

बाहर तेज़ हवा चल रही थी। और चूल्हे का धुआँ जो अब तक धूमालय से बाहर निकल रहा था, घूम कर नीचे कमरे में ही फैल गया और उसने सबको ढक लिया। धूमालय में से तारों का दिखना अब बन्द हो गया था।

"आकाश बादलों से घिरा है," शो-पीर ने कहा।

"और ठण्ड भी बहुत बढ़ गई है !" गुलरीज़ के मुंह से निकला।

"चाय अब तैयार है," गुलरीज़ ने पूछा, "क्यों शो-पीर, क्या तुम हमारे जैसी चाय पिओगे ?"

"नमक, मलाई और दूध के साथ ? नहीं बाबा, मेरे लिए तो गर्म पानी में खाली पत्तियाँ छोड़ दो।"

"और मेरे लिए भी," मरियम ने कहा।

गुलरीज़ ने सब के सामने चाय परस दी, शो-पीर और मरियम के लिए सादी, शेष सबके लिए नमक और मलाई वाली।

हवा के एक तेज़ झोंके से दरवाज़ा खुल गया। खानों में रखीं रकाबियाँ आपस में खड़खड़ा उठीं और लकड़ी के खाली बरतन नीचे गिर कर फ़र्श पर लुढ़कने लगे। छत से बकरी की एक खाल लटकी थी, वह मरियम के ऊपर आ गिरी। चूल्हे की आग अपने को चेतन रखने के लिए मानो सँघर्ष कर रही थी।

"बर्फ, अरे, यह तो बर्फ गिर रही है!" तिस्सो ने चिल्ला कर कहा।

सनसनाती हवा के साथ बर्फ के कण अब दरवाज़े के भीतर आ रहे थे. छत के धूमालय से भी बर्फ के कण नीचे गिर रहे थे।

"जाड़े शुरू हो गए", शो-पीर ने कहा, "अब काफी दिनों तक सियातांग का बाकी दुनियां से कोई सम्बन्ध नहीं रहेगा।"

"बच्चे घर पर अकेले हैं", 'मछली का कांटा' ने चिन्तित स्वर में कहा, "मेरा घर जाना ज़रूरी है।"

"ऐसे में कहां जाओगी", निस्सो ने कहा, "ज़रा हवा कम हो जाने दो।"

"नहीं, मैं नहीं रुक सकती", 'मछली का काँटा' ने ज़ोर देकर कहा, "चलो काराशिर अपने गधे को तैयार कर लो।"

"मेरे लिए भी जाना ज़रूरी है", "खुदादाद ने कहा।"

"लेकिन तुम यहीं रहना, जुबेदा! हम लोग अपने कमरे में बोरों पर सो जायेंगे।"

"यह भी कोई कहने की बात है। जुबेदा यहीं रहेगीं।"

"अच्छी बात है," जुबेदा ने कहा।

शो:पीर और निस्सो अतिथियों को बिदा करने बाहर चले गए। आंधी का वेग और भी बढ़ चला था। अन्धेरा इतना घना था कि एकदम पास की चीज़ भी दिखाई नहीं देती थी।

ठीक इसी समय सौदागर ने अपनी दुकान की रोशनी गुल कर दी और केन्दितरी के साथ गाँव से चल दिया। गांव और उसके निवासियों को हज़ार बार कोसने के बाद उसने अपना मुँह मोड़ लिया।

आंधी के बावजूद उसने इसी समय गांव छोड़ने का निश्चय किया था। उसे डर था कि रात को बर्फ़ गिरने के कारण अगर महा नदी तक पहुँचने का रास्ता बन्द हो गया तो उसे जाड़ों भर इस सियातांग में ही सड़ना पड़ेगा।

केन्दितरी ने मिरज़ाहूर को बहुत कुछ समझाया कि कम-से-कम आंधी तो रुक जाने दे। लेकिन वह नहीं माना। वह दो चोगे, एक ऊनी पगड़ी, सियातांग के फैन्सी मोज़े और बकरी की खालों के दस्ताने पहने था। केन्दितरी भी इस प्रकार कपड़ों से लदा था। दोनों अपनी-अपनी कमर पर सामान से भरे भारी-भरकम बण्डल लादे थे। बण्डलों के साथ कम्बल और महा नदी पार करने के लिए बकरी की खाल की तीन मशक बंधी थीं। मिरज़ाहूर की पेटी से एक भारी थैली लटकी थी, जिसमें सोने के पासे और चांदी के चारसौ सिक्के थे जो उसने अपनी दुकान में गाड़ रखे थे। दोनों अपने हाथों में लाठी लिए थे। भारी बोझ और तेज़ हवा के मारे उनके पाँव लड़खड़ा रहे थे। देखते-न-देखते आँधी ने उन्हें अपने आवरण में छिपा लिया।

अँधेरे में रास्ता टटोलते हुए मिरज़ाहूर आंधी-तूफान में डूबा गांव को आखिरी बार कोसने के लिए रुक गया। केन्दितरी के कानों तक उसके शब्द नहीं पहुँच सके, लेकिन अन्दाज से वह समझ गया, और उसके होंठों पर मुस्कराहट खेलने लगी।

आठवाँ परिच्छेद

(१)

ऐसा मालूम होता था मानो दुनियाँ भर की ठंड और बर्फीली हवाएँ सिग्रातांग दर्रे में आकर जमा होगई हों। सियालाँग समुद्र की सतह से कई हज़ार मीटर ऊँचा था। जिधर भी नजर जाती थी, पहाड़ी ढलुवानों और चोटियों पर एकदम निर्मल रुई की भांति बर्फ सफेद फैली थी। चौंधिया देने वाली सफेदी के बीच अधर लटकी चट्टानों के काले हिस्सों को जहाँ-तहाँ देख कर आँखों को बड़ी राहत मिलती थी। बर्फ़-आबद्ध दर्रे में अभेद्य धुंध दबे पाँव सहमी-सी उठती थी और समूचे दृश्य जगत को बहुधा घेरे रहती थी।

गांव शेष समूची दुनियां से कट कर अलग होगया था, मानो उस पर किसी ने जादू कर दिया हो। विरोधी हवाओं की कानबेधी सनसनाहट हिम-शिलाओं की गड़गड़ाहट और नीचे खड्ड में बर्फ की चट्टानों के गिर कर चूर-चूर होने की आवाजों के सिवा और कोई आवाज़ नहीं सुनाई देती थी।

दर्रे के निवासी दुआ-प्रार्थना करना नहीं जानते थे। उनका विचित्र धर्म उन्हें इसकी इजाजत नहीं देता था। पहिले पीर समूचे गाँव की ओर से दुआ-प्रार्थना करते थे और इसके लिए सब से नया पैदा हुआ अपना मेमना या और कोई चीज जिस पर पीर की नज़र पड़ती थी, वे पीर को भेंट करते थे। उनका खुदा उन से दूर था। उनकी शिकवा-शिकायतों और मिन्नतों को वह नहीं सुनता था। वह केवल पीरों की बात सुनाता था। खुदा से बातें

करना केवल वे ही जानते थे। लेकिन सियातांग में अब पीर नहीं रहे थे। तब से गरीब फक़ीरों का खुदा से बहुत ही कम वास्ता पड़ता था। लेकिन देव और जिन अभी भी सियातांग में मौजूद थे,—पहाड़ों और नदी के पानी में, उड़ते हुए बादलों और उनके खोहनुमा घरों में, सनसनाने वाली हवाओं में। देव और जिन जो अदृश्य और भयोत्पादक थे, दर्रे का प्रत्येक निवासी उनकी अज्ञात और सम्भावित विपत्ति से आतंकित था। केवल विशुद्ध, ललपाती अग्नि के भय से मुक्त थी; सच्ची और हानि-विहीन अग्नि; हर जीवधारी की मित्र; पाप-मुक्त, दोष-मुक्त, अपनत्व और शक्ति से पूर्ण अजेय अग्नि : बर्फ़-आबद्ध पहाड़ों के निवासियों की एक मात्र आशा, उनके जीवन का एक मात्र आधार!

सियातांग का प्रत्येक निवासी अपने खोहनुमा घर में जीवन की नन्हीं चिंगारी की सावधानी से रक्षा करता था। समूचा परिवार, दिन और रात, चूल्हे के इर्द-गिर्द सिमटा रहता था। बच्चे और बड़े बूढ़े सुन्न हुए अपने हाथों को अग्नि के निकट लाकर गरमाने की कोशिश करते, एक साथ घण्टों तक चुपचाप उसकी ओर देखते रहते, बहु-जिह्वा अग्नि की समझ में न आने वाली बातों को सुनते, विलीन होती हुई उसकी लिखावट को पढ़ते, मानो किसी विद्वत्तापूर्ण और अद्भुत पुस्तक के पन्ने उनकी आँखों के सामने खुल रहे हों।

अग्नि ही उनका एक मात्र सहारा थी। ग्रीष्म-कालीन अपनी यात्रा से थक कर सूरज, विश्राम की खोज में, पाले और धुँध के पीछे जितना हटता जाता था, जीवन की नन्ही-से-नन्हीं चिंगारी उतनी ही अधिक मूल्यवान होती जाती थी। और कुछ चाहे हो या न हो, लेकिन बहु-सींगों वाली अग्नि बनी रहे, उसकी लपटों का थिरकना शान्त न हो। देर या सवेर बसन्त का आगमन होगा, धुँध पाला छट जायगा, लम्बे शीतकालीन, विश्राम के बाद सूरज एक बार फिर जीवन का संचार करेगा। धीरे-धीरे अनमनी बर्फ़ पिघलने लगेगी और धरती उसके बन्धन से मुक्त हो

जाएगी। तब दर्रे के निवासी कहेंगे, "सूरज अब कुत्ते का स्पर्श कर रहा है जो समूचे जाड़ों भर पाले में दबा रहा, और उसने मानव के अँगूठे की ओर बढ़ना शुरू कर दिया है। जाड़ों की बात अब भूल जाओ।"

और सभी निवासी जाड़े शुरू होने के बाद पहली बार अपने खोह-नुमा घरों से निकल कर बाहर जमा होंगे, जाड़ों में सचित पापों से अपने को मुक्त करने के लिए समूची घाटी में बड़ी-बड़ी होलियाँ जलाएँगे, गीत गाएँगे और आग की लपटों पर से कूदेंगे,—ठीक वैसे ही जैसे कि उनके अग्नि-उपासक पूर्वज हज़ारों वर्षों से करते आरहे थे। इसके बाद, साँझ को, वे उस घर की ओर जाएँगे जहाँ शो-पीर और बख्तियार रहते हैं, और उससे भी आगे चढ़ाई पर चट्टानों के बीच से निकलने वाले झरने के ठण्डे निर्मल पानी में स्नान करेंगे।

लेकिन अभी तो लम्बे जाड़ों की शुरूआत ही थी। न कोई गाँव से बाहर जा सकता था, न बाहर से गाँव में आ सकता था। दुनियां में चाहे कुछ भी होता रहे, सियातांग निवासी बसन्त के आने तक उससे बेखबर रहते थे। जाड़ों का मौसम भीषण और भयावह होता था। ऐसा मालूम होता था जैसे सभी चीजों को पाला मार जाएगा।

लेकिन जीवन फिर भी चल रहा था। सौदागर की भूतपूर्व दुकान में सियातांग का पहला स्कूल खुल गया था। मरियम, बख्तियार और निस्सो हर सुबह वहाँ आजाते थे। अपने साथ वे जुबेदा, खुदादाद तथा अन्य मित्रों को भी लाते थे। वे आग जला लेते थे और उसके निकट कालीनों पर बैठ जाते थे। मरियम अपने साथ वोलोस्त से तीन किताबें लाई थी; दो हिसाब और लिखने की पोथियाँ और एक लेनिनवाद के मूल सिद्धान्त। यह आखिरी किताब तीनों में सबसे ज्यादा रोचक थी। मरियम इसके अंशों का अनुवाद करके उन्हें उनकी अपनी भाषा में सुनाया करती थी।

निस्सो अब बहुत कुछ जानती थी। मास्को, ताश्कन्त और लेनिन-वाद के बारे में उसे इतनी बातें मालूम थीं कि लगता था जैसे वह खुद

वहाँ हो आई हो। मरियम ने उसे एक छोटा-सा बैज दे दिया था जिस पर लेनिन की तस्वीर बनी थी। सियातांग में और किसी के पास ऐसा बैज नहीं था और निस्सो उसे बड़े गर्व से लगाती थी। बख्तियार निस्सो से बार-बार अश्तरेकलां की कहानी सुनाने के लिए कहता था कि किस प्रकार उसने उसके जबड़े में छलाँग मारी थी। यह वह इसलिए नहीं कहता था कि इतनी बार सुनी हुई कहानी को वह फिर एक बार सुनना चाहता था, बल्कि इसलिए कि दर्रे के अन्य निवासी भी निस्सो के साथ साथ उसके भूतपूर्व अंधविश्वासों पर हँस सकें। और इसलिए भी कि वह निस्सो के हँसते हुए चेहरे को देख सके, जो इतना निर्मल और इतना अछूता था! निस्सो के दूसरे साथी भी अपने गाँव के जीवन की उल्लेखनीय घटनायें सुनाते, और वे मरियम से पूछते कि उनमें से कौन-सी बातें सच हैं और कौन-सी केवल बड़े बूढ़ों की मनगढ़न्त!

एक दिन स्कूल में गम्भीर शान्ति छाई थी। मरियम के काफ़ी समझाने-बुझाने के बाद सबसे पहले ज़ुबेदा अपने मेमने को लेकर आई और उसने उसे दरवाजे से बांध दिया, जिससे कि वह सब के सामने उस के गले में लटके चमड़े के तिकोने तावीज़ को खोल कर जला सके। तावीज़ को हाथ में लिए वह आग के पास अपनी जगह पर आगई।

दर्रे का प्रत्येक निवासी अपने गले, बांह या कोहनी में इस तरह के तावीज़ बांधे था। पहले पीर इन तावीज़ों को बेचते थे। जब वे सियातांग से विदा हो गए तो सौदागर ने तावीज़ों का व्यापार शुरू कर दिया, जिन्हें वह यखबार से लाता था।

मरियम ने बख्तियार से एक चाकू लिया और सब सांस रोके उसकी ओर देखने लगे।

"अब हमें देखना है ज़ुबेदा कि तुम्हारा मेमना मर जाता है या जीवित रहता है?" तावीज़ को चाकू से चीरते हुए मरियम ने कहा।

तावीज़ में से पीले कागज़ की एक छोटी-सी पर्ची निकली जिस पर कुछ अजीब से चिह्न छपे हुए थे। एक बार सभी ने कागज़ की

इस पर्ची को देखा और अन्त में उसे मरियम को लौटा दिया।

"इस के लिए तुमने सौदागर को क्या दिया था ?"

जुबेदा ने बताया कि उसकी मृत माँ ने यह तावीज़ बहुत पहले ख़रीदा था। सौदागर तो बहुत देर बाद सियातांग में आया। लोग कहते थे कि उसकी माँ ने इसके लिए पीर को तीन चूज़ें भेंट किए थे। उसका मेमना मरे या जिए, लेकिन इस तावीज को अब वह उसके गले में नहीं बांधेगी।

"इसे आग में फेंक दो, मरियम !" जुबेदा ने कहा।

"तुम खुद अपने हाथों से फेंको !" मरियम ने मुस्कराते हुए कहा।

"नहीं, तुम...," जुबेदा फुसफुसाई।

"अच्छी बात है। मैं इसके दो टुकड़े किए देती हूँ। आधा टुकड़ा तुम फेंकना, और आधा मैं !"

जुबेदा अभी भी हिचक रही थी। निस्सो ने हाथ बढ़ा कर काग़ज़ का टुकड़ा उससे छीन लिया, "लाओ, मैं फेंके देती हूँ।"

निस्सो ने कागज़ का टुकड़ा आग के बीचोंबीच फेंक दिया। चिन्तित और आशंकित नज़रें मेमने की ओर घूम गईं और उस समय जब मेमने को सही-सलामत देख जुबेदा ने सन्तोष की गहरी सांस ली, मरियम से हँसे बिना न रहा गया।

लेकिन कौन जाने इस समय न मर कर मेमना बाद में सूख कर मर जाए !

जुबेदा के सङ्गी-साथी पूरे एक सप्ताह तक मेमने के लिए घास, आटा और सूखे हुए बेर लेकर आते रहे। लेकिन मेमना बीमार तक नहीं पड़ा, उलटे मोटा होता गया !

एक दिन सवेरे मरियम ने सुझाया कि वे सब अपने-अपने तावीज़ों को आग के हवाले कर दें। पहिले तो वे हिचकें, लेकिन मरियम को हँसता देख तैयार होगए। लेकिन इस शर्त पर कि इस घटना को वे सब

के सब गुप्त रखेंगे।

उस दिन जब वे स्कूल से घर लौटे तो सब के हृदय आशंकित थे। लेकिन जब अगले दो-चार दिन तक उनके जीवन में कोई अघट घटना नहीं घटी तो वे अपनी आशंकाओं और दर्रे के निवासियों पर खूब हँसे, जो मरने की अन्तिम घड़ी तक अपने तावीजों से चिपके रहते हैं।

यहां आने से पहिले मरियम बाल-सेना (कोमसोमोल) में काम करती थी। निस्सो ने बाल-सेना के बारे में सुना और बोली, "क्या हम बाल-सेना की वीर नहीं बन सकतीं? बताओ न, हम क्या तुम से कुछ कम है?"

मरियम अचकचा कर रह गई, उससे कोई ऐसा जवाब देते नहीं बना, जिससे सब को सन्तोष होता।

शुरू के बारह विद्यार्थियों में अब कई युवक और दो लड़कियाँ और शामिल होगईं थीं: चौदह वर्षीया तूफा और नफीस। ये जुबेदा की सहेलियां थीं और उसी ने उनके माँ-बाप से उन्हें स्कूल भेजने के लिए कहा था। उनके माता-पिता गरीब फकीर थे, जिन्हें पिछले पतझड़ में ही अनजोती जमीन के नये प्लाट मिले थे। पहिले तो उन्होंने इन्कार कर दिया, लेकिन बाद में शो-पीर ने उनसे दिल खोल कर बातें कीं, बातों के साथ-साथ उन्हें पाँच टोपी भर चावल भी भेंट किए।

"अच्छी बात है, तुम स्कूल जा सकती हो," उन्होंने अपनी लड़कियों से कहा, "लेकिन खबरदार, अपने ताबीज़ कभी नहीं उतारना?"

बख्तियार के साथ काराशिर भी कई बार स्कूल आ चुका था। सौदागर के चले जाने के बाद वह एक-दो बार शो-पीर के पास पहुँचा और मिन्नतें करने लगा, "चाहे जैसे भी हो, थोड़ी-सी अफीम लादो। नहीं तो मैं मर जाऊँगा।" उसके पेट में दर्द रहता था, उसके हाथ-पाँव नहीं उठते थे, और वह सचमुच में बीमार पड़ गया। मरियम ने उन दवाओं से उसकी चिकित्सा की जिन्हें वह वोलोस्त से अपने साथ लाई थी। धीरे-धीरे वह अच्छा हो गया। अब वह अफीम को याद नहीं करता था

और उसके चेहरे पर ताजगी दिखाई देती थी। नया चोगा पहन कर अब वह गर्व के साथ घूमता था और फकीर के बजाय अपने को सैयद घोषित करता था। यह बात भी सभी को मालूम थी कि 'मछली का काँटा' अब अपने पति को नहीं पीटती, हालांकि उसका चीखना-चिल्लाना अभी भी जारी था।

पहली बार छात्रों के बीच बैठ कर जब उसने अपनी दाढ़ी खुजलाना शुरू किया तो उसे देख कर हँसी रोकना मुश्किल हो गया। लेकिन मरियम की गुस्सा-भरी आँखों ने किसी को हँसने नहीं दिया। काराशिर की समझ में कुछ नहीं आया, लेकिन वह चुपचाप और गम्भीर मुद्रा बनाए कालीन पर बैठा रहा। और साँझ को जब विदा होने लगा तो बोला, "मैं अब रोज आया करूँगा।"

शीघ्र ही काराशिर स्कूल का एक अंग बन गया। पाठों के दौरान में वह बहुधा चुपचाप बैठा रहता और बड़े ध्यान से सब बातें सुनता। और एक दिन जब मरियम ने एक छोटा-सा वाक्य लिखने को दिया तो उसने सब को चकित कर दिया। बख्तियार से बर्च वृक्ष की छाल छीन कर उसने उस पर लिखा, 'मैं हूँ काराशिर, बाल-सेना का बीर!"

मरियम ने उसे जोर से पढ़ कर सुनाया और हँसी के साथ सब की आँखें बख्तियार की दाढ़ी की ओर घूम गईं, "बाल-सेना का बीर!"

लेकिन उनकी हँसी बांध तोड़ कर आगे नहीं बढ़ सकी। मरियम ने उन्हें चुप कर दिया और काराशिर को थपथपाते हुए बोली, "कितना अच्छा लिखा है तुमने! अगर तुम चाहो तो तुम्हें पढ़ाने के लिए मैं अलग से भी समय निकाल सकती हूँ।"

काराशिर अपनी प्रसन्नता को न छिपा सका और नजर घुमा कर उसने अपने चारों ओर देखा।

"इस से अच्छी बात और क्या हो सकती है?" उसने कहा, "देख लेना, सबसे पहिले मैं ही मास्को एक पत्र लिखूँगा। और शीघ्र ही जब मेरे घर में अनाज-ही-अनाज हो जाएगा, तो समूचे मास्को को मैं अपने यहाँ

बुलाऊँगा ?"

कारशिर की बात सुन एक बार फिर सब हँस दिये। कारशिर ने इसका ज़रा भी बुरा न माना और अपनी चमकती हुई आंखों से सब की ओर देखा।

उस दिन के बाद कारशिर पाठों के बीच में भी बोलने लगा और कभी-कभी तो उसकी बातों के मारे पढ़ाई में भी बाधा तक पहुँचती। लेकिन उसने अपना तावीज़ नहीं छोड़ा। निस्सो ने जब इसे उतार फेंकने का सुझाव दिया तो बोला :

"बस रहने दो, मुझे बहुत न पढ़ाओ। हरेक के बदन पर उसका एक अपना सिर होता है और उस सिर में अनेक देव निवास करते हैं। मेरे भी अपने देव हैं। उनके साथ मैं चाहे जो कुछ करूँ, तुम बीच में का क्यों टांग अड़ाती हो ?"

इस प्रकार मिरज़ाहूर के घर ने सियातांग के अन्य सब घरों से सर्वथा भिन्न रूप धारण कर लिया था। समूचे गांव में सम्भवतः एक यही घर ऐसा था जो भयानक जाड़े और शोर मचाते बर्फानी देवों के असर से अछूता मालूम होता था।

: २ :

अगर बख्तियार में आत्मविश्वास की मात्रा कुछ और अधिक होती तो उसने अपने भावों को बहुत पहले ही व्यक्त कर दिया होता। लेकिन वह यह नहीं जानता था कि उसके लिए उचित क्या है और अनुचित क्या! दूसरे लोगों के साथ अपने व्यवहार में वह चाहे जितने भी साहस और दृढ़ता का परिचय देता हो, लेकिन सवाल और पकड़ में न आने वाली निस्सो के सामने आते ही वह बेहद सकुचा जाता था। निस्सो के साथ रहने की उसकी इच्छा इतनी बलवती थी कि वह उस पर काबू नहीं रख पाता था, और इतने साहस का उस में अभाव था कि उसके सामने अपने हृदय के भावों को खोल कर रख सके। यों उसके साथ रहने में उसे कोई विशेष प्रयास नहीं करना पड़ता था। कारण, निस्सो का जीवन

केवल घर में ही बीतता था या फिर स्कूल में। जाड़ों में वह और कहीं जा भी नहीं सकती थी। निस्सो और बख्यिार हमेशा छोटे रास्ते से घर से स्कूल जाते थे। लेकिन ऐसा बहुत कम होता था जब वे दोनों अकेले ही रास्ता पार करते हों। मरियम आमतौर से उनके साथ जाती थी। अगर वह न जाती तो भी हवा इतने वेग से चलती थी कि बातों का सिलसिला जारी रखना करीब-करीब असम्भव होता था।

स्कूल में निस्सो पढ़ने-लिखने में पूर्णतया डूब जाती और बख्तियार खोया हुआ सा उसके मुँह की ओर देखता रहता। उसे यह भी पता नहीं चलता था कि मरियम क्या पढ़ा रही है और क्या नहीं।

घर लौटने पर निस्सो झट शो-पीर के पास पहुँच जाती, और यह ठीक भी था। शो-पीर इतनी बातें जानता था कि निस्सो कभी भी नहीं ऊबती थी, और ध्यान से सुनती रहती थी। खुद बख्तियार भी शो-पीर की इज्जत करता था और अगर कोई शो-पीर के खिलाफ कुछ कहता था तो वह गुस्से से भड़क उठता था। यह सच है कि शुरू शुरू में एकाध बार उसके हृदय में ईर्ष्या का भाव जगा था और उसने यह जानने की कोशिश की थी कि शो-पीर निस्सो को किस नजर से देखता है, निस्सो के प्रति उसके व्यवहार में कोई ऐसी-वैसी बात तो नहीं है। लेकिन उसे ऐसी कोई बात नहीं दिखाई दी और उसे लगा कि शो-पीर उन लोगों में से नहीं है जो स्त्रियों के प्रति कोई खास आकर्षण रखते हैं।

निस्सो उसी के घर में तो रहती थी। कभी-कभी उसके साथ घूमने भी जाती थी और सहज भाव से बातें करती थी। जब उसका कोई कपड़ा फट जाता तो वह उसकी सिलाई कर देती थी। पहिले यह काम गुलरीज़ करती थी, लेकिन निस्सो ने खुद कह कर यह काम अब अपने हाथ में ले लिया। उसकी उँगलियाँ बहुत ही चपल थीं। आग की नन्हीं लपटों की भांति तेजी से चलती रहतीं। बख्तियार का मन करता कि निस्सो की उँगलियों को अपने हाथ में लेकर होठों से लगा ले, लेकिन मन की बात

मन में ही रह जाती। जल्दी से सिलाई खत्म करके बख्तियार के पास आती; अपनी निश्छल तथा चमकती हुई आंखों से उसकी ओर देखती, फिर कहती, "यह लो, अब तो मैंने सी दिया है। लेकिन आगे मैं हाथ नहीं लगाऊंगी। तुम इतनी जल्दी कपड़े फाड़ते हो कि मैं सीते-सीते तंग आ गई हूँ!"

बस, इतना ही। इसके बाद बात खत्म हो जाती और वह निस्सो के पास से उठकर चला आता। इस में कोई सन्देह नहीं था कि निस्सो उसका ध्यान रखती है। लेकिन इस तरह ध्यान रखने को क्या प्रेम करना कहा जा सकता है?

यह सवाल, बहुत दिनों से, बख्तियार के हृदय को कुरेद रहा था।

सांझ का समय था। निस्सो और मरियम 'मछली का काँटा' से मिलने चली गई थीं। बख्तियार की उलझन इतनी अधिक बढ़ गई थी कि आखिर उसने शो-पीर से सब कुछ कहने का निश्चय कर लिया। वह शो-पीर के कमरे की ओर गया और चौखट पर ही ठिठक कर खड़ा हो गया। शो-पीर अपनी मेज़ पर बैठा था, तम्बाकू का धुआं उसके चारों ओर उड़ रहा था, और वह उसी किताब को पढ़ रहा था जिसके अंश मरियम स्कूल में सुनाया करती थी।

"क्या बात है, बख्तियार?" शो-पीर ने उसकी ओर मुड़ते हुए पूछा।

"बात तो कुछ नहीं," बख्तियार ने कहा, "यों ही मन में आया कि तुम्हारे पास होता चलूँ। मैं सोच रहा हूं कि..."

"क्या सोच रहे हो तुम?"

"तुम एक बड़े आदमी हो, शो-पीर! तुम सदा मेरा भला भी चाहते हो। मैं तुम से एक बात पूछता हूँ। पहाड़ों की चोटियों की भांति अगर तुम्हारे हृदय पर भी बर्फ़ जम जाए तो तुम्हें कैसा लगेगा? तुम्हारी आत्मा में भी क्या तब जाड़ों का निवास नहीं होगा? क्या तुम्हारे हृदय में इस आशा के लिए कोई जगह रहेगी कि एक दिन सूरज का फिर

उदय होगा ?"

"रूसी भाषा में इसे हम कहते हैं कि बिल्लियाँ हृदय को नोंच रही हैं। क्यों, तुम्हारा यही मतलब है न ?"

"हाँ-हाँ," बख्तियार ने प्रसन्नता से सहमति प्रकट करते हुए कहा, "बिल्लियाँ नहीं, बल्कि चीते !"

"अच्छी बात है, चीते ही सही," शो-पीर ने कहा, "लेकिन यह तो बताओ कि मुसीबत क्या है ?"

"बहुत बड़ी मुसीबत है।"

"क्या सचमुच बहुत बड़ी है ?"

"मेरी समझ में नहीं आता कि तुम से कहूँ, या न कहूँ ?"

"आखिर कुछ कहोगे भी, या भूमिका ही बांधते रहोगे ?"

"सच बात तो यह है कि," बख्तियार ने अपना सिर लटका लिया, "मुझे लगता है जैसे मेरा दिमाग ठिकाने पर नहीं रहा है। बात यह है शो-पीर, तुम निस्सो से कहो कि वह मुझ से विवाह कर ले।"

बड़ी मुश्किल से शो-पीर ने अपनी हँसी रोकी।

"तो तुमने विवाह करने का निश्चय कर लिया है, बख्तियार ?" शो-पीर ने पूछा।

"हाँ," बख्तियार ने कहा, "लेकिन मुझे यह पता नहीं शो-पीर, कि वह इसे पसन्द करेगी या नहीं ?"

"लेकिन बख्तियार, न तो तुम सौदागर हो और न खान जो लड़कियों को खरीद कर अपने घर में डाल लेते हैं। क्या वह इसके लिए तैयार है ?"

"यही जानने के लिए तो मैं तुम्हारे पास आया हूं, शो-पीर," बख्तियार ने कुछ अचकचा कर कहा। "मैंने उससे कुछ नहीं पूछा। यह काम तुम कर दो ! तुम उस से कहोगे तो वह ना नहीं करेगी।"

"तुम भी खूब हो, बख्तियार !" शो-पीर ने कहा, "ऐसी बातों को दूसरे लोग कैसे तय कर सकते हैं ? सच-सच बताओ, क्या तुम उस से

प्रेम करते हो ?"

"हाँ ।"

"और वह ?"

"यह मैं कैसे बता सकता हूँ ?"

"तो जाओ, और उससे मालूम करो ।"

"मैं कैसे मालूम करूं ?"

शो-पीर की भौहों में बल पड़ गए ।

"सुनो, बख्तियार ! साफ मालूम होता है कि तुम्हारे दिमाग में कोई गड़बड़ है । क्या तुम मेरे मित्र हो ? अगर हां तो एक मित्र के नाते मैं कहता हूँ कि तुम आज ही उसके पास जाओ और आदमी की तरह उस से पूछो, 'निस्सो, क्या तुम मेरी पत्नी बनना पसन्द करोगी ?' इसका जो जवाब तुम्हें मिले, मुझे बताना । बस, अब जाओ और जैसा मैंने कहा है, वैसा करो ।"

बख्तियार अनमना-सा होकर चला आया । उसकी समझ में नहीं आरहा था कि इस काम को वह कैसे पूरा करेगा । उसे अपनी मूर्खता पर भी खीझ आ रही थी, जिसकी वजह से उस ने शो-पीर को नाराज़ कर दिया । शो-पीर अपने कमरे में ही बैठा रहा और एक के बाद एक पाइप पीता रहा । सारा कमरा तम्बाकू के धुएँ से भर गया ।

उस रात, झुंझलाहट में भर कर, उस ने अपना लैम्प बुझा दिया और बिना खाए बिस्तरे पर लेट गया । बख्तियार उसे फिर नहीं दिखाई दिया ।

अगली सुबह, आंखें लाल किए, निस्सो ने दबे पांव शो-पीर के कमरे में प्रवेश किया ।

"क्या तुम हो, बख्तियार ?" शो-पीर ने कम्बल के नीचे से पूछा ।

"नहीं, मैं हूं," निस्सो ने धीमे से कहा । वह दरवाज़े पर ही, शो-पीर की ओर पीठ किए, खड़ी थी ।

'अरे तुम हो, निस्सो !" शो-पीर ने जल्दी से मुँह उघाड़ते हुए

कहा, "कहो, क्या बात है ?"

"यह बताओ, शो-पीर, बख्तियार के साथ विवाह करना क्या मेरे लिए ठीक होगा ?"

"क्यों नहीं, निस्सो ! वह बहुत बढ़िया आदमी है ।"

"वह कैसा है, यह छोड़ो । मेरे बारे में बताओ । क्या मेरे लिए ऐसा करना ठीक होगा ?"

"मैं तो ऐसा ही समझता हूँ ।"

"शो पीर," काँपते हुए होठों से उस ने कहा, "क्या तुम भी इसे ठीक मानते हो ?"

निस्सो ने 'तुम' पर समूचा ज़ोर डालते हुए पूछा ।

शो-पीर का हृदय कसमसा उठा । लेकिन दुविधा करने का अब समय नहीं था, हालांकि उत्तर देने में उस ने कठिनाई का अनुभव किया ।

"बेशक, बख्तियार तुम से..."

"बस, और कुछ न कहो । मैं सब जानती हूं," निस्सो ने बीच में ही कहा और कमरे से बाहर भाग गई ।

कुछ मिनट बाद बख्तियार ने कमरे में प्रवेश किया । उसका चेहरा खुशी से चमक रहा था । बोला, "निस्सो तैयार है ।"

शो-पीर उठ कर बिस्तरे पर बैठ गया और बख्तियार का हाथ अपने हाथ में लेकर दबाते हुए बोला, "बधाई, बख्तियार ! अब तुम असली आदमी मालूम होते हो !"

: ३ :

आखिर सूरज कुत्ते के पास से खिसक कर मानव के पाँव के अंगूठे के पास आ गया और तीन दिन में लम्बी डग भर कर वह उसके घुटनों का स्पर्श करने लगा । जाड़ों को विदा कर वसन्त का स्वागत करने के लिए सियातँग के निवासी बाहर निकल आए । उन्होंने होलियां जलाईं, लपटों पर से वे कूदे, मशालें जला कर अपने घरों के दरवाज़ों पर लगा दीं जिससे भूत-प्रेतों का परछावाँ बाक़ी न रहे । अपने घरों की दीवारों

पर बचा-खुजा आटा झाड़ बटोर कर उन्होंने तरह-तरह के रंग-बिरंगे चौकोर, गोल और आड़े तिर्छे सतिये के चिन्ह बनाए।

सैयदों, मीरों और आकोविरों के ज़माने में वसन्त के अवसर पर घोड़े दौड़ाए जाते थे। बंजर भूमि के नुकीले पत्थरों पर केवल सियातांग के घोड़े ही दौड़ सकते थे, और केवल सैयद मीर और आकोविर ही नोक नुकीली ज़मीन पर घोड़े दौड़ाने की उस हृदय-हीनता का परिचय दे सकते थे। घोड़े दौड़ाने की तैयारियाँ बहुत पहले ही शुरू हो जाती थीं। पहले घोड़ों पर कम्बल डाल कर वे उन्हें दिन-रात चलाते थे। घोड़े चलते-चलते बेदम होकर हिनहिनाना भूल जाते थे। उनकी फैली हुई आँखें लौटने लगतीं, और उनके खुर जमीन से उठने से इन्कार कर देते। फिर वे जमीन पर चाबुक डाल कर देखते कि घोड़ा पूर्णतया ठंडा हो गया है या नहीं। अगर वह चाबुक को लाँघ जाता तो समझते कि वह अभी कुछ गर्म है, नहीं लांघता था तो समझते कि ठंडा है। अन्त में निर्णायकों की उपस्थिति में वे उसे बेरहमी से पीटते और उसके बदन में चाकू गड़ाते जाते, जब तक कि घोड़ा मौत से घबरा कर पथरीली भूमि पर अंधाधुन्ध भागने के लिए मजबूर न हो जाता। और बहुधा उसके जीवन की यह आखिरी सेवा होती जो कि वह अपने बर्बर और दम्भी स्वामी की करता था।

लेकिन जब सैयद, मीर और आकोविर अपने तमाम घोड़ों के साथ महानदी के उस पार भाग गए तो वसन्तोत्सव के अवसर पर घोड़े दौड़ाना भी खत्म हो गया। लेकिन खेलों के अन्य कितने ही मुकाबिले अब भी होते थे—"तीरन्दाजी के, नाचने और ढोल बजाने के, झूला झूलने और कुश्तियाँ लड़ने के, जिनमें पहलवान रस्सों से बंधे रहते हैं।

दर्रे के निवासी उत्सव से बहुत पहले ही बर्च वृक्ष की टहनियाँ तोड कर उनकी छड़ें बनाने लगते—कुछ की छाल वे एकदम साफ कर देते कुछ को छड़ों के साथ लटकी रहने देते। वसन्त के दिन इन छड़ों

को लेकर वे अपने मित्रों के घर जाते और गृहस्वामिनियों को छड़ों का गुच्छा भेंट करते हुए कहते—"वसन्त की बधाई !" गृहस्वामिनी भी बधाई देती और छड़ भेंट करने वाले के दाहिने कन्धे पर आटा छिड़कती। इसके बाद वह गृहस्वामिनी घर के भीतर प्रवेश करती और दीवार में किसी उपयुक्त स्थान पर छड़ों को खोंस देती। प्रत्येक छड़ का एक अपना अर्थ होता। एकदम साफ़ छड़ का अर्थ था कि गेहूँ की भरपूर फसल हो, अगर छाल छड़ के साथ लटकी होती तो उसका अर्थ था कि राई की भरपूर फसल हो, और अगर छड़ छालयुक्त होती तो वह बाजरे की भरपूर फसल की सूचक समझी जाती।

अगर किसी को अपने पड़ोसी से कोई बात मंजूर करानी होती तो वह वसन्त के दिन अपनी पगड़ी में रोटी का एक टुकड़ा बांध लेता और पड़ोसी की छत पर चढ़ कर धूमालय में से अपनी पगड़ी का रोटी वाला सिरा नीचे लटका देता। कितने ही असफल प्रेमी अपनी प्रेमिका से विवाह करने की स्वीकृति पाने की अन्तिम आशा हृदय में लिए इस तरीके का प्रयोग करते, और उत्सव के इस दिन कड़े-से-कड़े माता-पिता भी बहुधा इसे स्वीकार कर लेते।

बख्तियार भी बड़ी बे-सब्री से वसन्त के उत्सव की प्रतीक्षा कर रहा था। कारण, इस दिन निस्सो के साथ अपनी मंगनी की घोषणा करने का उसने निश्चय किया था। गुलरीज़ ने ही यह दिन चुना था। विवाह होने में अभी देर थी, शो-पीर का कहना था कि निस्सो की आयु अभी छोटी है। लेकिन मंगनी की घोषणा होते ही यह कानाफूसी अवश्य खत्म हो जायगी कि उसने निस्सो को अपने घर में डाल रखा है।

उज्ज्वल और निर्मल दिन थे। सूरज का उभार अधिकाधिक बढ़ रहा था। शीघ्र ही बर्फ गल जाएगी और पहाड़ी पगडंडियाँ तथा रास्ते खुल जाएँगे। सदा की भाँति सियातांग दर्रा सब से पहले साफ होगा। सोवियत कारवाँ का वह हिस्सा जो जाड़ों भर के लिए बोलोस्त में रुक गया था, इसी रास्ते महानदी से सियातांग आने वाला था। शो-पीर

और मरियम दर्रे के निवासियों से उसका बराबर ज़िक्र करते थे। महानदी के किनारे जितनी भी बस्तियाँ थीं; उन सब को रसद देता हुआ वह आ रहा था। उस जगह जहाँ सियातांग नदी महानदी से मिलती थी, वह दर्रे में मुड़ जाएगा और उनके गाँव पहुँचने के लिए उसे कोई बीस किलोमीटर रास्ता और तय करना होगा। यात्रा के इस अन्तिम टुकड़े की जिम्मेदारी सियातांग निवासियों पर थी। अब समय था कि बख्तियार लोगों का एक दल लेकर महानदी जाए और जहां भी जरूरत हो रास्ते की मरम्मत आदि का काम पूरा करे।

गाँव में कारवां की खूब चर्चा थी। सभी उसका जिक्र करते थे, और किसी के मन में अब यह सन्देह नहीं था कि कारवां नहीं आएगा।

: ४ :

पथ हिम से मुक्त हुए पत्थरों और अ धर चट्टानों से घिरा था। इसी पथ से केन्दितरी गांव लौटा। पथ पर चलते, कभी पत्थरों पर चढ़ते और कभी पेट के बल रेंगते, उसे चार दिन हो गए थे, यों इस पथ को पार करने में केवल दो दिन ही लगते थे। उन जगहों में जहाँ पथ बर्फ़ के चंगुल से अभी मुक्त नहीं हुआ था और उसका कुछ पता नहीं चलता था। बर्फ के नीचे छिपी अतल गहराइयों से बचने के लिए वह नदी में उतर जाता और छाती तक ऊँचे बर्फ़ीले पानी में आगे बढ़ता। फिर नदी से बाहर निकल कर ठंडी हुई अपनी टाँगों को रगड़ता, भीगे हुए अपने कपड़ों और कच्चे चमड़े के जूतों को एक बण्डल में लपेटता और एक लम्बा ढीला-ढाला चोगा बदन पर लपेटे कर आगे बढ़ने लगता। ठंड उसके रोम-रोम में समा गई थी। वह अकेला, किन्तु अपने इरादे का पक्का था। चोगे के नीचे, उसकी पेटी में, एक ओटोमेटिक रिवाल्वर लटका था। कन्धे पर एक थैला पड़ा था जिसमें, एक गन्दे से कपड़े में लिपट रिवाल्वर की सौ-एक गोलियाँ रखी हुई थीं।

चौथे दिन, उस समय जब कि सूरज छिप रहा था, आखिरी चट्टान के पीछे से निकल कर केन्दितरी रुक गया। सामने ही दर्रा था।

नदी के दाहिने बाजू एक बहुत बड़े सेव की फांक की भाँति अर्द्ध वृत्ताकार घाटी धीरे-धीरे ऊँची उठती चली गई थी : पहले पथरीली सपाट भूमि, फिर गाँव और उससे भी परे दुर्ग की काली बुर्जियाँ। केन्दितरी के बाएं बाजू नदी का तट था जो कि अच्छी-खासी पहाड़ी की भाँति ऊँचा उठता चला गया था, और दूर स्थित पर्वत-माला की टेढ़ी-मेढ़ी ऊँचाई के पास एक चोटी के के साथ घुल-मिल जाता था।

केन्दितरी एक पत्थर पर बैठ गया और दृश्य-पट को इतने ध्यान से देखने लगा मानो वह पहली बार ही यहाँ आया हो। नदी के उस पार बाएं बाजू पर एक चोटी थी। उसके प्रत्येक उतार-चढ़ाव को, उसके आकार-प्रकार और बनावट की प्रत्येक विशेषता को, केन्दितरी अपने हृदय में उतारने लगा। फिर उसने दाहिनी ओर देखा, पथरीले बंजर मैदान के उस पार जहाँ बख्तियार का घर था, और उस टेढ़े-मेढ़े रास्ते की ओर जो जारखोक दर्रे को जाता था। उसकी नजर बस्ती के चारों ओर खड़े पहाड़ों की चोटियों पर से खिसकती हुई दुर्ग के उस पार एक चोटी पर टिक गई जो सियातांग घाटी एक प्रवेश द्वार का काम देती थी।

ऐसा मालूम होता था मानो वह यहाँ के प्रत्येक उतार-चढ़ाव और उभार को, चट्टान के प्रत्येक कगारे को, पहाड़ों की चोटियों से नीचे गाँव में उतरने और गाँव से पहाड़ों की चोटियों तक पहुँचने के तमाम कील-कांटों को, अपने स्मृति-पट पर अंकित कर रहा हो।

आखिर केन्दितरी उठा और बावजूद इसके कि वह थक कर चूर-चूर हो गया था, आगे बढ़ने लगा। उस घर की छत पर जिसमें सौदागर की दुकान थी, एक लाल झंडा फहरा रहा था। यह निश्चय कर लेने के बाद कि उसे कोई देख नहीं रहा है, उसने दुकान का खटका खिसकाया और झांक कर भीतर देखा। घर खाली था। फर्श पर सौदागर से छीना हुआ कालीन बिछा था। उसने दरवाजा बन्द कर दिया और एक क्षण रुक कर सोचने लगा कि अब वह क्या करे। फिर वह

बख्तियार के घर की ओर चल दिया, और वहां पहुँच कर प्रतीक्षा करने लगा।

तभी, हाथ में लकड़ी का एक बड़ा सा कम्पास लिए, शो-पीर घर के भीतर से निकला। बदन पर खाकी कमीज़ और पांव में पेबन्द लगे जूते पहने आज भी वह ठीक वैसा ही मालूम होता था जैसा कि उसने उसे पहले देखा था। शो-पीर का मस्तिष्क इस समय एक नये काम में उलझा था। बख्तियार के घर के पास एक स्कूल का निर्माण करना था, और जमीन की माप-जोख करने के लिए वह घर से बाहर आया था।

अपने चेहरे पर भोलेपन का नकाब चढ़ा कर केन्दितरी शो-पीर के पास पहुँचा। शो-पीर के चेहरे पर अचरज के भाव चमक आए।

"आपके स्वास्थ्य की कामना करता हूँ, आदरणीय शो-पीर," नीचे तक झुक कर और उँगलियों से अपने सीने और भौंहो का स्पर्श करते हुए केन्दितरी ने कहा, "आप मुझे इस प्रकार क्यों देख रहे हैं मानो..."

"हाँ," उपेक्षा से शो-पीर ने कहा, "मुझे इसकी ज़रा भी आशा नहीं थी कि तुम फिर दिखाई दोगे? क्या अकेले ही आए हो?"

"हाँ, अकेला ही, मुझ ग़रीब के साथ भला और कौन आता?"

"वैसे तो तुम अकेले ही काफी हो। तुम वहीं क्यों नहीं रहे?"

"क्या आप उस दिन की बात-चीत भूल गए, शो-पीर? भला, वहाँ रह कर मैं क्या करता?"

"तो फिर तुम गए ही क्यों थे?"

"आह शो-पीर, गरीबों की अपनी इच्छा का कोई मूल्य नहीं होता, यह देखो?"

केन्दितरी ने चोगे के भीतर अपना हाथ डाला और चमड़े का एक छोटा सा बटुवा निकाल कर अपनी हथेली पर रख लिया।

"यह क्या है?"

"यह मेरी पूँजी है, शो-पीर! उस दिन जब सौदागर जाने लगा

तो मैंने यहीं रहने की इच्छा प्रकट की। परन्तु उसे देख कर मुझे दया आ गई। आप को याद होगा, वह जाड़ों का पहला दिन था। सौदागर ने कहा, "मेरे पास अब बहुत ही थोड़ी पूँजी बची है। मैं पैदल जा रहा हूँ। तुम्हीं सोचो, इतनी चीज़ों को लेकर मै अकेला कैसे जाऊँगा? मेरी मदद करो, मैं तुम्हें भरपूर मज़दूरी दूँगा।" लेकिन बाद में, महा नदी के उस पार यखबार पहुँचने पर मालूम हुआ कि उसके पास भारी धन था, जो उसने अपनी दुकान में ज़मीन के नीचे गाड़ कर छिपा रखा था। वह सचमुच कुत्ते की औलाद था, और मैं उसके साथ नहीं जाना चाहता था। लेकिन उसने कहा, 'मैं तुम्हें दस सिक्के दूँगा।' दस सिक्के मैंने सपने में भी नहीं देखे थे। सो मैं उसके साथ चला गया। जाड़े शुरू हो गए थे, तभी लौटना सम्भव नहीं था। सो मैं वसन्त की प्रतीक्षा करता रहा। रास्ता अभी भी काफी अवरुद्ध है,-लेकिन मैंने चिन्ता नहीं की, और चला आया। यहाँ के सिवा मैं और कहाँ जाता? यहीं रह कर दाढ़ी-बाल बनाऊँगा, या जो आप चाहेंगे, वह काम करूँगा।"

"सो तो ठीक," शो-पीर ने कहा, "लेकिन तुम रहोगे कहाँ? सौदागर की दुकान में तो अब स्कूल खुला है।"

"स्कूल भी बहुत अच्छी चीज़ है। जहाँ आप कहेंगे, वहीं मैं पड़ रहूँगा। वह छप्पर तो खाली है न जिसमें सौदागर अपने गधे बाँधता था?"

"उस में तुम कैसे रहोगे?" शो-पीर ने भौहें चढ़ाते हुए कहा, "हाँ, अगर तुम्हें गन्दगी और धूल से परहेज़ न हो तो......"

"गन्दगी और धूल मैं साफ कर लूँगा। महा नदी के उस पार तो मैं इससे भी बुरी जगहों में रह चुका हूँ। बाद में पत्थर चुन कर मैं अपने लिए एक घरौंदा बना लूँगा। क्या आप दाढ़ी बनवाना पसन्द करेंगे?"

"नहीं, धन्यवाद! मैं अपनी दाढ़ी खुद बनाता हूँ।"

"जैसी आपकी मर्ज़ी। अच्छा तो अब मैं चलता हूँ। बहुत थक गया हूँ। रास्ता इतना खराब है कि दो दिन के बजाय चार दिन

लग गए।"

"क्या बहुत खराब है ?" शो-पीर ने उत्सुकता से पूछा, "विस्तार के साथ बताओ, रास्ते को कहाँ-कहाँ और किस हद तक नुकसान पहुँचा है ?"

केन्दितरी ने सब कुछ बता दिया। फिर पूछा, "क्या तुम इस की मरम्मत कराओगे, शो-पीर ?"

"ज़रूर ! मरम्मत तो आए साल होती है।"

"हाँ, रास्ता तो साफ होना ही चाहिए। अच्छा तो मैं अब चलता हूँ, शो-पीर ! माफ करना, मैंने तुम्हारा बहुत समय लिया।"

अंधेरा हो गया था। काम का अब समय नहीं था। बख्तियार को केन्दितरी के लौटने की खबर देने के लिए शो-पीर घर के भीतर चला गया।

: ५ :

चांदनी-विहीन अँधेरी रात थी। केन्दितरी उस प्राचीन बुर्जी में पहुँचा जहाँ बोबोकलाँ रहता था। लैम्प की टिमटिमाती लौ खान के इस पोते की खण्डहरों में डूबी रिहाइश पर काली परछाइयां डाल रही थी। बुर्जी के भीतर का चौरस कमरा एक बड़ी और भयानक काल-कोठरी के समान मालूम होता था। पत्थर की बदनुमा दीवारों को आकर्षक बनाने के लिए खुद बोबोकलां ने ज़रा-सा भी प्रयत्न नहीं किया था। जगह-जगह दरारें पड़ी थी जिन मे मकड़ियों ने अपने जाले बुन रखे थे। बोबोकलां से बातें करते समय केन्दितरी ने देखा कि दीवार की दरार में से एक सांप झांक रहा है। उसकी तेज़ आंखें, बिना झपके, केन्दितरी पर जमी थी, और उसे ऐसा मालूम हुआ मानो बोबोकलां और इस सांप में पुराना मेल हो, मानो यह सांप बोबोकलां से सधा हुआ हो, अन्यथा दीवार में पड़ी दरार के भीतर से वह इतनी शान्त और निर्लिप्त भावना से न झांकता होता।

बोबो कलां का दुबला, हड्डियों का ढाँचा-भर रह गया शरीर अपनी

कहानी अपने आप कह रहा था। उसके जीवन का एक मात्र साथी बाज पक्षी था जिसे भेड़ियों ने मार डाला था। एक दिन सबेरे ही सबेरे जब उसने अपनी बुर्जी का दरवाज़ा खोला तो देखा कि भूख से पागल चार भेड़िये सामने खड़े हैं। सम्भवतः वे खुद बोबोकलाँ पर आक्रमण करने की ताक में थे और बर्फ में खड़े सुबह होने की प्रतीक्षा कर रहे थे। बाज ने उन्हें देखा और अपनी पुरानी शिकारी मनोवृत्ति के जाग्रत हो जाने या अपने स्वामी की रक्षा करने के लिए बोबोकलां के दरवाज़ा बन्द करने से पहिले ही वह उनकी ओर झपटा। सब से जबर भेड़िये की गरदन में उसने अपने पंजे गड़ा दिए और अपनी नुकीली चोंच से उसके माथे का मांस नोचने लगा। तभी अन्य भेड़िये उस पर झपटे और अन्त में चीर-फाड़ कर उसे समूचा निगल गए।

बोबोकलां ने बहुत ही शान्त और निश्चल भाव से इस घटना का वर्णन किया। केन्दितरी उसके सामने एक फटी-सी चटाई पर बैठा था। पत्थर की ओटक पर रखा लैम्प उनके चेहरों के केवल अर्द्ध भागों को आलोकित कर रहा था। सामने की दीवार पर उनकी भीमाकार और विकृत परछाइयाँ पड़ रही थीं। परछाइयाँ एक दम निश्चल थीं, कारण कि ये दोनों व्यक्ति कोई हरकत नहीं कर रहे थे, सिवा इसके कि वे कभी-कदास अपने सिरों को झुका लेते थे।

केन्दितरी ने अपनी बात पूरी की और बोबोकलाँ के उत्तर की प्रतीक्षा करने लगा। केन्दितरी की बातों ने बोबो कलां के सामने एक टेढ़ा सवाल खड़ा कर दिया था। उस पर गहराई से सोचने की जरूरत थी। सो उसने अपनी बात को फैला कर, अतीत और वर्तमान का ताना-बाना-सा बुनते हुए, कहना शुरू किया :

"कहाँ हैं अब वे लोग जो कभी हमारे देश को जीतने की लालसा से पागल हो उठे थे ?" बोबो कलां ने कहा, "वह आए और चले गए। हमारे यहाँ की सनसनाती हवाओं, बर्फ के दुर्गम पहाड़ों और नदियों और सूरज की शरीरवेधी किरणों की वे ताब न सह सके। उन्होंने किले

बनाए, हमारी रैयत को दासता में जकड़ा, आस-पास की बस्तियों को लूटा-खसोटा, और हमें नुकसान पहुँचाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। अजीजखान के पूर्वजों और मीरों के प्रतिनिधियों ने यही किया, उनसे भी पहिले अग्नि-उपासकों ने यही किया, और उइगरों ने भी यही किया, जो उनसे भी पहिले आए थे। उनके पास हथियार थे, हम निहत्थे थे। हमने घुटने टेके और उन्हें नजराने भेंट किए। इस तरह खुदा ने हमारे पापों की हमें सजा दी।

'लेकिन हम अपने घरों में, नदियों के किनारे और पहाड़ी दर्रों में जो उनके लिए दुर्गम थे, पहिले की भांति ही जीवन बिताते रहे। वह साल में एकाध बार आते और अपना नजराना वसूल करके चले जाते। हमारा दीन और ईमान उनकी छूत का शिकार नहीं हुआ, हमारे हृदयों को वे विकृत नहीं कर सके। क्यों, ठीक कहता हूँ न?"

"रुको नहीं, बोबो कलां। मैं सुन रहा हूँ," केन्दितरी ने कहा और उस सांप की ओर एक नजर देखा जिसने अब अपनी आँखें मूँद ली थीं।

"और फिर यह शो-पीर आया, और उसने हमसे कुछ नहीं लिया, कोई लूट-खसोट नहीं की। मैंने समझा कि यह निरा मूर्ख है, और मैं उस पर हँसा। लेकिन जब उसने यहीं रहना शुरू किया तो मेरी हँसी मेरे होठों पर ही मुरझा गई। तब मैंने उस भयानक सत्य का अनुभव किया जिसे देखने से अभी भी कुछ लोग इन्कार करते हैं। हम लोगों के बीच रहने के लिए वह यहीं रुक गया, और अपने लिए उसने किसी चीज की माँग नहीं की। लेकिन उसकी मौजूदगी से यहाँ वह चीज पैदा हो गई जो हजारों साल के अर्से में पहिले कभी नहीं हुई। हमारे पहाड़ों में, नदियों के पानी और हमारी हवाओं में, हमारे तमाम लोगों के दिमागों में, छूत के रोग की भाँति अशान्ति के कीड़ों ने घर कर लिया। अपने इस निकम्मे और घृणित बख्तियार को देखो जो इस छूत के रोग का सब से पहिले शिकार हुआ। मैं तो स्तब्ध रह गया। शुरू-शुरू में शो-

पीर के मूर्खतापूर्ण शब्दों को जब वह तोते की भाँति दोहराता था, तो हम उस पर हँसते। हम ने समझा कि यह भी अफीम का एक नशा है, शीघ्र ही उतर जाएगा। लेकिन यह नशा नहीं उतरा और उस दिन से..."

"उसे तो तुम आसानी से खत्म कर सकते थे?" केन्दितरी ने अन्य-मनस्क भाव से कहा।

"नहीं, हमने उसका अन्त नहीं किया। मैं खुद यह नहीं चाहता था। मैंने कहा, अगर जरूरत होगी तो हमारा रखवाला वह परवरदिगार, खुद उसे सजा देगा। हम ने उसे उसके हाल पर छोड़ दिया। लेकिन उसके सिर पर तो शैतान सवार था। पहिले वह केवल अपने सुख की बात करता था, बाद में सब के सुख की बातें करने लगा। हम ने चाहा कि उसे यहाँ से भगा दें, लेकिन शो पीर ने उसका साथ दिया। शो-पीर के सामने हम क्या करते? क्या तुम्हें याद है कि उस समय जब सफर अली इज्जत बेग ने उस पर हमला किया था तो शो-पीर ने किस प्रकार उसके सिर का निशाना साध कर गोली दाग दी थी? अन्य लोगों की भाँति वह भी हमें छोड़ कर अजीज खान की अमलदारी में चला गया। लेकिन यह रूसी यहाँ रहा, बख्तियार यहाँ रहा। हमारा दीन-ईमान सब कुछ नष्ट होने लगा। मेरे भाग्य में यह सब देखना बदा था, सो देख रहा हूँ। नीली छतरी वाला मेरी परीक्षा लेना चाहता है, और मैं इसके लिए तैयार हूँ। मेरी आत्मा की जोत जलती रहेगी। तुम उस साँप की ओर देख रहे हो न? उस ने अपनी आँखें बंद कर ली हैं, ठीक वैसे ही जैसे कि चारों ओर के जीवन के प्रति मैंने अपनी आँखें बंद कर ली हैं। इस लिए तुम ने जो कुछ कहा, उसकी मुझे जरूरत नहीं। सत्य का चिन्तन मेरे जीवन का सम्बल है।"

"सो तो ठीक है, बोबोकलाँ," केन्दितरी ने कहा। फिर चतुराई से पूछा, "लेकिन दीन और ईमान...उसकी रक्षा के लिए क्या तुम कुछ भी नहीं करोगे?"

"दीन और ईमान मानव के हृदय में निवास करते हैं। तुम चाहते

हो कि मैं खान बनना मंज़ूर कर लूँ। लेकिन उन लोगों को तुम खान के सामने कैसे झुकाओगे जो खुदा के सामने भी नहीं झुकना चाहते !"

"लोग तो ठीक हो सकते हैं, बोबोकलाँ," केन्दितरी ने कहा।

"कैसे ?"

"भय से, डंडे के ज़ोर से, रक्त-पात से।"

"लेकिन मैं अपनी रैयत का रक्त बहाना नहीं चाहता," बोबोकलाँ ने तेज स्वर में कहा, "अगर वे सजा के अधिकारी हैं तो खुदा ही उन्हें सजा देगा, मैं नहीं।"

"तुम भी तो खुदा के ही बन्दे हो। उसकी मर्ज़ी को ही तुम भी पूरा करोगे।"

"नहीं। खुदा की मर्ज़ी हर उस चीज़ में है, जिसका अस्तित्व मौजूद है। मानव का हाथ कुछ नहीं बदल सकता। ऐसा करना अशान्ति का सूचक होगा, और अशान्ति खुदा के विधान का उल्लंघन है। जो कुछ है, उसे वैसा ही रहने दो।"

केन्दितरी ने अनुभव किया कि वृद्ध को उसके हठ से डिगाना उसके बस की बात नहीं है। उसका हृदय विचलित हो उठा, और उसके हाथों की परछाईं दीवार पर बेचैनी से नाचने लगी। बोबोकलाँ, केन्दितरी की अनजान में ही, इस परछाईं को देखता रहा।

"अच्छी बात है, बोबोकलाँ," आखिर केन्दितरी ने कहा—"आप बुज़ुर्ग हैं। आपकी बातों की मैं इज्जत करता हूँ। लेकिन उस अर्से में जबकि आपकी आँखें बंद रहेंगी, अगर सब कुछ बदल जाए और जब आप अपनी आँखें खोलें तो पहाड़ों में दीन-ईमान का राज्य फिर से दिखाई दे तो उस समय भी क्या आपके मुँह से यह नहीं निकलेगा कि थोड़ी देर के लिए मैंने झपकी ली थी, इसी बीच यह सब परिवर्तन हो गया। लोगों के हृदय अब पाक और साफ़ हैं। हर चीज़ में अब सत्य का आलोक दिखाई देता है।"

"इस चमत्कार को कौन करेगा—क्या अज़ीज़खान ?"

"हो सकता है कि अजीज़खान ही करे।"

"वह यखबारी है। सियातांग से उसे क्या वास्ता? सियातांग में उसकी हकूमत हो या शो-पीर की, मैं दोनों में कोई अंतर नहीं देखता। दोनों ही विदेशी हैं।"

"वह आएगा, और चला जाएगा।"

"लेकिन वह आए ही क्यों? अगर अज़ीज़खान का इरादा सियातांग पर कब्जा करना नहीं है तो फिर वह आएगा किस लिए?"

"वह अपनी स्त्री को चाहता है। खुदा उसे माफ करे।"

"और एक स्त्री के लिए वह हमला करेगा?"

"हमला नहीं, वह तो केवल एक सबक सिखाना चाहता है। वह यहाँ आएगा, अपनी स्त्री को अपने कब्जे में करेगा, और चला जाएगा। और उसके इस आने और जाने में सोवियत सत्ता का यहाँ से लोप हो जाएगा। तुम्हारी तरह वह भी हर नयी चीज़ से घृणा करता है। और वह इसे नष्ट इसलिए करेगा कि उसका इलाका सियातांग से लगा हुआ है। न बख्तियार रहेगा, न शो-पीर, न उसके नामलेवा। तुम खान होगे, और तुम्हारी ताकत के सामने कोई सिर नहीं उठा सकेगा।"

केन्दितरी अधमुँदी आँखों से बोबोकलाँ की झुर्रियाँ पड़ी पलकों को देखने लगा। बोबोकलाँ ने धीरे-धीरे अपनी भारी पलकों को उठाया और बोला "नहीं, मैं शान्ति चाहता हूँ। मेरी बुद्धि मुझे खान बनने से रोकती है।"

"एक बार और सोचकर देखिए, बोबोकलां, शायद......"

"मैं केवल एक बार ही सोचता हूँ," बोबोकलाँ ने भौंहों में बल डालते हुए कहा, "मैं अपनी बात कह चुका।"

अधिक जोर देना अब व्यर्थ था। केन्दितरी ने अपनी झुँझलाहट को प्रकट नहीं होने दिया।

"जैसी आपकी मर्ज़ी। लेकिन आप अपनी आँखें तो बन्द रखेंगे न?"

"मेरी आँखें बूढ़ी हैं; और वे कुछ नहीं देखतीं।"

"आपके शब्द चट्टान की भाँति अडिग हैं। धन्यवाद! बस एक बात और पूछना चाहता हूँ : क्या आप चुप रहने का वचन देंगे?"

"चुप बुद्धिमानी का लक्षण है। क्या तुमने और किसी से भी बातें की हैं?"

"केवल क़ाज़ी नौरोजबेक से।"

"उसने क्या कहा?"

"उसने कहा कि वह तैयार है।"

"एक बात और, क्या मिरज़ाहूर फिर वापिस आएगा?"

"उसे अभी अपना कर्ज वसूल करना है। बस, और कुछ तो नहीं पूछना, बोबोकलाँ?"

"नहीं।"

केन्दितरी ने बोबोकलाँ से विदा ली और बुर्जी के नाटे मेहराबदार दरवाज़े से रात के अँधेरे में बाहर निकल आया।

: ६ :

कुछ दिन बाद एक फटे हाल राहगीर का सियातांग में आगमन हुआ। इस दुबले-पतले, नंगे पाँव और अध-नंगे जीव को जो कोई भी पहाड़ी रास्तों से आता देखता तो समझता कि वह उन फकीरों में से है जो दुनियावी छोड़ कर आध्यात्मिक चिन्तन का रास्ता पकड़ते हैं, तमाम दुनिया की इच्छाओं को नष्ट करने के लिए अपने शरीर को अनेक यातनाएँ देते हैं। धुन के पक्के इस तरह के फकीर इन ऊँचे पहाड़ों में पहिले काफी दिखाई देते थे। पहाड़ों के निवासी उन्हें सन्त मानते थे और उनका विश्वास था कि वे अपनी आत्मा को शरीर से अलग कर सकते हैं, पशु-पक्षियों को अपने वश में कर सकते हैं, पत्थरों को छूकर उन्हें भोजन के रूप में परिवर्तित कर सकते हैं और अदृश्य जगत के गुप्त कोनों में निवास करने वाले देवों और जिनों को बुला सकते हैं। सोवियत सत्ता क़ायम होने के बाद इस तरह के फकीरों का दिखाई देना

अधिकाधिक दुर्लभ होता गया। सच तो यह है कि कई साल बाद अब इस तरह के फकीर का सियातांग में आगमन हुआ था। दर्रे के निवासी उसे देखते तो उन्हें ज़रा भी आश्चर्य नहीं होता। वे समझते कि यह कोई फ़कीर है जो दुनिया से दूर कहीं जारहा है, और यह उनका काम है कि अला-बला से बचने के लिए वे उसे खैरात दें।

लेकिन राहगीर, कारण चाहे जो भी हो, गांव के निवासियों की नज़र से नहीं बचना चाहता था। घाटी की ओर जाने वाले पथ के सामने आते ही विश्राम करने के लिए वह एक पत्थर पर बैठ गया, और रात के अन्धेरे की प्रतीक्षा करने लगा। उसका सूखा गन्दुमी चेहरा छोटा और झुर्रियों से घिरा था। उसकी बाहों तथा पिंडलियों की नसें नीले-बैंजनी रंग की डोरियों की भांति उभरी हुई थी।

केन्दितरी अपनी रिहाइश के निकट सांझ के समय रोज आग जलाता था और गांव वालों से मिले शहतूतों को उबालने में घण्टों बिता देता था। जिस कोठड़ी में वह रहता था, उसमें चूल्हा नही था, इस लिए उसकी आग के प्रति कभी किसी ने सन्देह प्रकट नहीं किया। उबले हुए शहतूतों से जैसे तैसे पेट भरने के बाद अपनी कोठरी में चला जाता और फर्श पर बिछे पुआल पर सो रहता।

अन्धेरा हो जाने पर राहगीर गांव के आखिरी छोर पर थिरकती लपटों की ओर बहुत देर तक देखता रहा, और इसके बाद उसी ओर चल दिया। पगडण्डी से कुछ हट कर, पत्थरों के पीछे छिपता, वह आगे बढ़ रहा था। केन्दितरी को उसने दूर से ही पहचान लिया और एक पत्थर पर बैठ कर आग के बुझने की प्रतीक्षा करने लगा। जब आग बुझ गई और केन्दितरी कोठरी के भीतर चला गया तो वह तेज़ी से उठा और सावधानी से आगे बढ़ता हुआ चौखट के निकट जाकर बैठ गया।

"कौन ?" केन्दितरी ने पूछा।

"मैं हूँ, भाखरा!" राहगीर ने कहा, "शरण, आसरा और मुक्ति

का तलबगार !"

"मुक्ति, गुण और अतल गहराई से निकला सांस," केन्दिरी ने शान्त स्वर में जवाब दिया।

"शुक्र है उसका जो फूल-पौधों में जान डालता है, शुक्र है सूरज और चाँद का, शुक्र है उस परवरदिगार का जो दुनिया को पाकीज़गी बख़्शता है," राहगीर ने बुद-बुदाते हुए कहा और हाथ के अँगूठे से शरीर के तदनुरूप हिस्सों का स्पर्श किया : अपने हृदय का, अपने माथे और अपने बालों का। अन्तिम शब्द के साथ हाथ की उँगलियों से उसना अपने सिर छुआ और जब उसने देखा कि अंधेरे में केन्दितरी को कुछ दिख ई नहीं पड़ रहा है तो अपने हाथों को सीने पर रखते हुए बोला. "मैं और मेरी खुदी !"

"बोलो," केन्दितरी ने कहा।

राहगीर चोखट पर निश्चल बैठा था। पक्षियों जैसी ऊँची और गूँजती हुई आवाज में उसने कहना शुरू किया :

'अज़ीज़खान बोबोकलां के उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा है। सब कुछ तैयार है। जिन हथियारों का तुमने वचन दिया था, सात घोड़े उन्हें लाद कर ले आए। आठवें पर एक फिरंगी सवार था। उसके साथ कुछ और लोग भी थे, जो पैदल थे। फिरङ्गी अब अज़ीज़खान के पास है और तुम्हारी सूचना की प्रतीक्षा कर रहा है। अज़ीज़खान जल्दी मचा रहा है। सैनिकों को उसे रोज पैसा देना पड़ता है। वह अपनी सारी पूँजी खर्च कर चुका है जो उसने मिरज़ाहूर से उधार ली थी। मिरज़ाहूर भी रोता-भींकता है कि इस तरह तो वह बरबाद हो जाएगा। सैनिकों की खूराक बहुत ज्यादा है। वह अज़ीज़खान का दिमाग चाटता है कि जल्दी करो। फिरंगी भी उस पर गुस्सा होता है। मिरज़ाहूर का कहना है कि अगर पन्द्रह दिन और इसी तरह बीत गए तो उसके पास फूटी कौड़ी भी नहीं रहेगी। फिरंगी मुझे एक ओर ले गया और तुम्हें यह बताने के लिए उसने कहा कि अज़ीज़खान

सर्व-शक्तिशाली बड़े खान से डरता है जो रूसियों से लड़ाई मोल लेने के पक्ष में नहीं है। अजीज़खान नहीं चाहता कि वह बड़े खान को नाराज करे। अगर हमने देर की तो बड़ा खान अजीज़खान के खिलाफ़ अपने सैनिक भेज सकता है। फिरंगी के कहने से अजीज़खान ने सभी पहाड़ी रास्तों को बन्द करा दिया है जिससे बड़े खान को कुछ मालूम न हो। मुझे तुमसे यह भी मालूम करना है कि सिगनल के लिए मशालें किस जगह जलती दिखाई देंगी ?"

"बस, इतना ही ?"

"बस, मुझे और कुछ नहीं कहना।"

"फिरंगी अपने साथ कितने और किस तरह के हथियार लाया है ?"

"उन्नीस मार्टिन बन्दूकें। प्रत्येक बन्दूक पर 'मा-चा-अल्लाह' अंकित है। तैंतीस बन्दूकें बिल्कुल नई किस्म की हैं जिनमें एक साथ ग्यारह कारतूस भरे जाते हैं। सुना है कि ये हथियार तीन सागर और एक समुद्र पार करके यहाँ आए हैं।"

"और कारतूस ?"

"प्रत्येक बन्दूक के साथ सौ कारतूस हैं। सैनिक इन्हें पाकर बहुत खुश हैं। फिरंगी उन्हें इन हथियारों से काम लेना सिखा रहा है।"

"बहुत ठीक," केन्दितरी ने रूखे स्वर में गम्भीरता के साथ कहा, "तुम तुरत लौट जाओ। कहना कि बोबो कलां ने खान बनना मंजूर कर लिया है। नौरोज़ बेग काजी का काम करेगा। उसने अपराधियों की सूची बनाना शुरू कर दिया है। अजीज़खान जब आएगा तो यहाँ के लोग उसकी पूरी मदद करेंगे। अकेले में उससे यह भी कहना कि वह लड़की यहीं है, और यहाँ से भाग कर अन्य कहीं न जा सकेगी। और सबसे महत्वपूर्ण चीज है उतावली से बचना। अजीजखान से कहना कि जब तक मेरा आदेश न पहुँचे, तब तक धीरज के साथ प्रतीक्षा करे। कारवाँ को अपने साथ लाने के लिए शो-पीर शीघ्र ही यहाँ से रवाना होगा।

कारवां के आते ही हम अपना काम शुरू कर देंगे। बख्तियार कुछ लोगों को साथ लेकर रास्ते की मरम्मत करने गया है। मरम्मत के बाद घोड़ों से काम लेना सहज हो जायगा। फिलहाल कुछ नहीं करना है। यखबार से कोई बाहर न जाने पाए। उनसे कहना कि महा नदी के कनारे प्रतीक्षा करें। मशालें जलती दिखाई देंगी, एक तो मुहाने के ऊपर, और तीन गाँव के ऊपर। फिरंगी से कहना कि रास्ते पर नज़र रखे, और जैसे ही शो-पीर नदी के मुहाने के पास से गुजरे वैसे ही फौरन यहाँ आजाए। और फिरंगी को अलग ले जाकर उससे ठीक वही शब्द कहना जो मैं तुम्हें बताता हूँ, "गड़रियों को जाग्रत किए बिना ही जब भेड़िया भेड़ों के रेवड़ पर टूटता है तो भेड़ों का रक्त भी बहता है और कुछ पल्ले नहीं पड़ता। मेरे शब्दों को जरा दोहरा कर सुनाओ!"

राहगीर ने शब्दों को दोहरा दिया: "गड़रियों को जाग्रत किए बिना ही जब भेड़िया भेड़ों के रेवड़ पर टूटता है तो भेड़ों का रक्त भी बहता है और कुछ पल्ले नहीं पड़ता।"

"हाँ, यह ठीक है। जब तुम इन शब्दों को दोहराओगे तो वह सब समझ जाएगा। देखो, भूल न करना।"

"नहीं, मुझे सब याद रहेगा।"

"अच्छा तो अब जाओ। तुम्हें किसी ने देखा तो नहीं?"

"नहीं।"

"हाँ, इसका भी ध्यान रखना कि तुम पर किसी की नज़र न पड़े।"

भाखरा वहाँ से खिसक कर अंधेरे में गायब हो गया। कुछ ही देर बाद केन्दितरी भी मीठी नींद में डूब कर खर्राटे भरने लगा।

: ७ :

बाग-बगीचे जाड़ों के आवरण से मुक्त हो गए थे। आकाश अब उज्जवल था और मौसम सुहावना। पेड़ों पर फूल खिल आए थे और

सियातांग निवासियों के हृदय वसन्त के रंग में रंगे थे। अंधेरा होने पर युवक युवतियों की खोज में निकलते। लड़कियों को दिन-रात ताले में बंद करके तो रखा नहीं जा सकता। आखिर वे पानी भरने नदी पर जाती ही थीं, और रात को माँ के साथ पत्थर की चौकी पर लेटे-लेटे जब दम घुटने लगता तो छत पर चली आतीं। अपनी लड़की की चौकसी के लिए कोई भी माँ भला रात-भर कैसे जाग सकती है? जब कोई मेमना कहीं भटक जाता तो उसे खोजने के बहाने वे चट्टानों के ओने-कोने देखतीं और मेमने की जगह अपने प्रिय पात्र को पाकर......!

केवल बख्तियार ही एक ऐसा था जो बगीचे में चक्कर लगाता था, लेकिन निस्सो कहीं दिखाई नहीं देती थी। रात को वह कभी अपने कमरे से बाहर नहीं निकलती थी। और इसकी जरूरत भी क्या थी? न तो उस पर कोई रोक थी, और न ही उसे कोई ताले में बंद करके रखता था कि वह बख्तियार से न मिले। इसके अलावा वह बख्तियार की मंगेतर थी, सब कुछ तय हो चुका था। आज नहीं तो कल, निस्सो उसकी हो ही जाएगी।

लेकिन यह प्रतीक्षा...?

बख्तियार का हृदय उमड़ने-घुमड़ने लगता। इससे तो अच्छा था कि वह कहीं चला जाता। और अगले दिन जब शो-पीर ने रास्ते की मरम्मत करने के लिए उसे भेजना चाहा तो वह तुरत तैयार हो गया। गाँव के कुछ लोगों के साथ, कुदाली और फावड़े लेकर, वह चल दिया। काराशिर भी इस दल में शामिल था।

बख्तियार के चले जाने के बाद, उस समय जब कि मरियम और निस्सो उसका कमरा संगवा रही थीं, मरियम ने पूछा, "तुम तो अभी से उदास हो गईं?"

"मैं क्यों उदास होती?"

"वही तो, इसमें भला उदास होने की क्या बात है? वह शीघ्र ही लौट आएगा।"

"व्यर्थ की बातें न करो, मरियम ! तुम कुछ नहीं समझतीं।" निस्सो ने कहा और झुँझला कर दरवाज़े की ओर चल दी।

"ठहरो, निस्सो ! आखिर बात क्या है ?" मरियम ने उसका रास्ता रोकते हुए कहा, "क्या मैंने कोई बुरी बात कह दी ?"

"कहती तो हूँ कि तुम कुछ नहीं समझती,—नहीं, बिलकुल नहीं ?"

निस्सो को इस प्रकार झुँझलाते मरियम ने पहिले कभी नहीं देखा था। वह बिरले ही नाराज़ होती थी।

"यहाँ बैठो, निस्सो ! तुम भाग कर कहाँ जा रही थी ? मुझ से अपने मन की बात खोल कर कहो। क्या तुम मुझे इतना ग़ैर समझती हो कि मैं तुम्हारी बात समझने योग्य भी नहीं हूँ ?"

"हम दोनों को साथ रहते इतने दिन हो गए," निस्सो ने बैठते हुए चोट खाए हृदय से कहा, "अगर इतने पर भी तुम्हारी समझ में कुछ नहीं आया तो मैं बता कर ही क्या करूँगी ?"

मरियम ने अपनी बाहें निस्सो के गले में डाल दीं।

"मुझ से अपने मन की बातें न छिपाओ, निस्सो !"

"मैं समझती थी कि मेरा जीवन अब सुख के साथ बीतेगा, और आज़ादी के साथ मैं रह सकूँगी। लेकिन तुम सब मिल कर मेरे गले में फँदा डालना चाहते हो।"

"गले में फँदा !" मरियम के मुँह से निकला. "यह तुम क्या कहती हो, निस्सो ! क्या तुम बख्तियार से प्रेम नहीं करतीं ? मैं तो समझती थी कि..."

"यही तो बात है, मरियम ! मैं जानती हूँ कि वह अच्छा आदमी है, बहुत ही अच्छा आदमी है। लेकिन मैं उससे प्रेम नहीं करती।"

"लेकिन उससे विवाह करने की रज़ामन्दी तो खुद तुमने ही दी थी न ?"

"हाँ मैंने ही दी थी क्योंकि वह मुझ से प्रेम करता है।"

"पहेली न बुझाओ, निस्सो ! वह तुम से प्रेम करता है। तो क्या

तुम उससे...?"

"इसी लिए तो मैं कहती थी कि तुम कुछ नहीं समझती !" एक क्षण के लिए निस्सो ने कुछ खुशी का अनुभव किया, और फिर दुःख का अनुभव करते हुए तुरत अपनी आंखें झुका लीं। बोली, "नहीं, मैं उससे ज़रा भी प्रेम नहीं करती।"

"तो फिर किस से प्रेम करती हो ?" अब खुद मरियम के हृदय में आशंका ने प्रवेश किया।

"किसी से भी नहीं।" मरियम की बाहों से अपने को छुड़ाते हुए निस्सो ने कहा, "लेकिन अगर मैं प्रेम करती भी हूँ तो तुम्हीं बताओ, ऐसी हालत में मैं क्या कर सकती हूँ ?"

"यह भी कोई पूछने की बात है। उससे विवाह कर लो।"

"और अगर वह कभी विवाह का जिक्र ही न करे तो...?"

"कौन है वह ?"

"कोई नहीं। मैं केवल यह जानना चाहती हूँ कि अगर पुरुष स्त्री से कुछ न कहे तो क्या करना चाहिए।"

"तब खुद स्त्री को पुरुष से पूछना चाहिए।

"निस्सो की भौहों में बल पड़ गए और वह उठ कर खड़ी हो गई। मरियम ने देखा कि उसकी आँखों में गुस्सा झलक रहा है।

"मैं किसी से प्रेम नहीं करती, मरियम ! सुन रही हो न, मैं किसी से प्रेम नहीं करती !"

यह कह कर निस्सो कमरे से बाहर भाग गई। मरियम उठी और विचारों में डूबी बगीचे में जाकर टहलने लगी।

: ८ :

शो-पीर अब वोलोस्त जाने की तैयारी कर रहा था। बस, एक एकाध दिन में ही। उसने खुदादाद को बुलाया और निस्सो तथा मरियम की उपस्थिति में उस से कहा, "जब तक बख्तियार लौट कर आए, तब तक ग्राम-सोवियत के मुखिया की सारी जिम्मेदारी तुम्हारे कंधों पर रहेगी।"

शो-पीर ने उसे सभी बातें विस्तार के साथ समझा दीं। फिर कहा, "अगर कभी कोई बात समझ में न आए तो मरियम सलाह लेने के लिए मौजूद है। जो कुछ भी करो, मरियम को उसकी सूचना देना न भूलना।"

"लेकिन एक महत्वपूर्ण काम और है," शो-पीर ने अन्त में कहा, "पता नहीं, तुम उसे संभाल सकोगे या नहीं। वह यह कि लोगों को अनाज बाँटना है, ताकि वे उसे छान-बीन कर अभी से बोवाई के लिए साफ कर लें।"

गुलरीज़ भी वहीं बैठी अपने बुनाई के काम में व्यस्त थी। शो-पीर की बात सुन कर उसने भी कुछ कहने का निश्चय किया।

"मैं बुढ़ा गई हूँ, शो-पीर! हो सकता है कि मेरी बात ठीक न हो। लेकिन मेरी भी सुनो, फिर चाहे जो करना। खुदादाद अनाज को हाथ न लगाए, यही अच्छा है। उसे अभी वहीं पड़ा रहने दो।"

"क्यों, गुलरीज़?"

"इसलिए कि लोग आपस में ही झगड़ने लगेंगे। कुछ कहेंगे, हमें और दो। कुछ कहेंगे हमें कम क्यों दिया? तुम्हारी और बख्तियार की ग़ैरहाजिरी में यही सब होगा, और आपस में रंजिश बढ़ेगी। अभी बोवाई में देर है। सो लौटने पर ही अनाज बाँटना।"

"तुम ठीक कहती हो, गुलरीज़। यह अच्छा है कि तुम हमेशा आगे की बात सोचती हो। क्यों, ठीक है न खुदादाद?"

"हाँ, मेरी भी यही राय है," खुदादाद ने कहा, "इतनी जल्दी करने की अभी ज़रूरत भी क्या है?"

"अब तो सब कुछ ठीक हो गया न? मैं कल सुबह चल दूँगा।"

"क्या मैं भी तुम्हारे साथ चल सकती हूँ, शो-पीर?" एकाएक निस्सो ने कहा। दुविधा और संकोच के बावजूद उसकी आँखें चमक रही थीं।

"यह क्या निस्सो? तुम चल कर क्या करोगी?"

"मैं वोलोस्त देखना चाहती हूँ," निस्सो ने मुलायम स्वर में कहा और अपनी आँखें झुका लीं, "मैं देखना चाहती हूँ कि सब लोग वहाँ कैसे रहते और काम करते हैं ?"

शो-पीर के मन में आया कि कहे, "ओह, मेरी प्यारी निस्सो !" पर उसने अपने आप को रोक लिया और सीधे-सादे ढंग से बोला, "नहीं निस्सो, तुम्हारे चलने में कोई तुक नहीं है। बख्तियार बे मतलब परेशान होगा। हम दोनों फिर कभी वोलोस्त चलेंगे, हो सका तो पतझड़ में। क्यों, ठीक है न ?"

"जैसी तुम्हारी मर्ज़ी," निस्सो ने दृढ़ स्वर में कहना चाहा, लेकिन उसकी आवाज़ ने साथ नहीं दिया।

शो-पीर को तैयार होने में देर नहीं लगी। पेबन्द लगी अपनी कमीज़ में उसने लकड़ी के बटन टाँक लिए जो कि खुद उसी ने बनाए थे। पट्टी के एक टुकड़े से रगड़ कर अपनी टोपी में लगे लाल सितारे को चमकाया, अपने थैले में गेहूँ की कुछ रोटियां डालीं और बस, उसकी तैयारी पूरी हो गयी। फिर उसने मरियम को अपने कमरे में बुलाया, और उसे उसका रिवाल्वर लौटा दिया जो कि उसने, सावधानी के साथ साफ करने के बाद, जाड़ों भर अपने ही पास रख छोड़ा था।

"इसे अपने पास ही रखो," मरियम ने कहा, "लम्बा रास्ता है। हो सकता है, इसकी जरूरत पड़े।"

"रास्ता अब खतरे से साफ़ है," शो-पीर ने कहा, "फिर मेरे पास अपनी शिकार की बन्दूक तो है ही। यह तुम्हारा है, और तुम इसे अपने पास रखो। यहाँ तुम अकेली रहोगी। माना कि अब डर की कोई बात नहीं है, लेकिन दिल जमई के लिए यह भी पड़ा रहे तो क्या हर्ज है। हाँ, इसे अपने साथ लेकर गांव में घूमना नहीं, जब तक कि कोई खास जरूरत न आ पड़े।"

मरियम ने रिवाल्वर वापिस ले लिया। शो-पीर ने रुई की जाकेट बदन पर डाली, बन्दूक को कंधे से लटकाया और चबूतरे से नीचे उतर

गया।

"ऐसी क्या जल्दी है, शो-पीर ? कल चले जाना। रात को भी भला कोई घर से जाता है ?"

"नहीं, अभी कुछ दिन है। रात होने तक मैं काफी रास्ता पार कर लूँगा। महानदी फिर उतनी ही दूर और रह जाएगी। चट्टान के नीचे या खोह में रात बिताऊँगा। सुबह होते ही सम्भव है कि अपने कुछ लोगों से भेंट हो जाए। आखिर यह भी तो देखना चाहिए कि बख्तियार आदि ने सड़क की मरम्मत करने की दिशा में क्या-कुछ किया है।"

मरियम और निस्सो कुछ दूर उसके साथ चलने के लिए तैयार थीं। शो-पीर ने उन्हें रोका, "इसकी क्या जरूरत है। तुम यहीं रहो।"

इसके बाद उसने दोनों से हाथ मिलाया और तेज डगों से बाड़े से बाहर हो गया। फिर मुड़ कर निस्सो को सम्बोधित करते हुए बोला, "मैं बीस दिन में लौट आऊँगा। देखो, घबराना नहीं, निस्सो !"

शो-पीर चल दिया। निस्सो उसे सियातांग घाटी पार करते और झाग उगलती नदी के ऊपर लटकी चट्टान के पीछे विलीन होते हुए देखती रही।

रात को जब मरियम गहरी नींद में सो गई तो निस्सो चुपचाप दबे-पाँव उठी और अपना चोगा उठा कर बाहर निकल आई। आँगन को उसने पार किया, स्कूल की अधूरी इमारत के पास पहुँची, और खिड़की पर से एक बण्डल उठाया जिसे उसने अँधेरा होने से पहले ही वहाँ रख दिया था। इसके बाद वह भी उसी पथ पर और उसी दिशा में आगे बढ़ चली जिस दिशा में कि शो-पीर गया था।

आधी रात तक वह इतनी दूर निकल गई कि उसके मन में सन्देह हुआ, "कहीं शो-पीर पीछे तो नहीं छूट गया !"

एक जगह, पहाड़ों के बीच और पथ से कुछ हटकर, अँधकार सिमट कर इतना गहरा हो गया था कि अनायास ही निस्सो का ध्यान उस ओर आकृष्ट हुआ। निश्चय ही यह कोई खोह है। कौन जाने, शो-पीर

इसी में रात बिता रहा हो।

चट्टान पर चढ़ कर निस्सो खोह के निकट पहुँची और कान लगा कर सुनने लगी। आवाज़ों को पहचानने में दक्ष निस्सो को यह पता लगाने में देर नहीं लगी कि भीतर कोई सो रहा है।

उसने खोह में प्रवेश किया। खोह में पत्थर की छोटी-छोटी बटियाँ छितरी थीं। उनकी सरसराहट से शो-पीर की आँखें खुल गईं। अंधेरे में उसने अपनी बन्दूक संभाली और तेज़ स्वर में बोला, "कौन है ?"

"मैं हूँ, शो-पीर !" निस्सो ने कहा।

"निस्सो ?—तुम यहाँ कैसे ? क्या कोई दुर्घटना...?"

निस्सो ने अब अनुभव किया कि रात में इस प्रकार आकर उसने कितना पागलपन किया है। वह चुप रही।

"बोलती क्यों नहीं, निस्सो ? तुम चुप क्यों हो ?"

निस्सो से कुछ कहते नहीं बना। उसकी आँखें भर आईं और सुबकियाँ लेने लगी।

"अरे, तुम तो रो रही हो ? बोलो निस्सो, क्या बात है ?"

"नहीं शो-पीर, मैं रो नहीं रही हूँ," निस्सो ने फुसफुसा कर कहा, "और ऐसी कोई बात भी नहीं हुई है। मैं तो...केवल यह देने के लिए आई थी !"

शो-पीर ने निस्सो के हाथ से बण्डल ले लिया। उसमें दो चीजें थीं, एक चाय, दूसरी चीनी।

"तुम भी एक दम पागल हो, निस्सो !" शोपीर ने कहा और उसे अपने निकट खींच कर उसका सिर थपथपाने लगा।

निस्सो का सिर शो-पीर के वक्ष से सटा था, और वह खुद भी उतना ही विचलित हो उठा था जितनी कि निस्सो, लेकिन अगले ही क्षण उसने अपने को संभाल लिया और निस्सो को अपने से अलग करते हुए बोला, "सुनो निस्सो, मैं जो कुछ पूछना चाहूँ उसका जवाब देना। कुछ छिपाना नहीं।"

कुछ रुक कर शो-पीर ने पूछा, "क्या तुम बख्तियार से प्रेम नहीं करतीं ?"

"करना तो चाहती हूँ, पर कर नहीं पाती," निस्सो ने उदास भाव से फुसफुसा कर कहा।

"तब तुम उससे विवाह करने को क्यों राज़ी हो गईं ?"

कुछ देर तक निस्सो चुप रही। फिर, पहले से भी अधिक धीमे स्वर में बोली, "क्या तुम भूल गए कि मैंने तुमसे क्या पूछा था ? मैंने तुमसे पूछा था कि क्या तुम इसे पसंद करोगे ?"

"पगली नहीं तो ! सवाल मेरी पसंद का नहीं, तुम्हारी अपनी पसंद का है। तुम्हारा अपना हृदय ही इसका फैसला कर सकता है।"

"मेरा हृदय !" निस्सो ने फुसफुसा कर कहा और फिर कुछ खिन्न स्वर में बोली, "क्या तुम इतना भी नहीं समझते ?"

"मेरे समझने से कोई लाभ नहीं, निस्सो ? मैं जो कहना चाहता हूँ वह यह कि तुम अभी..."

"हाँ-हाँ, मैं अभी बहुत छोटी हूँ !" निस्सो ने कुढ़ कर कहा, "केवल तुम्हारे लिए छोटी हूँ, बख्तियार के लिए नहीं !"

शो-पीर बड़े असमंजस में पड़ा। उसकी समझ में नहीं आया कि वह निस्सो को कैसे समझाए। अन्त में बोला, "बख्तियार से अभी तुम्हारी मंगनी हुई है। चाहो तो तुम उसे छोड़ सकती हो। यह भी हो सकता है कि विवाह का दिन आने तक खुद बख्तियार का ही मन पलट जाए। विवाह होने में अभी काफी देर है। यही बात मुझ पर भी लागू होती है। अठारह वर्ष की आयु से पहले विवाह हो नहीं सकता। जो करते हैं, उन्हें कानून सज़ा देता है। और यह बिल्कुल सम्भव है कि अठारह वर्ष की आयु होने तक खुद तुम्हारा ही विचार बदल जाए !"

"नहीं शो-पीर, मेरा विचार कभी नहीं बदलेगा, न इस जन्म में, न उस जन्म में !"

"अच्छी बात है...लेकिन आज क्या सोना नहीं है ? देखो तो, सूरज

निकला ही चाहता है। अब कुछ देर सो जाओ !"

"शो-पीर," निस्सो ने गर्व भरे किन्तु आहत स्वर में कहा, "मैं केवल तुमसे प्रेम करती हूँ।"

"अच्छा बाबा, सुन लिया ! और अगर तुम जानना चाहती हो तो मैं भी...लेकिन तुम्हें यह सब क्या बताने की जरूरत है !"

शो-पीर ने अपनी जाकेट उतारी और निस्सो का बदन उससे ढक दिया। निस्सो ने पाँव सिकोड़ लिए और गुड़मुड़ी-सी बनकर चट्टान पर सो गई।

शो-पीर खोह से बाहर निकल आया और पाइप जला कर धूम्रपान करने लगा।

तारे धुंधले हो चले और आकाश में उजाला फैलने लगा। निस्सो अभी तक चट्टान पर सोई थी। शो-पीर ने उसकी ओर देखा, फिर अपनी बन्दूक उठा कर कंधे पर डाली, और निस्सो की बगल में चट्टान पर दो बिस्कुट रखे और तेज डगों से आगे बढ़ गया।

निस्सो उसी प्रकार, शो-पीर की जाकेट में लिपटी, सोती रही।

: ६ :

शो-पीर के विदा होने के अगले ही दिन केन्दितरी के पास एक अन्य आदमी का आगमन हुआ। दर्रे के रास्ते न आकर वह सियातांग की ऊँची पहाड़ियों पर से आया था। सियातांग के सभी निवासियों ने उसे चोटियों और गहरे पहाड़ी ढलुवानों पर से लुढक कर नीचे आते हुए देखा था। अगर वह अपने को संभाले न रखता और जरा भी सन्तुलन खो देता तो उसकी एक भी हड्डी का पता नहीं चलता।

उसकी आयु अधिक नहीं थी, युवक मालूम होता था। शरीर का दुबला-पतला और चिथड़ों में लिपटा। भौंहें एकदम काली और हुकदार नाक। गंदा और तपा हुआ सा चेहरा।

सियातांग निवासियों की ओर उपेक्षा से देखते हुए उसने पूछा, "केन्दितरी कहाँ रहता है ?"

रास्ता बताने के लिए दो आदमी उसके साथ हो लिए।

केन्दितरी द्वार पर ही खड़ा था। अजनबी उसके पास पहुँचा और भावशून्य आँखों से देखते हुए सियातांग भाषा में बोला :

"अज़ीजखान की अमलदारी में किसी भी ईमानदार आदमी के लिए गुज़र करना कठिन है। मेरे पास घर था, गेहूँ के खेत थे, एक गाय और आठ भेड़ें थीं, घरवाली और तीन बच्चे थे। लेकिन खान ने कुछ भी नहीं छोड़ा। मेरी घरवाली को पत्थरों से मार डाला, मेरे तीनों बच्चे भी एक के बाद एक काल के गाल में समा गए। मेरे हृदय में प्रतिशोध की आग जलने लगी। मैंने निश्चय किया कि अज़ीजखान से बदला लूँगा, उसकी अमलदारी को लात मार केन्दितरी की भांति सियातांग चला जाऊँगा। भला हो इन लोगों का जो तुम्हारा घर बताने के लिए यहाँ तक मेरे साथ आए।"

यह कह कर अजनबी ने उन दोनों आदमियों की ओर झुक कर इशारा किया जो कुछ फासले पर खड़े थे।

"मेरे पास तो यह एक कोठरी ही है। पहले इसमें गधे बंधते थे, अब मैं रहता हूँ। चाहो तो तुम भी यहीं रह सकते हो।"

अजनबी ने अपनी बाहों को आड़ी करके वक्ष पर रखा और झुक कर कोठरी में चला गया। उसे छोड़ने के लिए आए दोनों सियातांग निवासी वहां से लौट गए और जो कुछ उन्होंने देखा-सुना था, उसका सबसे ज़िक्र करने लगे।

"शुक्र है कि वह जल्दी चले गए!" अजनबी ने कहा, "अब मैं खुल कर सांस ले सकता हूँ। तुम कल्पना नहीं कर सकते कि इस प्रकार दुनिया-भर की मुसीबतों का रोना रोते मुझे कितनी घृणा मालूम होती है? लेकिन यह तो बताओ, क्या तुमने मुझे तुरत पहचान लिया था?"

केन्दितरी हंसा। फिर बोला, "अपने पंछियों को पहचानने में मुझे देर नहीं लगती। लेकिन तुम इतने खतरनाक रास्ते से क्यों आए? बैठ जाओ, ज़मीन के सिवा यहां और है भी क्या? इसी पर बैठो। मेरा

यह क्वार्टर तुम्हें कैसा लगा ?"

"कोई बात नहीं। एक दिन किसी बड़े नगर में तुमसे दावत लेकर इसकी कसर निकाल लूंगा। दर्रे के रास्ते मैं जान-बूझ कर नहीं आया। वहां तुम्हारे आदमी रास्ते की मरम्मत कर रहे है।"

"क्या तुमने उन्हे देखा ?"

"हाँ, ऊँचाई पर से उनकी एक झलक दिखाई दी थी। मरम्मत पूरी करने में अभी उन्हें दस दिन और लग जाएंगे। इतने दिन हमारे लिए काफी होंगे न ?"

"हाँ, काफी होंगे। लेकिन इसके बारे में बाद में बातें करेंगे। अभी तो यह बताओ कि 'वहां' का क्या हाल है ? नगर छोड़े तुम्हें कितने दिन हो गए ?"

"तुम्हारे आने के ६ सप्ताह बाद मैं भी चल दिया। एक महीने तक पूर्वीय प्रान्तों में घूमता रहा। इसके बाद तुम्हारे काम में योग देने का आदेश मिला। सो मै तुम्हारे सामने हूँ। लेकिन मुझे बड़े जोर की भूख लगी है। कुछ खाने पीने का भी डौल है या भूखा ही मारोगे ?"

"क्यों नहीं," केन्दितरी ने कहा, "भुनी हुई मटर का दलिया तैयार हो सकता है !"

"मटर का दलिया भी यहां बहुत बड़ी गनीमत है। भाखरा ने तुम्हारा सारा हाल मुझे बता दिया था। इसीलिए, खतरा उठा कर भी, तुम्हारे लिए कुछ ऐसी चीजें मैं अपने साथ लाया हूँ जिन्हें तुम यहां सपने में भी नहीं पा सकते !"

यह कह अजनबी ने अपना थैला खोला और उसमें से खाने की कुछ चीजों के अलावा एक ह्विस्की की बोतल और एक सिगार का डिब्बा निकाला।

केन्दितरी का चेहरा खुशी से चमक उठा, "तुम वास्तव में सच्चे साथी हो, मेरे प्यारे फिरंगी ! अरे, मैं यह तो पूछना भूल ही गया कि तुम्हारा अब क्या नाम है ? और देखो, अपना थैला जरा इन चीजों पर

डाल दो। कहीं ऐसा न हो कि कोई इधर आ निकले!"

अजनबी ने अपना थैला उठा कर चीजों पर ढकते हुए कहा :

"मेरा नाम है शेर मम्मत। इधर के इलाकों के लिए ऐसा ही नाम चाहिए। क्यों, ठीक है न ?"

केन्दितरी ने ह्विस्की की बोतल उठाई, कार्क को दबा कर बोतल के भीतर गिरा दिया और, गिलासों के अभाव मे, बारी-बारी से मुंह लगा कर पीना शुरू किया। करीब डेढ घंटे तक दोनों पीते-पिलाते और दुनिया-भर की बाते करते रहे।

अन्त मे, मतलब की बात शुरू करते हुए, केन्दितरी ने पूछा, "क्या तुमने शो-पीर को देखा था ?"

"हां, लम्बे डग भरता चला जा रहा था। उसे जाते हुए देखा, तभी तो मैं यहा आ सका हूँ।"

"अच्छा तो अब अपनी योजना पर भी विचार कर लें।"

"जरूर। मैं नया आदमी हूँ। स्थिति को अच्छी तरह समझने के लिए पहले कुछ बातें साफ करना चाहता हूँ। पहले तो अजीजखान आएगा, और इसके बाद ?"

"इसके बाद रूसी सैनिक आएंगे।"

"रूसियों को हम इसका मौका ही क्यों दे ?"

"अभी सब बताता हूं। वोलोस्त में कुल इक्कीस सैनिकों की एक टुकड़ी है। पिछली शरद में कारवां के साथ दस सैनिक और आए थे। वक्त ज़रूरत इनमें से कितनों को वे भेज सकते हैं ?"

"करीब बीस को।"

"बिल्कुल ठीक। मेरा अनुमान भी यही है। इन बीस को तो आते ही आसानी से काबू मे कर लिया जायगा। लेकिन क्या तुम समझते हो कि रूसी इतने पर ही चुप होकर बैठ जाएगे ? नहीं, वे पूर्वी सीमा से अपनी सेनाएं बुलाएंगे। उनके यहां पहुंचने में करीब एक महीना लग जायगा,

और इसके बाद असली गुल खिलेगा। इस बार अजीजखान के सैनिकों का सफाया हो जाएगा। लेकिन तब तक, कहने की आवश्यकता नहीं, अजीजखान सियातांग में डटा ही रहेगा!"

"यह जरूरी तो नहीं मालूम होता कि अजीजखान यहां जमा ही रहे। क्या वह लड़की को इतना प्यार करता है, या इसका अन्य कोई कारण है?"

"प्यार तो वह करता ही है। अगर वह न होती...मतलब यह कि प्रथम आकर्षण वही है। प्रथम, किन्तु सबसे महत्वपूर्ण नहीं। उसके अलावा कुछ ऐसे अप्रकट आकर्षण भी हैं जिनका न तो वह स्वयं जिक्र करता है, न अन्य कोई। जब से सियातांग के अमीर-उमरा अपना सब कुछ खोकर, जर-जमीन और आमदनी के सभी स्रोतों से वंचित होकर, यखबार चले गए हैं, सियातांग और यखबार दोनों ही जगह के व्यापारियों का दिवाला निकल गया है, उनका व्यापार ठप्प हो गया है। अजीजखान का खजाना भी अब खाली है। व्यापार नहीं रहा तो सड़क-कर भी नहीं रहा। सर्वशक्तिमान बड़े खान की नजरों में अब उसकी कोई प्रतिष्ठा नहीं। इस कारण वह चाहता है कि भागे हुए अमीर-उमरा फिर वापिस लौट जाएं और सभी कुछ फिर पहले जैसा हो जाए।"

"लेकिन बोल्शेविक क्या ऐसा होने देंगे? क्या खान सचमुच यह समझता है कि वे सोवियत सत्ता का तख्ता पलटजाने देंगे? क्या वह इतना मूर्ख है जो यह भी नहीं देख पाता कि देर या सवेर, आखिर उसकी सेना आएगी और......"

"मूर्ख तो वह है ही! जो हो, मेरा सबसे पहला काम तो उसे सब्ज बाग दिखाते रहना है। दूसरे, उसका दृष्टिकोण इतना सीमित है कि वह इन पहाड़ों को ही समूची दुनिया समझता है, और उसे विश्वास है कि इन पहाड़ों को लांघ कर कोई सेना यहाँ नहीं आ सकती। फिर अपनी तिरेपन राइफलों को वह एक अजेय शक्ति समझता है। एक बार

यहाँ आने के बाद वापिस लौटने का नाम नहीं लेगा। कारवाँ को लूटने का मोह उसकी आँखों पर और भी पर्दा डाल देगा। किसी को यहाँ का खान बना कर वह उसे अपने मातहत घोषित करेगा और इसके बाद रास-रंग और दावतों का वह दौर चलेगा कि न तो यहाँ एक भेड़ बाकी बचेगी और न कोई लड़की ही। महीना बीतते-न-बीतते रूसी सेनाएं आजाएँगी, उसका सफाया कर देंगी, और उसके नाम पर कोई दो आंसू तक न गिराएगा। क्यों, ठीक है न?"

"हाँ, यह तो ठीक है। खान का नाम तक शेष नहीं रहेगा। लेकिन इसके बाद...?"

"इसके बाद...एक तहलका मच जाएगा कि बसमाचियों ने सोवियत इलाके पर हमला किया है। समूची दुनिया जान जाएगी कि सीमान्ती इलाकों मे लड़ाई हो रही है। इसका असर उस बात-चीत पर पड़ेगा जो कि रूसियों और सर्व शक्तिमान बड़े खान के बीच अगले मास होने वाली है। तनातनी के कारण उन में कोई समझौता नहीं होगा। इसी बीच हमारी सरकार अपना पासा फेंकेगी और इस तनातनी से लाभ उठा कर बड़े खान से वे सब रियायतें प्राप्त कर लेगी जिन्हें देने से खान अब तक इन्कार करता रहा है।"

"योजना तो तुम्हारी बहुत बढ़िया है। लेकिन अगर वोलोस्त से बीस रूसी सैनिक नहीं आए तो...?"

"अरे, तुम रूसियों को जरा भी नहीं समझते! जैसे ही उन्हें मालूम होगा कि बसमाचियों का धावा हुआ है और वे लूट-पाट मचा रहे है, तो सियातांग-निवासियों की रक्षा के लिए वे तुरत दौड़ पड़ेंगे।"

"अच्छी बात है। अब यह बताओ कि मुझे क्या करना है?"

"अच्छा तो सुनो। सब से पहिले स्थिति को अपने मन में बैठा लो, कारवाँ वोलोस्त से रवाना होगा। महा नदी के किनारे-किनारे वह आएगा। सियातांग और महा नदी के संगम-स्थल तक पहुँचने में उसे आठ दिन लग जाएंगे। इसके बाद, सियातांग नदी के किनारे-किनारे,

गाँव तक की चढ़ाई के लिए दो दिन और रख लो। सौदागर और उसके किराये के टट्टू सैनिकों का लाभ इस बात में है कि अजीजखान कारवां पर उसी समय कब्ज़ा करे जब वह गाँव में आ जाए। यह जरूरी है कि घटनाचक्र तेजी से चले, जिससे उलटी-सीधी अफवाहें न फैल सकें। इस प्रकार, अगर कारवां वोलोस्त से पहली को चलना है तो वह यहां दस को आ जाएगा। इसका मतलब यह कि नौ को अजीजखान का सियातांग पर कब्जा हो जाना चाहिए। रूसी सैनिक ग्यारह या अधिक-से-अधिक बारह तक आ जाएंगे। शो-पीर वोलोस्त के लिए रवाना हो ही चुका है। तुम्हें, मेरे मित्र, आज ही उसके पीछे लग जाना चाहिए। कारवां के रवाना होने की तैयारियों का पूरा पता लगाना, और अपने को जाहिर न होने देना। कारवाँ के रवाना होने के पाँचवें दिन, चिथड़ा हुए भेष और हाँपती-काँपती मुद्रा में, वोलोस्त-टुकड़ी के नायक के सामने जाना और उन से फरियाद करना। कहना कि अज़ीज़खान दल-बल सहित सियातांग पर धावा करने जा रहा है। यह सुनते ही वे घोड़ों पर ज़ीन कस कर चल देंगे और हमारी योजना के मुताबिक, ठीक समय पर, यहाँ पहुंच जाएंगे। हो सकता है कि वे एक दिन बाद में आएं। लेकिन इस से कोई फर्क नहीं पड़ता। असल चीज़ यह है कि उन्हें एक भी दिन पहले नहीं आना चाहिए।"

"अजीजखान को कारवां की गति-विधि के बारे में कैसे मालूम होगा? कारवां के पहुँचने से एक दिन पहले उसे यहाँ आकर कब्ज़ा कर लेना है न?"

"यह तो बहुत मामूली बात है। सियातांग नदी के मुहाने पर पहुँचने से एक रात पहले जैसे ही कारवां अपना आखिरी पड़ाव डालेगा, भाखरा आग जला कर इसकी सूचना दे देगा। अज़ीज़खान के सैनिक आग जलती देख कर उसी रात महा नदी पार करेंगे और अगली रात तक यहाँ आ जाएंगे, अर्थात कारवाँ से बारह घंटे पहले। अजीजखान से मैंने सब तय कर लिया है और भाखरा भी किसी चोटी से चिपका रास्ते पर अपनी

आँखें गड़ाए होगा। सब काम ठीक से होगा, बशर्ते कि तुम सोवियत टुकड़ी के कमाण्डर के सामने एक दम ठीक समय पर पहुँच जाओ, अर्थात कारवां के रवाना होने के पाँच दिन बाद !"

"इसके बाद मुझे और क्या करना होगा ?"

"तुम्हें क्या करना होगा ? बहुत सम्भव है कि वे तुम्हें गिरफ्तार कर लें और उस समय तक जेल में डाले रखें जब तक कि तुम्हारी बातों की अच्छी तरह जाँच-पड़ताल न हो जाए। तुम्हें अजीजखान के सताए हुए एक दु:खी भिखारी का अभिनय करना है। अगर इस में सफल रहे तो महीना-पन्द्रह दिन जेल में रह कर छूट जाओगे। नहीं तो फिर मौत की सजा है ही। जो भी हो, तुम्हें हर हालत में अपने को भिखारी ही जताना है। लेकिन मेरे नाम की उन्हें हवा तक नहीं मिलनी चाहिए।"

"तुम्हारा अपना मन तो मेरी तरफ से साफ है न ?"

"बिल्कुल। तुम्हें मैं अच्छी तरह से जानता हूँ।"

"यही चाहिए। तुम्हारा विश्वास ही मेरा सम्बल है। अच्छा तो अब मैं चलूँ,—और कुछ तो नहीं कहना ?"

"जाओ। मेरी हार्दिक कामना है कि तुम्हें सफलता प्राप्त हो। तुम ने यह अच्छा किया कि यहाँ के लोगों से अपने को छिपाने का प्रयत्न नहीं किया। जाते समय भी उनसे हाथ मिलाते जाना।"

"हाँ, यह जरूरी है, भविष्य के लिए। ओह, एक बात तो मैं बिल्कुल भूल ही गया। सम्भव है, तुम्हें पकड़ कर वे कुछ पूछ-ताछ करें। इस लिए यह याद रखना जरूरी है कि मैं अजीजखान की अमलदारी में चोर का नाम की एक बस्ती से भाग कर आया था। क्या तुम इस जगह को जानते हो ? यह दक्खिनी सीमा पर है। वहीं अपने बाल कटवाने मैं तुम्हारे पास गया, अपनी मुसीबतों का मैंने रोना रोया और उसके जवाब में तुम ने सियातांग में अपने सुखी जीवन का वर्णन किया। मैंने यहाँ आकर तुम से सियातांग पर हमले की तैयारियों का जिक्र किया और उनकी रिपोर्ट करने के लिए तुम ने मुझे वोलोस्त जाने का आदेश दिया।

इधर के इलाकों से परिचित न होने के कारण मैं रास्ता भूल गया और इस लिए बोलोस्त पहुँचने में इतनी देर हो गई। क्यों, यह ठीक रहेगा न ? "

"बहुत ठीक। तुम्हारी सूझ-बूझ का कायल होना पड़ता है। लेकिन एक बात तो सुनो, क्या तुम उस लड़की को देखना चाहोगे जिस पर खान लट्टू है ?"

"क्यों नहीं ? क्या वह सचमुच में बहुत सुन्दर है ?"

"अब अपनी आंखों से ही देख लेना। सम्भव है, उसे एक बार देख लेना भविष्य में कुछ काम आए। अच्छा तो चलो।"

केन्दितरी और उसका अतिथि दोनों चल दिए और चट्टानों पर से चढ़ते-उतरते बख्तियार के घर पहुँचे। मरियम और निस्सो उस समय बराण्डे में खड़ी थीं। केन्दितरी ने, अत्यन्त दयनीय मुद्रा बनाकर, अपने अतिथि के साथ अहाते में प्रवेश किया।

"सलाम निस्सो ! सलाम, कामरेड दौलेतोवा ! क्या शो पीर घर पर हैं। हमें उनसे मिलना है।"

"नहीं, वह घर पर नहीं है," निस्सो ने कहा, "तुम्हें तो यह पहले से ही मालूम होना चाहिए !"

"मुझे कैसे मालूम होता ? मैं दिन-भर अपने दरवाज़े पर ही बैठा प्रतीक्षा किया करता हूँ कि कोई बाल बनवाने आए। लेकिन कोई नहीं आता। यह अच्छा है कि मैं अकेला हूँ, घर में बीबी-बच्चे नहीं हैं। होते तो मैं उन्हें क्या खिलाता ? शो-पीर कहाँ हैं ?"

"शोपीर वोलोस्त गए हैं," मरियम ने केन्दितरी के साथी की ओर देखते हुए कहा।

"बख्तियार है ?"

"नहीं, वह अभी तक वापिस नहीं आया। रास्ते की मरम्मत करने गया है। लेकिन तुम चाहते क्या हो ? तुम्हारे साथ में यह कौन है ?"

"मुझे उनसे कुछ बातें करनी थीं," केन्दितरी ने कुछ खिन्नता से

जीभ चटकाते हुए कहा, "यह आदमी यखबार के दुःखी जीवन से तंग आकर भाग आया है। शेर मम्मत, तुम खुद अपने मुँह से ही इन्हें बताओ।"

शेर मम्मत ने, खूब नीचे झुककर, उदास स्वर में अपने दुःखों का वर्णन किया।

"इसे अधिकारियों से मिलना चाहिए। मामला महत्वपूर्ण है।"

"खुदादाद नीचे गाँव में रहता है," मरियम ने कहा, "वह ग्राम-सोवियत का मंत्री है।"

कुछ देर तक केन्दितरी अपने साथी की ओर देखता रहा, मानो कुछ सोच रहा हो। अन्त में बोला, "नहीं। इसे शो-पीर से ही बातें करनी चाहिएं।"

"आखिर कुछ मालूम तो हो?" मरियम ने कहा, "सम्भव है, मैं कुछ सलाह दे सकूँ।"

"नहीं, यह मामला स्त्रियों के वश का नहीं है। बख्तियार जब आएगा, तब मैं खुद उसे बता दूँगा। अच्छा शेर मम्मत, अब तुम जाओ। वोलोस्त में शो-पीर से तुम्हारी भेंट हो ही जाएगी। माफ करना निस्सो, माफ करना मरियम, नाहक तुम्हें तकलीफ दी।"

केन्दितरी और शेर मम्मत के विदा हो जाने के बाद मरियम बोली, "केन्दितरी अजीब आदमी मालूम होता है।"

"मुझे तो अच्छा लगता है," निस्सो ने कहा, "लेकिन शो-पीर उसे पसन्द नहीं करता। बेचारा बहुत ही गरीब है। न किसी के लेने में, न देने में। चुपचाप एक ओर पड़ा रहता है। पता नहीं, शो-पीर उसे क्यों पसन्द नहीं करता?"

दसवाँ परिच्छेद

: १ :

वसन्तोत्सव निकट आ रहा था। बख्तियार सड़क की मरम्मत करने गया हुआ था और उसके खेत जोतने का काम खुदादाद संभालता था। निस्सो भी इस काम में हाथ बँटाती थी। मरियम घर पर ही रहती थी। वह अनाज तौल कर देखती और इस बात का हिसाब लगाती कि किसको कितना दिया जाएगा। इसके अलावा उसे कारवाँ के साथ आने वाले लोगों को ठहराने की भी व्यवस्था करनी थी। गर्मियों तक नया स्कूल तैयार हो जाएगा। इसका एक कमरा दवाई घर का काम देगा। सौदागर मिरजाहूर की दुकान में सहकारी समिति का स्टोर खुलेगा। गुलरीज़ सुबह से रात तक रसोई घर में ही खटपट करती रहती, कभी अखरोट की गिरी पीस कर उसे मथती, कभी मक्खन निकालती, कभी अखरोट का हलवा तैयार करती। उसने तय कर लिया था कि इस बार वसन्तोत्सव के दिन वह मिठाइयों और खाने की अन्य चीज़ों की कमी नहीं रहने देगी।

शो-पीर के साथ खोह में अपनी भेंट के बारे में निस्सो ने किसी से कुछ नहीं कहा था। गुलरीज़ को पक्का विश्वास था कि वसन्तोत्सव के दिन धूमधाम के साथ निस्सो और बख्तियार की मँगनी होगी। मरियम के मन मे सन्देह था, पर वह चुप रही। निस्सो के असमंजस का कोई अन्त नहीं था और उसकी समझ में न आता था कि वह क्या करे। उसे केवल शो-पीर पर भरोसा था। उसे विश्वास था कि वह उसकी गुत्थी को सुलझा देगा। लेकिन कभी-कभी उसकी बेचैनी इतनी बढ़ जाती

कि शो-पीर के लिए प्रतीक्षा करना भी दूभर मालूम होता !

उधर काज़ी नौरोज़बेग और उसके संगी-साथियों के हौसले बढ़ते जा रहे थे। यह सोच कर कि अब उनके दिन फिरने वाले हैं, वे अपनी खोहों से निकल आए थे और जब भी मौका मिलता था, विषैली फुंकार मारने से नहीं चूकते थे !

एक दिन निस्सो कमर पर बेद वृक्ष की टहनियाँ लादे किले की ओर से आ रही थी। रास्ते में नौरोज़बेग से मुठभेड़ हो गई। वह सामने से आ रहा था। बचकर निकलने के बजाए उसने निस्सो को ऐसा धक्का दिया कि वह गिर पड़ी।

क्रोध के मारे निस्सो का बुरा हाल था। उठते हुए बोली, "क्या दिमाग फिर गया है ? तुमने मुझे धक्का क्यों दिया ?"

"अभी क्या है," नौरोज़बेग फुनफुनाया, "कमर पर जब बेंतों की मार पड़ेगी तब मालूम होगा !"

निस्सो पर अपने हृदय की समूची घृणा उंडेल कर नौरोज़बेग किले की ओर चल दिया, और बोबोकलों के गुम्बद में जाकर विलीन हो गया।

खुदादाद से भेंट होने पर जब निस्सो ने इस घटना का उससे जिक्र किया तो यह बोला, "कुछ समझ में नहीं आता कि बात क्या है। कल यूसुफ मुझ पर इतना चिल्लाया और इस बुरी तरह मुझे मारने के लिए झपटा कि मुझे भाग कर जान बचानी पड़ी। इससे कुछ पहले वह शोख बगोर को इतना पीट चुका था कि वह अधमरी हो गई। इस तरह की घटनाएँ बहुत दिनों से नहीं हुई थीं। कल एक अन्य दढ़ियल ने जुबेदा का सिर ही फोड़ दिया होता। मेरी समझ में शो-पीर यहाँ नहीं है, और मेरा ये लोग डर नहीं मानते, इसी लिए यह सब हो रहा है। उसके आते ही ये लोग ठीक हो जाएंगे !"

उसी रात मियानांग निवासियों ने, जो कि अब छतों पर सोने लगे थे, खूब ऊँचाई पर, पहाड़ों में आग की लपटें उठतीं देखीं।

निस्सो, मरियम और गुलरीज़ भीतर सो रही थीं। उन्हें इसका पता नहीं चला। लेकिन आधी रात के करीब नगाड़ों की आवाज़ ने उन्हें भी चौंका दिया। सबसे पहले निस्सो हड़बड़ा कर उठी। फिर उसने मरियम को जगाया। मरियम भी सकपका कर उठ बैठी और आवाज़ सुनने लगी।

"कारवाँ तो नहीं आ रहा है ?" निस्सो ने पूछा।

"नहीं," मरियम ने कहा, "कारवां के साथ घंटियों की आवाज़ तो हो सकती है, नगाड़ों की नहीं।"

आवाज़ का पता लगाने के लिए दोनों भाग कर बाहर आँगन में आ गईं। आवाज़ के साथ-साथ अब उन्होंने पहाड़ों में आग की लपटें भी देखीं। एक-दूसरे से काफी दूर तीन जगहों में आग जल रही थी।

"मुझे तो डर लगता है, मरियम ?" निस्सो ने फुसफुसा कर कहा, "जाने क्या होने वाला है ?"

नगाड़ों की आवाज़ ने रात की तारों-भरी शान्ति और निस्तब्धता को भंग कर दिया। समूचे गाँव में आतंक और घबराहट की एक लहर-सी दौड़ गई। लोगों की चीख-पुकार चट्टानों से टकरा कर वातावरण में गूंजने लगी।

"ए-इ-यो !" अंधेरे में से किसी के पुकारने की आवाज़ आई।

"निस्सो, मरियम, तुम कहां हो ?" गुलरीज़ ने बराण्डे में से चिल्ला कर कहा, "यहाँ आओ। मुझे हवा में खतरे की गंध दिखाई देती है।"

"हम यहाँ हैं !" मरियम ने जवाब दिया।

इसके बाद, निस्सो का मरियम ने हाथ पकड़ा और भाग कर दोनों अपने कमरे में चली गईं। काँपती हुई उंगलियों से मरियम ने अपनी बन्दूक में कारतूस भरे। फिर दोनों गुलरीज़ के पास पहुँची।

नीचे गाँव में आग की भारी लपटें उठ रही थीं और लोगों की काली छायाएं इधर-उधर भागती नज़र आ रही थीं।

सहसा वराण्डे के पास अँधेरे में कुछ सरसराहट-सी सुनाई दी। सहसा एक आदमी को तेजी से अपनी ओर आते हुए देख वे घबरा कर पीछे हट गई।

"डरो नहीं। मैं हूँ, केन्दितरी।"

"सुनो केन्दितरी," मरियम ने कहा, "यह क्या हो रहा है?"

"बसमाचियों ने धावा किया है!" केन्दितरी ने हांफते हुए कहा, "अज़ीज़खान भी आ धमका है। निस्सो, मैं तुम्हें सूचना देने के लिए आया हूँ। जैसे भी हो, कहीं छिप कर अपनी जान बचाओ!"

"यह छिपेगी कहाँ? यह तुम क्या कहते हो? तुम्हें मालूम कैसे हुआ?" गुलरीज़ ने भयभीत स्वर में पूछा।

"घबराओ नहीं," केन्दितरी बोला, "अभी वे काफी दूर हैं। हमारे पास समय है। खुदादाद को मैं सूचित कर चुका हूँ और वह लोगों को जमा कर रहा है। शीघ्र ही शो-पीर भी आता होगा। अगर वह इनके हाथ पड़ गया तो ये उसे मार डालेंगे। और निस्सो, अगर तुम यहाँ रही तो तुम्हारी भी जान की खैर नहीं है। मेरे पाँव में मोच आ गई है। मैं भाग-दौड़ नहीं कर सकता। शो-पीर को खबर करना जरूरी है। बख्तियार भी रास्ते में ही कहीं काम करता होगा। लेकिन निस्सो, तुम अपने छिपने का बन्दोबस्त करो। मैं जो जानता था, सब तुम्हें बता दिया। अब मैं चलता हूँ। मुझे गाँव पहुँचना है।"

एक ही साँस में यह सब कह केन्दितरी वराण्डे से नीचे उतर गया।

"एक मिनट ठहरो, केन्दितरी!" मरियम ने चिल्लाकर कहा। लेकिन केन्दितरी अँधेरे में विलीन हो चुका था।

यह समाचार सुन कर निस्सो को जैसे काठ मार गया। कुछ क्षण तक उसके मुँह से बोल न निकला, चुपचाप निस्तब्ध खड़ी रही।

"अब हम क्या करें, मरियम?" गुलरीज़ ने कहा, "चलो, भाग कर कहीं छिप जाएँ!"

"नहीं," निस्सो ने कहा, "तुम यहीं ठहरो। तुम्हें कुछ नहीं होगा। मैं अकेले ही जाऊँगी। शो-पीर को खबर करना जरूरी है। नहीं तो वे उसे मार डालेंगे।"

"ओह, मेरे कलेजे का टुकड़ा बख्तियार," हाथों को मरोड़ते हुए गुलरीज़ कराह उठी, "न जाने उसका क्या हश्र होगा ?"

निस्सो अब शान्त और स्थिर हो गई थी। बोली, "धीरज रखो, नाना ! रोने से काम नहीं चलेगा।"

मरियम बोली, "मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगी, निस्सो।"

"नहीं, तुम यहीं रहो। दर्रे के रास्ते जाने पर हम उनके हाथों में पड़ सकते हैं। और पहाड़ी चोटियों पर चढ़ना तुम्हारे या नाना के बश की बात नहीं। तुम दोनों यहीं रहो !"

मरियम ने निस्सो को कसकर अपने हृदय से चिपका लिया। उसकी बाँहों के बन्धन से अपने को छुड़ा कर निस्सो बराण्डे से नीचे कूद गई। और चोटियों की ओर तेज़ी से चल दी।

पहाड़ी ऊँचाइयों में कहीं से रह-रह कर बन्दूकों की आवाज़ आ रही थी और दर्रे की दीवारों से टकरा कर समूची घाटी में उनकी गूँज फैल रही थी।

निस्सो अभी चट्टानों के निकट पहुँच भी न पाई थी कि अँधेरे में से तीन आकृतियाँ उसकी ओर लपकीं। उसे चीखने तक का मौका नहीं मिला। उसके सिर पर एक बोरा डाल कर उन्होंने उसे दबोच लिया। इसी बीच दो आदमी और आ गए। निस्सो ने हाथ-पाँव पटके, लेकिन कुछ कर न सकी। देखते-न-देखते उन्होंने उसे काबू में कर लिया, और रस्सी से बाँध कर उसे वहीं निश्चल छोड़ दिया।

"शि-ह...!"

अँधेरे में केन्दितरी की फुसफुसाहट सुनाई दी। लुटेरों में से एक को सम्बोधित कर वह कह रहा था, "फिलहाल इसे कहीं छिपा दो। बाद में गुम्बद में पहुँचा देना। मैं अब नीचे, गाँव की ओर चलता हूँ।"

: २ :

नगाड़ों की स्थिर और भन्ना देने वाली आवाज़, खानों और उनके युद्धों के साथ जो सियातांग से विदा हो चुकी थी, बिना दम लिए एक ही गति से अनवरत आ रही थी। न वह निकट आती थी, न ही दूर होती मालूम होती थी।

धीरे-धीरे चाँद निकल आया। उसकी रोशनी में लोग गांव में इधर-से-उधर भागते दिखाई देने लगे। करीब तीस फकीर अपनी बीवियों और बच्चों के साथ खुदादाद के आँगन में जमा थे। हाथ हिला-हिला कर और चिल्लाकर वे एक-दूसरे को बता रहे थे कि अब क्या करें। स्त्रियाँ अपने बच्चों को चुप करने में जुटी थीं। खुदादाद घर-घर जाकर हथियार बटोर रहा था। लेकिन पुराने ढंग की चार जर्जर बन्दूकों और उनसे भी पुरानी, पीढ़ी-दर-पीढ़ी से चली आई एक दरजन कमानों के सिवा और कुछ नहीं मिला। कुदालियाँ, लोहे की छड़ें, लाठियाँ और लकड़ी के कुन्दे, यही उनके हथियार थे। पुराने निजाम के समर्थक गाँव के बड़े-बूढ़ों के पास आधी दर्जन बन्दूकें और थीं, नौरोज़बेग के पास तो बिना रुके मार करने वाली एक राइफल तक न थी, लेकिन खुदादाद और गाँव के अन्य कई लोग जब उनके पास गए तो घरों के कपाट बन्द मिले।

खुदादाद के आँगन में जमा लोगों में से भी अब आधे ही रह गए थे। जब और कुछ नहीं सूझा तो वे घबरा कर चरागाह की ओर चल दिये, रास्ता किले के पास से जाता था। एक-दूसरे को धकियाते वे उसी ओर बढ़ चले। बच्चे-कच्चों को गोद में लटकाए स्त्रियाँ भी उनके साथ घिसट रही थीं।

किले के पास से गुजरते-न-गुजरते ऊपर पहाड़ों में से गोलियों की वर्षा होने लगी। सकपका कर लोग पीछे हटे, मुड़ कर गाँव की ओर भागने लगे। पुरानी बन्दूकों से लैस तीन युवकों ने पथ के एक किनारे खड़े होकर निशाना साधा और गोलियों का जवाब गोलियों से देने लगे।

ख़ुदादाद भी उनमें शामिल होगया। तभी पत्थरों का एक अम्बार ज़ोरों की आवाज़ करता नीचे आ गिरा। ख़ुदादाद कुचल ही गया होता, लेकिन बच गया।

ख़ुदादाद ने मुड़कर देखा। चट्टान-पात ने पीछे हटने का रास्ता बन्द कर दिया था और वह ख़ुद तथा उसके तीन साथी उन लोगों से अलग हो गए थे जो आतंकित होकर गाँव की ओर भाग रहे थे। चरागाह की ओर बढ़ने के सिवा अब उनके लिए और कोई चारा नहीं था।

चट्टानों की ओट में दुश्मन की गोलियों से बचते हुए जब वे नहर के मुहाने पर पहुँचे तो गोलियों की आवाज़ शान्त हो चुकी थी। छिपकली की भाँति चट्टानों से चिपक कर रेंगते हुए वे दूसरी पहाड़ी पर पहुँच गए। ख़ुदादाद ने निश्चय किया कि रात चरागाह में बिताएंगे। इसके बाद, सवेरा होते ही, पहाड़ी की चोटी पर चढ़ कर खोज करने से ज़ारखोक दर्रे तक पहुँचने का कोई-न-कोई रास्ता निकल आएगा। यह दर्रा भी सियातांग दर्रे के समानान्तर फैला हुआ था। उसके सहारे वह महानदी तक पहुँच जाएगा। वहाँ कारवां से भेंट हो जाएगी और वह शो-पीर को समूची स्थिति की सूचना दे देगा।

गाँव अब गोलियों की आवाज़ों, घोड़ों की टापों और घायलों की चीखों से गूँज रहा था। बसमाची जहाँ भी लोगों को खड़ा देखते, उन पर घोड़े दौड़ा देते और हण्टरों की मार से चमड़ी उधेड़ते हुए उन्हें घरों के भीतर बन्द कर देते। शीघ्र ही समूचे गाँव में सन्नाटा छा गया।

बसमाचियों ने दुर्ग में अपना पड़ाव डाला।

गाँव के निवासियों में सबसे पहले नौरोजबेग ने दुर्ग में प्रवेश किया। आग जला कर बसमाची उसके चारों ओर बैठे थे और अपने हाथ गरमा रहे थे। भट्टियों पर देग चढ़े थे और दावत की तैयारी हो रही थी।

नौरोजबेग ने हाथ उठा कर और गरदन झुका कर बसमाचियों को

अभिनन्दन किया। लेकिन उसकी ओर किसी ने ध्यान नहीं दिया। आग के चारों ओर बैठे लोगों में वह अजीजखान की खोज करने लगा। अजीजखान उनमें नहीं था। फिर वह उस बुर्जी की ओर चला जिसमें बोबोकलां रहता था। बुर्जी के द्वार पर अपने घुटनों पर राइफल टेके दो बसमाची बैठे थे। उन्हें देखकर उसने बोबोकलां के पास जाने का भी साहस नहीं किया। पास ही एक पत्थर पड़ा था। वह उस पर बैठ गया और अधमुँदी आँखों से बसमाचियों की ओर देखने लगा।

: ३ :

पहाड़ों की चोटियों पर सूरज की पहली किरनों के पड़ते ही मानों दुर्ग के भी भाग्य जाग गए। अपने हाली-मवालियों के साथ आज अजीज़-खान सियातांग में प्रवेश करने वाला था और उसके स्वागत में दुर्ग नयी दुलहिन की भाँति सजा था। आँगन में कालीन और नुम्दे बिछे थे। पनचक्की और नयी नहर के बीच युरोपीय ढंग का एक बड़ा-सा तम्बू तना था। यह तम्बू फिरंगी ने अजीजखान को भेंट किया था। तम्बू पर हरे रंग का झंडा फहरा रहा था। और अगल-बगल ईरानी कालीन लटके थे। चारों कोनों में बाँस गड़े थे जिन्हें याक की दुमों और शोख रंग के रेशमी फीतों से सजाया गया था। तम्बू से लेकर दुर्ग की टूटी हुई दीवार तक जहाँ पहले कभी दुर्ग का फाटक था, कालीन बिछाकर रास्ता बनाया गया था।

तम्बू के प्रवेश-द्वार पर एक मोटा-ताजा और दाढ़ी वाला आदमी पाँव पसारे बैठा था। वह लाल-नीली पट्टियों का ढीला-ढाला चोगा पहने था। कमर में एक चौड़ी पेटी कसी थी, जिस पर चाँदी का काम चमक रहा था।

यह रिसालदार था। दुर्ग की सजावट और अजीज़खान के स्वागत की देखभाल का सारा काम उसी के जिम्मे था। घुटने फैलाए, गुनगुने और रूखे स्वर में, वह लोगों को आदेश दे रहा था।

तम्बू के भीतर, तकियों का सहारे लगाए, गम्भीर मुद्रा में बोबोकलाँ

बैठा था। वह जैसे अपने ही विचारों में खोया था और चारों ओर क्या हो रहा है, इसका उसे कुछ पता नहीं था।

कल रात अंधेरे में केन्दितरी उसके पास आया था। शान्त और निश्चय स्वर में बोला : "कुशल इसी में है कि अब तुम खान बन जाओ और यखबार के शासक का, उसकी शान के मुताबिक, स्वागत करो। नहीं तो नतीजा बुरा होगा। अज़ीज़खान सियातांग के सभी निवासियों को बन्दी बना कर महानदी के उस पार ले जाएगा, उनकी स्त्रियों और लड़कियों को बसमाचियों में बाँट देगा।"

बोबोकलां रात-भर सोच और इबादत में डूबा रहा। अंत में, सूरज की पहली किरनों के साथ, उसने केन्दितरी को अपने निश्चय से सूचित किया : "अच्छी बात है, तुम जो कहते हो, वही होगा।"

केन्दितरी ने सुना और मु: कर सतोष प्रकट किया। उसकी वेश-भूषा में अभी भी कोई अन्तर नहीं पड़ा था। पहले की भाँति अब भी वह चिथड़ों में ही लिपटा था और तम्बू के पास एक कोने में उसने अपना टाट बिछा लिया था।

बीस बसमाचियों का एक दल सुबह से ही गाँव का चक्कर लगाने निकल गया था। नौरोज़बेग उनकी अगुआई कर रहा था। काले रंग के बढ़िया घोड़े पर वह सवार था। अपने दल के सभी लोगों के घर वह बसमाचियों को ले गया और उन्हें बताया कि अज़ीज़खान का स्वागत करने के लिए उन्हें क्या-क्या करना होगा। इसके बाद फकीरों की, गाँव के गरीब लोगों की, खबर ली गई। कोड़े मार कर उन्हें घरों से बाहर निकाला गया। स्त्रियों को आदेश दिया गया कि वे अपने साथ तम्बूरे लेकर चलें, पुरुषों को हुक्म हुआ कि वे अपनी बाँसुरियों और बीनों को संभालें।

घोड़सवारों ने उन्हें चारों ओर से घेर लिया और खदेड़ते हुए मिरज़ाहूर की दुकान के सामने बंजर मैदान में ले गये। कुछ के चेहरों पर चोट के नीले निशान थे, कुछ के चेहरों पर लाल धारियाँ चमक रही

थीं। बच्चे अपनी मांओं की टांगों से चिपके थे और पुरुषों ने मानो चुप्पी साध ली थी। एकाध बार उन्होंने फुसफुसाने का प्रयत्न किया भी, लेकिन कोड़ों की सनसनाहट ने उन्हें चुप कर दिया।

बिगुलों और तुरहियों की आवाज़ के साथ अज़ीज़खान ने सियातांग में प्रवेश किया। बन्दूकें दाग कर और नगाड़े बजाकर उन्हें सलामी दी गई। कोड़े सनसनाये और स्त्रियों ने तम्बूरे बजाने शुरू कर दिए।

अज़ीज़खान सफ़ेद घोड़े पर सवार था। जीन पर रुपहले काम की झूल पड़ी थी। खुद उसके कंधों पर हरे रंग का सुनहरी कामदार लबादा पड़ा था, जो नीचे तक लटक रहा था। लबादे के भीतर बुदबारा रेशम का एक और चोगा था। टांगें मखमली पायजामे से ढकी थीं और पाँव में लाल रंग के मुलायम जूते पहने था। जूते खूब ऊंची एड़ी के और आगे से नोकदार थे। सिर पर हरे रंग का एक छोटा-सा साफा था। यह भी सुनहरी कामदार था।

खास मौकों पर पहनने के लिए अज़ीज़खान ने कभी ये कपड़े बनवाए थे और मुद्दत से उसके ट्रंक में बंद पड़े थे। लेकिन विजय की इस घड़ी में किसका साहस था, जो अज़ीज़खान को याद दिलाता कि जवानी के दिनों में बनवाए गए ये कपड़े उसकी ढलती हुई उम्र का उपहास करते मालूम होते हैं।

लेकिन यह क्या? अज़ीज़खान के चेहरे पर पट्टी कैसी बंधी है? बाएँ कान से लेकर ठोड़ी तक घाव का निशान था। उसका मुँह सूजा हुआ था और अधमुंदी दाहिनी आँख में एक अजीब खिंचाव था।

अज़ीज़खान के बाएं बाज़ू एक भूरे घोड़े पर जिगर सवार था। उसके पीले विकृत चेहरे पर घृणा और क्रूरता की झलक थी। मसलिन की कमीज़ के ऊपर वह एक नीले रंग का बिन बांहों वाला कोट पहने था।

सियातांग के लिबास में दो आदमी उनके पीछे चल रहे थे। इन में से एक तो खलीफा था। वह पीर का प्रतिनिधि था, जो सियातांग से भाग

गया था। देखने में सुन्दर और हृष्ट-पुष्ट। छोटी-छोटी आँखें जिन में मक्कारी भरी थी। दूसरा आदमी दुबला-पतला और छड़ की भांति सीधा था; खूँखार आँखें, गर्व के साथ अपनी दाढ़ी को उठाए जो लाल रंगी हुई थी। यह सैयद सफरअली इज्जत बेग था, बोबोकलां का भतीजा। यह भी दो साल पहले सियातांग से भाग गया था।

इनके अलावा सियातांग से भागे हुए अन्य कई अमीर-उमरा थे: सैयद मुरसाल खुसरो, मीर हसन शाहजादा, मीर हकीम शकूर अल्लाह नज़र और सैयद फख्र अली।

सब से अन्त में गधों का एक कारवां था जिन पर भरपूर बोझ लदा था। करीब एक दरजन बसमाची युवक, हाथों में पुराने ढंग की बन्दूकें लिए, गधों के साथ थे।

किले के पास पहुँच कर अज़ीज़खान ने अपना घोड़ा रोक लिया और अर्थपूर्ण दृष्टि से तम्बू की ओर देखा जो खूब सजा हुआ था। रिसालदार ने अजीजखान के चेहरे पर चोट के निशान देखे और आहत हो उठा। फिर उसने तम्बू का परदा उठाया और बोबोकलां बाहर निकल आया।

बाहर आकर बोबोकलां उसी जगह रुक गया। अपने बदन को उसने सीधा किया और निस्तब्ध भाव से, कठोर मुद्रा में, अज़ीज़खान की ओर देखने लगा। वह अपनी जगह से डिगा तक नहीं। जहाँ था, वहीं खड़ा रहा।

एक क्षण के लिए ऐसा मालूम हुआ मानो दोनों में टक्कर होने वाली है।

तभी अज़ीज़खान धीरे-धीरे अपने घोड़े पर से उतरा, और चोट खाए होठों पर मुसकराहट लाने का प्रयत्न करते हुए आगे बढ़ा। अपने दोनों हाथों को वह सीने पर रखे था।

बोबोकलां ने भी, उसी प्रकार सीने पर दोनों हाथ रख कर, आगे बढ़ना शुरू किया। बोबोकलां की आँखें आधी मुँदी थीं।

अधबीच में दोनों एक-दूसरे से मिले।

"अल्लाह की बरकत," चोट के दर्द पर काबू पाने का प्रयत्न करते हुए अजीज़खान बुदबुदाया, "मेरे अच्छे मित्र बोबो, तुम्हें देख कर मेरी आँख खुश हुई।"

"अल्लाह हम पर मेहरबान है, अजीज़ !"

दोनों ने अपने दाहिने हाथ आगे की ओर फैला दिए और एक-दूसरे की उंगलियों को चूमा। इसके बाद, पीछे हट कर, मानो मुग्ध-भाव से एक-दूसरे को देखते रहे। फिर दोनों गले मिले और एक-दूसरे का बोसा भी लेते अगर अजीज़खान के चेहरे पर बंधी पट्टी बाधक न होती।

इसी समय अज़ीजखान की केन्दितरी पर नज़र पड़ी, जो एक कोने में टाट पर हजामत का सामान बिछाए बैठा था। अज़ीज़खान ने उसे तम्बू के भीतर आने का इशारा किया।

तम्बू के भीतर पाँव रखते ही केन्दितरी ने धीमे स्वर में पूछा, "यह आपके चेहरे को क्या हुआ, मेरे प्रिय खान ? रास्ते में आपका घोड़ा तो कहीं ठोकर नहीं खा गया ?"

"नहीं। ऐसे ही चोट आ गई," अज़ीज़खान ने अनमने भाव से कहा और तकिए के सहारे बैठते हुए बोला, "मेरी दाढ़ी खून से एक दम तर है। इसे साफ कर दो।"

केन्दितरी ने पट्टी खोल डाली और कगारेदार घाव तथा चोट के नीले निशान देखते हुए बोला, "क्या आपके दांतों को भी चोट पहुँची है ?"

"हाँ, तीन दाँत एकदम उखड़ गए !"

"यह बहुत बुरा हुआ।" केन्दितरी ने कहा और फिर तम्बू का परदा उठा कर धीमे से बोला, "आलीजाह के लिए साफ पानी और एक रेशमी पगड़ी भेजो।"

जिगर भाग कर पानी ले आया और अपने सिर पर जो साफा वह बांधे था, उसे उतार कर उसने केन्दितरी को दे दिया। फिर वह बाहर चला गया।

केन्दितरी ने घाव को धोकर साफ किया और साफा फाड़ कर नई पट्टियाँ बाँध दीं।

अज़ीज़खान ने पूछा, "क्या वह यहीं है ?"

"बुर्जी में है। सुरक्षित और अच्छी तरह।"

"शुक्रिया। और सब तो ठीक है ?"

"हाँ, सब ठीक है। लेकिन मेरे प्रिय खान, अब आप आराम करें। तीन दिन तक किसी से बोलें नहीं। खाने के लिए भी केवल तरल पदार्थ लें।"

अज़ीज़खान उठ कर तम्बू से बाहर आ गया। केन्दितरी भी अपने टाट पर आ बैठा।

बाहर दावत और जशन की तैयारियाँ पूरी हो चुकी थीं। रिसालदार आदेश दे रहा था और लोग दस्तरखान सजा रहे थे।

जिगर ने अज़ीज़खान को सफेद रंग का एक चोगा ला कर दिया, जिस पर सुनहरी बेल-बूटों का काम था। खान ने उठ कर बोबोकलां के कंधों का स्पर्श किया। फिर दर्द से भरे स्वर में बोला :

"मेरे प्रिय मित्र और सहधर्मी बोबो इस्माइल कलन्दर कलाँ, सियाताँग के नये खान, मेरी इस तुच्छ भेंट को स्वीकार करने की कृपा करो। यह उस श्रद्धा और सम्मान की सूचक है जो कि आपके प्रति हम सब के हृदयों में घर किए है, बुद्धिमान और सर्वगुण सम्पन्न बोबोकलां !"

बोबोकलां ने खड़े होकर एक बार फिर अज़ीज़खान को अपने हृदय से लगाया और अज़ीज़खान ने अपनी भेंट को उसके कंधों पर डाल दिया। फिर उसने झुक कर सभी अतिथियों का अभिवादन स्वीकार किया। जवाब में उसने एक शब्द नहीं कहा, मुँह के पास हाथ लेजाकर कुछ शब्द फुसफुसाए, जो शायद केवल अज़ीज़खान के लिए थे।

इसके बाद सब कालीनों पर बैठ गए और दावत तथा खाने-पीने का दौर शुरू हो गया।

: ४ :

"मरियम को निस्सो की गिरफ्तारी के बारे में कुछ पता नहीं था। वह नहीं जानती थी कि बसमाचियों ने उसे पकड़ कर किले की बुर्जी में बंद कर दिया है। शो-पीर को खबर देने के लिए निस्सो को विदा करने के बाद वह शो-पीर के कमरे मे गई, मेज की दराज खोल कर उसमें से ग्राम-सोवियत के कागज़ निकाले और फिर गुलरीज़ के साथ गाँव की ओर चल दी। वह समझती थी कि वहाँ खुदादाद और दूसरे लोग मिल जाएंगे। लेकिन किले की ओर से गोलियों के चलने और लोगों के चीखने-चिल्लाने की आवाज सुन कर उसने अन्दाज लगाया कि लोग गाँव छोड़ कर चरागाह की ओर चल दिए हैं। गुलरीज़ ने मरियम को भी जान बचा कर भागने की सलाह दी।

"मेरा क्या है ? मैं तो बुढ़िया हूँ, मुझे कोई हाथ नहीं लगाएगा। अगर उन्होंने मेरे घर धावा किया तो उन्हे यहाँ कोई नही मिलेगा, न निस्सो, न अन्य कोई। झख मार कर चले जाएंगे। लेकिन तुम पहाड़ों में जाकर गायब हो जाओ। चट्टानों के पीछे लुकती-छिपती, सब की नज़रें बचाती, जितना भी हो सके उतनी दूर निकल जाओ।"

जोश मे आकर मरियम ने गुलरीज़ की बात नहीं मानी। बोली, "मैं तुम्हें अकेला कैसे छोड़ सकती हूँ। फिर कमरे में अनाज भी तो भरा है। मेरे पास बन्दूक है। बसमाची आएंगे तो उनका अच्छी तरह स्वागत करूँगी।"

मरियम जहाँ से आई थी, कुछ साल पहले वहाँ भी बसमाचियों के धावे होते थे। लेकिन उन धावों मे और इस धावे में अन्तर था। तब वे बाज की भाँति रात को झपट्टा मारते थे और पौ फटते ही गायब हो जाते थे। वे जानते थे कि लाल सेना उन्हें नहीं बख्शेगी। लेकिन यहाँ उन्हें कोई डर नहीं था।

गुलरीज़ को घर में छोड़ मरियम नए कमरे में आ गई और अनाज के बोरों को दरवाज़े तथा खिड़की से सटा कर रखने लगी। तभी

बगीचे में घोड़ों की टापों की आवाज़ सुनाई दी। मरियम लपक कर बोरों के पीछे छिप गई।

ये बसमाची थे। घर के पास आकर चिल्लाए, "अपनी जान की खैर चाहते हो तो घर में से सब बाहर निकल आओ!"

वे अपनी बन्दूकें ताने हुए थे।

गुलरीज़ घर से बाहर निकल आई। चिल्ला कर बोली, "मुझ बुढ़िया के सिवा घर में और कोई नहीं है।"

इसके बाद ही मरियम ने गालियों की, मारने-पीटने और गुलरीज़ के मुँह से एक तेज़ चीख निकलने, की आवाज़ सुनी। दरवाज़े के चरचराने और टूट कर गिरने की आवाज़ भी आई।

मरियम ने निशाना साधा और बिना किसी दुविधा के गोली दाग दी। एक बसमाची, जो घोड़े पर सवार था, चीख मार कर नीचे आ गिरा।

गोली की आवाज ने बसमाचियों को चौंका दिया। एक जगह खड़े न रह कर अब वे चारों ओर फैल गए और उस कमरे को घेर लिया जिसमें मरियम दम साधे पड़ी थी।

दरवाजे और खिड़की में लगे बोरों के बीच अपनी बन्दूकें धंसा कर उन्होंने गोलियां छोड़ी। मरियम के सिर पर कुछ मिट्टी आ गिरी। तभी, एक बोरे के ऊपर, किसी का हाथ दिखाई दिया। मरियम ने फिर गोली दाग़ी। चीख और गालियों की बौछार के साथ आदमी लुढ़क कर उलटा जा गिरा। इसके तुरन्त बाद ही एक साथ इतनी बन्दूकें दगीं कि मरियम के कान सुन्न हो गए। कुछ गोलियाँ बोरों में जाकर धंस गईं, कुछ सनसनाती हुई ऊपर से निकल गईं।

मरियम ने गोली का जवाब गोली से दिया, और उस समय तक देती रही जब तक उसके कारतूस चुक नहीं गए।

तभी एक बसमाची चुपचाप छत पर चढ़ा, रेंगता हुआ धूमालय के पास आया और एक बोरे के ऊपर से खिसक कर उसने मरियम को

दबोच लिया। चिल्ला कर बोला, "अब गोली चलाना बन्द करो। मैंने इसे पकड़ लिया है। यहाँ और कोई नहीं है!"

उन्होंने समझा कि यह निस्सो है, अज़ीज़खान की चहेती। नहीं तो वे मरियम का वे वहीं काम तमाम कर देते। इनाम की खुशी में उन्होंने मरियम की मुश्कें कसीं और उसे लाद कर ले चले।

मरियम आसानी से कब्जे में नहीं आई। जब तक होश रहा, बराबर हाथ-पांव पटकती और उन्हें नोंचती-खरोंचती रही। अन्त में बसमाचियों ने कोड़ों की मार से उसे बेसुध कर दिया।

मरियम को जब कुछ होश आया तो वह बोबोकलां की बुर्जी में बंद थी। उसके हाथ-पांव बंधे थे और सारा बदन बुरी तरह दुख रहा था। वह कराह उठी। सहसा उसे ऐसा मालूम हुआ मानो उसका नाम लेकर धीमी आवाज़ में उसे कोई पुकार रहा हो।

"मरियम...मरियम... !"

यह निस्सो की आवाज़ थी।

आखिर मरियम ने आवाज़ पहचानी। बोली, "मैं यहाँ हूँ, निस्सो!"

इसके बाद बड़ी मुश्किल से करवट के बल लुढ़क कर निस्सो मरियम के पास पहुँची। दांतों से कुतर कर दोनों ने एक दूसरे के हाथों की रस्सी काटी।

निस्सो ने मरियम के चेहरे पर हाथ फेरा, फिर उसका बदन टटोल कर देखा। बोली, "मालूम होता है, बदन पर खूब कोड़े पड़े हैं। खाल उपड़ी हुई है।"

"मुझे याद नहीं। मैं तो बेसुध हो गई थी...लेकिन सुनो, नगाड़ों की आवाज़ अब एकदम पास आ गई है? अगर वे यहां आ गये तो क्या होगा?"

"शायद वे हमें जीता नहीं छोड़ेंगे। क्यों, तुम्हारा क्या ख्याल है?"

"मुझे तो वे ज़रूर मार डालेंगे। मैंने उन पर गोली चलाई थी...

और तुम्हे...तुम्हे शायद अजीजखान अपने घर मे डाल लेगा...क्या तुमने उसे देखा है ?"

"नही। मुझे मरना मजूर है। लेकिन अजीज़खान के साथ कभी नही जाऊंगी !"

"जान लेने से पहले अगर उन्होने हमे तकलीफे दी तो...?"

निस्सो कुछ नही बोली और चुपचाप मरियम के पाव की रस्सी खोलने का प्रयत्न करती रही। इसके बाद उसने अपने पावो को बन्धन मुक्त किया। मरियम ने बैठने की कोशिश की, लेकिन बैठ नही सकी, कराह कर रह गई।

निस्सो ने कहा, "देख लेना, मै जीते जी उन्हे अपना बदन नही छूने दूंगी।"

"सो कैसे ?"

"मै बताती हूँ, हम दोनो एक-दूसरे को मार डालें। जब वे यहाँ आएगे तो हमारी लाश के सिवा उन्हे और कुछ नही मिलेगा। मै मरने से नही डरती।"

"न ही मै डरती हूँ।"

"लेकिन पहले यहाँ से भाग निकलने की कोशिश करना क्या अच्छा न होगा ?"

मरियम ने कोई जवाब नही दिया। वह जानती थी कि भागना तो दर किनार, उसके लिए उठ कर बैठना भी मुश्किल है।

कुछ देर बाद बोली, "अच्छी बात है। दरवाजे का पता लगाओ, किधर है।"

निस्सो ने रेंग कर पत्थर की ऊबड-खाबड दीवारो को टटोलना शुरू किया। गोल कमरा था। आखिर दरवाजे पर उसका हाथ पड़ा। बाहर आदमियो की आवाज सुनाई दे रही थी। निस्सो ने कान लगा कर सुना, और फिर मरियम के पास लौट आई।

"नही मरियम, यहाँ से भाग निकलना मुश्किल है। और हम दोनों

एक दूसरे को मारेंगी भी कैसे......नहीं, मरियम, मैं तुम्हें नहीं मार सकती। मुझसे यह नहीं होगा। क्या तुम मुझे मार सकती हो?"

मरियम ने कुछ जवाब नहीं दिया। कुछ देर तक दोनों चुप रहीं।

"मरियम, मैं तुमसे एक बात कहना चाहती हूँ। अपने हृदय की बात। मैं शो-पीर को प्यार करती हूँ। पता नहीं, उसका क्या हाल होगा? क्या ये उसे भी मार डालेंगे?"

"कौन जाने, निस्सो! हो सकता है, वह उनके चंगुल से निकल भागे!"

"यही तो। वह इतना मज़बूत है कि कई को ठिकाने लगा देगा। मैं उसे प्यार करती हूँ।"

"मैं जानती हूँ, निस्सो! इतना तो मैंने पहले ही भाँप लिया था। लेकिन क्या वह भी तुमसे प्यार करता है?"

"वह...हाँ, वह भी प्यार करता है। खुद उसने मुझ बताया था। तुम्हें तो याद होगा न, उस रात जब वह गया था और मैं चुपचाप उसकी खोज में निकल पड़ी थी। तब, एक खोह में......"

इसके बाद फिर दोनों चुप हो गईं।

अन्त में निस्सो बोली, "लेकिन अब...मुझे तो डर लगता है, मरियम, क्या जीवन इतनी जल्दी खत्म हो जायगा?"

"मालूम तो ऐसा ही होता है," मरियम ने कहा, "अगर मैं मर गई और तुम ज़िन्दा रहीं...कौन जाने, तुम बच ही जाओ।"

"नहीं, मैं ज़िन्दा नहीं रहूँगी।"

"मेरा मतलब यह है कि अगर ऐसा हुआ तो...तो तुम मुझे कभी नहीं भूलना!"

"नहीं मरियम, तुम्हें मैं कभी नहीं भूल सकती।"

"और मेरे लिए एक काम और करना। देखो, भूलना नहीं। युरा-तेपे नाम का एक शहर है। वहाँ जाना और युवक-युवतियों के कोमसोमोल संगठन की ज़िला-कमेटी का पता लगाना। वहाँ एक आदमी

है। काले बाल और काली आंखों वाला। उसका नाम है मोहम्मद जहां-नोव इस्मत। उससे मेरे मरने का हाल कहना और..."

मरियम की आवाज़ अब एकदम धीमी हो गई। फुसफुसा कर बोली, "और कहना कि मैं अन्त तक उससे प्यार करती रही। बोलो, मेरे लिए इतना करोगी न ?"

"तुम तो इस तरह पूछ रही हो मरियम, मानो वे मुझे जीता छोड़ देंगे। लेकिन मैं जानती हूँ, वे मुझे भी मार डालेंगे !"

"कौन जाने, निस्सो ! सम्भव है, तुम्हें न मारें। अगर ऐसा हुआ तो तब मेरा यह काम कर दोगी न ?"

"अच्छी बात है, कर दूंगी। लेकिन यह तो बाद की बात है। इस समय हम क्या करें ? क्या तुम उठ नहीं सकतीं ? क्या बदन अभी भी दर्द करता है ?"

"हाँ," मरियम ने कहा, "मेरा सिर, छाती और पेट, बदन का एक-एक जोड़ दर्द करता है।"

"कमीने कुत्ते ! अगर अज़ीज़खान मेरे हाथ पड़ जाए तो अकेली ही उसकी जान निकाल लूं ! लेकिन सुनो, अगर हम एकाएक दरवाज़ा खोल कर यहाँ से भाग निकलें तो कैसा हो ? यही न कि मारे जाएंगे ? लेकिन मरना तो हर हालत में है। इस तरह मरना ज्यादा अच्छा होगा। क्यों, ठीक है न ?"

"हाँ, इस तरह मरना ठीक है। इधर आओ, मेरा मुंह चूम कर ज़रा मुझे सहारा दो। मैं खड़े होने का प्रयत्न करूंगी।"

निस्सो ने मरियम को गले से लगा लिया, उसके होठों को चूमा। फिर बोली, "अच्छा तो मैं सहारा देती हूँ, खड़े होने का प्रयत्न करो।"

निस्सो ने जैसे-तैसे मरियम को खड़ा किया। एक बार फिर उसे गले लगाया और पहले खुद दरवाज़े की ओर लपकी। एक धक्के के साथ दरवाज़ा खुला और निस्सो बाहर हो गई। मरियम, निस्सो का सहारा छूटते ही, फिर फर्श पर गिर पड़ी।

निस्सो के बाहर निकलते ही बसमाचियों में मारो-पकड़ो का शोर मच गया। वे निस्सो के पीछे लपके और अन्त में उसे दबोच कर उन्होंने उसके हाथ-पांव बांधे, खींचते हुए बुर्जी तक लाए और फिर भीतर बन्द कर दिया।

: ५ :

दावत और खान-पान का सिलसिला अगले दिन दोपहर तक चलता रहा। अज़ीज़खान ने घाटी के छोर पर स्थित चौकियों तक कई बार अपने हरकारे दौड़ाए और हर बार लौट कर उन्होंने बताया कि सब कुछ शान्त है, कहीं कोई गड़बड़ नहीं है।

कारवाँ की स्थिति के समाचार भी मुँह-दर-मुँह मिलते रहे। कारवाँ अब सियातांग नदी के मुहाने के निकट पहुँच गया था। दोपहर तक वह दर्रे में दाखिल हो जाएगा। रात को उस छोटे से पहाड़ पर पड़ाव डालेगा, जहाँ एक पहाड़ी धारा सियातांग नदी से मिलती थी। और अगली सुबह, दिन चढ़े, गाँव पहुँच जाएगा।

कारवाँ में सामान लदे तीस घोड़े और इकतीस गधे थे। शो-पीर के अलावा कारवां के साथ दो नए रूसी और आ रहे थे। उन में से एक दुबला-पतला था और दूसरा मोटा ताजा था जो रह-रह कर अपनी सवारी बदलता था। कभी घोड़े से उतर कर गधे पर सवार होता था और कभी गधे से उतर कर घोड़े पर। दोनों राइफलों से लैस थे। शेष नौ आदमी जो कारवाँ को हाँकने वाले थे, निहत्थे थे।

यह सब सुन कर अजीजखान ने रिसालदार को आदेश दिया कि अँधेरा होते ही अपने आदमियों को पहाड़ों में छिपा दे।

दावत और खान-पान समाप्त हुआ। अज़ीज़खान ने आदेश दिया कि अब सब आराम करें। थकान उतरने और ताज़ा दम होने पर दिमाग भी सही रहता है और शरीर भी।

अज़ीज़खान की आँखें सूज कर कुप्पा हो गई थीं। पट्टी के एक छोर से उसने उसे ढक लिया। जब सब सो गए तो वह तम्बू से बाहर

निकला और अहाते को पार कर बुर्जी के पास पहुँचा। बसमाची उछल कर अदब से एक ओर हट गए और अज़ीज़खान ने भीतर प्रवेश किया।

मरियम और निस्सो फर्श पर पड़ी थीं। उनके हाथ-पाँव बंधे थे। निस्सो के कपड़े जहाँ-तहाँ से फट गए थे और उसकी छाती, बगल और कूल्हे का एक हिस्सा दिखाई दे रहा था। सहसा रस्सियों के नीले निशानों पर अज़ीज़खान की नज़र गई। पहरेदार की ओर वह मुड़ा और धीमे स्वर में बोला, "इसकी रस्सियाँ खोल दो और, पानी तथा कुछ पुलाव ले आओ।"

पहरेदार अदब से झुका और भाग कर रिसालदार के पास गया। अज़ीज़खान भी बाहर निकल आया। मरियम की ओर उसने एक बार भी मुड़ कर नहीं देखा। निस्सो के बारे में भी अभी उसने कुछ तय नहीं किया था। सब से सीधा और अच्छा तरीक़ा तो यही था कि यंत्रणाएं देने के बाद उसे खत्म कर देता। इस बीच जी भर कर वह उसका रस भी लेता। अगर वह सब के सामने खुले आम अपने किए पर पछताती और रहम के लिए गिड़गिड़ाती तो वह उसे बख्श देता और शायद अपने साथ वापिस भी ले जाता। लेकिन घर लौटने पर वह एक गढ़ा खोदवाता और रोशनी के लिए एक छेद छोड़ कर वह उसे पटवा देता। बस, उम्र-भर वह इसी गढ़े में पड़ी रहती, अपने भाग्य को रोती और झींकती, छुटकारे या मौत के लिए तड़फड़ाती।

लेकिन यह तो बाद की बात है। पहले सब लोगों के सामने उसे पेश किया जाएगा। मौत उसके सिर पर मँडराती होगी और तब, सब के सामने पछताने और गिड़गिड़ाने पर, वह उसकी जान बख्शेगा।

अज़ीज़खान अपने तम्बू में लौट आया। अन्य सब लोग सो रहे थे। उसने भी सोने की कोशिश की। लेकिन नींद नहीं आई। करीब दो घंटे करवटें बदलने और सूजी हुई आँख को बार-बार सहलाने के बाद उसने कोहनी मार कर जिगर को जगाया। बोला, "रिसालदार से कहो कि सब लोगों को यहाँ हाज़िर करे। हमें इसी वक्त कुछ फैसले करने हैं।"

: ६ :

किले में, तम्बू के बाहर, दरबार लगा था और सियातांग के निवासियों को पहली बार, अज़ीज़खान और उसके सैनिकों के सामने, मुँह-दर-मुँह, पेश होना था।

अज़ीज़खान तकियों के सहारे टाँग-पर-टांग रखे बैठा था। उसके बाईं ओर जिगर था और दाहिनी ओर बीबोकलां, जो खान का भेंट किया हुआ कामदार चोगा पहने था। यखबार के अन्य अमीर-उमरा और उनके साथ यखबार से वापिस लौटे सियातांग के सैयद और मीर अर्द्धवृत्ताकर में खान के इधर-उधर कालीन पर बैठे थे। उनके पीछे और अर्द्धवृत्त के दोनों छोरों पर रिसालदार के हथियार-बंद सैनिक खड़े थे।

सियातांग के गरीब निवासी खान के सामने किले की दीवार से सटे हुए खड़े थे। केवल बच्चों और उन लोगों को छोड़ कर जो मार के कारण चलने-फिरने योग्य नहीं रहे थे, बसमाची अन्य सभी को यहाँ खदेड़ लाए थे।

दस हथियार बंद पहरेदार किले की निगरानी पर नियुक्त थे। वे किले की दीवार के पास इधर-से-उधर गश्त लगा रहे थे और उनकी आंखें दर्रे के निवासियों पर जमी थीं।

बाकी अहाता खाली था। केवल बीचों-बीच एक बड़ा सा चौकोर कालीन और बिछा था जिस पर खलीफा, मिरज़ाहूर, नौरोज़बेग और रिसालदार बैठे थे। उनके सामने खाकी कागज़ के खरीते पड़े थे।

ज़ुबेदा, मछली का कांटा और गुलरीज़ भी फ़कीरों में मौजूद थीं। गुलरीज़ के सिर पर सफेद पट्टी बंधी थी और उसकी धंसी हुई आंखों के नीचे चोट के निशान दिखाई दे रहे थे।

अहाते के पीछे, नहर के किनारे, बसमाचियों के ज़ीन-खुले घोड़े बंधे थे। साईस उन्हें चारा डाल रहे थे। यह वही चारा था जिसे दर्रे के निवासियों ने जाड़ों-भर बचा कर रखा था और जिसे बसमाची आज सुबह ही अंधेरे मुँह उनके घरों से उठा लाए थे। पन-चक्की के पास

मुँहबंद बोरे रखे थे जिसे बसमाचियों ने खान का भण्डारघर बना दिया था। पन-चक्की के अगले हिस्से में भेड़ों की खून में सनी खालें, खुर और आंतें पड़ी थीं। गाँव के घरों में अब एक भी भेड़ या उसका मेमना बाकी नहीं बचा था। देखते-देखते, एक ही दिन में, सभी कुछ गायब हो गया था।

गाँव के गरीब लोगों के घरों का ही नहीं, बोबोकलां के साथी-संगियों में से भी कितनों के घरों का सफाया हो गया था। बसमाचियों ने उन्हें भी नहीं बख्शा: अनाज, ढोर-डंगर, छोटे-मोटे औजार और भांडे-बरतन, जो भी उनके हाथ लगा सब उठा लाए।

बोबोकलां की वे इज्जत करते थे। वे जानते थे कि उसे सियातांग से प्रेम है, विदेशियों से नहीं। और इस समय वही बोबोकलां कामदार चोगा पहने अजीजखान के दाहिनी ओर बैठा था। आखिर वह चुप क्यों है, कुछ बोलता क्यों नहीं ?

ऐसा मालूम होता था मानो गाँव पर, समूची घाटी पर, काली छाया मंडरा रही हो। चारों ओर सन्नाटा छाया था जो प्रति क्षण गहरा होता जा रहा था।

आखिर क्या होने वाला है ? क्या करने के लिए अजीज़खान यहाँ आया है ?

सहसा दो बसमाची प्रकट हुए। वे अपने हाथों में दो रस्सियाँ लिए हुए थे। पतली और खूब मज़बूत। इन रस्सियों को लिए वे उस बुर्जी पर चढ़ गए जो पानी के ऊपर झुक आई थी। रस्सियों को उन्होंने नीचे लटकाया और ज़मीन से एक आदमी की ऊँचाई छोड़ उन्हें बाँध दिया।

रस्सियों के नीचे वाले सिरों में गोल फंदे पड़े हुए थे। दर्रे के निवासियों ने इन फंदों को देखा और उनके हृदय कांप गए।

अन्त में खलीफा बोलने के लिए खड़ा हुआ। सब की आँखें उसकी ओर घूम गईं। उसने कहना शुरू किया, "चार साल हो गए, लेकिन तुमने पीर का नज़राना नहीं दिया। चार साल से वह बराबर तुम लोगों

के लिए खुदा से दुआ कर रहा है, लेकिन तुम उसे एक दम भूल गए। क्या तुम नहीं जानते कि कानून के मुताबिक तुम्हें उसे अपनी पैदावार और मुनाफे का दसवां हिस्सा भेंट करना चाहिए। एक-दो नहीं, पूरे चार साल का हिसाब तुम्हें करना है। कुल मिला कर अपने माल-मते का आधा हिस्सा तुम्हें देना है। खुदा मेहरबान है। तुम आधा दोगे तो वह तुम्हें दुगना देगा। जिनके पास अनाज है, वे अनाज दें। जिनके पास अनाज नहीं है, वे ढोर-डंगर दें। ढोर-डंगर भी न हों तो कपड़े और खालें दें। लेकिन यह सब क्या मुझे बताने की ज़रूरत है? क्या तुम खुद नहीं जानते कि तुम्हारे पास क्या है, और क्या नहीं? आज साँझ से ही अपनी अदायगी शुरू कर दो। खुदा तुम्हें अपने साये में ले। बस, मुझे यही कहना था। अब मिरज़ाहूर की बात सुनो। वह भी तुम से कुछ कहना चाहता है।"

दर्रे के निवासी चुपचाप सुनते और मिरज़ाहूर की ओर देखते रहे। वह अपने हाथ में एक लम्बी सूची लिए था और एक-एक का नाम पढ़ कर सुना रहा था। किसी के नाम मुट्ठी-भर शहतूत लिखे थे, किसी के नाम रंग और किसी के नाम सुई। कोई भी चीज़ ऐसी नहीं थी जिसके लिए दर्रे के निवासी उसके कर्ज़दार न हों। और वे यह भी जानते थे कि सारी उम्र हाड़तोड़ मेहनत करने पर भी न तो वे खलीफा का कर्ज़ अदा कर सकते हैं, न मिरज़ाहूर का।

मिरज़ाहूर की सूची को उन्होंने सुन कर भी नहीं सुना। उनकी आँखों में उपेक्षा भी थी, और घृणा भी।

मिरज़ाहूर के बाद काज़ी नौरोज़बेग खड़ा हुआ और अपने बदन को सीधा करते हुए बोला, "सच्चा कानून कहता है कि कर्ज़ अदा न कर सकने पर कर्ज़दार अपने बीवी-बच्चों को बेचने के लिए बाध्य होंगे।"

दर्रे के निवासी अब चुप नहीं रह सके। चिल्ला कर बोले, "ऐसा कोई कानून नहीं है। हम ऐसे कानूनों को बहुत पहले ही दफना चुके हैं।"

स्त्रियों की भी ज़ुबान खुली, "चोर...लुटेरे !"

मछली का कांटा लपक कर अहाते के बीच पहुँची और मिरजाहूर की दाढ़ी में अपनी उँगलियाँ गड़ाते हुए बोली, "लो, मैं तुम्हारे सामने मौजूद हूँ। हिम्मत हो तो बेचो मुझे। बोलो, कितने दाम लगाते हो ?"

मिरज़ाहूर की दाढ़ी अब उसके हाथ में थी। रिसालदार का इशारा पाकर अगर कई बसमाची उस पर न टूट पड़े होते तो वह उसे जड़ से उखाड़ लेती।

बसमाचियों ने कोड़े मार कर मछली का कांटा को गिरा दिया और फिर उसे घसीटते हुए ले चले। दर्रे के कुछ निवासी उसे बचाने के लिए लपके, लेकिन बसमाचियों की तनी हुई बन्दूकों के सामने एक क्षण के लिए ठिठक कर खड़े हो गए।

तभी अज़ीज़खान की आवाज़ आई, "बन्दूकें नीचे करो !"

नौरोज़बेग गुस्से में उबल रहा था। मछली का कांटा की ओर इशारा करते हुए बोला, "इस कुतिया को देखो। इसने समूची घाटी को गंदा कर रखा है। इसके पति काराशिर को कौन नहीं जानता। वह कमीना कुत्ता..."

नौरोज़बेग अपना वाक्य पूरा भी नहीं कर पाया कि अज़ीज़खान ने उसे भी वापिस बुला लिया और रिसालदार के कानों में कुछ कहा। इसके तुरन्त बाद ही बीस हथियार बन्द बसमाचियों ने फकीरों को घेर लिया।

नौरोज़बेग अहाते के बीचोंबीच बिछे कालीन पर आकर खलीफा के पास बैठ गया और मिरज़ाहूर, जड़ से हिली अपनी दाढ़ी को सहलाते तथा लम्बी आह भरते हुए बोबोकलां की ओट में पसर गया।

अब बुर्जी का फाटक खुला और मरियम तथा निस्सो को बाहर लाया गया। उनके हाथ कमर के पीछे बँधे थे। दो बसमाची निस्सो की कोहनियाँ थामे थे और एक पीछे-पीछे चल रहा था। उसके हाथ में नोकदार बर्छी थी जिसे वह उसके कंधों में गड़ाए था। मरियम को भी

इसी प्रकार लाया जा रहा था। उनके चेहरे पीले पड़ गए थे और कपड़े फटे हुए थे। अँधेरे में बन्द रहने के बाद अब उनकी आँखें रोशनी की चौंध सहन नहीं कर पा रही थीं। मरियम अपने पाँवों को मुश्किल से उठा पाती थी, लेकिन निस्सो अपने सिर को पीछे की ओर फेंके गर्व से चल रही थी। उसके डग इतने सहज और हल्के थे मानो, सूजे हुए पांवों के बावजूद, अपनी इच्छा-शक्ति के सहारे वह चल रही हो। उसके वक्ष पर एक बिल्ला चमक रहा था, जिस पर लेनिन का चेहरा बना हुआ था।

अहाते में पूर्ण सन्नाटा छाया था। बसमाचियों ने लड़कियों को बीच में बिछे कालीन के पास लाकर खड़ा कर दिया। उनका मुँह खान की ओर था। खान का इशारा पा नौरोजबेग ने निस्सो की रस्सी खोलने का आदेश दिया। मरियम के घुटने टूट रहे थे, लेकिन तलवार की नोक उसकी ठोड़ी का स्पर्श कर रही थी और खड़े रहने के सिवा उसके सामने और कोई चारा नहीं था।

नौरोज़बेग ने खड़े होकर बोलना शुरू किया : "तुम्हारी आँखों के सामने ये दो स्त्रियाँ खड़ी हैं। इन्हें ध्यान से देखो। इनमें से एक का नाम है मरियम, दौलेतोव की बेटी। हम इसके बाप को नहीं जानते। लेकिन बुरा हो उस क्षण का जब इस शैतान का बीज उसने किसी छिनाल के गर्भ में डाला। यह कौन है? यह यहाँ क्यों आई? इसके गुनाह अनन्त हैं। इसकी बेशर्मी तो उसी दिन जाहिर हो गई थी जब मर्दों का लिबास पहने यह पहले-पहल यहाँ आई। इसके आने के बाद शो-पीर और बख्तियार ने मिरज़ाहूर का सारा माल-मत्ता लूट लिया और उसे घर से बेघर कर दिया। फिर इसने एक मदरसा खोला और हमारी स्त्रियों तथा बच्चों को गलत तालीम दी, उन्हें खुदा के बताए हुए रास्ते से भटकाया। कहाँ तक गिनाया जाए, इसके गुनाहों की फेह-रिस्त बहुत लम्बी है। आज रात ही इसने एक ऐसा जुर्म किया जिसे इन ऊँचे पहाड़ों की दुनियाँ में न कभी किसी ने देखा था, न सुना। इसने एक मुजाहिद को, धर्म के सैनिक को, अपनी बालिश्त-भर की बन्दूक

(रिवाल्वर) से मार डाला। वह देखो, लुत्फुल्लाह की लाश उधर पड़ी है। शैतान की इस औलाद ने एक और मुजाहिद पर भी गोली चलाई, लेकिन खुदा ने उस गोली का मुँह पलट दिया और वह बच गया। केवल हाथ में कुछ चोट आई। यहाँ आओ याकूब, अपना हाथ सब को दिखाओ।"

याकूब सामने आ गया। उसका हाथ खून से रंगे एक चिथड़े में लिपटा था। सबकी आँखें उसकी ओर घूम गईं।

"इधर आओ याकूब, इधर!" नौरोज़बेग ने चिल्लाकर कहा।

याकूब अब मरियम के सामने खड़ा था। और धुंधली-सी आँखों से उसकी ओर देख रहा था।

"यह चाकू लो, याकूब!" नौरोज़बेग ने नर्म आवाज़ में कहा, "तुम्हें इसकी जान लेने का मौका तो नहीं दिया जा सकता, लेकिन पहला वार तुम्हारा ही होगा। बस, खुदा का नाम लेकर इसकी आँखें निकाल डालो!"

फकीरों ने सुना और सब हक्के-बक्के-से रह गये। पहरेदार ने झोका खाकर गिरती हुई मरियम को संभाला और मुँह पर हाथ रख कर उसकी हृदयवेधी चीखो का गला घोट दिया। मरियम के पास पहुंचने के लिए निस्सो ने हाथ-पाँव पटके, लेकिन बसमाचियों ने उसे और भी ज़ोरों से जकड़ लिया।

याकूब ने, एक के बाद एक, मरियम की दोनों आँखों में चाकू घोंप दिया। खून की धारा उसके गालों, हाथों और कपड़ों को रंगती धरती पर गिरने लगी। हवा में गोलियों की आवाज़ ने सनसनाई और आगे बढ़ते हुए फकीर वहीं-के-वही रुक गए स्त्रियों की बेसाख्ता चीखों से समूची घाटी गूँज उठी।

खून में सने बसमाची मरियम को खींचते हुए बुर्जी के पास ले गए और उसके गले में रस्सी का फंदा डाल दिया। अहाते के बीच में खड़े नौरोज़बेग ने हाथ का इशारा किया और बुर्जी की छत पर चढ़े बसमा-

चियों ने रस्सी खींच ली।

मरियम का शरीर रस्सी में बल पड़ने और खुलने के साथ अल्टा-पल्टा खाने लगा।

अहाते में अब फिर सन्नाटा छागया था। दर्रे के निवासियों के चेहरों से पसीना छूट रहा था। निस्सो कालीन पर मुँह के बल पड़ी थी और उसका समूचा शरीर निःशब्द सुबकियों से बुरी तरह हिल रहा था।

अज़ीज़खान तकिये के सहारे चुपचाप बैठा था और बीबीकलां की आँखें ज़मीन पर गड़ी थीं। गुलरीज़ अपने दाँतों को हाथ में गड़ाए कराह रही थी।

और तभी, काफी देर बाद, नौरोज़बेग की आवाज़ फिर सुनाई दी। मानो वह अपने अस्तित्व की ओर सबका ध्यान खींचते हुए कह रहा हो, "मेरी ओर देखो, जिसे तुम भूल गए थे!"

"आखिर खुदा की मर्ज़ी पूरी होकर रही," नौरोज़बेग ने कहना शुरू किया, "उसके दरबार में देर हो सकती है, अँधेर नहीं। खुदा के सच्चे बन्दों के लिए यह खुशी का मौका है। मुजाहिदो, अब इस दूसरी औरत को यहाँ लाकर खड़ा करो जिसने अपने पति के साथ विश्वासघात किया, महान अज़ीज़खान की इज्जत पर बट्टा लगाया!"

निस्सो को उठा कर उन्होंने खड़ा किया। वहशियाना नज़र से उसने अपने चारों ओर देखा।

गुलरीज़ से अब नहीं रहा गया। एकाएक वह आगे बढ़ी और पलक-झपकते अज़ीज़खान के सामने जा गिरी, "इसे छोड़ दो। मेरी जान ले लो, लेकिन इसे..."

"यह क्या करती हो, नाना!" तभी निस्सो ने चीख कर कहा, "किस कुत्ते से तुम दया की भीख माँग रही हो! अपने को इतना नीचे न गिराओ, नाना! इस आखिरी वक्त में मेरे मुँह पर कालिख न पोतो...!"

सब की आँखें निस्सो के चेहरे पर जम गईं जो गुस्से से तमतमा

रहा था। वह अब सीधी सिर ऊँचा किए खड़ी थी। उसके तेवर की बसमाची भी ताब न ला सके और उन्होंने उसकी बाँहों को ढीला छोड़ दिया।

"उठो नाना,—या तुम यह चाहती हो कि मैं हमेशा के लिए तुमसे नाता तोड़ दूँ!" निस्सो ने पाँव पटकते हुए चिल्ला कर कहा।

गुलरीज़ अब धीरे-धीरे उठी और बाँहें फैलाए, मानो उस पर किसी ने जादू कर दिया हो, निस्सो के पास आकर उसने उसे गले से लगा लिया, उसका मुँह चूमा और फुसफुसा कर बोली, "तुम युग-युग जियो बेटी! भगवान चाहेगा तो तुम्हें कोई नहीं मार सकेगा!"

यह कह उसने दोनों हाथों से अपना मुँह ढका, और अपनी जगह पर लड़खडाती हुई लौट आई। ज़ुबेदा ने उसे संभाला और धीरे से ज़मीन पर बैठा दिया।

सभी बसमाची, और अजीज़खान भी, सन्नाटे में आकर देख रहे थे। निस्सो अब फकीरों की ओर, अपने गाँव के निवासियों की ओर, मुँह किए खड़ी थी, सीधी और उदास। चेहरे पर एक अद्भुत शान्ति थी। केन्दितरी, मानो सब कुछ भूल कर, मुग्ध-भाव से उसे देख रहा था। केवल नौरोज़बेग ही एक ऐसा था जो गुस्से से होंठ काट रहा था, और रह-रह कर अपनी दाढ़ी के बाल नोंच रहा था।

अगल-बगल खड़े बसमाचियों ने निस्सो की दोनों बाँहों को फिर कस कर जकड़ लिया।

"आप कुछ कहना चाहते हैं, अज़ीज़खान?" नौरोज़बेग ने पूछा। सन्नाटे में उसकी आवाज अजीब और अटपटी-सी मालूम होती थी।

अज़ीज़खान ने कहा, "उसे इधर आने दो।"

बसमाची ने निस्सो को कोहनिया कर धक्का दिया। निस्सो मुड़ी और निश्चल डगों से खान के सामने पहुँची और ठिठक कर उसकी एक आँख में आँखें डाल कर उसने देखा जो अनबंधी थी।

अज़ीज़खान ने अपने सूजे हुए होठों से पट्टी हटाई और बोला,

"क्या तुम जानती हो कि तुम्हारे लिए केवल मौत की सजा ही उपयुक्त है ?"

"होगी," निस्सो ने दृढ़ स्वर में कहा।

"वह दूसरा फन्दा देख रही हो न ? तुम्हें भी उसी तरह लटका दिया जाएगा।"

"लटका देना।"

"क्या तुम जीना चाहती हो ?"

निस्सो की भौंहों में बल पड़ गए। बोली, "मैं तुमसे घृणा करती हूँ।"

अज़ीज़खान ने मुँह बिचकाया, लेकिन अपने को काबू में रखा।

"स्त्री का प्रेम, उसकी घृणा की भाँति, चंचल और क्षण-स्थायी होता है। इन नेक लोगों की आँखों में देखो जो यहाँ जमा हैं। वे सब तुम्हें गुनहगार समझते हैं, और तुम्हारे गुनाह की सज़ा मौत है। अल्लाह का कानून भी यही कहता है। लेकिन तुम अपने आपे में नहीं थीं। तुम्हारी रूह को देवों ने अपने कब्जे में कर लिया था और सच्चे कानून के मुताबिक़, अपने किए पर पछता कर, देवों का असर खत्म किया जा सकता है। अगर तुम्हें यह मंजूर हो और अगर तुम भविष्य में फरमाबदार रहने का ऐलान करो तो मैं तुम्हारी जान बख्श सकता हूँ। मैं खुद पीर से कहूँगा कि तुम्हारे गुनाह की माफी के लिए वह अल्लाह से दुआ करे। घुटने के बल बैठो, और मदद की फरियाद करो।"

निस्सो चुपचाप खड़ी रही। उसके होंठ काँप रहे थे। अज़ीज़खान से रहम की फरियाद करना मौत से भी बदतर था। वह जानती थी कि जान बख्शी के बाद उसके साथ क्या गुज़रेगी।

"घुटनों के बल गिर कर फरियाद करो," अज़ीज़खान ने होंठों-ही-होंठों में फिर दोहराया, "मेरा रहम असीम है।"

निस्सो के बदन में खुशी की एक कंपकंपी-सी दौड़ गई। उसे लगा

कि वह नहीं, बल्कि खुद अज़ीज़खान उसके सामने खुले आम गिड़गिड़ा रहा था कि वह उससे माफी मांगे। एक बार, दो बार, और अब तीसरी बार भी वह उससे बिनती कराएगी !

"घुटनों के बल गिर कर फरियाद करो !" अज़ीज़खान ने तीसरी बार कहा।

निस्सो अभी भ चुपचाप थी। अज़ीज़खान की एक आंख गुस्से के मारे लाल होगई, भौंहों में गहरे बल दिखाई पड़ने लगे। उसने अनुभव किया कि एक साथ सैंकड़ों आँखें उस पर जमी हैं और उसकी नर्मी का मज़ाक उड़ा रही हैं।

इसी समय जिगर उठा। वह निस्सो की प्रत्येक हरकत पर अपनी नज़र गड़ाए था। उछल कर उसने निस्सो का हाथ पकड़ा, और इतने जोरों से उसे धक्का दिया कि वह अज़ीज़खान के पावों पर जा गिरी।

"सीधी तरह से घुटनों के बल गिरना तक नहीं जानती, कम्बख्त !"

निस्सो ने उठना चाहा, लेकिन अज़ीज़खान ने उसकी बाँह पकड़ ली और उसे उठने नहीं दिया, "जंगली बिल्ली अपने-आप पालतू नहीं बनती, उसे पालतू बनना सिखाया जाता है। अलग रहो, जिगर ! अब, यह खुद अपने गुनाहों के लिए पछताना चाहती है। लेकिन वह... क्या चीज़ है वह जो तुमने सीने पर लगा रखी है ?"

अज़ीज़खान ने उसका हाथ छोड़ दिया और लेनिन के बिल्ले की ओर हाथ बढ़ाया। निस्सो ने उसे अपने हाथ से ढक लिया। वह नहीं चाहती थी कि खान के नापाक हाथ लेनिन की तस्वीर का स्पर्श करें।

"उसे न छूना, हमारे खान !" नौरोज़बेग ने चिल्ला कर कहा, "वह कोमसोमोल का बिल्ला है, उसे न छूना !"

"ज़रा इधर आओ, मैं इसे देखना चाहता हूँ," अज़ीज़खान ने निस्सो का हाथ हटाते हुए कहा, "ओह, यह तो किसी मर्द की तस्वीर है, जिसे

तुमने हृदय से चिपका रखा है। इधर आओ, जिगर। होशियारी से इसे उतार लो और अपने पांव से इसे रौंद डालो! क्यों, क्या इसी तरह कोमसोमोल बना जाता है?"

निस्सो न-जाने अब तक कैसे अपने गुस्से को रोके हुए थी। अब बाज़ की भाँति झपट कर अज़ीज़खान की गिरिफ्त से उसने अपना हाथ छुड़ा लिया और बिल्ले को छीन कर उसकी पिन अज़ीज़खान के चेहरे में घोंप दी। अज़ीज़खान की आँख बाल-बाल बच गई।

"हाँ, मैं कोमसोमोल हूँ, और तुम...तुम...!"

एक साथ कई बसमाची निस्सो पर टूट पड़े और उसे घसीट कर अज़ीज़खान से दूर ले गए। अज़ीज़खान के मुँह से एक चीख तक नहीं निकली। उसका सारा बदन थर-थर काँप रहा था। अपने घायल गाल को वह एक हाथ से ढके था और होंठ के छोरों पर झाग उफन आए थे। एक बारगी हाथ उठा कर उसने रस्सी की ओर इशारा किया जो बुर्जी से लटक रही थी। नौरोज़बेग को जैसे मुँह माँगी मुराद मिल गई। उसने बसमाचियों की ओर इशारा किया और वे राइफल ताने, निस्सो को बुर्जी तक घसीटते हुए ले गए। वहाँ उन्होंने उसे अपने पाँवों पर खड़ा किया और उसके गले में फंदा डाल दिया।

सहसा केन्दितरी लपक कर बुर्जी के पास पहुँचा और बसमाचियों को धकेल कर उसने अलग कर दिया। फिर फन्दे को पकड़ कर उसने उस्तरे से काट डाला। निस्सो की गरदन बन्धन मुक्त हो गई।

"ठहरो! ठहरो!" केन्दितरी ने एक बसमाची से चिल्ला कर कहा, जो उस पर वार करने के लिए अपनी तलवार तौल रहा था, "खुद अज़ीज़खान जब तुम्हें आदेश दे, तब कुछ करना!"

बसमाची ने दुविधा में पड़ अपनी तलवार नीची करली।

"क्षणिक गुस्से के आवेश में आकर कुछ करना ठीक नहीं, बुद्धिमान और जग-प्रसिद्ध अज़ीज़खान! इस स्त्री को निश्चय ही मौत की सजा मिलनी चाहिए, लेकिन इस वक्त और इसी रूप में नहीं। इसके

गुनाह असाधारण है। समूचे राज्य में इसे घसीट कर घुमाना चाहिए; जिससे हर खास व आम को इसके मुँह पर थूकने का मौका मिले। आज इसे बुर्जी में बन्द रखो और अपने फैसले पर फिर से विचार करो। इस गरीब हज्जाम के शब्दों को बेअदबी समझ कर ठुकरा न देना, इन पर विचार करना !"

अज़ीज़खान अपने आदेश को रद्द होते देखने का आदी नहीं था। उसका शरीर अभी भी गुस्से से काँप रहा था, और उसका गुस्सा निस्सो को तुरत फाँसी पर लटकता हुआ देखना चाहता था। उसके लिए यह असह्य था कि कोई बीच में आकर टांग अड़ाए। लेकिन केन्दितरी का वह क्या करे ? यहाँ मौजूद लोगों में से केवल पांच ही ऐसे थे जो केन्दितरी के असली रूप से परिचित थे : बोबोकलां, मिरज़ाहूर, नौरोज़ बेग, खलीफा और रिसालदार, शेष सबके लिए वह एक फटे हाल हज्जाम था।

अज़ीज़खान जानता था कि वह सब कुछ कर सकता है, लेकिन इस फटेहाल हज्जाम की उपेक्षा नहीं कर सकता।

"ठीक है," अपने को संभालते हुए अज़ीज़खान ने कहा, "मैं इस हक़ीर हज्जाम के मुँह से निकले शब्दों की सचाई तस्लीम करता हूँ। हर खान का फर्ज है कि वह सच की कद्र करे। इस औरत का गुनाह इतना बड़ा है कि इसके मुँह पर अकेले मेरा थूकना ही काफी नहीं है, मेरी समूची रियाया को थूकना चाहिए। पकड़ कर ले जाओ इसे और बुर्जी में बन्द कर दो !"

: ७ :

निस्सो के सामने से हटते ही अज़ीज़खान एकाएक उठा और तम्बू के भीतर चला गया। अन्य सब लोग बाहर ही बैठे रह गए। नौरोज़-बेग की समझ में न आया कि वह क्या करे। फकीर भी उकता चले और अपने-अपने घर जाने की सोचने लगे। बसमाचियों और अज़ीज़-खान के निकटतम लोगों में फुसफुसाहट शुरू हो गई।

सहसा रिसालदार खड़ा होगया और अहाते के बीच में से बोला, "किले की चौहद्दी से कोई बाहर न जाए !"

सब खड़े होकर प्रतीक्षा करने लगे कि सम्भव है, अजीज़ख़ान फिर बाहर आए।

लेकिन वह तम्बू से बाहर नहीं आया। न ही किसी की यह हिम्मत हुई कि भीतर झाँक कर देखे।

मरियम का शरीर हल्की हवा के झोंके में झूल रहा था। मछली का कांटा बुर्जी के पीछे एक पत्थर पर बेसुध पड़ी थी।

सहसा एक घोड़सवार तेजी से घोड़ा दौड़ाता अहाते में आकर रुक गया। अज़ीज़ख़ान की खोज में उसने चारों ओर एक नजर दौड़ाई और फिर तम्बू के भीतर चला गया।

इसके बाद ही अज़ीज़ख़ान ने बाहर झाँक कर रिसालदार को बुलाया।

"कारवाँ ने रात के लिए पड़ाव नहीं डाला। अपने सभी आदमियों को लेकर जाओ और उनसे मुठभेड़ करो।"

अहाते में एक हलचल-सी मच गई। घोड़ों पर ज़ीन कसी जाने लगीं। रिसालदार घोड़े पर सवार हुआ और राइफल में गोलियाँ भरता हुआ रवाना हो गया। करीब बीस बसमाची और उसके साथ हो लिए। बाकी ने गाँव वालों को घेर लिया और उन्हें खदेड़ते हुए, मारते-पीटते, गाँव की ओर ले चले, "खबरदार, जो कोई अपने घर से बाहर निकला!"

इसके बाद वे भी रिसालदार का साथ देने के लिए तेज़ी से रवाना हो गए।

किले का अहाता एक बार फिर सूना हो गया। बोबोकलां जिसके सीलबंद मुँह से दिन-भर में एक शब्द भी नहीं निकला था, तम्बू के बाहर बेतरतीबी से बिखरे तकियों के बीच उदास और अकेला बैठा था केन्दितरी भी अपना टाट छोड़ कर कमर के पीछे हाथ रखे अहाते में

इधर-से-उधर टहल रहा । वह और कभी दावत के बाद छूटी झूटन-बिखरन की ओर, और कभी रस्सी से झूलते मरियम के विकृत शरीर या बुर्जी के निकट बैठे बसमाची की ओर देखता जाता था।

कभी वह निस्सो के बारे में सोचता जिसकी, जान उसने बचाई थी। उसे यकीन था कि अगर कभी जरूरत पड़ी तो यह घटना सन्देह को दूर रखने में मदद देगी। अगर वह बसमाचियों का साथी होता तो निस्सो की जान क्यों बचाता। लेकिन यह तो साधारण बात थी। असल में वह सोच रहा था कि उसकी असल चाल क्या होगी। कूटनीतिक शतरंज का यह खेल बड़ी सावधानी से उसने बिछाया था और उसकी प्रत्येक चाल अब तक सही बैठी थी। निस्सो को इसी लिए उसने जीवित रखा था कि भविष्य में वह काम देगी। दूर की बात सोचना उसने सीखा था और और उसकी निगाह एक दूसरे ही लक्ष्य पर जमी थी। कारवां का क्या हश्र होता है, इसकी उसे ज़रा भी चिन्ता नहीं थी।

सहसा केन्दितरी का ध्यान किसी स्त्री के सिर की ओर गया जो बुर्जी के पीछे पत्थरों के बीच दिखाई दिया था और फिर तुरन्त ही छिप गया था। केन्दितरी चुपचाप देखने लगा।

कुछ देर बाद वह सिर एक क्षण के लिए फिर प्रकट हुआ। केन्दितरी ने उसे तुरत पहचान लिया। यह ज़ुबेदा का सिर था जो धीरे-धीरे, बिना कोई आवाज़ किए, मछली का कांटा की ओर बढ़ रही थी। काम खतरनाक था। बसमाची को अगर ज़रा-सी आहट मिल जाती तो वहीं ढेर हो जाती।

आखिरी चट्टान के पास पहुंच कर जुबेदा ने एक बार अपने चारों ओर देखा। फिर तेज़ी से लपक कर मछली का काँटा के पास पहुँची और उसे जैसे-तैसे उठा कर फिर चट्टान के पीछे छिप गई।

अब केन्दितरी आगे बढ़ा और मुँह से खाँसने की आवाज़ की। ज़ुबेदा ने घबरा कर इधर-उधर देखा और भागने की कोशिश में ठोकर खाकर गिर पड़ी। मछली का कांटा भी जो उसके कंधे पर लेटी थी,

नीचे आ गिरी। जुबेदा को जैसे काठ मार गया, और सहमी-डरी आंखों से केन्दितरी की ओर देखने लगी, जो उसकी ओर बढ़ा आ रहा था। लेकिन केन्दितरी रुका नहीं। अपने भावशून्य चेहरे पर मुसकराहट का कुछ आभास-सा लिए उसने होठों पर उंगली रखी और चुप रहने का संकेत करते हुए दूर निकल गया। वह केवल इतना ही चाहता था कि जुबेदा उसे देख ले, उसे यह मालूम हो जाए कि केन्दितरी ने उसे देखकर भी नहीं देखा, और चुपचाप निकल गया।

बुर्जी का चक्कर काटने के बाद जब वह वापिस लौटा तो वहाँ न मछली का काँटा थी, न जुबेदा। केन्दितरी ने सन्तोष का सांस लिया और मन-ही-मन यह सोच कर प्रसन्न हुआ कि एक नई चाल, सन्देह को दूर रखने के लिए एक और प्रमाण अनायास ही उसके हाथ लग गया।

दसवाँ परिच्छेद

: १ :

सियातांग नदी महानदी से जिस जगह मिलती है वहाँ, चट्टानों के बीच, पन्द्रह बसमाचियों के साथ मीरअली दो दिनों से छिपा प्रतीक्षा कर रहा था। यह वही मीरअली था जो सब्ज़ बाग़ दिखाकर निस्सो की माँ रज़ियामो को दोआब से भगा लाया था। अज़ीज़खान ने उसे आदेश दिया कि कारवां के प्रकट होते ही वह उसका चुपचाप दबे-पांव अनुसरण करे और उसके पीछे हटने का मार्ग काट दे।

अजीज़खान के आदेश का पालन करने में मीरअली ने कोई कसर नहीं छोड़ी। महानदी की ओर से सियातांग-मार्ग की ओर मुड़ते ही वह कारवां के पीछे हो लिया और दर्रे की गहराइयों में चुपचाप उसका अनुसरण करने लगा।

शो-पीर सबसे आगे घोड़े पर सवार था। अपनी इस यात्रा से वह प्रसन्न था और सामान से लदे घोड़ों की लम्बी कतार की ओर, थोड़ी-थोड़ी देर बाद, पीछे की ओर मुँह मोड़ कर देखता जाता था।

डाक्टर अनुफ्रीएव शो-पीर से सटा उसके पीछे-पीछे चल रहा था। वह एक बड़े गधे पर सवार था। पहाड़ी ऊँचाइयों का वह आदी नहीं था और उसका सिर बराबर चक्कर खा रहा था। तंग पहाड़ी रास्ता जहाँ कहीं भी कगारे पर से तेज मोड़ लेता, वहीं अनुफ्रीएव की जान सूख जाती और उसका चेहरा पीला पड़ जाता। घोड़े पर सवार होकर उसे और भी डर मालूम होता। तंग और खतरनाक रास्ता, अगर घोड़ा बिदक गया तो...?

घोड़े को दूर से ही नमस्कार कर वह अब गधे पर सवार था। उसका भय और रोना-झींकना अब किसी कद्र शान्त था और शो-पीर

से, जो अपने घोड़े से उतर कर उसके गधे के साथ-साथ पैदल चल रहा था, इधर-उधर की बातें भी करने लगा था।

कारवां के सबसे पीछे युवक-युवतियों के संगठन कोमसोमोल का सदस्य देइकिन था। वह सियातांग में कोआपरेटिव स्टोर खोलने आ रहा था। यात्रा के खतरों से वह जरा भी भयभीत नहीं था और दर्रे के बनैले सौंदर्य से मुग्ध होकर वह किसी गीत की एक कड़ी गुनगुना रहा था। उसे जैसे किसी की चिन्ता नहीं थी।

डाक्टर अनुफ्रीएव की बातों से शो-पीर उकता गया था। उसे अगर किसी चीज की चिन्ता थी तो केवल अपनी जान की, जो हर नये मोड़ और हर नयी ऊँचाई पर मच्छर का आकार ग्रहण कर भुनभुनाने लगती थी, "तुम कहते हो, दौलेतोवा यहाँ आराम से रहती है। लेकिन तुम यह नहीं देखते कि उसमें अभी लड़कपन है और मेरी उम्र ढल चली है। मेरा और उसका क्या मुकाबिला ? वह चाहे तो पहाड़ी से सिर टकरा कर भी सुख का अनुभव कर सकती है, लेकिन मैं...अगर धन का लोभ न होता तो यहाँ कभी न आता। तुम्हारा यह सिवा...सियो... ऊह, मैं तो इसका नाम भी याद नहीं रख सकता। सच मानो, तुम्हारे इस सियतुंग तक मैं जिन्दा पहुँच सकूँगा, मुझे इसमें भी सन्देह है।"

अनुफ्रीएव की बातों को सुना अनसुना कर शो-पीर ने रुक कर अपने चारों ओर देखा। ऐसा मालूम होता था कि शीघ्र ही, बस, अगली चोटी के बाद, वह खोह आ जाएगी जहाँ उन्नीस दिन पहले निस्सो से उसकी भेंट हुई थी। उस दिन से निस्सो उसके ध्यान में रम गई थी, और एक क्षण के लिए भी वह उसे नहीं भूल पाता था।

अपना ध्यान बंटाने और मार्ग की जाँच करने के लिए शो-पीर कारवां से कुछ आगे निकल गया। तभी उसे ऐसा मालूम हुआ मानो कहीं से पुकारने की आवाज आ रही हो। कभी मालूम होता कि आवाज ऊपर खूब ऊँचे से आ रही है और कभी लगता कि नहीं, कारवां के

पिछले भाग से देइकिन पुकार रहा है।

शो-पीर ने रुक कर चारों ओर नज़र डाली और ध्यान से सुनने लगा। सहसा ऊपर कहीं से एक छोटा-सा पत्थर आकर गिरा। शो-पीर ने गरदन उठा कर देखा और एक चोटी पर उसे किसी आदमी की आकृति दिखाई दी। वह एक पहाड़ी के कपड़े पहने था।

ध्यान से देखने पर शोपीर ने उसे पहचान लिया। यह काराशिर था जो सियातांग की ओर इशारा करते हुए सियातांग भाषा में कुछ कह रहा था। उसके शब्दों को हवा के झोंके उड़ा ले जाते थे और केवल उसके चिल्लाने की आवाज सुनाई देती थी : "आ-आ-आ—ए-ए-ए ! आ-आ-आ—ए-ए-ए ! आ-आ-आ—ए-ए-ए !"

काराशिर रह-रह कर, बिना रुके, चिल्ला रहा था। साथ ही हाथ से इशारे भी करता जाता था। राइफल की भाँति उसने अपने हाथ से निशाना साधा और फिर अपनी गर्दन पर इस तरह एक झटके से हाथ फेरा मानो उसका सिर कट कर धड़ से अलग हो गया।

आखिर, काफी प्रयत्न करने के बाद, शो-पीर ने काराशिर के इशारों को समझा और चिल्ला कर कहा : "बसमाची ! बसमाची ! अज़ीज़ख़ान !"

इन शब्दों को बार-बार दोहराने के बाद काराशिर ने सिर और हाथ हिला कर उनकी पुष्टि की।

इस तरह के समाचार के लिए शो-पीर कतई तैयार नहीं था। एक क्षण के लिए उसके चेहरे पर काली छाया घिर आई। लेकिन वह तुरंत ही संभल गया और उसका मस्तिष्क बिजली की गति से स्थिति के भले-बुरे पहलुओं पर जाने लगा।

रास्ता इतना तंग था कि पीछे हटने के लिए घोड़ों को घुमा कर मोड़ना तक असम्भव था। बाईं ओर गहरा खड्डा था और नीचे चट्टानों से टकराती नदी बह रही थी। दाहिनी ओर पहाड़ों की ऊँची चोटियां थीं। ऊपर से गोलियाँ दाग कर या पत्थर लुढ़का कर कारवाँ को

सहज ही खत्म किया जा सकता था। लेकिन शायद बसमाची वहाँ नहीं थे। अगर वे इतनी ऊँचाई पर होते तो काराशिर वहां से न पुकार कर किसी दूसरी जगह से सूचना देता। सम्भवतः वे सामने से हमला करेंगे। इसका मतलब यह है कि आगे बढ़ना खतरनाक है। अगर किसी तरह उस खोह तक पहुँच सकें तो कम-से-कम आदमी उसमें छिपकर अपनी जान बचा सकते हैं। घोड़ों को बसमाची नहीं मारेंगे, बल्कि मय सामान के उन्हें अपने साथ ले जाना चाहेंगे। अच्छा यही होगा कि मार्ग को पत्थरों से अवरुद्ध कर दिया जाए और खोह में पहुँच कर मोर्चा लगाया जाए। तीन राइफलें उनके पास हैं, शो-पीर, देइकिन और अनुफ़्रीएव के पास। इनके अलावा एक शिकार करने की बन्दूक भी है, जिसे शो-पीर ने कारवां के मुखिया को दे दिया था। लेकिन कारतूसों की उनके पास कमी है, कुल साठ हैं, प्रति राइफल बीस कारतूस हिस्से में आएँगे।

लगाम का इशारा पाते ही शो-पीर का घोड़ा तेजी से आगे बढ़ चला। कारवां फिर पीछे छूट गया। खोह के पास पहुँच कर शो-पीर घोड़े से कूद कर नीचे उतर आया और, पूरी सरगर्मी से, पत्थरों की बाढ़ चिनने लगा। इसी बीच कारवां भी खोह के निकट आ गया और शो-पीर को पत्थरों की बैरीकेड खड़ी करते देख सब के चेहरे पर अचरज के भाव चमकने लगे।

बसमाचियों के धावे की खबर, देखते-न-देखते सभी को मालूम हो गई। डाक्टर अनुफ़्रीएव ने जब सुना तो उसका चेहरा एक दम पीला पड़ गया, होंठ काँपने लगे और भय से लड़खड़ाती जुबान में बोला, "अगर जान की खैर चाहते हो तो कारवां को यहीं छोड़ वापिस भाग चलो ?"

देइकिन का चेहरा भी पीला पड़ा, लेकिन वह शान्त रहा। कारवां हाँकने वालों के चेहरे भी उदास और भारी हो गए। लेकिन शो-पीर का कहना मानने में उन्होंने आगा-पीछा नहीं किया। भला हो काराशिर का

जो उसने पहले से चेता दिया। कम से कम इतना तो अब होगा ही कि वे धोखे में नहीं मारे जाएँगे!

तेज़ी से उन्होंने घोड़ों पर से सामान उतारा और बण्डलों तथा पेटियों को एक के बाद एक घोड़ों के बीच में ज़मीन पर रखते गए। यह इसलिए कि घोड़े एक दूसरे से गड्ड-मड्ड न हो सकें और अगर उनमें से कुछ नष्ट हो भी जाएँ तो सामान बचा रहे। इसके बाद उन्होंने खोह का आधा मुँह पत्थरों से बन्द कर दिया और उसकी ओट में राइफलें तान कर बैठ गए।

यह सब तैयारियाँ करने और हमला होने की हालत में गोलियाँ दागने का आदेश देने के बाद शो-पीर दुश्मन की स्थिति का पता लगाने चल दिया। काराशिर की भाँति अगर वह भी किसी ऊँची पहाड़ी पर चढ़ कर चारों ओर नज़र डाल सके तो अच्छा हो। सूरज अभी छिपा नहीं था और उसकी रोशनी में वह दूर तक थाह ले सकता था।

लेकिन वह अभी कुछ ही दूर चढ़ा होगा कि उसे गोली चलने की आवाज़ सुनाई दी, पहली, फिर दूसरी और फिर तीसरी। आवाज़ कारवाँ के पीछे किसी जगह से आ रही थी। तो क्या बसमाची हमारे पीछे मौजूद हैं? शो-पीर मुड़कर वापिस लपका। सहसा एक दम पास से ही, गोली छूटी और उसके कान को छूती सनसनाती हुई निकल गई। इसका मतलब यह है कि वे यहाँ, ठीक सिर के ऊपर ही मौजूद हैं।

खोह तक भाग कर लौटने के इस छोटे से अर्से में ही उसके आगे और पीछे अनेक गोलियाँ सनसनाती हुई आईं और चट्टानों से टकरा कर छितरा गईं।

"जल्दी करो, शो-पीर!" देइकिन ने चिल्ला कर कहा और शो-पीर का हाथ पकड़ कर खोह के भीतर खींच लिया।

शो-पीर ने अपने साथियों की ओर देखा। डाक्टर अनुफ़ीएव की

राइफल उसके पाँव के पास पड़ी थी और वह खुद इस तरह बैठा था मानो किसी का सोग मना रहा हो !

शो-पीर ने झुँझला कर कहा, "अपनी राइफल क्यों नहीं संभालते ?"

अनुफ़्रीएव ने राइफल उठा ली और उसे कांपते हाथों से उलटने-पलटने लगा ।

"बस, रहने दो !" शो-पीर ने कहा, "राइफल नहीं तुम्हारे हाथों में तो चूड़ियाँ होनी चाहिएँ । अपनी राइफल मोहम्मद जान को दे दो !"

तभी, चट्टान के पीछे से, पहला सवार तेज़ी से प्रकट हुआ। शो-पीर ने निशाना साध कर गोली छोड़ी और वह घोड़े से लुढ़क कर नीचे आ रहा । एक हाथ में वह अभी भी अपनी राइफल दबोचे था और दूसरे हाथ से मानो हवा को पकड़ने की कोशिश कर रहा था । उसका बदन कगारे से टकराया और गहरे ढलुवान पर से लुढ़कता-पुढ़कता नीचे नदी के पानी में गिर कर विलीन हो गया ।

उसके गिरते ही बसमाचियों ने गोलियों की गहरी बौछार की। लेकिन खोह के भीतर छिपे लोगों को गोलियों की पकड़ में लाना असम्भव था । गोलियाँ खोह के सामने लगे पत्थर और इधर-उधर की चट्टानों से टकरा कर छितरा जातीं । बसमाचियों ने भी यह अनुभव किया और कुछ देर बाद गोलियों की बौछार शान्त हो गई ।

शो-पीर ने अब सावधानी से झाँक कर देखा । उसकी नज़र कई बसमाचियों पर पड़ी जो कारवाँ के घोड़ों और सामान के बण्डलों की ओट में लुकते-छिपते बढ़ रहे थे । शो-पीर ने, कोहनिया कर, देकिंन और मोहम्मद जान का ध्यान भी उनकी ओर खींचा ।

तीन बसमाची अब काफी नज़दीक आ गए थे । एक का सिर घुटा हुआ था और वही सबसे आगे था । शो-पीर ने निशाना साध कर कर घोड़ा दबाया और एक चीख के साथ वह खड्ड में विलीन हो गया ।

बाकी दो ने गोलियाँ दागी जो खोह के पत्थर से आकर टकराईं।

"इन्हें मैं लेता हूँ," देकिन ने चिल्लाते हुए कहा। लेकिन तभी उसके मुँह से एक कराह निकली, उसके हाथों से बन्दूक छूट गई और वह खोह के पत्थरों पर ढेर हो गया। उसकी कनपटी से खून बह रहा था।

"उल्लू की भाँति मेरी तरफ क्या ताक रहे हो ?" शो-पीर ने अनुफ्रीएव से कहा, "उसे देखो, अभी जान बाकी है या खत्म हो गया ?"

देकिन खत्म हो चुका था।

तभी शो-पीर की नज़र एक बसमाची पर पड़ी जो खोह के काफी नज़दीक आ गया था। शो-पीर ने उसकी चमकती हुई खोपड़ी पर निशाना साधा और वह वहीं ढेर हो गया।

तीसरा बसमाची रेंग कर चट्टान की ओट में हो गया।

खोह में अब फिर सन्नाटा छाया था। एक ओर देकिन की लाश पड़ी थी और अनुफ्रीएव इतनी मूर्खतापूर्ण मुद्रा में उसकी ओर देख रहा था कि शो-पीर का खून खौल उठा।

सहसा एक बड़े से सफेद कपड़े पर शो-पीर की नज़र पड़ी जिसे चट्टान के पीछे से कोई हिला रहा था। अन्त में एक मोटा-ताजा दाढ़ी वाला आदमी दिखाई दिया। सिर पर उसके पगड़ी थी और बदन पर नीले और लाल रंग का रेशमी चोगा।

यह रिसालदार था। वह एक दम निहत्था था और सफेद कपड़ा हिलाता हुआ धीरे-धीरे खोह की ओर बढ़ रहा था।

शो-पीर उसे ध्यान से देखता रहा। जब उसके और खोह के बीच बीस एक कदम का फासला रह गया तो शो-पीर चिल्लाया :

"बस, आगे न बढ़ना ! तुम क्या चाहते हो ?"

वृद्ध रुक गया और हाथ उठाकर बोला :

"मैं तुम्हें जानता हूँ। गोली न चलाना। मुझे तुमसे कुछ कहना

है। मेरी बात सुनो, और अपने दूसरे साथियों को भी सुनने दो। बाद में जो चाहे करना !"

शो-पीर की उंगली बन्दूक के घोड़े पर थी। वह गोली दागना ही चाहता था कि मोहम्मद जान ने उसे रोक दिया। बोला :

"जल्दी न करो। पहले इसकी बात सुन लो।"

आखिर बृद्ध ने बोलना शुरू किया :

"शो-पीर, तुम्हारे साथ कुल बारह आदमी हैं। इनमें से भी कुछ तो खत्म हो चुके होंगे। तुम्हारे मुकाबिले में हमारी संख्या दो सौ है, और सभी राइफलों से लैस हैं। तुम्हारे पास ले-देकर कुल जमा में तीन राइफल हैं। हम यखबार पर शासन करते हैं और सियातांग भी अब हमारे ही कब्जे में है। सियातांग के तमाम लोग अजीजखान के गुण गाते हैं। खुदा उसका मददगार है। उसके खिलाफ़ जाना अपनी मौत को बुलाना है। क्या तुम समझते हो कि हम गोलियाँ चलाएंगे ? नहीं, हम गोलियाँ नहीं चलाएंगे, न ही अपने सैनिकों को तुम्हारी गोलियाँ खाने के लिए आगे भेजेंगे। हम तुम्हारी खोह के इर्द-गिर्द भारी टोली लगाएंगे और तुम चूहे की भाँति दम घुटकर मर जाओगे। आग लगाने से हमें कोई नहीं रोक सकता। लेकिन अज़ीज़खान के दिल में रहम है। सुनो, मैं उसके शब्द तुम्हारे सामने रखता हूँ, "अगर शो-पीर हथियार डाल दें तो उसकी जान क्यों ली जाए ? वह ज़िन्दा रहे। हम उसका बाल तक बाँका नहीं करेंगे। इस लिए शो-पीर मैं तुमसे और तुम्हारे साथ जो दूसरे लोग हैं उनसे कहता हूँ कि अपने हथियार हमें सौंप दो, हम तुम्हारे सिर का एक बाल तक न छूएंगे। और देखो, यह हमारा धर्म-ग्रन्थ है। मैं अपनी ओर से, और खान की ओर से, इसे होंठों से छूकर कहता हूँ कि अपने हथियार हमें दे दो और इसके बाद, बिना किसी रोक-थाम के, जहाँ जाना चाहो चले जाओ। तुम उतनी ही आज़ादी से घूम-फिर सकोगे जितनी आज़ादी से वह ऊँट घूमता है जिस की नाक में अभी तक नकेल नहीं पड़ी है।"

"गोली न चलाना, शो-पीर !" मोहम्मदजान ने कान में फुसफुसाते हुए कहा, "उसने धर्म-ग्रन्थ को सामने रख कर अपनी बात कही है। उस से कहो कि वह चला जाए और हमारे जवाब का इन्तजार करे।"

दर्रे के अन्य निवासी भी जो कारवाँ को हांक कर लाए थे, मोहम्मदजान की बात से सहमत थे। आखिर शो-पीर को उनकी बात माननी पड़ी। हाथ हिलाते हुए उसने रिसालदार से कहा, "अभी जाओ और हमारे जवाब का इन्तजार करो।"

रिसालदार मुड़ कर चट्टान के पीछे छिपे अन्य बसमाचियों के पास चला गया।

खोह में तेज़ बहस छिड़ गई। शो-पीर ने बहुत कुछ कहा, समझाया बुझाया, गुस्से में हाथ-पाँव पटके, लेकिन दर्रे के निवासियों पर धर्म-ग्रन्थ का जो असर था वह दूर नहीं हुआ। उन्हें पक्का विश्वास था कि रिसालदार ने जो कहा है वह उसे पूरा करेगा। अच्छा यही है कि हम अपने हथियार सौंप दें। अगर उन्होंने आग लगा दी तो सब खोह में ही घुट कर मर जाएंगे।

अनुफ्रीएव की जान वैसे ही सूख रही थी। वह भी दर्रे के निवासियों से आगे बढ़ गया और घाव पर बाँधने की सफेद पट्टी को निकालते हुए बोला।

"बहस करना बेकार है। यह लो, मेरे पास सफेद पट्टी है। इसे फहरा कर किस्सा खत्म करो।"

यह कह कर उसने पट्टी खोल डाली और उसे फहराने के लिए खोह के मुँह की ओर लपका।

"ठहरो!" शो-पीर ने चिल्ला कर उसकी बाँह पकड़ ली, "सफेद पट्टी हर्गिज़ नहीं फहराई जाएगी। तुम में से अगर कोई जाना चाहता है तो चला जाए। लेकिन मैं नहीं जाऊँगा। मैं अपनी राइफल के साथ यहीं रहूँगा। तुम लोग बाकी राइफलें लेजा सकते हो। लेकिन कारतूस सब यहीं रहेंगे, समझे!"

"क्यों, हमारे कारतूस यहाँ क्यों..."

डाक्टर अनुफ़ीएव अपनी बात पूरी नहीं कर सका। मोहम्मदजान ने बीच में ही उसका मुँह बंद कर दिया।

"अच्छी बात है, शो-पीर!" मोहम्मदजान ने कहा, "कारतूस तुम्हारे पास ही रहेंगे। तुमने मरने का निश्चय किया है। लेकिन हम... हमारे बीवी बच्चे हैं, और हम जीना चाहते हैं..."

मोहम्मदजान ने शो-पीर का हाथ अपने हाथ में ले लिया, उसे कस कर भींचा और फिर, सहसा आवेश में आकर, उसे होठों से लगा लिया।

"बुरा न मानना, शो-पीर! हम तुम्हारे लिए दुआ करेंगे। पहाड़ की चोटी पर जब जिन्दगी और मौत गले मिलते हैं तो ऊपर का रास्ता उसी के लिए खुलता है जो वीर होता है।"

अन्त में, एक-एक करके, सभी बाहर निकल आए। खोह में अकेला शो-पीर, उसकी राइफल और गिनती के कुछ कारतूस रह गए।

बसमाची चट्टान के पीछे से निकल आए और खोह के लोगों को हाँकते हुए ले गए।

साँझ हो आई। धुंधला तेज़ी से गहरा होने लगा और चट्टानें धुंधली छायाओं के साथ घुल-मिल कर एकाकार होने लगीं।

बसमाची अगल-बगल से, और ऊपर से, रेंग कर खोह के नज़दीक आने की ताक में थे। कभी-कभी, बीच-बीच में, गोलियों की बौछार भी करते जाते थे। कई बार उन्होंने खोह के मुँह के सामने सूखी घास के पूले जमा करने की कोशिश की, लेकिन जैसे ही कोई नज़दीक आता, शो-पीर की गोली खाकर वहीं ढेर हो जाता।

इसके शीघ्र बाद ही, कहीं ऊपर से, जड़ से उखड़ी हुई झाड़ियाँ खोह के सामने गिरना शुरू हो गईं और उनका ढेर जमा होने लगा। शो-पीर की समझ में नहीं आया कि वह क्या करे, कैसे इन झाड़ियों का गिरना रोके।

"जो हो," उसने मन में सोचा, "वे इन झाड़ियों में आग कभी नहीं

लगा सकेंगे।"

जब झाड़ियों का ढेर काफी ऊँचा हो गया तो शो-पीर ने अपना सिर बाहर निकाला और राइफल के कुन्दे से झाड़ियों को पीटने लगा। बसमाची ऐसे ही अवसर की ताक थे। दनादन गोलियों की वर्षा होने लगी। एकाएक शो-पीर को अपने बाएं कंधे में तेज़ दर्द मालूम हुआ और उसकी बाँह कमीज़ खून से तर हो गई।

शो-पीर बाँह को थामे पीछे हट गया। एक तो बाँह वैसे ही राइफल संभालने लायक नहीं रही थी, दूसरे अंधेरा भी काफी हो गया था। निशाना साधना असम्भव था।

सहसा कोई तरल पदार्थ झाड़ियों पर गिरना शुरू हुआ। उसकी कुछ बूदें छिटक कर शो-पीर तक भी पहुँचीं। मिट्टी के तेल की गन्ध आई। कारवाँ के पिछले हिस्से में गधों पर मिट्टी का तेल लदा था। बसमाची अब उसी तेल से झाड़ियों को तर कर रहे थे। फिर एक जलता हुआ चिथड़ा झाड़ियों में आ गिरा। लपटें उठने लगीं। खोह कड़वे धुएं से भर गई। शो-पीर का दम घुटने लगा। आँखों में आँसू निकल आए, धुएं के कड़वे आँसू।

शो-पीर ने देखा कि अन्त निकट आ गया है। लेकिन खोह के भीतर, धुएं में घुट कर, क्यों मरा जाए? शो-पीर ने अपनी राइफल उठाई और उसे खोह से बाहर फेंक दिया। अंधेरे को चीरती वह पानी में छप-से जा गिरी। फिर एक हाथ से उसने अपने जूते उतार डाले, तेज़ी से बाहर लपका और आग में नंगे पाँव घुस कर नीचे खूब गहराई में उमड़ती-घुमड़ती नदी में कूद पड़ा।

दर्रा बसमाचियों की विजयपूर्ण आवाज़ों से गूँज उठा।

चाँद निकल आया। माल से लदे घोड़ों का कारवाँ फिर अपने पथ पर रवाना हुआ, लेकिन अब रिसालदार के सैनिक उसे हांक रहे थे। अनुफ्रीएव और दूसरे बंदी भी साथ में चल रहे थे। उनके हाथ कमर के पीछे बंधे थे। सब के गलों में रस्सियाँ पड़ी थीं और रस्सियों के दूसरे

और घोड़ों से बंधे थे।

: २ :

सियातांग के वे निवासी जो कारवां के लिए रास्ते की मरम्मत करने चले आए थे, बसमाचियों के हमले के कारण पहाड़ी ऊँचाइयों में छितरा गए थे। उनके अलावा दर्रे के कुछ अन्य निवासी, बसमाचियों से घबरा कर, बाद में वहां से भाग आए थे। बर्फ, हिमानियों और धुंध-पाले में ढकी जन-शून्य, जीवन-शून्य, पहाड़ी चोटियाँ ही अब उनकी शरणागाह थीं। इनमें से प्रत्येक, गिरता-पड़ता, ऊँचाइयों को पार करता, महानदी की घाटी में पहुँचने का प्रयत्न कर रहा था।

ये सब एक-दूसरे से अलग और दूर पहाड़ी ऊँचाइयों में बिखरे हुए थे। कोई कहीं था और कोई कहीं। शोख बगोर की जब तूफा पर नज़र पड़ी तो वह सामने की ऊँची चोटी से चिपका हुआ था। दोनों के बीच में गहरी खाई थी। चिल्ला कर दोनों ने एक दूसरे का ध्यान खींचा और कई घंटों की चढ़ाई-उतराई के बाद सियातांग नदी के किनारे वाली पर्वतमाला पर वे एक-दूसरे से मिल सके।

काराशिर भी, दो दिन से, इस पर्वत माला में भटक रहा था। शो-पीर को चेतावनी देने के बाद वह किसी ऐसे ऊँचे स्थान की खोज में था जहाँ बैठ कर बसमाचियों के सिर पर पत्थर लुढ़का सके। इसके लिए वह सिर उठा कर चारों ओर नज़र दौड़ा रहा था। सहसा उसे कुछ लोगों की एक पाँत दिखाई दी। पहले तो वह समझा कि बसमाची हैं। जल्दी से एक चट्टान के पीछे छिप गया और उनकी ओर देखने लगा। लेकिन उनके और निकट आने पर मालूम हुआ कि स्त्रियां हैं, और अन्त में शोख बगोर को उसने पहचान भी लिया। हाथ हिलाया और चिल्लाया। वह चट्टान के पीछे से निकल आया।

जब स्त्रियाँ निकट आ गईं तो काराशिर ने उन्हें कारवां के बारे में बताया और वे सोचने लगे कि शो-पीर की मदद के लिए क्या-कुछ किया जा सकता है।

अँधेरा घना हो चला था। नीचे से गोलियों की आवाज़ आ रही थी। काराशिर और अन्य स्त्रियाँ सियातांग नदी की दिशा में उतरने लगीं। नदी अभी भी पहाड़ों के पीछे छिपी हुई थी।

कुछ देर बाद नदी दिखाई पड़ने लगी। गोलियों की आवाज़ अब शान्त थी। सहसा, अँधेरे की मोटी तह को वेध कर, आग की लपटें दिखाई दीं। स्त्रियों की समझ में नहीं आया कि यहाँ आग कौन जला सकता है।

पत्थर लुढ़का कर दर्रे का पथ रोकने के लिए यह बहुत ही उपयुक्त स्थल था। लेकिन अँधेरे में कुछ दिखाई नहीं देता था। कौन जाने, कारवां ने ही यह आग जलाई हो।

उन्होंने निश्चय किया कि चाँद की रोशनी फैलने तक प्रतीक्षा की जाए।

काराशिर ने, और कोई काम न देखा, स्त्रियों को बताना शुरू किया उस पर तथा सड़क की मरम्मत करने के लिए आए अन्य साथियों पर कैसे और क्या बीती।

मरम्मत का काम करीब-करीब पूरा हो चुका था और वे अगले ही दिन गांव लौटने की सोच रहे थे। बख्तियार की कुदाली मिल नहीं रही थी। आस-पास की किसी चट्टान के नीचे पड़ी रह गई थी। बख्तियार ने काराशिर को उसे खोजने के लिए भेजा। बुरा तो बहुत लगा, लेकिन क्या करता, कुदाली खोजने के लिए चल दिया। काफी देर इधर-उधर भटका, इधर-उधर देखा, कुदाली कहीं नज़र नहीं आई। अन्त में निराश हो वापिस लौटने लगा। तभी घोड़सवारों के एक दल पर उसकी नज़र पड़ी। वह सकपका कर पीछे हट गया, और छिपकर देखने लगा कि ये कौन हैं। लेकिन घोड़सवार गुज़र गए और वह उन्हें पहचान नहीं सका। इसके बाद, एकाएक, उसे फिर घोड़ों की टपाटप सुनाई दी। वह फिर छिप गया और उसने देखा कि बसमाची हैं। इस बार उन्हें पहचानने में कठिनाई नहीं हुई। सियातांग से भागे हुए सैयदों और मीरों

के चेहरे उसे दिखाई दिए। काली दाढ़ी वाला एक घोड़सवार बहुत ही बढ़िया कपड़े पहने था। काराशिर ने अन्दाज़ लगाया कि यह अज़ीज़खान होगा। उसके चेहरे पर खून के दाग लगी पट्टी बंधी थी। काराशिर ने सैयदों की आवाज़ सुनी। वे बख्तियार को कोस रहे थे। बहुत देर तक वह वहीं, चट्टान के पीछे बैठा देखता रहा। अन्त में एक घोड़सवार और गुज़रा, और इसके बाद सन्नाटा छा गया। काराशिर चट्टान के पीछे से निकल आया और अन्त में उस जगह पहुँचा जहाँ वह अपने साथियों को छोड़ आया था। लेकिन अब वहाँ कोई नहीं था। रास्ता खून से सना था। काराशिर का हृदय काँप उठा। कहीं छिप कर अपनी जान बचाने के लिए वह एक ऊँची चोटी पर चढ़ने लगा और खूब ऊँचे पहुँच कर एक जगह बैठ गया। रास्ते पर नज़र गड़ाए दो दिन तक वह यहीं जमा रहा। बसमाची कई बार आए और इधर-से-उधर गुज़र गए। अत में शो-पीर पर उसकी नज़र पड़ी जो कारवां के साथ आ रहा था। चिल्ला कर और हाथ से इशारे करके उसने बसमाचियों के आने की खबर कारवां तक पहुँचा दी।

अब चाँद निकल आया था। आग की लपटें शान्त हो चुकी थीं। नदी का पानी चाँदनी में चमक रहा था। टेढ़ा और चक्करदार रास्ता फीते की भाँति उभर आया था। न बसमाचियों का अब कहीं पता था और न कारवां का। चारों ओर सन्नाटा छाया था।

काराशिर और स्त्रियों ने, दम साध कर नीचे उतरना शुरू किया। अन्त में वे खोह के निकट आ गए। कान लगा कर सुना। कहीं से कोई आवाज़ नहीं आ रही थी। दबे पाँव, लुकते छिपते, खोह में पाँव रखा। वहाँ देकिन की लाश पड़ी थी। उसे खींच कर बाहर ले आए। चाँदनी की रोशनी में उसे देखा, पर पहचान न सके।

"रूसी मालूम होता है," काराशिर ने अन्दाज लगाते हुए कहा, "हो सकता है शो-पीर का साथी हो। बाकी लोग भी यहीं-कहीं छिपे होंगे। उनकी खोज करनी चाहिए।"

चाँद की चाँदनी से अब समूचा दर्रा उजला हो उठा था।

काराशिर ने अपने चारों ओर नज़र डाली। बाईं ओर, चट्टानों के बीच, उसे एक नाली-सी दिखाई दी जिसके सहारे वह नीचे नदी के किनारे तक पहुँच सकता था।

काराशिर ने नीचे की ओर खिसकना शुरू किया। स्त्रियाँ ऊपर से चिल्लाईं। लेकिन उनकी आवाज़ सुनाई न दी। एक तो नदी का शोर, दूसरे नीचे पहुँचने की धुन, स्त्रियों की आवाज़ उसके कानों को नहीं छू सकी।

नीचे पहुँच कर काराशिर ने नदी के किनारे-किनारे चलना शुरू किया। एक जगह उसे बसमाची की लाश दिखाई दी जो एक दम मलीदा बन गई थी। उसकी टूटी हुई बर्छी काराशिर ने अपने कब्जे में की। कुछ ही दूर एक राइफल पर नज़र पड़ी जो झाड़ी की टहनियों में उलझी थी। काराशिर ने उसे भी अपने कब्ज़े मे किया।

स्त्रियाँ भी अब नीचे उतर आई थीं। काराशिर ने उन्हें बर्छी और राइफल दिखाई। बर्छी टूटी हुई थी, लेकिन राइफल सही-सालिम थी।

इसके बाद वह फिर आगे बढ़ चला। एक मील से भी ज्यादा चलने के बाद सहसा वह चौंक कर रुक गया। सामने ही, उल्टे मुँह, एक आदमी निश्चल पड़ा था।

यह शो-पीर था।

काराशिर ने सावधानी से पलट कर उसे सीधा किया और उसके पीले निर्जीव चेहरे पर उसकी आंखें जम गईं। चेहरा खून और रेत से सना था। काराशिर ने उसे साफ किया। फिर उसकी बाँह को उठाकर देखा, जो हड्डी टूट जाने के कारण अजीब ढंग से लटकी थी। इसके बाद, अत्यन्त विचलित और काँपते हृदय से, उसने अपना कान शो-पीर के सीने से सटा दिया, साँस रोके कुछ देर तक सुनता रहा, फिर उछल कर खड़ा हो गया और खुशी से चिल्ला उठा :

"नहीं, मरा नहीं है ! शो-पीर जिन्दा है ! हृदय में धड़कन मौजूद है !"

उसकी आवाज सुन कर स्त्रियाँ भी भागी हुई आ गईं। उन्होंने शो-पीर के चेहरे पर ठंडे पानी के छींटे दिए, बँद-बूँद करके उसके मुँह में पानी डाला।

धीरे-धीरे शो-पीर को कुछ होश आया। गहरी कराह के साथ उसने अपनी आँखें खोलीं और फिर बन्द कर लीं। कुछ देर वह चुपचाप पड़ा रहा फिर, भारी प्रयत्न करके, एक बार और उसने अपनी आँखें खोलीं। काराशिर और शोख बगोर को कुछ पहचान कर उसने अपना सिर उठाने की कोशिश की, लेकिन उठा न सका। उसके मुँह से कराह निकली और वह फिर बेसुध हो गया।

: ३ :

यह खबर मिलने पर कि अज़ीज़खान कुछ बसमाचियों को बटोर कर सियातांग पर हमला करने की तैयारी कर रहा है, बोलशेविक-सेना के कमाण्डर ने श्वेत्सोव को तुरन्त रवाना होने या आदेश दिया।

आदेश मिलते ही, एक घंटे के भीतर, बीस घोड़सवारों के साथ श्वेत्सोव चल दिया। उसके साथ सेना का डाक्टर मैक्सीमोव भी था।

इस से पहले सियातांग के इस अनजाने-अनदेखे पहाड़ी प्रदेश में लाल सेना की एक भी टुकड़ी ने प्रवेश नहीं किया था। श्वेत्सोव की इच्छा थी कि यखबार के उस निवासी को भी अपने साथ ले-ले जिसने आकर इस हमले की सूचना दी थी। लेकिन वह बीमार पड़ गया, और उसे साथ लाना सम्भव न हो सका।

पाँचवे दिन, उस समय जबकि उन्होंने जारखोक नदी का मुहाना पार किया, चिथड़े पहने एक बूढ़ा आदमी उन्हें दिखाई दिया। उसने बताया कि उसके बगीचे में सियातांग से भाग कर आए दो आदमी लेटे हुए हैं।

ये दोनों खुदादाद और अब्दुल रहीम थे।

इन दोनों की मदद से श्वेत्सोव ने बसमासियों को सियातांग दर्रे में फांसने की योजना बनाई, जिससे न तो वे आगे बढ़ सकें, न पीछे ही हट सकें। उप लैफ्टीनैन्ट तारन को उसने आदेश दिया कि वह पाँच आदमियों को लेकर महानदी के रास्ते जाए और सियातांग का मुहाना छेद ले। बाकी आदमी, पहाड़ों के ऊपर चढ़ जाएंगे और वहीं से बसमाचियों पर टूट पड़ेंगे। अगर यह सम्भव नहीं हुआ तो महानदी की घाटी में वे भी उससे जा मिलेंगे।

खुदादाद ने श्वेत्सोव के साथ और अब्दुलरहीम ने तारक के साथ जाने का निश्चय किया। बीस आदमियों की टुकड़ी पाँच और पन्द्रह के दो असमान दलों में बंट कर विभिन्न दिशाओं में रवाना हो गई। डाक्टर मैक्सीमोव बड़े दल के साथ था,—श्वेत्सोव और खुदादाद वाले दल के साथ।

दोपहर तक वे जारखोक दर्रे में पहुंच गए। बादलों और धुंध में बर्फीली चोटियों के सिवा और कुछ नजर नहीं आता था। इन्हीं चोटियों पर उन्होंने चढ़ना शुरू किया। गिरते-पड़ते, बर्फ़ के नीचे छिपी चट्टानों से चोट खाते, वे बढ़ने लगे। वे अपने घोड़ों की दुम थामे थे। लेकिन घोड़ों के पांव भी जम न पाते, रह-रह कर खिसकते।

सांझ तक वे एक छोटे-से पठार पर पहुंच गए। श्वेत्सोव ने कुछ सुस्ताने का आदेश दिया। थकान से चूर सैनिक बर्फ पर पसर गए।

खुदादाद एक गोल पत्थर पर बैठ गया। सहसा उसका ध्यान एक काले बादल की ओर गया जो उनकी दिशा में ही चला आ रहा था। खुदादाद ने देखा कि आसार अच्छे नहीं हैं।

आध घंटे तक सुस्ताने के बाद सैनिकों ने फिर चढ़ाई शुरू कर दी। देखते-न-देखते बर्फीली हवा के तेज़ थपेड़ों ने और ओलों की बौछार ने घेर लिया।

श्वेत्सोव का हृदय काँप गया। उसने घड़ी निकाल कर समय देखा।

साढ़े आठ बजे थे। सूरज, बहुत पहले ही, चोटियों के पीछे जा छिपा था और अंधेरा तेजी से अपने काले पंजे फैला रहा था।

अभी एक हज़ार फुट के करीब चढ़ाई बाकी थी। लेकिन ऐसे में चढ़ाई जारी रखना क्या ठीक होगा ?

श्वेत्सोव ने खुदादाद की ओर देखा। वह काले बादल की ओर देख रहा था और कान लगा कर हवा की आवाज़ सुन रहा था। कुछ देर तक-मन-ही मन हिसाब लगाया और फिर जीभ से चटखारा लेते हुए उसने आगे बढ़ने का इशारा किया।

खुदादाद की लगन और साहस ने श्वेत्सोव को मुग्ध कर लिया था। उसकी बात मान कर उसने सैनिकों को चढ़ाई जारी रखने का आदेश दिया।

सैनिकों ने जवाब में कुछ नहीं कहा। जो बर्फ पर बैठे थे; उठ खड़े हुए और जानलेवा चढ़ाई फिर शुरू हो गई। चोटी के नजदीक पहुंचते-न-पहुंचते हवा शान्त हो गई, बादल पतले पड़ चले और कई जगह उन्हें बीच से तारे भी दिखाई देने लगे।

खुदादाद की सूझ-बूझ और साहस के प्रति श्वेत्सोव का हृदय कृतज्ञता से भर गया।

एक घंटे बाद वे चोटी पर पहुंच गए। श्वेत्सोव खुशी से चिल्लाया और अपना वज़न न संभालने के कारण बर्फ मे गिर पड़ा। अन्य सैनिक भी वहीं पसर कर थकान उतारने लगे।

सौभाग्य से डाक्टर मैक्सीमोव अपने साजसामान के साथ बरांडी की एक बड़ी बोतल भी ले आया था। थकान उतारने और गरमाने के लिए उससे बढ़िया और क्या चीज होती। खुदादाद को छोड़ बाकी सबने उसे मुँह से लगाया।

इसके बाद, चिरन्तन बर्फ के इस प्रदेश से जल्दी-से-जल्दी निकलने के लिए सैनिकों का दल फिर आगे बढ़ चला और नीचे की चट्टानों में किसी ऐसे समतल स्थान की खोज करने लगा जहाँ रात बिताई जा

सके।

अजीजखान उन लोगों में से नहीं था जो अपनी जान खतरे में डालते हैं। वह गहरे दर्रे में नहीं घुसा, दो चोटियां पार करने के बाद ही एक खुलासा जगह में उसने अपना डेरा डाल दिया और वहीं बैठ कर कारवां पर कब्जा किए जाने की खबर का इन्तजार करने लगा।

पहले हरकारे ने अच्छी खबर सुनाई,—कारवां के लोगों और एक रूसी डाक्टर को बन्दी बनाने की खबर विजय की सूचक थी। अजीजखान ने हरकारे को वापिस दौड़ा दिया कि डाक्टर को तुरन्त अपने साथ लेकर आए।

अजीज़खान को डाक्टर की सख्त ज़रूरत थी। उसके गाल का घाव काफी गहरा था और बुरी तरह दर्द कर रहा था।

मिरज़ाहूर, खलीफा और नौरोज़बेग भी साथ में थे। मन-ही-मन हिसाब लगा रहे थे कि बन्दियों की लूट में से किसको क्या मिलेगा।

सांझ हो आई थी। सूरज अपनी लम्बी किरनों को समेट कर सामने की पहाड़ियों के पीछे जा छिपा था। अजीज़खान और उनके दूसरे साथियों कि आंखें रास्ते पर जमीं। वे किसी भी क्षण कारवां के आने की इन्तजार कर रहे थे।

तभी एक हरकारा आता दिखाई दिया। कारवाँ की जगह हरकारे को आता देख अजीज भल्ला उठा। उसके सामने आने पर तेज स्वर में बोला :

"कारवां कहां है? और वे बन्दी कहां है, जिन्हें गिरफ्तार किया गया था?"

"हमारे सैनिकों ने रास्ता बन्द कर रखा है, मालिक! शायद इसी लिए वे नहीं आ सके।"

"कारवां अब तक क्यों नहीं आया? रिसालदार क्या घास खोद रहा है?"

"वह रूसी जो खोह में अकेला रह गया था, अभी तक गोली चला

रहा है," हरकारे ने एक डग पीछे हटते हुए कहा ।

"गोली चला रहा है ? क्या अभी तक कारवां पर कब्जा नहीं हुआ ?"

"नहीं मालिक, अभी तक कारवां पर कब्जा नहीं हो सका । वह रूसी......"

अजीज़खान का पारा बुरी तरह गरमा गया । चिल्ला कर बोला:

"रूसी ! रूसी ! एक रूसी क्या हुआ, आफत हो गई ? क्या साठ राइफलों से लैस सौ सैनिक भी एक रूसी को बन्दी नहीं बना सकते ? झूठ क्यों बोलते हो, कुत्ते की औलाद ? फौरन जाकर रिसालदार से कहो कि उस रूसी को जिन्दा गिरफ्तार करके यहां मेरे पास लाए । और बन्दियों को भी सीधे यहीं पहुचाना ।"

हरकारा घोड़े पर सवार होते ही आंखों से ओझल हो गया ।

रात का अंधेरा गहरा हो चला । चारों ओर सन्नाटा छाया था । दर्द को कम करने के लिए अज़ीज़खान अपनी बांह की टेक लगाये लेटा था । आसमान में तारे टिमटिमा रहे थे ।

आखिर एक दूसरा हरकारा आया । उसने कारवाँ पर कब्जा होने की सूचना दी । लेकिन अजीज़खान ने इस बार कोई प्रसन्नता नहीं प्रकट की :

"बन्दी कहां हैं ? वह रूसी कहाँ है ? और यह क्या बदतमीजी है, घोड़े से नीचे उतर कर क्यों नहीं बातें करते ?"

हरकारा सकपका कर घोड़े से नीचे उतर आया ।

"बन्दी भी आ रहे हैं, मालिक ! लेकिन रूसी ने नदी में कूद कर जान दे दी !"

"तो यह कहो कि तुम उसे पकड़ नहीं सके, क्यों ?" अज़ीज़खान चिल्लाया, "खड़े क्यों हो, उधर जाकर बैठो !"

हरकारा उन बसमाचियों के पास चला गया, जो घोड़ों की रखवारी कर रहे थे ।

अँधेरा अब पूरी तरह घिर आया था। लेकिन कारवां का कुछ पता नहीं था। जिगर की मदद से अजीजखान ने अपना घाव धोया और पट्टी बदली। फिर, आशंकित हृदय से, घोड़ों को तैयार रखने का आदेश दिया।

इसी बीच तीसरे हरकारे के घोड़े की टापों की आवाज़ आई और पास आकर रुक गई।

"क्यों कारवाँ कहाँ है?" अज़ीज़खान ने पूछा।

"मुझ पर गुस्सा न हों, मालिक! मैं तो आपका एक मामूली ताबेदार हूँ। सैनिक उस स्थल पर आकर रुक गए जहाँ रास्ता फैल जाता है। कारवां भी वहीं रुका है। हमारे सैनिक कहते हैं कि सियातांग क्यों जाएँ? वहाँ अब क्या रखा है? लूट के माल का जहाँ तक सम्बन्ध है, उसे यखवार पहुँच कर भी तक्सीम किया जा सकता है!"

"मिरज़ाहूर ने यह सुना तो चौंक उठा। कुछ कहना चाहता था, मगर अज़ीज़खान ने कहने नहीं दिया:

"चुप रहो, बेकार बीच में टाँग न अड़ाओ! हाँ तो रिसालदार के टट्टू, तुझे और क्या कहना है?"

"कुछ सैनिकों ने घोड़ों पर लदे सामान पर अपना कब्ज़ा जमा लिया है। अगर कोई पास जाता है तो गोली चलाने की धमकी देते हैं।"

"यह बात है!" अजीजखान ने कहा और गुस्से में बुरी तरह काँपने लगा, "रिसालदार से कहना कि जो यहाँ आने से इंकार करे उसे वहीं गोली से ठंडा कर के नदी में बहा दे!"

कुछ रुक कर उसने फिर पूछा।

"बन्दी कहाँ है?"

"बन्दी...मेरे मालिक, गुस्सा न होना, मैं एक हरकारा हूँ, और मैंने कोई गुनाह नहीं किया है। बन्दियों को उन्होंने मार डाला!"

"और डाक्टर?" अज़ीज़खान का हाथ पेटी से लटके

पिस्तौल पर पहुँच गया।

"डाक्टर को भी खत्म कर दिया। उसके रोने-झींकने और भिन-भिनाने से सभी तंग आ गए थे। पहले उसके कंधे पर तलवार से वार किया, फिर उसकी बाहें मरोड़ डालीं और सीने में बर्छी घोंप दी। वह मोटे सूअर की भाँति मुलायम था और उसी की भाँति चिंघाड़ने लगा। अन्त में उसकी लाश को नदी में फेंक दिया!"

अजीजखान के मुँह से एक लम्बी आह निकली, मानो उसका घाव अच्छा करने वाला मसीहा मार डाला गया। फिर उफन कर बोला, "रिसालदार से कहना कि डाक्टर को मारने में जिन लोगों का हाथ था उनकी मुश्कें कस कर यहां लाए। डाक्टर मेरे लिए था, मेरे लिए, समझे, वह मेरे घाव अच्छे करता। लेकिन हरामी कुत्तों ने उसे मार डाला। जा, दफा हो यहाँ से!"

और उसने सड़ाक-से हरकारे की टाँगों में हण्टर रसीद कर दिया।

हरकारा अँधेरे में विलीन हो गया।

आखिर एक हरकारे ने आकर सूचना दी कि कारवां आ रहा है। कुछ देर बाद घोड़ों की टापों की आवाज़ सुनाई दी। ये रिसालदार के घोड़सवारों की आवाज़ थी जो सामान से लदे घोड़ों को घेर-घेर कर ला रहे थे।

अजीज़खान ने किसी से कुछ नहीं कहा। वह रिसालदार से भी नहीं बोला। उसने अपना घोड़ा लाने का आदेश दिया और उस पर सवार होकर गाँव की ओर चल दिया।

कारवाँ भी चुपचाप उसका अनुसरण करने लगा।

: ५ :

बसमाची लुटेरे थे। उनका अनुशासन तभी तक था जब तक लूट का माल हाथ नहीं आता था। इसके बाद वे खुदमुख्तयार हो जाते थे।

अब भी यही हुआ। तंग रास्ते के बाद बंजर पथरीली भूमि के आते ही वे बिखर गए और माल लदे घोड़ों को उन्होंने इस तरह कुदाना-

भगाना शुरू किया कि बण्डल नीचे गिर जाते और उनका सामान बिखर जाता। बसमाची गिद्ध की भाँति बिखरे माल पर टूटते, और सभी कुछ दबोचने की कोशिश करते।

रिसालदार जब उन्हें काबू में नहीं कर सका तो अज़ीज़खान उसकी मदद के लिए लपका।

"जहन्नुमी कुत्तो!" वह गुस्से में चिल्लाया, "यह क्या करते हो? तुम्हारा इनाम क्या कहीं भागा जाता है? सच तो यह है कि तुम्हें कुछ नहीं मिलना चाहिए!"

"इनाम कैसा?" किसी की मुँह ज़ोर आवाज़ आई, "क्या तुम हमें बख्शीश दोगे? कारवाँ हमने अपने हाथों से लूटा है, और अपने हाथों से ही जो हम चाहेंगे लेंगे।"

"यह किस की आवाज़ है?" अज़ीज़खान चिल्लाया, "सामने आकर क्यों नहीं बोलता? क्या तुम इतना भी नहीं जानते कि लूट का माल कायदे से तकसीम होना चाहिए? क्या पीर को कुछ नहीं दोगे? क्या सौदागर हाथ मलता रह जाएगा, जिस ने यखबार में तुम्हारा दोजख भरा? क्या तुम्हें खुदा का डर नहीं है? क्या तुम मेरे शब्दों में विश्वास नहीं करते? मैं कहता हूँ, चुपचाप मेरे पीछे-पीछे चले आओ। रिसालदार, दस ईमानदार आदमियों को चुनो और सारा सामान अपने साथ लेकर आओ। दुर्ग पहुँचने पर उसे तकसीम किया जाएगा।"

बसमाचियों ने आपस में सलाह की और अन्त में अज़ीज़खान की बात मानने का निश्चय किया।

कारवाँ दुर्ग के मैदान में पहुँच गया। रिसालदार और नौरोज़बेग गाँव में गए और झाड़ियाँ बटोरने के लिए दर्रे के निवासियों को उनके घरों से बाहर खदेड़ दिया। जब झाड़ियाँ जमा हो गईं तो उन्हें जलाया गया और उनकी रोशनी में लूट का माल खोला और देखा जाने लगा।

बसमाची ललचाई आँखों से लूट का माल देख रहे थे। सामने ही एक कालीन पर अज़ीज़खान, मिरज़ाहूर, नौरोज़बेग, जिगर, सैयद और

मीर आदि बैठे थे। बोबोकलाँ भी खैमे से बाहर निकल आया और अज़ीज़खान के पास बैठ गया। केन्दितरी कुछ अलग एक चट्टान पर बैठा सारी कार्रवाई देख रहा था।

सामान काफी था। बण्डलों और पेटियों को खोलने में इतनी देर लगी कि अज़ीज़खान की आँखें झपकने लगीं और दर्रे के निवासी, जो झाड़ियाँ बटोर कर लाए, उनकी आग बुझ चली। रिसालदार ने फिर दस आदमियों को गाँव में दौड़ाया, लेकिन खाली हाथ लौट आए। बोले, "गाँव में कुछ नहीं है। बगीचे में से शहतूत के पेड़ काटने होंगे।"

"ज़रा नज़र उठा कर देखो, सामने ही लकड़ी मौजूद है!" नौरोज़बेग ने खान के गटर की ओर इशारा करते हुए कहा, "गटर के तख्ते जब मौजूद हैं तो दूर जाने की क्या जरूरत है?"

लकड़ी पाने का यह सब से आसान तरीका था। कुछ बसमार्ची उधर लपके। तभी बोबोकलाँ खड़ा हो गया और भौहों में बल डाल कर बोला।

"यह नहीं होगा। इस नहर को मेरे दादा ने बनवाया था। मैं इसे नहीं तोड़ने दूँगा।"

अज़ीज़खान तेज़ी से घूम गया। बोला, "जाओ, तख्ते उखाड़ लाओ!"

बोबोकलाँ ने अपना होंठ काटा और वहाँ से चल दिया। वह बुर्जी के पीछे गायब होना ही चाहता था कि मरियम की लाश देख कर चौंक उठा, जो अंधेरे में झूल रही थी। वह मुड़ा और दूसरी दिशा में चल दिया। तख्ते उखाड़ने की आवाज़ उसके हृदय पर हथौड़ों की चोटों की भाँति पड़ रही थी।

उसे ऐसा मालूम हुआ मानो नहर के साथ उसके समूचे जीवन को नष्ट किया जा रहा हो, मानो अज़ीज़खान खुद उसे और उसके पूर्वजों को पाँव तले रौंद रहा हो। उसे उन हमलों की याद आई जो यखबारियों ने, अज़ीज़खान के पूर्वजों ने, सियातांग पर किए थे, और उसका हृदय मसोस उठा।

बोबोकलाँ को यह नहर जान से भी ज्यादा प्यारी थी। इसके लिए वह अपना, और दूसरों का भी, जीवन कुरबान कर सकता था, खून की नदियाँ बहा सकता था।

निराशा और घृणा से उसका हृदय भर गया। एक पत्थर पर बैठ कर उसने अपने दोनों हाथों से कानों को बंद कर लिया और एक टक, बिना पलक झपकाए, नहर की ओर देखने लगा।

बोबोकलाँ ने देखा कि मिरज़ाहूर और खलीफा, आमने-सामने खड़े, किसी चीज़ को लेकर बुरी तरह झगड़ रहे हैं। खलीफा कह रहा था, "यह खुदा की सम्पत्ति है," और मिरज़ाहूर कह रहा था, "नहीं, यह मेरी सम्पत्ति है।"

सहसा, कहीं दूर से, भयानक चीखों की आवाज़ आई। बोबोकलाँ चौकन्ना हो गया। कान लगा कर सुना। उसका हृदय काँप उठा।

यह स्त्रियों के चीखने की आवाज़ थी, जो गाँव से आ रही थीं। एक ऐसी आवाज़ जो हृदय पर गहरा आघात होने के समय ही निकलती है।

बोबोकलाँ उठ कर खड़ा हो गया। दुर्ग की दीवार के पास गया और खण्डहरों पर पाँव रखता हुआ ऊपर चढ़ गया। नीचे गांव दिखाई दे रहा था। बोबोकलां ने देखा कि घरों की छतों पर रखे पूलों में आग लगी है। चाँद की रोशनी में आदमी एक भी नहीं दिखाई दिया। केवल चीखों की आवाज़ आ रही थी।

बोबोकलाँ को समझने में देर नहीं लगी। अज़ीज़खान के सैनिक लूट का माल हासिल करने के बाद अब स्त्रियों की इज्ज़त लूटने में जुटे हैं।

तभी एक घोड़सवार आया। यह रिसालदार का आदमी था। बोबोकलाँ के सामने से गुज़रता हुआ अज़ीज़खान के पास पहुँचा। बोला,

"ऐ मालिक, हमारे छै सैनिक गाँव की स्त्रियों को ज़बर्दस्ती घोड़ों पर लाद कर यखबार भाग गए। उन्हें बहुत रोका, लेकिन उन्होंने किसी की नहीं सुनी।"

कुछ क्षण अज़ीज़खान चुप रहा। फिर रिसालदार की ओर मुड़ा

और उफन कर बोला, "तुम यहाँ बैठे क्या कर रहे हो ? अपने सैनिकों पर नज़र क्यों नहीं रखते ? लूट का माल और स्त्रियों को लेकर वे भाग रहे हैं और तुम्हें कुछ पता नहीं ? यह गद्दारी नहीं तो और क्या है ?"

कुछ चुने हुए ईमानदार सैनिकों को बटोर कर रिसालदार चल दिया।

बोबोकलाँ दीवार पर से नीचे उतर आया। उसका हाथ उसके सीने पर रखा था, मानो अपने हृदय की धड़कन को शान्त करने का प्रयत्न कर रहा हो। रास्ते में उसे दर्रे के दो निवासी दिखाई दिए। वे हांफ रहे थे। बोबोकलां उन से बच कर निकल जाना चाहता था, लेकिन यह सम्भव नहीं हुआ। वे आए और उन्होंने उसके पाँव पकड़ लिए।

यह यूसुफ और अली मोहम्मद थे, उसके अनुयायी और शरीयत के मानने वाले।

"हम तबाह हो गए, मालिक !" अली मोहम्मद ने हांफते हुए कहा, "मुजाहिदे दीन-ईमान न होकर ये लोग भेड़िए हैं। हम काफिर नहीं थे, लेकिन उन्होंने हमें भी नहीं बख्शा। हमें लूट लिया और हमारे घरों में आग लगा दी। दो भेड़िए मेरी लड़की नफीस पर टूट पड़े, मेरी बीवी शारी-मो को पकड़ ले गए। अच्छा होता अगर गिद्ध मेरी आँखें निकाल लेते और मुझे बेइज्जती का वह नज्जारा न देखना पड़ता। यह कैसा अंधेर है, मालिक !"

एक क्षण रुक कर बोबोकलाँ झुका, अली मोहम्मद के कंधों को उसने थपथपाया, फिर बोलो—"उठो मेरे, साथ चलो !"

अली मोहम्मक और यूसुफ दोनों बोवकलाँ के साथ हो लिए। अज़ीज़खान के पास पहुँच कर वोबोकलाँ ने अली मोहम्मद को आगे कर दिया : "इन्हें अपने मुँह से सारा हाल बताओ।"

अली मोहम्मद और यूसुफ ने लम्बे पसर कर जमीन चूमी और गुहार मचाने लगे। अज़ीज़खान ने उनकी एक न सुनी। चिल्ला कर बोला :

"भाग जाओ यहाँ से ! क्या तुम्हारा अपना खान नहीं है ? उसके पास क्यों नहीं जाते ?"

यह बोबोकलाँ पर चोट थी। लेकिन उसने अपने को संभाल लिया।

"ये लोग शरीयत के सच्चे पाबन्द हैं, अज़ीज़खान," बोबोकलाँ ने कहा—"अली मोहम्मद फकीर नहीं है, बल्कि मीर तैमूर का भतीजा है।

"इस गंदगी को यहाँ से साफ़ करो।" बसमाचियों की ओर इशारा करते हुए अज़ीज़खान ने कहा।

बसमाची उठे और अली मोहम्मद की टाँग पकड़कर उसे खींचते हुए ले गए। यूसुफ को भी उन्होंने ठोकरें मार कर खदेड़ दिया। बोबोकलाँ से यह न देखा गया। झपटते हुए बोला :

"यह न भूलना अज़ीज़खान कि यहाँ मेरी हुकूमत है और तुम मेरे मेहमान हो। मेरी आँखों के सामने ही मेरी रैयत को······"

अज़ीज़खान झल्ला उठा। बीच में ही बोला :

"तुम फकीरों पर अपनी हुकूमत चला सकते हो, मुझ पर नहीं। वे तुम्हारी स्त्रियों को हज़म नहीं कर जाएँगे। मैं रिसालदार को आदेश दे चुका हूँ कि कोई भी सैनिक स्त्रियों को लेकर न भागे। लेकिन मुजाहिदे दीन अगर आज की रात उनसे दो घड़ी जी बहलाते हैं तो इसमें तुम्हारा, या उन स्त्रियों का, क्या बिगड़ जायगा ? क्या समझते हो कि वे घिस जाएँगी और फिर किसी काम न आएँगी ? या यखबारियों को गले लगाने के बाद उनके पेट से निकम्मे बच्चे पैदा होंगें ?"

बोबोकलाँ को जैसे काठ मार गया। धीरे-धीरे उसने अपने चारों ओर देखा। फिर, प्रार्थना के अन्दाज़ में सीने पर अपने दोनों हाथों को रगड़ते हुए बोला :

"मैं जो कहता हूँ उसे सुनो। अज़ीज़खान, मैं तुमसे कहता हूँ,—तुम जो यहाँ आये हो, मेरे मेहमान बन कर आये हो और मित्रता का दावा करते हो। और सैयद तथा मीरो, तुम भी सुनो,–तुम जो अब फिर अपने देश में लौट आए हो, और चाहते हो कि सब शरीयत के पाबन्द

होकर चलें और अजीजखान को यहां लाने के लिये मैंने तुम्हारे आगे हाथ पाँव नहीं जोड़े। मेरे कहने से नहीं, अपनी मर्जी से तुम यहाँ आए और खुद तुम्हीं ने यह कहा : खान बन जाओ मैं तुम्हारी मदद करूँगा। काफिरों का तख्ता उलट जायगा, दीन की रोशनी एक बार फिर सियाताँग में दिखाई देगी, और इसके बाद मैं यखवार लौट जाऊँगा। मैंने तुम्हारा विश्वास किया, हालाँकि हमारे पूर्वज तुम्हारे पूर्वजों का कभी विश्वास नहीं करते थे, जो हमारे देश को रौंदने और गुलाम बनाने आते थे। मैंने सोचा कि जमाना बदल गया है, हमारा दीन-ईमान एक है, पुराने झगड़े राह का रोड़ा नहीं बनेंगे, मैंने तुम्हारी बात मान ली। उस वक्त भी मैं नहीं बोला जब तुमने अपना दरबार लगाया, लोगों के मुकदमे पेश हुये, उन्हें सजायें दी गयीं। मैंने सोचा कि अन्त में जीत दीन-ईमान की ही होगी, और मैं चुप रहा। लेकिन तुम आये और सियाताँग से एक ऐसी कराह उठी मानो पहाड़ियों का हृदय फट गया हो, भरभरा कर वे हमारे सीनों पर आ गिरी हों। तुमने हम सभी को एक डंडे से हाँका—काफिरों को भी और दीन-ईमान वालों को भी, भेड़िये की भाँति जो काली और सफेद भेड़ों में कोई तमीज नहीं करता। तुम केवल कारवाँ को लूटने आये, जो काफिरों के लिये माल लेकर आ रहा था। और तुम उस स्त्री को लेने आये जो तुम्हारे पास से भाग आई थी। अपनी हविस के पीछे तुमने दीन-ईमान भी भुला दिया और उस स्त्री को फांसी पर नहीं लटकने दिया। वह अभी तक जिन्दा उस बुर्जी में बंद है। मैं जानता हूँ कि तुम्हारी आँखें इस समय जहर उगल रही होंगी, चेहरा गुस्से से तमतमा रहा होगा। लेकिन मैं तुम्हारे चेहरे को नहीं, उन पहाड़ों को देख रहा हूँ जिन्हें देखते हुए मैंने अपने जीवन के पांच चक्र पार किये हैं। अब मैं उन्हें आखिरी बार देख रहा हूँ। यह कहना बेकार है कि तुम यहां से चले जाओ। तुम्हारे पास हथियार हैं और मैं जानता हूँ कि तुम यहाँ से नहीं जाओगे। लेकिन मेरा समय पूरा हो गया और अब मैं खान-वान कुछ नहीं हूँ। अगर तुम मुझे मार डालोगे

तो खुदा की मर्जी समझ कर मैं इस मौत को गले से लगाऊँगा, अगर नहीं मारोगे तो भी मैं यहाँ से चला जाऊँगा। पहाड़ मेरे सामने हैं, उन्हीं में विलीन हो जाऊँगा। मुड़ कर एक बार भी न देखूँगा। प्रत्येक डग चढ़ाई पर ही पड़ेगा, उतराई पर नहीं। बस चढ़ता ही जाऊँगा। और बादल मुझे अपनी गोद में समेट लेंगे। अगर बर्फ़ में कोई चीता मिल गया तो खुदा का दूत समझ कर मैं अपना भाग्य समझूँगा। मैं जाऊँगा और फिर कभी वापिस नहीं लौटूँगा। यही मुझे कहना है। अजीज़खान मेरे इन शब्दों का बोझ तुम्हारे कंधों को कभी सीधा नहीं होने देगा।"

बोबोकलां चुप हो गया। फिर उसने धीरे-धीरे वह चोगा उतार दिया जिसे अजीज़खान ने उसे भेंट किया था और जिसे वह अपने पुराने सियातांग चोगे के ऊपर पहने हुये था। गेंद सी बना कर उसने उसे आग की लपटों में उछाल दिया। चोगा हवा में खुल गया, उसके रूपहले और सुनहरी काम की एक झलक दिखाई दी और उसकी आस्तीनें पक्षी के परों की भाँति फड़फड़ाईं। आग में पड़ते ही चिनगारियों का एक फुहारा-सा छूटा और वह देखते-न-देखते, लपटों की भेंट चढ़ गया।

बोबों कलाँ अब फिर सीधा-सतर खड़ा था। उसके हाथ सीने पर रखे थें। धीरे-धीरे वह आगे बढ़ा। काई की भाँति फट कर बसमाचियों ने रास्ता छोड़ दिया। एक बार भी उसने मुड़ कर नहीं देखा। वह बढ़ता ही गया। पहाड़ी चरागाह का रास्ता उसने पकड़ा और अन्त में उसका सफेद चोगा, चाँदनी की परछाइयों के साथ घुल-मिल कर एकाकार हो गया।

अजीज़खान ने ज़मीन पर थूका। फिर नौरोज़ की ओर रुख किया, जो लूट का माल तक्सीम करते-करते बोबोकलाँ को देखने लगा था। बोला "रुक क्यों गये ? अपना काम जारी रखो।"

: ६ :

केन्दितरी ने रात बेचैनी से काटी। लूट के माल पर बसमाचियों,

मिरज़ाहूर और खलीफा आदि को इस तरह टूटते देख वह बुरी तरह ऊकता गया था। अज़ीज़खान का व्यवहार भी उसे अच्छा नहीं लगा था। वह जैसे सब कुछ तीन-तेरह करने पर उतारू था। केन्दितरी की नीति को न समझ सकने और दर्रे के निवासियों पर किये गए अत्याचारों की संख्या से अपनी ताकत की माप करने के कारण वह सारी योजना ही खटाई में पड़ी जा रही थी जिसे इतनी सावधानी से यखबार में तैयार किया गया था।

घटनाएँ अब एक दूसरा ही रूप धारण करती जा रही थीं। सियातांग की जनता को अपनी ओर मिला कर सोवियत सत्ता के खिलाफ उभारना तो दूर, सैयदों और मीरों तक को अब अपनी ओर मिलाना सम्भव नहीं रहा था। अज़ीज़खान की हरकतों ने, और खासतौर से बोग्रोकलां की घटना ने, उन्हें अज़ीज़खान के खिलाफ कर दिया था। ऐसी हालत में सियातांग के निवासियों को अपनी ओर करने की बात सोचना तक कठिन है। सच तो यह है कि अज़ीज़खान और उसके सैनिकों को इसकी ज़रूरत नहीं थी। लूट का माल हाथ लगने और स्त्रियों के साथ मनमानी खेलवाड़ करने के बाद वे अब घर लौटने के लिए उतावले थे। खुद अज़ीज़खान भी इस ताक में था। अगर वह भी निकल भागा तो सारा खेल ही गड़बड़ हो जाएगा।

केन्दितरी इन्हीं सब बातों के बारे में सोच रहा था। उसे भाकरा का ध्यान आया, जिसे उसने रूसी सैनिकों की ताक रखने के लिए पहाड़ों में भेज दिया था। रूसी सैनिकों के आने में अधिक से-अधिक दो दिन और लगेंगे। पहले से नियत एक ऊँची चोटी पर आग जला कर भाकरा इसकी सूचना देगा। अगली रात तक अज़ीज़खान को भी सूचित कर दिया जाएगा कि रूसी सैनिक आ रहे हैं, इस तरह मानो यह एक दम अप्रत्याशित घटना होगी। इसके बाद सियातांग दर्रे की रक्षा करने का सवाल आएगा और...

केन्दितरी को पता नहीं चला कि कब में उसे नींद आ गई। सुबह

जब उसकी आँख खुलीं तो सूरज की रोशनी सीधे उसके मुँह पर पड़ रही थी और कोई उसके कंधे पर हाथ रखे उसे धीरे से झँझोड़ रहा था।

"अरे, तुम कहाँ से टपक पड़े भाकरा !" केन्दितरी ने कहा, "तुम यहाँ कैसे ?"

"सिर झुकाता हूँ मैं उसके सामने जो पेड़-पौधों को हरा-भरा रखता है, सिर झुकाता हूँ मैं सूरज, चाँद और पाक परवर दिगार के सामने !" भाकरा ने तेज़ी से कहा। उसका दाँत-विहीन मुँह खोह की भाँति मालूम होता था। उसके गालों पर झुर्रियां पड़ी थीं और पसीने की छोटी-छोटी बूँदें ढुरक कर गिर रहीं थीं। कुछ रुक कर वह फिर बोला :

"मुझे आग जलाने का मौका नहीं मिला घोड़े से भी अधिक तेज गति से मैं आया हूँ। रूसी टुकड़ी नदी के मुहाने के निकट आ गई है।"

यह सुन कर केन्दितरी एकाएक उठ बैठा और भाकरा की ओर देखने लगा, जो घुटनों के बल सामने बैठा था।

"इतनी जल्दी ? क्या तुमने खुद अपनी आँखों से उसे देखा है ?"

"हाँ ! पिछली रात जारखोक दर्रे के अधबीच मैं पहाड़ों में छिपा बैठा था। सहसा कुछ घोड़सवार दिखाई दिए। पांच थे, अगर मैं दूसरे घोड़सवारों के प्रकट होने की इंतज़ार करता तो वे मुझसे आगे निकल जाते। अब सवाल यह था कि मैं किस प्रकार उनसे भी पहले यहाँ पहुँचूँ, इस तरह कि उन्हें पता तक न चले। मैं नदी-किनारे की ओर लपका, बकरी की खाल में हवा भरी और नदी पार करके यहाँ आ गया। इस समय वे नदी के मुहाने पर होंगे, और साँझ तक यहाँ आ जाएँगे ?"

"और कुछ ?"

"और कुछ नहीं। मुझे अब कहाँ जाना होगा ?"

"पहाड़ों में किसी ऐसी जगह जहाँ से तुम तो सब कुछ देख सको,

लेकिन तुम्हें कोई न देख सके।"

भाकरा चला गया।

घटनाएँ काफी तेज़ी से घट रही थीं। केन्दितरी का ख्याल था कि रूसी सैनिकों के आने में अभी दो-एक दिन लगेंगे, लेकिन वह पहले ही आ गए। यह अच्छा हुआ जो भाकरा ने आकर खबर दे दी। अब इधर भी तेज़ी से काम करना होगा। ऐसा न हो कि औचक में ही मारे जाएँ।

अज़ीज़खान अभी सो रहा था। उसे जगा कर केन्दितरी ने रूसी सैनिकों के आने की खबर सुनाई। सुन कर वह सन्न रह गया। अपनी काली दाढ़ी को सहलाता वह इधर-से-उधर घूमने लगा। उसके हाथ काँप रहे थे। वह इतना घबरा गया था कि केन्दितरी की बात सुनना तक उसके लिए सम्भव नहीं था। रिसालदार और उसके सैनिकों पर उसे भरोसा नहीं था और रूसी सैनिकों के आने की खबर ने उसकी रूह कब्ज कर दी थी।

"वे आये कैसे? उन्हें खबर किसने दी? अब हम क्या करें?" घबरा कर उसने कहा।

अत्यन्त विरोधी भावनाओं ने उसे घेर लिया। कभी वह कहता: 'सभी सैनिकों को जगा करके उन्हें खबर देनी चाहिए।' कभी कहता: 'नहीं इस खबर को एकदम गुप्त रखना चाहिए।'

"इस तरह घबराने से काम नहीं चलेगा, अज़ीज़खान!" केन्दितरी ने उसे समझाते हुए कहा, "राइफल से लैस सभी आदमियों को रास्ते में छिपा देना चाहिए। कुछ आदमियों को पीछे हटने का रास्ता रोकने को भेजना चाहिए। रूसी सैनिक कुल जमा में बीस-पच्चीस ही तो हैं। उनमें से एक भी जिन्दा नहीं बच पाएगा!"

"अच्छी बात है," अज़ीज़खान ने कहा, "आदमियों को तैनात करने के लिए मैं अभी रिसालदार को भेजता हूँ, तुम भी साथ चले जाना और उन्हें सलाह-मशविरा देना।"

"और तुम ?"

अजीज़खान रुक कर कुछ सोचने लगा। केन्दितरी उसके चेहरे का प्रत्येक भाव ताड़ रहा था।

"मैं जिगर के साथ यहीं रहूँगा," अजीज़खान ने कहा, "शान्त और निश्चल। इससे सभी को बल मिलेगा।"

केन्दितरी अज़ीज़ख़ान की रग-रग से वाकिफ था। वह जानता था कि यह भागने की ताक में है। मौका मिलते ही निस्सो और जिगर के साथ ज़ारखोक दर्रे से यखबार पहुँच जाएगा।

"नहीं, अज़ीज़खान, यह नहीं होगा। तुम्हें और जिगर को भी अपने सैनिकों के साथ रहना चाहिए। इससे उन्हें बहुत बल मिलेगा।"

"मैंने कह दिया कि मैं यहीं रहूँगा," अज़ीज़खान ने मुँह फुलाकर कहा और केन्दितरी की ओर से अपनी आँखें फेर लीं।

"सुनो अज़ीज़खान," केन्दितरी ने कहा, "यह साफ है कि तुम्हें अपने पर विश्वास नहीं है। लेकिन यह मूर्खता है। तुम्हारे पास सौ सैनिक और सात राइफलें हैं, जब कि वे बीस-पच्चीस ही आदमी हैं। फिर पहाड़ों में एक जवान अकेला सौ आदमियों को गिरा सकता है। तुम डरते क्यों हो ? सिर्फ एक बात का तुम ध्यान रखना, वह यह कि किसी हालत में भी मेरा भेद न खोलना। अगर तुम पकड़े गए तो किसी अन्य बड़े आदमी के बदले में तुम्हें छुड़ा लूँगा। लेकिन अगर तुमने मेरा भेद खोल दिया तो तुम न यहाँ जिन्दा रह पाओगे, न यखबार में। अगर तुम बन्दी बन गए तो रूसी तुम्हारा काम तमाम कर देंगे। अगर बन्दी नहीं बने और यखबार लौटे तो मेरे आदमी तुम्हारा काम तमाम कर देंगे।"

"तुम बहुत चतुर हो," अजीज़खान ने कहा, "लेकिन यह सन्देह तुम्हें कैसे हुआ कि मैं तुम्हारा भेद खोल दूँगा ? क्या अन्य लोग ऐसा नहीं कर सकते ?"

"अन्य कौन ? रिसालदार ? खलीफा ? तुमसे मैंने जो कहा है,

वही उनसे भी कह देना।"

"और सौदागर? नौरोज़बेग?"

"उनकी तुम चिन्ता न करो। उन्हें मैं खुद सुलट लूँगा। इस वक्त सबसे बड़ी बात यह है डर और दुविधा दूर कर तुम अपने सैनिकों में जोश भरो। जाओ, और सबको ठीक जगहों पर तैनात कर दो। कुछ देर बाद मैं भी आ जाऊँगा और तुम्हारे बन्दोबस्त की दाद दूँगा। जो हो, यह निश्चित है कि रात होने तक एक रूसी सैनिक भी ज़िन्दा नहीं बचेगा।"

अज़ीज़खान ने अब और कोई आपत्ति नहीं की। एक बात उसके सामने साफ थी। वह यह कि केन्दितरी उसे आसानी से भागने नहीं देगा।

वह अपने सैनिकों को जगाने आगे बढ़ा। लेकिन केन्दितरी ने उसे रोक दिया :

"अभी ठहरो, अज़ीज़खान! पहिले एक दूसरा काम करो। अपना घोड़ा पकड़ो और रिसालदार को बुला लाओ।"

"क्यों?"

"इसलिए कि पहले हम तीनों का आपस में बातें कर लेना अच्छा होगा।"

"लेकिन इसके लिए खान के जाने की क्या जरूरत है? क्या हलकारा भेजकर काम नहीं हो सकता?"

"नहीं, अज़ीज़खान!" केन्दितरी ने कहा, "सब लोग सो रहे हैं। उन्हें सोने दो। इससे पहिले कि किसी कान में कुछ भनक पड़े, आपस में सब कुछ तय कर लेना ज़रूरी है। और इसमें बुराई भी क्या है? खुद जाकर अपनी आँखों से अपने मातहतों की जाँच करना क्या कोई हेठा काम है?"

खान के चले जाने के बाद केन्दितरी ने अपने चारों ओर नजर डाली और उन दो पहरेदारों को ध्यान से देखा जो बुर्जी के दरवाजे पर

अपनी राइफलों पर सिर झुकाए ऊँघ रहे थे। फिर उसने समूचे अहाते का चक्कर लगाया। सभी गहरी नींद में सो रहे थे।

बुर्जी के पीछे पत्थरों का एक ढेर पड़ा था। केन्दितरी ने एक पत्थर के कगारे पर खड़े होकर हाथ से इशारा किया। तभी झाकरा वहां से प्रकट हुआ और भागता हुआ उसके पास आ गया।

"तुम यहाँ खड़े रहो। आंख-कान से चौकन्ने रहना। अगर उन दोनों में से कोई जागे तो उसका गला काट डालना। किसी तरह आवाज़ न करना!" केन्दितरी ने कहा और इस्पात का अपना बड़ा-सा उस्तुरा उसे थमा दिया।

केन्दितरी चुपचाप बुर्जी के पास पहुँचा। कुन्दे से अटकी रस्सी खोल डाली और दरवाज़ा खोल कर जल्दी से भीतर चला गया।

निस्सो अधबेहोशी की हालत में फर्श पर पड़ी थी। उसके हाथ और पांव बंधे हुए थे। एकाएक बुर्जी में सूरज की रोशनी आने पर वह चौंक उठी और एक कराह के साथ उसने अपनी आंखें खोलीं। केन्दितरी उसके पास खिसक गया और उसके मुँह पर अपना हाथ रखते हुए बोला:

"मैं हूँ, केन्दितरी। देखो, शोर न करना। सब सोरहे हैं। तुम अज़ीज़खान के चंगुल में न पड़ो, इसलिए तुम्हें किसी दूसरी जगह छिपा देना चाहता हूँ।"

निस्सो ने फटी हुई भयभीत आँखों से केन्दितरी की ओर देखा। एकाएक उसकी समझ में नहीं आया कि वह क्या कह रहा है। कई दिन से वह इस बुर्जी में बन्द पड़ी थी। बुर्जी की दीवारों से बाहर क्या हो रहा है, इसका उसे कुछ पता नहीं था। बाहर की रोशनी तक उसके पास नहीं फटक पाती थी। वह अँधेरे में ताका करती और मरियम का भयानक चेहरा उसकी आँखों के सामने घूमता रहता। उसे ऐसा मालूम होता मानो उसके गले में भी फाँसी का फंदा पड़ा हो। उसका दम घुटने लगता और वह बेसुध-सी हो जाती।

केन्दितरी ने अपनी बात को फिर दोहराया। अन्त में निस्सो को अपनी बाँहों में उठाकर बाहर ले आया। फिर भाकरा को अपने पास बुला कर बोला :

"डरना नहीं। सब सोरहे हैं। भेड़ों के बाड़े के पीछे अनाज भरने के बड़े-बड़े गढ़े हैं। उन्हीं में से एक में इसे छिपा देना और ऊपर पत्थर ढ़क देना।"

केन्दितरी ने अपने चारों ओर चौकन्नी नज़र से देखा। फिर उसी स्थल पर चला आया जहां उसने अज़ीज़खान को रिसालदार के लिए रवाना किया था।

कुछ देर बाद ही अजीज़खान और रिसालदार दोनों आगए। केन्दितरी उठ कर आगे बढ़ा और अजीजखान को सहारा देकर घोड़े से उतारा। फिर रिसालदार से कहा :

"अज़ीज़खान ने तुम्हें सारी बातें बता ही दी होंगी।"

"हाँ," रिसालदार ने कहा। रात के जागने और थकान के कारण उसका चेहरा भारी मालूम होता था।

"तुम्हारी क्या राय है ?"

"मुझे तो यही कहना है, या तो मारे जाओ, या भाग निकलो !"

"ये दोनों एक साथ भी तो हो सकते हैं !" कुन्दितरी ने हँसते हुए कहा, "लेकिन मैं नहीं समझता कि तुम या अज़ीज़खान ऐसी हरकत करोगे, क्यों ठीक है न ?"

दोनों में से किसी ने जवाब नहीं दिया।

केन्दितरी ने कुछ रुक कर फिर कहा, "तुम्हें मेरा शुक्र गुज़ार होना चाहिए, रिसालदार ! अगर मैं न होता तो जिगर और निस्सो को लेकर अज़ीज़खान पहाड़ों में गायब हो गया होता, और तुम और तुम्हारे सैनिक यहीं अपने भाग्य को कोसते होते। लेकिन मैंने उसे ऐसा करने से मना किया। क्यों, मैं ठीक कह रहा हूँ न, मेरे प्यारे खान ?"

"जो जीतेजी जितना हँसता है, मरने के समय उसे उतना ही रोना

पड़ता है," अज़ीज़खान ने अपने गुस्से को दबाते हुए कहा : "हाँ तो अब हमें क्या विचार करना है ?"

"नाराज़ न होना, मेरे खान !" केन्दितरी ने कहा, "मैंने अपना विचार बदल दिया है। हर चीज़ अब मेरे दिमाग में साफ है। कोई बात-चीत करने की जरूरत नहीं। बस, अपने आदमियों को जगा दो !"

अपने घोड़े की रास रिसालदार के हाथों में पटक के अज़ीज़खान एकाएक तम्बू के भीतर चला गया। रिसालदार ने बसमाचियों को जगा दिया। कुछ देर काफ़ी हल्ला-गुल्ला और हलचल रही। जब सब बसमाची घोड़ों पर सवार होगए तो अज़ीज़खान ने जिगर को आदेश दिया कि अपने साथ दो सैनिक ले जाए और बुर्जी में बन्द निस्सो को भी ले आए। उसने निश्चय किया था कि निस्सो को अपने साथ ही रखेगा, यहाँ अकेला नहीं छोड़ेगा। लेकिन निस्सो बुर्जी में नहीं थी। जब जिगर ने उसके गायब होने की सूचना दी तो अज़ीज़खान आगबगूला हो गया। केन्दितरी ने अज़ीज़खान के अनेक रूप देखे थे, लेकिन उसका गुस्सा किस हद तक आगे बढ़ सकता है, यह उसने पहली बार देखा। झाग उगलते हुए उसने बुर्जी के एक बूढ़े पहरेदार के चेहरे पर इतने जोरों से हण्टर मारा कि वह बिलबिला कर गिर पड़ा, फिर उस पर थूका और ठोकरों तथा गालियों की बौछार से ज़मीन-आसमान एक कर दिया। दूसरा पहरेदार इस मारधाड़ में नज़र बचा कर खिसक गया।

"पकड़ कर लाओ उसे !" अन्त में वह ज़ोरों से चिलाया : "एक-एक पहाड़ छान डालो। जहाँ भी हो, टाँग पकड़ कर खींच लाओ। उस हरजाई का अपने हाथ से काम-तमाम किए बिना मैं यहाँ से एक डग नहीं हिलाऊँगा।"

रिसालदार ने अपनी रकाब में पाँव डाला और अपनी तलवार ऊँची उठाते हुए बोला :

"हम उसकी खोज ही करते रहेंगे, और लाल सैनिक यहाँ आकर हमारा मलीदा बना देंगे। अपने-अपने घोड़ों को एड़ लगाओ,

सैनिको !"

रिसालदार तेज़ी से आगे बढ़ गया । अन्य बसमाची भी उसके पीछे-पीछे लपके ।

अजीज़खान अहाते में अकेला रह गया, एक दम खोया हुआ सा । केन्दितरी उसके घोड़े को लिए हुए सामने आ खड़ा हुआ ।

एकाएक, गुस्से में बल खाकर, वह केन्दितरी की ओर झपटा और उसके कंधों को झँझोड़ते हुए बोला :

"तुम······क्या तुमने ही······"

अजीज़खान की आँखों से खून बरस रहा था ।

केन्दितरी ने घोड़े की रास छोड़ दी । अजीज़खान के हाथों को अपने कन्धों से हटाया । फिर एक डग पीछे हट कर अपने चोगे के पाट लापर्वाही से खोले और उसकी पेटी में कसा हुआ नया आटोमैटिक पिस्तौल दिखाई देने लगा ।

इसके बाद, पिस्तौल के घोड़े पर अपनी उँगली रखे हुए, निश्चल आवाज़ में बोला ।

"इस तरह उल्टाँग होने में कोई तुक नहीं है । रूसियों का सफाया करने और उनके एक एक आदमी को ठिकाने लगाने के बाद तुम्हारी निस्सो तुम्हें मिल जाएगी । मैंने उसे इस लिए छिपा दिया है कि वह तुम्हारे दिल व दिमाग पर छाई रहती और तुम रूसियों से जम कर लोहा न ले पाते । बाद में चाहे जो करना, निस्सो पर तुम्हारा पूरा अधिकार होगा । मैं तुम्हें वचन देता हूँ कि उसका बाल तक बाँका न होगा । गुस्से में इतना पागल न बनो, और उसे खोजने की भी कोशिश न करना, क्यों कि तुम उसे कभी नहीं पा सकोगे ।"

'तुम पूरे शैतान हो !" अजीज़खान फुंकार उठा । केन्दितरी की आँखों में एक चमक सी दौड़ गई । हँसते हुए बोला :

'अपनी ज़बान खराब न करो, खान ! मैं तुम्हारा मित्र हूँ, और सदा मित्र ही रहूँगा । अब जल्दी करो, घोड़ा इतनी देर से तुम्हारा

इन्तज़ार कर रहा है।"

अज़ीज़खान होंठ काटते हुए घोड़े पर सवार हो गया और अपना सारा गुस्सा बेज़बान जानवर पर उतारा। इतनी ज़ोरों से उसके हन्टर रसीद किया कि वह बिलबिला कर हवा हो गया।

केन्दितरी होठों पर मुसकराहट लिए उसे दूर होते हुए देखता रहा।

तम्बू के सामने बिछे कालीनों पर सैयद और मीर बैठे फुसफुसा रहे थे। मिरज़ाहूर सामान के चारों ओर मंडरा रहा था। नौरोज़बेग अपने सूखे होटों को चबाता हुआ केन्दितरी की ओर देख रहा था। बुर्जी के सामने पहरेदार का शरीर पड़ा था, जिसे अज़ीज़खान ने इतना मारा था कि उसकी जान निकल गई थी। एक काले गिद्ध ने रस्से से लटकी मरियम के कन्धों में अपने पंजे गड़ा दिए थे। जब वह चोंच मारता था तो उसका शरीर झटका खाकर हिल उठता था।

पहाड़ों की ऊँची चोटियाँ आसमान से कानाफूँसी कर रही थीं। एक चोटी पर श्वेत्सोव खड़ा था और अपनी शक्तिशाली दूरबीन से गाँव की ओर देख रहा था। बीच-बीच में वह खुदादाद के हाथों में भी अपनी दूरबीन थमा देता था। जो उसके पास ही ज़मीन से चिपटा हुआ था।

ग्यारहवाँ परिच्छेद

: १ :

थोड़ी देर के लिए शो-पीर आँखें खोलता और फिर बन्द कर लेता। सुध आने पर उसके सारे शरीर में फुरहरी-सी दौड़ जाती और उसे गहरी ठण्ड मालूम होती। पहाड़ों की दरार में से सुबह के सूरज की किरनें आ रही थीं, लेकिन वे उसके शरीर को गरमा नहीं पा रही थी। पत्थर पर वह पड़ा था और उसका खुरदरापन उसके घायल शरीर को चैन नहीं लेने देता था।

वह अकेला पड़ा था। मदद की खोज में काराशिर गांव की ओर चल दिया था और स्त्रियां, थोड़ी ही दूर, चट्टानों के पीछे छिपी रास्ते की निगरानी कर रही थीं। एक के बाद कई बसमाची महानदी की ओर घोड़ों पर भागते हुए सामने से गुजर गए। शो-पीर जैसे कपड़े पहने घोड़सवार उनका पीछा कर रहे थे और अपनी बन्दूकों से गोलियां छोड़ रहे थे।

कुछ देर तक गोलियां चलने की आवज आती रही। फिर कुछ सैनिक वापिस लौटते हुए नजर आए। वे घोड़ों पर सवार थे। इसके बाद कुछ और सैनिक जो बसमाचियों के एक दल को हांकते हुए ला रहे थे। उनके हाथ कमर के पीछे बंधे थे और वे पैदल चल रहे थे।

शोखबगोर ने यह सब देखा और पहाड़ी से उतर कर शो-पीर के पास पहुँच गई। जब शो-पीर की आँखें खुलीं थीं तो उसने जो कुछ देखा था, वह सब बता दिया।

शो-पीर केवल इतना ही समझ सका कि लाल सैनिक दर्रे मे आ गए हैं। काराशिर पहले ही गांव की ओर चला गया था। कोई-न-कोई मदद अब आती ही होगी। पहली बार आशा का उसने अनुभव किया और इसके बाद फिर उसकी आँखों के आगे अंधेरा छा गया, कई घंटों

तक वह बेसुध पड़ा रहा।

काराशिर डाक्टर मैक्सीमोव को साथ लेकर लौटा। उस समय भी शो-पीर बेसुध पड़ा था।

डाक्टर ठिगने कद का बहुत ही चपल और फुर्तीला आदमी था। आते ही उसने अपना कोट उतार डाला, शो-पीर के ऊपर झुक कर उसके हृदय की धड़कन सुनी, नब्ज की गति देखी, कंधे के घाव और टूटी बाँह का मुआइना किया। फिर अपना दवाई का बक्सा खोल कर पट्टियां आदि बाहर निकाल कर पत्थर पर रख दीं।

काराशिर पास में ही बैठा डाक्टर की प्रत्येक हरकत देख रहा था। अपने हाथ में वह टूटी हुई बर्छी लिए था। जिसे मरे हुए बसमाची के हाथ से उसने छीना था। उसके पीछे दोनों स्त्रियां खड़ी थीं।

सहसा कुछ शोर सुन कर काराशिर उठ खड़ा हुआ। उसने अपनी खाली राइफल उठाई जो उसे झाड़ी में उलझी हुई मिली थी और जिसे दो दिन से एक क्षण के लिए भी उसने अपने से अलग नहीं किया था।

उसने देखा कि तीन लाल सैनिक गाँव की ओर अपने घोड़ों का मुँह किए चले जारहे थे। उनके आगे-आगे बसमाचियों की एक लम्बी कतार थी जो एक ही रस्सी में बंधी हुई थी। जब वे गुजर गए तो वह फिर मैक्सीमोव के पास चला आया और इशारे से जताया कि सब ठीक है, अपना काम किए जाओ।

टूटी हुई हड्डी को हाथ लगाते ही शो-पीर कराह उठा। लेकिन डाक्टर अपना काम करता रहा। अन्त में बोला :

"दुःख-दर्द की पर्वाह न करो। बड़ी बात यह है कि तुम जीवित हो और जीवित रहोगे। तुम्हारे जैसे हट्टे-कट्टे आदमी के सामने मौत भी आती हुई घबराती है!"

शो-पीर के होंठ सूख गए थे। उसने पानी के लिए इशारा किया। पानी पी कर वह कुछ सचेत हुआ। बोला :

"तुम...तुम कहाँ से आए..."

"ज्यादा बोलो नहीं, बस चुपचाप सुनते रहो। मैं वोलोस्त से आया हूँ, श्वेत्सोव के कमान से। जारखोक नदी के पास हमें तुम्हारा एक आदमी मिल गया। उसने रास्ता दिखाया, और जारखोक दर्रे से होकर... !"

"बन्द...बर्फ... !" शो-पीर ने कहा और फिर दर्द से कराह उठा।

"हाँ, दर्रा बन्द है। लेकिन इस से क्या, जहाँ पहाड़ी बकरी पहुँच सकती है, वहाँ हम भी पहुँच सकते हैं। बसमाचियों को सपने में भी उम्मीद नहीं थी कि हम इस रास्ते आएंगे। जैसे ही वे दर्रे के लिए रवाना हुए, हम नीचे गाँव में उतर आए और आगे बढ़कर रास्ता बन्द कर दिया। हमारे पाँच साथी महानदी वाले दूसरे छोर पर रास्ता रोके थे। सो वे न आगे जा सकते थे, न पीछे हट सकते थे। उनका सफाया करने में देर नहीं लगी। कुछ ने नदी में कूद कर जान दे दी, और कुछ पहाड़ों पर चढ़ कर भागने की कोशिश करने लगे। लेकिन एकाध ही इस में सफल हुआ होगा। जो हो, अब हम उन्हें बीन-बीन कर पकड़ रहे हैं।"

"और अजीज़खान ?"

"अजीज़खान ?, बसमाचियों का सिरताज ?" मैक्सीमोव ने कहा और काराशिर की ओर एक नज़र देखते हुए बोला : "इसकी बदौलत हमने उसे भी जिन्दा ही गिरफ़्तार कर लिया है !"

"निस्सो...बख्तियार...मरियम...गुलरोज ?" शो-पीर ने साफ़ बोलने का प्रयत्न करते हुए कहा।

मैक्सीमोव झुँझला उठा।

"तुमसे मैंने कहा न कि चुप रहो। तुम्हें मेरा आदेश मानना होगा। सबके सब ठीक हैं, समझे !"

शो पीर ने फिर अपनी आँखें बन्द करलीं और वह बेसुध हो गया।

आध घण्टे अपने कोट की आस्तीनों में दो बांस डाल कर डाक्टर ने 'स्ट्रैचर' बनाया और शो-पीर को उस पर डाल कर गाँव की ओर ले

चले। जब वे उस स्थल पर पहुँचे, जहाँ पड़ाव डालकर अज़ीज़खान ने कारवाँ के लूटे जाने की प्रतीक्षा की थी, तो काराशिर ने एक सकरी पगडंडी की ओर इशारा किया जो एक नोक-नुकीली पहाड़ी तक जाता था। बोला :

"यही वह जगह है जहाँ मैंने उसे पकड़ा था !"

"किसे पकड़ा था ?" शोखबगोर ने पूछा।

"अज़ीज़खान को, और किसे ?" काराशिर ने गर्व से कहा, "अकेले मैंने, काराशिर ने, खान को गिरफ्तार किया। वे तीन थे, खान, खलीफा और एक लड़का। बचने का रास्ता नहीं था। आगे भी लाल सैनिक थे और पीछे भी। जान बचा कर भागे और यहाँ आ छिपे। उन्हें क्या पता था कि यहाँ मैं मौजूद हूँ। वह चोटी है न, मैं वहाँ एक चट्टान के पीछे बैठा था। मैं वहाँ क्यों बैठा था ? इसलिए कि मुझे गाँव पहुँचना था। रास्ता बसमाचियों ने घेर रखा था। सो मैंने सोचा कि मैं चोटियों को लांघता-फांदता चला जाऊँगा। नीचे लड़ाई हो रही थी। ऊँचे से सब दिखाई देता था। तीन यखबारी घोड़ों पर सवार थे। और लाल सैनिक पीछे से आरहे थे। यखबारी सैनिकों की नज़र से बचे थे। सच जानो, शोखबगोर, मुझे सपने में भी ख्याल नहीं था कि वह खुद अज़ीज़खान था। उसने अपना घोड़ा छोड़ दिया। उसके अन्य दो साथी भी अपने घोड़ों से उतर आए। घोड़ों पर उन्होंने गोली चलाई और वे नदी में जा गिरे। फिर तीनों उसी पहाड़ी पर चढ़ने लगे जिसकी चोटी पर मैं बैठा था। अरे बाप रे, मेरी तो सिट्टी गुम हो गई। हाथ में तलवार और छोटी-छोटी बन्दूकें लिए ठीक मेरी सीध में ही वे आ रहे थे। एकाएक मुझे अपनी बन्दूक का ध्यान आया। बन्दूक में कारतूस-वारतूस कुछ नहीं थे। लेकिन मैंने इसकी पर्वाह नहीं की कि खाली है या भरी। फिर वे भी तो घबराए हुए थे। मैं खाली बन्दूक ताने जमा रहा। तभी लाल सैनिक भी सामने आ गए। मैं चिल्लाया, "ऐइ-यो ! ऐइ-यो !"

अब अज़ीज़खान पर उनकी नज़र पड़ी। मैंने मन में सोचा : काराशिर, इस दुनियां में जन्म लेकर तूने कुछ नहीं किया। अब मौका है। कौन जाने, इस भेड़िये का शिकार करना तेरे जैसी भेड़ के भाग्य में ही बदा हो। गोलियाँ चलने लगीं। ऊपर से अज़ीज़खान, खलीफा और वह लड़का गोली चला रहे थे, और नीचे से लाल सैनिक धुँआधार मचाए थे। गोलियाँ सनसनाती हुई मेरे कान के पास से निकल जाती थीं। मैंने भी सोचा : गोलियाँ अपने आदमी को पहचानती हैं। उसका बाल-बाँका नहीं करेंगी। अज़ीज़खान पसीने में तर था। अपने भारी लबादे को उतार-उतार कर फेंकने लगा। पहले एक चोगा उतारा, फिर दूसरा, फिर तीसरा और फिर अपनी पगड़ी भी उतार कर फेंक दी। अगर मेरी बन्दूक पर उसकी नज़र पड़ गई होती तो शायद वह बिल्कुल ही नंगा हो जाता, अपने बदन पर एक भी कपड़ा न रहने देता। मेरी बन्दूक ठीक उसके चेहरे की सीध मे तनी थी। उसे क्या मालूम था कि बन्दूक खाली है या भरी? अपनी यह छोटी बन्दूक फेंक दो, मैं चिल्लाया। अपनीतलवार फेंक दी, मैंने कहा। और उसने दोनों को फेंक दिया। खलीफा ने भी ऐसा ही किया। लेकिन लड़के ने अपनी बन्दूक नहीं फेंकी। तभी अज़ीज़खान ने उसके ऐसा घूँसा रसीद किया कि उसकी बन्दूक भी नीचे जा गिरी। अब वे पाला-मारे पेड़ की भाँति नँगे-बूचे खड़े थे। फिर क्या था, लाल सैनिक ऊपर चढ़ आए और उन्हें गिरफ्तार कर लिया। वे मुझे भी पकड़ना चाहते थे। उन्होंने समझा कि मैं बसमाची हूँ। तभी खुदादाद भी घोड़े पर सवार उधर आ निकला। उसने जब बताया तो सब खूब हँसे और लाल सैनिकों के सरदार ने मेरा चुम्मा लिया। देखो, इस तरह उसने मेरा मुंह चूमा, यहाँ इस जगह!"

काराशिर ने अपनी बन्दूक को कंधे से उतारा और बड़े प्यार से दोनों हाथों में लेकर उसे चूमा। फिर उसने गुनगुनाना शुरू किया :

भेड़ ने किया शिकार,
जंगली भेड़िये का!

काराशिर का उल्लास, जीवन में शायद पहली बार, गीत बन कर फूट निकला। वह गाता भी जाता था और साथ-ही-साथ गीत की रचना भी करता जाता था।

: २ :

इससे पहले कि बसमाची बख्तियार का घर नष्ट करते, उन्हें खुद अपनी जान के लाले पड़ गए। श्वेत्सोव ने निस्सो के कमरे में अपना अड्डा जमाया और घर का बाकी हिस्सा अस्पताल बना दिया गया। अनाज के गढ़े में से निकाले जाने के बाद निस्सो तेज बुखार और सरस्याम के चंगुल मे फँसी थी। वह खिड़की के पास एक बिस्तरे पर पड़ी थी। कभी उसे मरियम की लाश दिखाई देती थी, कभी अज़ीज़खान के भय से चीख उठती थी, कभी शो पीर को याद करती थी और कुछ का कुछ बड़बड़ाती थी।

शो-पीर के कमरे में चटाइयाँ बिछी थीं, जिन पर दो लाल सैनिक और दर्रे के अन्य कितने ही घायल लोग पड़े थे। 'मछली का काँटा' दरवाजे के पास पड़ी कराह रही थी। उसे बसमाचियों ने इस बेरहमी से मारा था कि हड्डी-पसली एक कर दी थी। उसका सारा बदन पट्टियों और पलास्तरों से ढका था।

श्वेत्सोव के सैनिक गांव से लेकर महानदी तक समूचे विस्तार में बसमाचियों का सफाया कर रहे थे। खुदादाद और अन्य कितने ही फकीर, बसमाचियों से छीनी हुई बन्दूकों से लैस, सियातांग घाटी में छिपे इक्के-दुक्के दुश्मनों को बीनने में जुटे थे।

जुबेदा और गुलरीज निस्सो के पास बैठीं अस्पताल के लिए चटाइयां बुन रही थी। गुलरीज़ हर आहट पर चौंक उठती थी और उसे लगता था कि बख्तियार आ गया है, लेकिन बख्तियार का अभी तक कुछ पता नहीं था।

"नाना, नाना!" सहसा निस्सो चिल्लाई, "शो-पीर कहां है? वह देखो, उसके गले में अजगर लिपटा है, नाना! वह उसे मार

डालेगा !"

"शो-पीर अच्छी तरह है, निस्सो !" नाना ने कहा, "वह अब आता ही होगा।"

"क्या तुम्हें मालूम है नाना कि मरियम को उन्होंने फाँसी देकर मार डाला ?"

"मुझे मालूम है, निस्सो ! और अब वे सब पकड़ लिए गए हैं ?"

"और अज़ीजखान ?"

"वह भी पकड़ लिया गया। बुर्जी में बन्द है। लाल सैनिक पहरा दे रहे हैं।"

"बुर्जी में बन्द है। यह बहुत अच्छा हुआ।"

इसके बाद कुछ देर वह चुपचाप पड़ी रही। फिर एकाएक बोली :

"बख्तियार को बुलाओ, नाना, और उससे कहो कि शो-पीर को जैसे भी हो खोज कर लाए।"

"वह तो पहले ही गया हुआ है। वह जा चुका है," अपनी सुबकियों को दबाते हुए गुलरीज़ ने कहा।

सहसा खिड़की के बाहर टापों की आवाज़ सुनाई दी। गुलरीज़ लपक कर देखने पहुँची, फिर निराश लौट आई।

"नहीं, वह नहीं आया," उसने फुसफुसा कर कहा।

तभी ख़ुदादाद ने कमरे में प्रवेश किया। वह हथियारों से पूरी तरह लैस था।

"कहो नाना, अच्छी तरह तो हो ?"

"बख्तियार से तो कहीं भेंट नहीं हुई ?"

"नहीं नाना, लेकिन चिन्ता न करो। काराशिर कहता है कि वह पहाड़ों में छिपा होगा। कितने ही लौट चुके हैं, और धीरे-धीरे लौट रहे हैं। मैं तुम्हें एक और अच्छी खबर सुनाता हूँ। वह यह कि शो-पीर ज़िन्दा है।"

निस्सो एकाएक उठ बैठी :

"ऐ मेरे अली, वह कहाँ है ?"

काराशिर ने उसका पता लगाया। वह घायल हो गया है। डाक्टर और काराशिर उसे लेने गए हैं।"

निस्सो की आँखों में आँसू उमड़ आए।

"तब तो मेरा बख्तियार भी जिन्दा होगा," कुछ साहस के साथ गुलरीज़ ने कहा।

"और ख़ुदादाद, यह तो बताओ निस्सो का तुम्हें कैसे पता लगा ?" ज़ुबेदा ने पूछा।

"ख़ुदादाद फर्श पर बैठ गया। अपनी राइफल उसने बराबर में रख ली और कहना शुरू किया :

"जब हम पहाड़ों से नीचे उतरे तो कमाण्डर और उसके लाल-सैनिक तो बाईं ओर, पथरीले मैदान को पार कर दर्रे की दिशा में चले गए और दो लाल सैनिक तथा मैं दाहिनी ओर गाँव को पार करते हुए दुर्ग की ओर बढ़े। हमें देखते ही नेमत, यूसूफ, यहाँ तक कि मोहम्मद अली और अन्य बहुत से लोग अपने घरों से बाहर निकल आए। उन की खुशी का कोई पारावार नहीं था। लाठी, कुदाली, जो कुछ भी हाथ में आया उसी को लेकर हम सीधे दुर्ग की ओर लपके। वहाँ पहुँचते ही देखा कि आग लगी है और भारी लपटें उठ रही हैं। यह हमारा अनाज जल रहा था। सैयद भागने लगे। मिरज़ाहूर एक और बोरे में आग लगा रहा था कि केन्दितरी ने उसे अपनी छोटी बन्दूक से गोली मार दी। फिर वह नौरोज़बेग की ओर मुड़ा और उसे भी उसने मार डाला। दोनों वहीं ढेर हो गए। फिर केन्दितरी ने अपनी छोटी बन्दूक को दूर फेंक दिया और हँसता हुआ मेरे गले से लिपट गया। बोला, 'ये दोनों कुत्ते थे। मैंने इन्हें ठिकाने लगा दिया। कम्बख्तों ने सारा अनाज जला डाला। ये भेड़िए तुम्हारे सामने मरे पड़े हैं। अब जल्दी से आग बुझाओ। और सुनो, निस्सो को भी मैंने बचा लिया है। वह गेहूँ के गढ़े में है।' इसके बाद केन्दितरी

ने आग बुझाने में हाथ बंटाया और फिर खुद साथ चलकर वह गढ़ा दिखाया जिसमें निस्सो बन्द थी और ऊपर से पत्थर ढँके थे।

"केन्दितरी अच्छा आदमी है," निस्सो ने कहा, "मुझे तो अंधेरे के सिवा और किसी चीज़ की याद नहीं है। वह अब कहाँ है?"

"अपने घर सोने के लिए चला गया। कहता था कि बहुत थक गया है। लेकिन ऐसे में कोई सो कैसे सकता है?"

"लेकिन तुमने यह नहीं बताया, खुदादाद," एकाएक निस्सो ने पूछा, "कि मरियम कहाँ है?"

खुदादाद ने निस्सो को अचरज से देखा, फिर गुलरीज़ और जुबेदा की ओर मुड़ गया। अपनी दोनों आँखें नीची कर जमीन की ओर देखने लगीं।

"क्या तुम्हें मालूम नहीं, निस्सो?" खुदादाद ने धीरे से पूछा।

"अरे हाँ, मालूम है, मुझे सब मालूम है!" निस्सो चीख उठी, "उसका शरीर काला पड़ गया है, उसकी आँखों से काला खून बह रहा है और उसकी रूह पक्षी बन गई है, नन्हा-सा पक्षी बन गई। एक बड़ा, बहुत बड़ा, पक्षी उस पर झपटा और उसके सीने में पंजे गड़ा कर अपनी चोंच से उसका हृदय निकाल कर ले गया।"

"इसे चुपचाप पड़ी रहने दो, खुदादाद," गुलरीज़ ने धीमे से कहा, "इससे बातें न करो।"

"अच्छा तो मैं अब चलता हूँ," खुदादाद ने कहा, अपनी राइफल उठा कर एक बार उदास नजर से निस्सो की ओर देखा और दरवाज़े से बाहर चला गया।

कमरे में अब गहरा सन्नाटा छा गया। मछली का कांटा भी अब नहीं कराह रही थी। घायल टांग वाला सैनिक तम्बाकू कागज पर रख कर सिगरेट बना रहा था। तम्बाकू के टुकड़े उसके सीने पर बिखरे थे। जुबेदा ने दियासलाई लाकर उसकी सिगरेट जला दी। निस्सो की आँखें बन्द थीं और खिड़की के पास अपने बिस्तरे पर चुपचाप

पड़ी थी।

सहसा बाहर कुछ शोर सुनाई दिया। गुलरीज़ ने खिड़की में से झाँक कर देखा। बगीचे से बाहर अच्छी खासी भीड़ जमा थी। काराशिर, रूसी डाक्टर और तीन लाल सैनिक एक स्ट्रैचर थामे हुए थे। उनके पीछे, बाँह-में-बाँह डाले, यूसुफ और शोखबगोर थे।

"शो-पीर आगया!" गुलरीज खुशी से चिल्लाई और दरवाजे की ओर लपकी, "शो-पीर आगया!"

: ३ :

कुरबानबेग ने जो खलीफा का साईस था और इसलिए धावे के दौरान में अज़ीज़खान साथ हर घड़ी रहता था, श्वेत्मोव और तारन की मौजूदगी में खुदादाद के पूछताछ करने पर जो बयान दिया वह इस प्रकार है:

"मैं बसमाची नहीं हुँ। खुदा जानता है कि मेरा उनसे कोई वास्ता नहीं है। मैं तो खलीफा का खिदमतगार हूँ। जहाँ वह जाता है, मुझे भी जाना पड़ता है। मैं उसके घोड़े को दलता-मलता हूँ, उसे चारा-पानी देता हूँ। बहुत ही बढ़िया घोड़ा था वह, तेज और सफेद बुर्राक। घोड़ा क्या था..."

खुदादाद ने उसे रोका: "खलीफा के घोड़े के बारे में कसीदा पढ़ना बन्द करो। जो पूछा गया है, उसका सीधा-साधा जवाब दो!"

"बहुत अच्छा, बहुत अच्छा," कुरबानबेग ने कहा, "सियातांग के नजदीक हमने महा नदी को पार किया। क्यों, यह तो ठीक है न?"

"हां, ठीक है," खुदादाद ने कहा, "बढ़ा-चढ़ा कर नहीं, अपनी बात को थोड़े में कहो।"

"इससे भी थोड़े में? हाँ तो हम अज़ीज़खान के साथ चले। अज़ीज़खान आगे-आगे चले, मिरज़ाहूर और जिगर आगे-आगे चले और मैं उनके पीछे-पीछे चला। यकीन न हो तो उनसे पूछ देखो। वे भी यही बतायेंगे। हां तो हम चलते रहे। मेरे हाथ में भी एक बन्दूक थी,

लेकिन बन्दूक कैसे चलती है, यह मेरे बाप-दादा भी नहीं जानते। गोली चलाना क्या कोई अच्छी बात है? सो सबने गोलियां चलाईं, मैंने नहीं चलाई। मैं चलाता तो सभी कहते, यह भी बसमाची बन गया है!"

खुदादाद झुँझला उठा। चिल्लाकर बोला: "तुम एकदम गधे के खुर हो! लनतरानी छोड़ कर जो पूछा जाता है, सीधे-सीधे बताओ!"

"बताता हूँ, बताता हूँ," उसने कहा। "महा नदी से हम ज्यादा दूर नहीं थे। रास्ता सकरा था, हमारे नीचे पहाड़ थे, ऊपर पहाड़ थे, चारों ओर पहाड़ ही पहाड़ थे। सहसा पाँच आदमियों पर हमारी नज़र पड़ी। वे फावड़े और कुदालियां लिए थे। वे हमारी दिशा में आरहे थे। हम रुक कर खड़े होगए। रास्ता सकरा था, हम पहाड़ी से चिपक गए। हमें क्या पता कि वे कौन थे? अजीज़खान ने कड़ी नज़र से उन्हें देखा। बोला: 'खुदा के बन्दो, मेरे आगे सिर झुकाओ।' वे भेड़िए की भांति उसकी ओर देखते रहे। साफ था कि सिर झुकाने का उनका कोई इरादा न था। अजीज़खान ने अपने घोड़े की रास खींची। उसने फिर कहा: 'मेरे आगे सिर झुकाओ। खुदा के फ़ज़ल से मैं खान हूँ और तुम्हारे देश से काफिरों का सफाया करने आया हूँ।' मैं सच कहता हूँ, उसने ठीक यही शब्द कहे थे। न मानो तो खुद अजीजखान से पूछ देखो। लेकिन वे कुछ नहीं बोले। उनमें तीन युवक थे और दो बूढ़े। युवकों में से एक ने कहा: 'अजीज़खान, क्या तुम अजीज़खान हो?' मुझसे नहीं रहा गया। बोला: "क्या तेरे दीदे फूट गए हैं? खुदा का भेजा हुआ एक ही तो खान अब रह गया है। यखबार का खान तेरी आँखों के सामने है। उसके आगे सिर झुका!" वह युवक क्या था, पूरा शैतान था। भभक कर बोला: "खान नहीं, तू कुत्ता है। औरत की हवस तुझे यहाँ खींच लाई है, लेकिन तू उसे कभी नहीं पा सकेगा। तेरे सिर पर मौत मंडरा रही है!" उसके हाथ

में कुदाली थी। उसे उठा कर अज़ीज़खान पर झपटा। यह तो कहो कि घोड़ा उसी वक्त चमक कर पीछे हट गया, नहीं तो खान का वहीं सफ़ाया हो जाता। कुदाली उसके चेहरे को घायल करके रह गई। अज़ीज़खा● घोड़े से नीचे गिर पड़ा। खलीफा ने लपक कर उस लड़के को पकड़ लिया। फिर हम सब, मेरा मतलब बसमाचियों से है, मैं उनमें नहीं था।"

"तुम तब कहाँ थे ?"

"मैं भी पास ही था। लेकिन मैं बसमाचियों के साथ शामिल नहीं हुआ। मैं तो घबरा गया था। मैंने ख़ून देखा, खान को गिरते और उस युवक को उसकी गरदन दबोचते देखा। चीते की भाँति वह झपटा। सच कहता हूँ, वह बड़ा बहादुर था। ऐसा आदमी मैंने नहीं देखा। मैं तो इतना डर गया कि आँखों के आगे अंधेरा छा गया। मुझे कुछ दिखाई नहीं दिया। जब आँखों का अंधेरा दूर हुआ तो मैंने देखा कि वह मरा पड़ा है। उसके सिर से ख़ून बह रहा था। उसके अन्य साथी भी वहीं रस्से से बंधे पड़े थे। अज़ीज़खान एक तरफ़ पत्थर पर बैठा था और खलीफा उसके चेहरे पर पट्टी बाँध रहा था। बस, इसके बाद हम फिर चल पड़े।"

"लेकिन उस युवक की लाश का क्या हुआ ? और जो रस्से से बंधे पड़े थे, वे कहाँ गए ?"

"जो बंधे पड़े थे, उन्हें तो तीन आदमियों के साथ यखबार भेज दिया गया। यखबार वहाँ से ज्यादा दूर भी नहीं था।"

"क्या उन्हें भी मारा-पीटा गया ?"

"मुश्किल से दो-चार कोड़े लगे होंगे। लेकिन ख़ुदा गवाह है, मैंने कोड़े नहीं मारे।"

"और वह लाश कहाँ है ?"

"वह लाश...सियातांग का सैयद मुरसाल है न, उसने कहा कि इसे नदी में फेंक दो। यह एक काफिर की लाश है। मैं इस कुत्ते को

जानता हूँ ।"

"यह उसने किससे कहा ?"

जवाब देने से पहले वह कुछ हिचकिचाया, अन्त में बोला :

"अच्छी बात है, पर उसने मुझसे कहा । उसने मुझसे यह भी कहा कि रास्ते में खून का एक भी दाग न रहने पावे । शीघ्र ही कारवाँ भी इधर से गुज़रेगा, और यहाँ ऐसी कोई चीज़ नहीं छूटनी चाहिए जो मन में सन्देह पैदा करने वाली हो ।"

"क्या तुमने लाश पानी में फेंक दी ?"

कुरबान ने एक बार घबराई सी नज़र से अपने चारों ओर देखा, परेशानी में अपना सिर लटका लिया और कांपती सी उँगलियों से अपनी तुबेतका को ठीक करने लगा ।

"नहीं । मैं सारी बात सच-सच बताऊँगा । सच के सिवा मैं और कुछ अपने मुँह से नहीं निकालूँगा । सब लोग आगे बढ़ गए, और मैं वहीं खड़ा रह गया । मेरे नीचे पहाड़ थे, ऊपर पहाड़ थे, चारों ओर पहाड़ ही पहाड़ थें । अगर मैं उसे चोटी से फेंकता हूँ तो वह चट्टानों पर जा गिरेगा और कारवाँ की नज़र से बचा नहीं रहेगा । अगर मैं उसे नीचे ले जाता हूँ तो उसे बड़ी दूर तक अपने कंधों पर लाद कर ले जाना पड़ेगा । और अगर पाँव फिसल गया तो मैं खुद भी नदी में जा गिरूँगा । मैंने अपने इधर-उधर नज़र डाली और एक खोखली-सी जगह दिखाई दी जहाँ लाश को छिपाया जा सकता था । वह जगह न ऊपर से दिखाई देती थी, न नीचे से । मैंने वहीं उसे छिपा दिया । यह जगह ऐसी थी कि पंछी तक वहाँ नहीं फटक सकता था । लाश अब भी वहाँ होगी । न मानो तो खुद जाकर देख लो । खून के दाग-धब्बे भी मैंने सब साफ कर दिये । एक छोटा-सा धब्बा रह गया था, सो उस पर कारवाँ की क्या किसी की भी नज़र न पड़ती !"

"बस करो," खुदादाद ने कहा । उसके चेहरे पर छाया सी घिर आई और उसके होंठ काँपने लगे । वह एक टक उस आदमी की ओर

देख रहा था। उसका सिर झुका हुआ था। जैसे ही उसने सिर उठाया, ख़ुदादाद का हृदय घृणा और विक्षोभ से भर गया। उसने अपना कोड़ा उठाया और पूरी ताकत से उसके सिर पर प्रहार किया। चीख मार कर उसने अपना सिर पकड़ लिया।

श्वेत्सोव ने, बिना कुछ कहे, ख़ुदादाद के हाथ से हण्टर लेकर अपने पास रख लिया।

बयान लेने के बाद ख़ुदादाद उस कमरे में गया जहाँ घायल पड़े थे। उसे देखते ही गुलरीज़ आगे बढ़ आई। बोली : "कुछ मालूम हुआ ?"

"हमारे साथ चलो, नाना," ख़ुदादाद ने कहा और उसकी आँखें झुक गईं।

"क्या तुम मुझसे कुछ छिपा रहे हो ? सच-सच बताओ, बात क्या है ?"

"दो ही बातें हो हो सकती हैं, गुलरीज़," ख़ुदादाद ने कहा, "या तो वह यखबार में है, या फिर..."

ख़ुदादाद की ज़ुबान अटक गई। फिर संभल कर बोला, "हमारे साथ चलो, गुलरीज ! यहाँ पहाड़ों में खोज करना ज़रूरी है।"

आध घण्टे के भीतर गुलरीज़, ज़ुबेदा, ख़ुदादाद और तारन के कमान में तीन लाल सैनिक महानदी की ओर रवाना हुए। उनके-साथ-साथ बन्दी कुरबानबेग भी था। उसके हाथ बंधे हुए थे।

महानदी से दो-ढाई मील इधर बन्दी ने रुकने का इशारा किया। ख़ुदादाद ने उसकी बाहें खोल दीं और उसे आगे बढ़ने का संकेत किया।

"गुलरीज़ का ध्यान रखना," उसने ज़ुबेदा के कान में फुसफुसा कर कहा, "मुझे डर है कि कहीं वह बख्तियार की लाश न हो !"

ज़ुबेदा सुन कर एक क्षण के लिए सन्न रह गई। फिर वह तेज़ी से गुलरीज़ के पास पहुँच गई। सहारा देकर उसने गुलरीज़ को घोड़े

पर से उतारा और पास ही पड़े एक पत्थर पर बैठने के लिए कहा। लेकिन गुलरीज बैठी नहीं। वह एक टक खुदादाद की ओर देखती रही।

ऐसा मालूम होता था मानो उसे दुर्घटना का आभास मिल गया हो, लेकिन उसे स्वीकार करने का साहस न कर पा रही हो।

लाश बख्तियार की ही थी। बर्फ में जमी पड़ी थी। एक रंग को छोड़ कर, जो हरा-सा हो गया था, बाकी सब कुछ वैसा ही था। जरा भी अन्तर नहीं पड़ा था। माथे और कनपटी पर गोली के घाव थे।

खुदादाद अपने साथ एक सफेद कपड़ा ले आया था। बख्तियार को बाहर निकाल कर उस पर फैला दिया गया। गुलरीज धीरे से घुटनों के बल बैठ गई, अपनी बाँहों में उसे भर लिया और उसकी पथराई सी आंखों मे एक टक देखने लगी। ऐसा मालूम होता था मानो खुद उसका शरीर भी जम कर निश्चल और स्थिर हो गया हो।

आखिर गुलरीज़ के होठों में हरकत पैदा हुई। वे हिले और उसके हृदय की वेदना शब्दों के रूप में फूट पड़ी :

"मेरे नन्हे बख्तियार...मेरे हृदय के टुकड़े...तुझे नींद आ गई मेरे लाल, तेरी आँख लग गई मेरे पंछी...तुझे ठँड तो नहीं लगती, मेरे मुन्ने ? यह देख, अपने हृदय से मैंने तुझे लगा लिया है। अब ठँड नहीं लगेली...क्या तुझे याद है जब तू छोटा था तो किस तरह मैं अपनी बाँहों में तुझे झुलाती थी, गोदी में लेकर तुझे अपना दूध पिलाती थी ? और कितने मजबूत थे तेरे नन्हें-नन्हें होंठ। मेमने की भाँति तू चिपट जाता था और अपनी थूथनी से ठहोके मारता था...अब तो तू बड़ा हो गया, और मैं अपनी बाँहों में तुझे नहीं उठा सकती। यह देख, केवल तेरे कँधे ही मुझसे उठते हैं। इन्हें यहाँ मेरे घुटनों पर, टिका ले, मेरे लाल ! तेरा सिर तो दर्द नहीं करता ? ला, मै अपने हाथों से दबा दूँ। क्यों अब कुछ आराम मिला ? तेरा जी कुछ राजी हुआ ? अब तो तुझे ठँड

नहीं लगती...अब तू बड़ा हो गया है, बहुत बड़ा...मुझे तो सपने में भी नहीं पता था कि एक दिन तू इतना बड़ा हो जाएगा ? निश्चिन्त होकर सो मेरे लाल, मेरे रक्त की बूँद, मेरे कलेजे के टुकड़े, मेरी आत्मा के अंश । नई घास का सपना देख, हरी घास का जो इतनी जल्दी उगती है । तू चीते के समान बलशाली है, मेरे लाल, तेरी ताकत अपार है, मेरे हृदय के टुकड़े । क्या तुझे नदी की गरज नहीं सुनाई देती ? यह तेरी ही नदी है...और ये पहाड़ क्या किसी और के हैं ? नहीं, सब तेरे हैं । नदी पर तेरा अधिकार है, पहाड़ों पर तेरा अधिकार है, समूचे सियातांग पर तेरा अधिकार है । यह सब तेरी ही तो सम्पत्ति है, मेरे लाल...ज़रा आँखें खोल कर देख...सियातांग में इतने लोग हैं, और सब पर तेरा अधिकार है । और मैं तेरी माँ हूँ । दर्रे के सभी निवासी मेरे बेटे हैं, लेकिन तू उन सब में बड़ा है । जब तू बोलता है तो सब सुनते हैं... आँखें खोल, मेरे लाल ! क्या अभी तक तेरी नींद पूरी नहीं हुई ? उठ, और अपनी काली आँखों से, चमकती हुई आँखों से, कोमल आँखों से मेरी ओर देख...तू उठता क्यों नहीं ? मुझे डरा नहीं मेरे लाल, मेरी ओर आँखें खोल कर देख...तू चुप क्यों है ? तू मेरी ओर देखता क्यों नहीं ? तू साँस क्यों नहीं लेता ? अरे, मुझे डर लगता है । यह साँस नहीं ले रहा है !"

सहसा गुलरोज़ पीछे हट गई और बख्तियार की ओर सहमी सी देखने लगी । उसने अपने बाल झँझोड़ डाले और दो सफेद लटें नोंच कर उन्हें आँखों के आगे हिलाने लगी ।

"ऐ मेरे भगवान्, यह क्या हो गया, यह तूने क्या किया भगवान्... लेकिन कहाँ है भगवान्...। वह तो कभी का मर चुका...ये देख बख्तियार, क्या तुझे मेरे बाल दिखाई देते हैं ? ये अब मेरे किस काम के ? ये सफेद हो चुके हैं । और मेरा हृदय ! उसे मैं अपने सीने से निकाल कर तेरे सीने में रख दूँगी, बख्तियार, और तू सांस लेने लगेगा । मुझ पर तरस खा, मेरे लाल ! मैं जानती हूँ कि तेरी रूह अब चीते के

शरीर में है । तू सचमुच चीता है, बख्तियार बहुत बड़ा चीता, साहसी और बलशाली चीता, इन पहाड़ों में मंडराता हुआ । लेकिन तू भेड़ों के रेगड़ पर हमला नहीं करता । तू बुरे और काले हृदय के लोगों पर झपटता है । अपने पंजे के एक ही आघात से उन्हें गिरा देता है । बदला लेना मेरे लाल, बदला लेने में ज़रा भी माया-ममता न दिखाना । तेरे हृदय में रहम था, इस लिए तो उन्होंने तेरे साथ ऐसा किया । तेरा खून मुझ से छिपा नहीं है, मेरे लाल··· ।"

कुछ दूर हट कर ज़ुबेदा बैठी थी और घुटनों में मुँह छिपाए चुपचाप आँसू बहा रही थी । आखिर उससे नहीं रहा गया और रोकते-रोकते भी उसके हृदय से चीख निकल गई ।

गुलरीज़ का रोदन ज़ुबेदा की चीख सुन कर रुक गया । ज़ुबेदा की ओर देखते हुए बोली :

"रोओ नहीं, ज़ुबेदा ! वह मर गया है : मेरा लाल मर गया है । मेरा बेटा अब इस दुनियाँ में नहीं है । मेरे कलेजे का टुकड़ा···"

ज़ुबेदा भावावेश में उठ खड़ी हुई । तेज़ी से गुलरीज़ को पास पहुँची और उसके गले से लिपट गई । दोनों स्त्रियों की सुबकियाँ, उनका क्रन्दन एक धारा बन कर फूट निकला ।

खुदादाद से यह दृश्य नहीं देखा गया । वह होंठ काटने लगा । अपने को सँभाले रखने के लिए उसने चारों ओर नज़र डाली । चट्टान के छोर पर बन्दी बैठा था । उसे देखते ही खुदादाद के गुस्से की आग भड़क उठी । अपनी तलवार निकाल कर तेज़ी से झपटा और भरपूर शक्ति से उस पर वार किया । बन्दी की गरदन लुढ़कती हुई नीचे जा गिरी ।

स्त्रियों का क्रन्दन एकाएक शान्त हो गया ।

खुदादाद अब गुलरीज़ के पास पहुँचा बोला :

"तुम मेरी माँ हो, नाना ! बख्तियार नहीं रहा, लेकिन मैं तो हूँ । मैं तुम्हारा दूसरा बख्तियार बनूँगा ।"

गुलरीज़ के पाँव लड़खड़ाए। खुदादाद ने उसे अपनी बाँहों में संभाल लिया। उसका बदन एक दम ढीला पड़ गया था। खुदादाद के गर्म और आँसुओं से तर गाल से अपना झुर्रियोंदार चेहरा सटाए वह देर तक उसी मुद्रा में पड़ी रही।

[४]

बसमाचियों का पूर्णतया सफाया होने के बारह दिन बाद सियाताँग गाँव में बोलोस्त से कार्यकर्ताओं का एक दल आ गया। उनसे पता चला कि इन ऊँचे पहाड़ों में जितने दर्रे और घाटियाँ हैं, इस दुर्घटना की खबरें सभी जगह फैली हुई हैं। छोटी-से-छोटी और अत्यन्त दूर स्थित बस्तियों के लोग भी खाने की चीज़ों, चारे और बोवाई के लिए बीजों के रूप में मदद भेज रहे हैं। इन सब चीज़ों को बोलोस्त पहुँचते ही यहाँ रवाना कर दिया जाएगा।

कुल मिला कर छप्पन बसमाची पकड़े गए, जो दुर्ग में बन्द थे। अज़ीज़खान, जिगर, खलीफा और अन्य कितने ही सैयद और मीर पुरानी बुर्जी में बन्द थे। मारे गए बसमाचियों में उनतालीस की लाशें मिल चुकी थीं, जिन में एक लाश रिसालदार की भी थी।

दर्रे के निवासियों में, मरियम और बख्तियार के अलावा, सोलह और मारे गए थे। इन में तीन बच्चे भी थे। एक बच्चा घोड़े से रौंदा हुआ मिला था। दूसरे का गला घोंटा हुआ था और यसुफ की नन्हीं भतीजी का सिर कुचला हुआ था और शरीर पर बलात्कार के निशान थे। उन छः स्त्रियों का कोई पता नहीं था जिन्हें बसमाची यखबार भगा ले गए थे। अली मोहम्मद की लड़की नफीस भी इन में से एक थी।

शो-पीर की जान तो बच गई, लेकिन बेहद कमज़ोर और खून की कमी के कारण नयी नयी पेचीदगियाँ पैदा होती रहती थीं। उसके फेफड़े कमज़ोर हो गए थे और वह इस योग्य नहीं था कि चल-फिर सके या इलाज के लिए उसे और कहीं ले जाया जा सके।

दर्रे के निवासी रोज़ गुलरीज़ के घर आते और डाक्टर मैक्सीमोव

से उसके स्वास्थ्य के बारे में पूछते । शो-पीर ने इस हद तक उनके हृदय में घर लिया था कि देख कर अचरज होता था। एक दिन कारा-शिर और युसुफ मैक्सीमोव के पास आए और कहने लगे कि वे रोगी को स्ट्रैचर पर डाल कर बड़े-से-बड़े नगर के अस्पताल में ले जाने के लिए तैयार हैं। चाहे कितने पहाड़ रास्ते में आएँ, वे चलते ही जाएँगे। एक महीने तक, दो महीने तक। वे कहीं भी रुक कर दम न लेंगे और इतनी सावधानी से उसे ले जाएँगे कि हवा उसका स्पर्श नहीं कर सकेगी, उसकी नींद में ज़रा-सी भी बाधा नहीं पहुँचेगी और अगर हम पानी से भरा प्याला उसके सीने पर रख दें तो उसकी एक बूँद भी नहीं छलक पाएगी।

लेकिन शो-पीर की स्थिति ऐसी नहीं थी कि उसे कहीं भी ले जाया जा सके। निस्सो, डाक्टर मैक्सीमोव के साथ, दिन-रात उसके सिरहाने बैठी रहती। शो-पीर की हालत ज़रा भी अच्छी होती तो वह खुशी से नाच उठती, खराब होने पर उतनी ही चिन्तित हो उठती।

सियातांँग में इस बीच अनेक घटनाएँ घटीं और लोग धीरे-धीरे बसमाचियों के हमले की उस दुर्घटना को भूल चले, जो बसन्त में हुई थी। बन्दी बसमाचियों के दल, एक-एक कर के, बोलोस्त भेज दिए गए। प्रारम्भिक जांच-पड़ताल और पूछ-ताछ के बाद अज़ीज़खान और उसके अन्य चट्टे बट्टों को भी हटा दिया गया। उनके बयान अनिश्चित और परस्पर-विरोधी थे। अज़ीज़खान ने कुछ भी नहीं उगला। यह साफ था कि बसमाची अपने-आप में अकेले नहीं थे, उनका सूत्र-संचालन किन्हीं दूसरे लोगों द्वारा हो रहा था। अज़ीज़खान का यह कहना कि केवल निस्सो के प्रेम में फँस कर उसने यह सब किया, सही नहीं था। इसके पीछे और भी कुछ था जिसे वह प्रकट नहीं होने देना चाहता था। शो-पीर का शुरू से ही केन्दितरी पर सन्देह था। लेकिन उसका सन्देह पुष्ट नहीं हो सका। इसके लिए सबूत नहीं मिल सके और पूछ-ताछ के बाद उसे छोड़ दिया गया। कुछ दिनों तक वह सियातांँग में ही

रहा, बाद में बोलोस्त चला गया और हजामत बनाने का अपना धन्धा करता रहा। सख्त निगरानी के बावजूद उसके व्यवहार में वहाँ भी सन्देह की कोई बात नहीं दिखाई दी। वह केवल अपने काम-से-काम रखता था और ऐसा मालूम होता था मानो दाढ़ी बनाने और बाल काटने के सिवा जीवन में अन्य किसी चीज़ में उसकी दिलचस्पी न हो।

गुलरीज अब ग्राम-सोवियत की चेयरमैन थी और काम में अपने दुःख को भूली रहती थी। हर रोज़ वह गाँव के किसी-न-किसी घर में पहुँच जाती और परिवार के मुखिया की भाँति सलाह-मशविरा देती, छोटे-से-छोटे कामों में भी दिल चस्पी दिखाती। रात को जब सब सो जाते तो वह लुक-छिप कर घर से निकलती और बख्तियार की कब्र के पास थोड़ी-सी चीनी रख आती ताकि उसके बेटे की आत्मा को उस समय तक मिठाई की कमी न हो जब तक कि वह चीते का रूप धारण न कर ले।

काराशिर का अब सभी रौब मानते थे और उसे सियातांग-रक्षा-दल का नायक कहते थे। वह अब रूसी जूते और रूसी वर्दी डाटे घूमता था और उसके घर के सामने एक नसली घोड़ा बंधा रहता था। यह रिसालदार का घोड़ा था। यूसुफ से उसका पक्का याराना था जो अक्सर उसके घर आता रहता था। यूसुफ भी बहुत कुछ बदल गया था। शरीयत और धार्मिक कट्टरता का भूत उसके सिर से उतर चुका था और अपनी पत्नी शोखबगोर को अब वह कभी नहीं पीटता था।

सांझ को सब लोग जमा होते और गाते-बजाते। तम्बूरें, बाँसुरियों और नफीरियों की आवाज़ से वातावरण गूंज उठता। खुदादाद उनका निर्देशन करता और उसकी बहन जुबैदा गाती। रूसी सैनिक भी अपना हथबाजा लेकर आ जाते और नाच-गाने में शामिल हो जाते। समूची घाटी में संगीत हिलोरे लेने लगता।

[५]

पतझड़ बीतते-न-बीतते बड़े सोवियत कारवां का दूसरा हिस्सा भी

वोलोस्त आ पहुंचा। इस बार उसे किसी अड़चन का सामना नहीं करना पड़ा। अन्य कार्यकर्ताओं के अलावा इसके साथ एक डाक्टर भी था जो खासतौर से शो-पीर के लिए भेजा गया था। लेकिन शो-पीर, अपनी ताकत के भरोसे, अब खतरे के बाहर हो चुका था और चलने-फिरने लगा था।

एक दिन, वोलोस्त से लौटने के बाद, श्वेत्सोव ने शो-पीर के सामने एक कागज रख दिया। यह किसी समाचार-पत्र की एक कटिंग था, उसमें छपी खबर का—अनुवाद था।

"इसे पढ़ो। यह हमारे ही बारे में है," श्वेत्सोव ने कहा।

शो-पीर ने पढ़ना शुरू किया। समाचार इस प्रकार था :

"हमारे संवाददाता ने अभी-अभी यखबार से एक ऐसी घटना की खबर भेजी है जिसे सुन कर खून खौल उठता है और जिससे पता चलता है कि रूसी सीमान्त में क्या कुछ हो रहा है। खबर यह है कि बोलशेविक यखबार के शासक अज़ीज़खान की बीवी को भगा कर सियातांग ले गए। यह उनकी राजनीतिक चाल थी। अपनी पत्नी के गायब हो जाने से दुखी खान अपने सगे-सम्बन्धियों को लेकर सियातांग गया और उसने अनुरोध किया कि मेरी पत्नी मुझे वापिस मिलनी चाहिए। स्थानिक लोगों ने भी एकमत से उसकी मांग का समर्थन किया, यहाँ तक कि बोल्शेविक अधिकारियों के इन्कार करने पर उन्होंने विद्रोह कर दिया। उनके विद्रोह को कुचलने के लिए बोल्शेविकों ने मनमाने अत्याचारों का अम्बार लगा दिया। निर्दोष अजीजखान को पकड़ कर उन्होंने जेल में डाल दिया और उसके सगे-सम्बन्धियों को मार डाला। अज़ीज़खान की अभागी पत्नी आज दिन भी सियातांग में मौजूद है। बोल्शेविक मदवेदेव (शो-पीर) ने उसे अपने घर में डाल रखा है। उसने उसे जबर्दस्ती रूसी कपड़े पहना कर कोमसोमोल संगठन में भर्ती कर लिया है। यह देख कर अचरज होता है कि ऐसी हालत में जबकि बोल्शेविक निरीह यखबारियों को अपनी गोलियों का निशाना बना रहे

हैं, बड़ी-बड़ी खानशाहियां लाल रूस से मित्रता की संधि करने में जुटी हैं......"

"यह क्या बकवास है ?" पढ़ने के बाद कागज से सिर उठाते हुए शो-पीर ने पूछा।

"कोई खास बात नहीं," श्वेत्सोव ने कहा, "किसी विदेशी ने अपनी दिमागी सूझ-बूझ का परिचय दिया है। संयोग से एक पत्र सीमा पार कर इधर चला आया और हमने रूसी भाषा में उसका अनुवाद करा लिया।"

"अच्छा मजाक है !" शो-पीर ने कहा।

"मजाक तो है, लेकिन इस तरह का मजाक जब किसी यूरोपीय देश की राजधानी में पहुंचता है और अपने को शरीफ कहने वाले दोहरे कूटनीतिज्ञ एक प्रामाणिक दस्तावेज के रूप में जब उसे पेश करते हैं और हमारी विदेश-नीति पर कीचड़ उछालते हैं तो वह मजाक नहीं रह जाता।"

शो-पीर ने कुछ देर सोचा। फिर बोला :

"समूची 'दस्तावेज' में केवल एक बात सच है। वह यह है कि निस्सो मेरे घर में रहती है और रूसी कपड़े पहनती है। लेकिन यह उन्हें मालूम कैसे हुआ ? बसमाचियों के आने से पहले वह अपने देशी कपड़े ही पहनती थी। न ही उससे पहले यहाँ कोई कोमसोमोल संगठन था।"

"यही तो सोचने की बात है, श्वेत्सोव ने कहा, "निश्चय ही हमारे बीच कोई भेदिया छिपा है। लेकिन वोलोस्त में हमारा खुफिया विभाग मामले की छान-बीन कर रहा है। हमें उस पर भरोसा रखना चाहिए। वह 'मानवता और दीन ईमान' के इन रक्षकों को अपने-आप खोज निकालेगा। क्यों, तुम्हारी क्या राय है ?"

शो-पीर कुछ गम्भीर हो गया। बोला :

"मेरी राय जानना चाहते हो, श्वेत्सोव ? सुनो, मेरी राय यह है

कि दीन ईमान के इन रक्षकों को पकड़ने में अगर ज़रा भी ढील की तो वे गोता लगा कर आंखों से ओझल हो जाएंगे। यह भी सम्भव है कि वे हमारे किसी नगर में घुस कर जिम्मेदारी के पदों को हथियाने तक में सफल हो जाएं। माना कि देर या सवेर, उनकी कलई खुल कर रहेगी और वे पकड़े भी जाएंगे, लेकिन तब तक वे काफी नुकसान पहुंचा चुके होंगे। अभी हमें बहुत कुछ सीखना है। यह साफ है कि उनकी मशीन बहुत ही सफाई से काम करती है और उसके पुर्जों की चाल पहचानने के लिए घड़ीसाज जैसी दक्षता की जरूरत है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हमारी सीमाएं बंद होनी चाहिएं, इस हद तक कि कोई भी घिनौना जीव इधर रेंग कर न आ सके।"

"सीमाओं का जहां तक सम्बन्ध है," श्वेत्सोव ने कहना शुरू किया: "लेकिन नहीं, मुझे अपना मुंह बंद रखना चाहिए। अगर तुम अगले साल तक यहाँ रहे तो तुम्हें अपने आप सब मालूम हो जायगा।"

उपसंहार

"अभी हमें कितनी दूर और चलना है, शो-पीर ?" निस्सो ने पूछा।

"दो सप्ताह और," शो-पीर ने कुछ सोचते हुए जवाब दिया, "सड़क पर चलते-चलते हमें तीन सप्ताह तो हो चुके हैं। तुम उकताई तो नहीं, निस्सो ?"

"नहीं, मैं भला क्यों उकताने लगी ?" वह बोली, "देखो, जरा उधर देखो, कितना अच्छा मालूम होता है, मानो लाल रंग का आइना चूर-चूर हो कर छितरा गया है, लेकिन उसका रंग फिर भी दमक रहा है !"

"चोटियां छिपते हुए सूरज की किरनों को वापिस फेंक रही हैं। इन चट्टानों की यही तो खूबी है और इसी लिए इन्हें मोटेन कहते हैं। बर्फ की कोरस चट्टानों को यह विशेषता प्रदान करती है।"

"और जब तुम अपनी मोटर में वापिस लौटोगे तो कितना समय लगेगा ?" निस्सो ने पूछा।

"अगर सड़क तब तक तैयार हो गई तो तीन दिन में ही आजाएंगे। लौटने में तुम्हें इतना समय नहीं लगेगा, निस्सो !"

निस्सो चुप हो गई। सियातांग से चलते समय लौटने की बात उसके मन में नहीं उठी थी। सच तो यह कि लौटने की बात वह कभी सोचती ही न थी। वह तो केवल शो-पीर के साथ उस बड़ी दुनिया को देखना और उसी में रहना चाहती थी जिसके बारे में वह इतना कुछ सुन चुकी थी। दो सप्ताह बाद वह बड़ी दुनिया शुरू हो जाएगी। केवल उन पहाड़ों को, उनके बाद दूसरे पहाड़ों को, और फिर दूर छाया की भांति दिखाई पड़ने वाले पहाड़ों को पार करना बाकी था। तब वह उस दुनिया में पहुँच जाएगी, उन सब चीजों को वह देखेगी जो इतने दिनों से उसके

नगरों में बसी हुई थी, नगर, बड़े-बड़े नगर, और बड़े-बड़े लोग, और मास्को !

"क्या सोच रही हो, निस्सो ?" एकाएक शो-पीर ने पूछा ।

उसने तेजी से मुड़ कर शो-पीर की ओर देखा, दोनों के घुटने एक दूसरे से छू गए और शो-पीर का घोड़ा निस्सो के छोटे-से योनी की गरदन के बाल सूँघने लगा ।

"अपना हाथ इधर लाओ, शो-पीर," निस्सो ने कहा और उसके बड़े हाथ को अपने छोटे हाथों में लेकर हल्के से दबाया । फिर बोली :

"कुछ नहीं, शो-पीर ! आओ जरा चाल तेज कर आगे बढ़ चलें ।"

ये सुविस्तृत पहाड़ी घाटियां सियातांग के चटियल दर्रे से भिन्न थीं । हर साँझ किसी पहाड़ी के पदतल में कोई-न-कोई हरा-भरा स्थल मिल जाता और वहीं वे आराम करते । सुबह होते ही फिर अपने रास्ते पर चल पड़ते । तीन सप्ताह से यही सिलसिला चल रहा था । एक बार खाना-बदोशों का पड़ाव उन्हें दिखाई दिया और उनके तम्बू में उन्होंने रात बिताई । चाय, भेड़ का दूध और उसकी छाछ छक कर पी, और रात-भर खाना-बदोशों से बातें करते रहे, जो उन्हें छोड़ने का नाम ही न लेते थे ।

घोड़-सवारों का एक अच्छा-खासा दस्ता उनकी आँखों के सामने था । कुछ देर बाद उनके कमाण्डर भी आ गए ।

ये सीमान्त-रक्षक थे, लाल सेना के सीमान्त-रक्षक !

सड़क के साथियों के बीच अभिवादन हुआ । कमाण्डर ठिठक कर खड़ा हो गया और शो-पीर से बातें करने लगा । बोला :

"हम सीमान्त-रक्षक हैं । इन पहाड़ों की सुरक्षा और शान्ति के लिए चौकियाँ कायम की जाएंगी । इसके अलावा यहाँ के लोगों के लिए हम कुछ तोहफे भी लाए हैं : फिल्म दिखाने की मशीनें, रेडिओ, चलता-फिरता बिजली घर, छापे का सामान, अखबार छापने का टाइप, किताबें और अन्य बहुत सी चीजें ।"

इसके बाद, निस्सो की ओर मुड़ते और अभिवादन में अपना हाथ बढ़ाते हुए, एकाएक उसने पूछा, "और यह क्या तुम्हारी पत्नी है ?"

कमाण्डर के इस अप्रत्याशित अभिवादन और उसके चेहरे पर खेल रही मुसकराहट देख कर निस्सो कुछ सकपका गई। उसने कैसे जाना कि वह शो-पीर की पत्नी है ? लेकिन हाथ मिलाने में निस्सो ने जरा भी ढीलापन नहीं दिखाया।

कमाण्डर आगे बढ़ गया।

मशीनगनें घोड़ों की पीठ पर कसी हुई, पहाड़ी सूरज से अपने चेहरों की रक्षा करने के लिए टोपियों के नीचे सफेद रूमाल लगाए सैनिक; दो-दो घोड़ों पर कसे हुए अस्पताली स्ट्रेचर; कैनवास के नीचे थैलों पर क्रास के लाल निशान; सैनिक, सैनिक, सैनिक—एक के बाद एक सैनिकों की अन्तहीन पाँत !

प्रत्येक ऊंट के गले में घंटी बंधी थी और वायु-मण्डल घंटियों की मधुर आवाज से गूँज उठा था।

रात हो आई थी। आकाश में चाँद तैर रहा था !

एक साथ पांच हजार ऊँटों का काफिला और उनके गले में बंधी घंटियों की आवाज जो चाँदनी के साथ घुल-मिल कर अद्भुत संगीत का संचार कर रही थी।

शो-पीर *निस्सो के गले में हाथ डाले घंटियों की इस मधुर ध्वनि में* खो गया था।

चटियल ढलुवानों पर से अपनी सुनहरी रोशनी समेट कर चाँद पहाड़ों के पीछे जा छिपा, लेकिन ऊँटों की पांत अभी भी खत्म नहीं हुई थी, उनकी घंटियों की आवाज अभी भी गूँज रही थी, कितनी शान्त, और कितनी मधुर !